संसार के दो सर्वश्रेष्ठ कहानी-लेखक

(तुर्गनेव और चैख़ोव)

Sansar Ke Do Sarvashreshth-
Kahani Lekhak.

सम्पादक तथा अनुवादक—

चन्द्रगुप्त विद्यालङ्कार

Chandra Gupta

प्रथमवृत्ति } १ जनवरी १९३३ { मूल्य दो रुपये

प्रकाशक—

विश्व-साहित्य ग्रन्थमाला,

मैक्लेगन रोड, लाहौर ।

मुद्रक—

मलिक हरभगवानदास महरोत्रा

नवजीवन प्रेस, लाहौर ।

इवान तुर्गनेव

परिचय

संसार का कहानी-साहित्य दिन-ब-दिन उन्नति कर रहा है। उपन्यास और नाटक इन दोनों की अपेक्षा भी आजकल छोटी कहानियां अत्यधिक उपयोगी और साथ ही साथ कलात्मक भी मानी जाने लगी हैं। हिन्दी में भी कहानी लिखने का शौक बढ़ रहा है। आजकल प्रत्येक मासिक और साप्ताहिक पत्र में कहानियों का रहना आवश्यक हो गया है। यह प्रसन्नता की बात है। इन दिनों हिन्दी के पाठकों के सन्मुख संसार के सर्वश्रेष्ठ कहानी लेखकों की कहानियां प्रस्तुत करना, मेरी राय में, बहुत उपयोगी सिद्ध होगा।

संसार के कहानी-साहित्य यत्किञ्चित अध्ययन करके मैं इसी परिणाम पर पहुँचा हूँ कि उन्नीसवीं सदी का इवान तुर्गनेव वर्तमान युग का सर्वश्रेष्ठ कलाकार कहानी-लेखक हुआ है और छोटी कहानियों की दृष्टि से एन्टन चेखोव संसार भर के लेखकों में अपना कोई सानी नहीं रखता। वर्तमान युग के प्रायः सभी

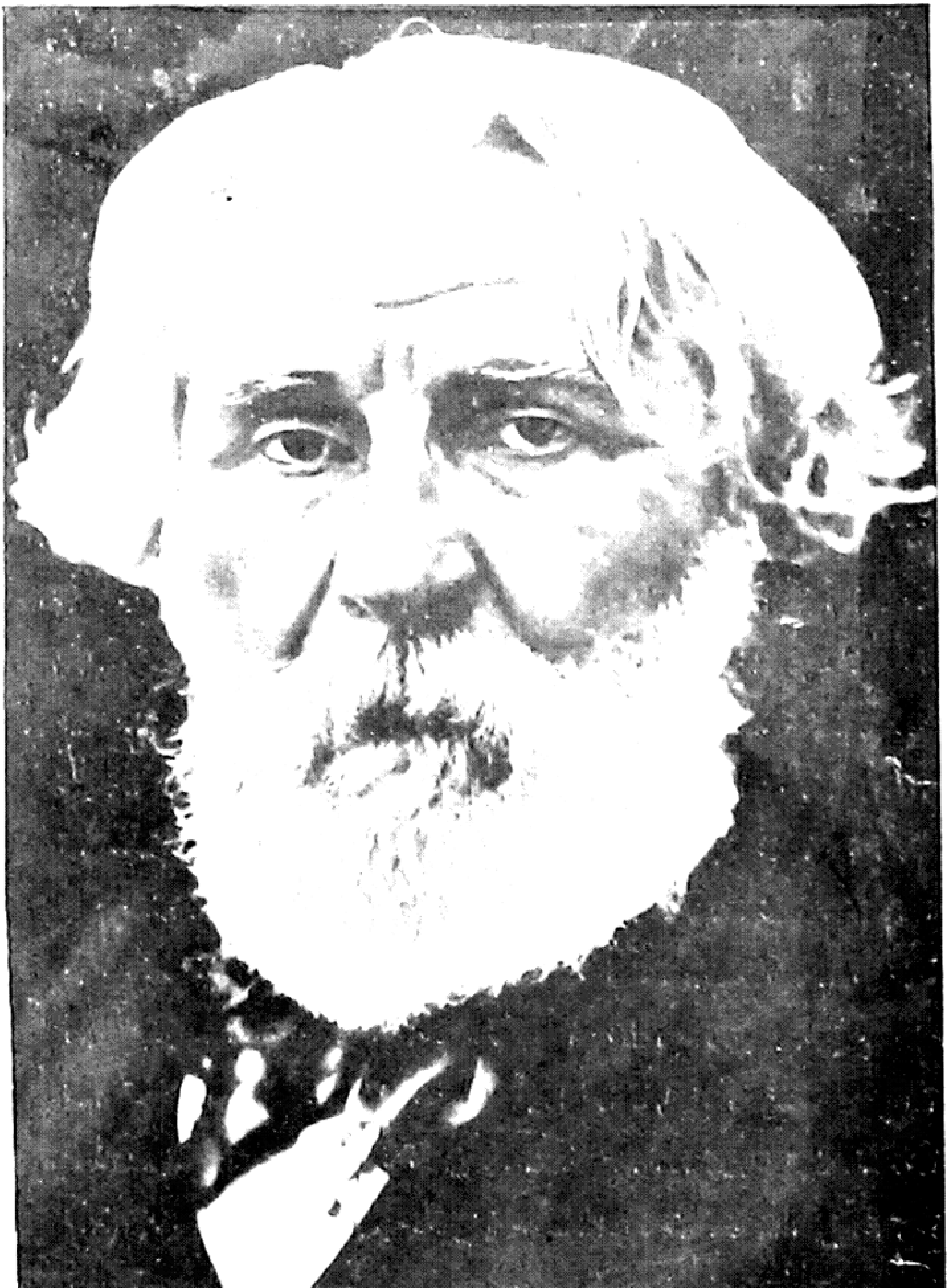
कहानी-लेखक एण्टन चैखोव को अपना आदर्श स्वीकार करते हैं।

तुर्गनेव और चैखोव की ये कहानियां पहले विश्व-साहित्य ग्रन्थमाला की तरफ़ से पृथक्-पृथक् प्रकाशित की गई थीं, मगर अनेक पाठकों के अनुरोध पर इन्हें अब पृथक् पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। मुझे विश्वास है कि ये कहानियां न केवल हिन्दी पाठकों का मनोरंजन ही करेंगी, अपितु इन से हम लोग—लेखक और पाठक दोनों ही—बहुत कुछ सीख भी सकेंगे।

संसार के इन दोनों सर्वश्रेष्ठ कहानी-लेखकों का विस्तृत परिचय भी साथ ही दिया गया है।

लाहौर
१ जनवरी १९३३

—चन्द्रगुप्त विद्यालंकार



भूमिका

साहित्य के अनेक दिग्गज समालोचकों की राय में रूस का इवान तुर्गनेव उन्नीसवीं सदी का सब से बड़ा कलाविद् लेखक हुआ है। मुझे विश्वास है कि जो व्यक्ति निष्पक्ष होकर विश्व-साहित्य का अध्ययन करने का प्रयत्न करेगा, वह अवश्य ही इवान तुर्गनेव की गणना संसार-भर के सर्वकालीन लेखकों की सर्वोत्तम कोटि में किए बिना नहीं रह सकता। विशेषकर उपन्यास और कहानी-जगत में तो तुर्गनेव का कोई प्रतिद्वन्द्वी ही नहीं है। यह होते हुए भी संसार के साहित्यक-क्षेत्र में तुर्गनेव को वह ख्याति नहीं प्राप्त हो सकी, जो उस के समकालीन, रूस के महान ऋषि टाल्स्टाय को प्राप्त है। मेरी राय में इस तथ्य के जो कारण हैं, उन का निर्देश मैं बहुत संक्षेप में इस भूमिका के अन्त में करूँगा। उस से पूर्व तुर्गनेव का संक्षिप्त परिचय देना उचित होगा।

तुर्गनेव की जीवनी

इवान तुर्गनेव का जन्म २८ अक्तूबर सन १८१८ के दिन 'आर्मेल' नामक स्थान पर हुआ था। उस के पिता एक बहुत बड़े ज़मींदार थे। उन की हज़ारों बीघा ज़मीन थी। करीब ५ हज़ार किसान उन की ज़मींदारी में खेती-बाड़ी का काम करते थे। उन दिनों रूस के इन किसानों की दशा अर्ध-गुलामों की-सी थी। तुर्गनेव के पिता की ज़मींदारी के ये किसान भी अर्ध-गुलाम ही थे। तुर्गनेव के पिता को एक बहुत ऊँचा फौजी खिताब भी प्राप्त था।

तुर्गनेव की माता एक बहुत आराम-पसन्द और क्रूर स्वभाव की नारी थी। अपनी माता से तुर्गनेव अत्यधिक असंतुष्ट रहे। उन्हें उस में स्त्रियोचित कोमल गुणों का सदैव अभाव प्रतीत होता रहा। उन की माता अपने नौकरों को ज़रा-ज़रा सी बात पर कोड़े लगवाया करती थी। यहां तक कि उस ने अपने दो किसानों को महज़ इसी बात पर साबेरिया में देश-निर्वासित करवा दिया था कि उन्हों-ने उसे सलाम नहीं किया था। स्वयं तुर्गनेव को भी अपने बचपन में अनेक बार अपनी माता के हाथों से कड़ी मार खानी पड़ी।

तुर्गनेव का बचपन बड़े ऐश-आराम से बीता। घर में बीसियों नौकर-चाकर थे। किसी चीज़ की कमी नहीं थी। उस के पिता ने अपने जीवन का उद्देश ही ऐश-आराम बना रक्खा था। प्रति-दिन वह प्रातःकाल शिकार को जाता; फिर अपने मित्रों के साथ हँसी-मज़ाक करते हुए खाता-पीता और सायंकाल को नाचगान में शामिल होता। उन के जीवन का अन्य कोई लक्ष्य नहीं था।

बालक तुर्गनेव अपनी माता से इतना अधिक डरता था कि एक वार उस ने घर से भाग जाने का निश्चय कर लिया। एक दिन वह रात के ग्यारह बजे घर में से भाग चला, परन्तु अचानक उस के एक उस्ताद ने उसे देख लिया, और समझा-बुझा कर ऐसा करने से रोका। तुर्गनेव के कोमल हृदय पर अपनी माता की क्रूरता का बड़ा भयपूर्ण प्रभाव पड़ा था। इवान तुर्गनेव ने अपने मित्रों से यह अनेक वार कहा था कि मेरी माताने सदैव भयभीत रख कर मुझे बड़ी निर्बल इच्छाशक्ति वाला पुरुष बना दिया है।

इवान तुर्गनेव के बचपन के दिनों में रूसी लोग अपनी भाषा को बिलकुल तुच्छ और उपेक्षणीय समझते थे। उन दिनों रूस के कुलीन घरों में बालकों को फ्रेन्च का ही अभ्यास कराया जाता था। तुर्गनेव को फ्रेन्च और जर्मन पढ़ाने के लिए उस के पिता ने अनेक अध्यापक रक्खे हुए थे। परन्तु उसे रूसी भाषा पढ़ाने का कोई प्रबन्ध नहीं किया गया। अपनी मातृभाषा उस ने अपने नौकरों-चाकरों द्वारा ही सीखी।

नौ वर्ष की उम्र तक तुर्गनेव अपनी ज़मींदारी में रहे, और वहां के सुन्दर प्राकृतिक दृश्यों में खेलते-कूदते रहे। इस के बाद उन के माता-पिता मास्को चले आए, और वहां उन्हें एक स्कूल में दाखिल करा दिया गया। १४ वर्ष की उम्र में तुर्गनेव ने मैट्रिक का इम्तिहान पास कर लिया और वह कालेज में दाखिल हो गए। कालेज में उन्हों ने मुख्यतया इतिहास और दर्शनशास्त्र का अध्ययन किया। दो-तीन वर्ष सेण्ट-पीटर्स-बर्ग में शिक्षा प्राप्त करने के बाद वह जर्मनी में चले गए, और वहां बर्लिन के प्रसिद्ध विश्वविद्यालय में उन्हों ने दर्शनशास्त्र का अध्ययन शुरू किया।

जर्मनी में जाकर तुर्गनेव का मन पढ़ाई-लिखाई से क्रमशः उचाट होने लगा। मां की इच्छा थी कि तुर्गनेव कम से कम एम० ए० ज़रूर पास कर ले। परन्तु तुर्गनेव अब पढ़ते-लिखते बहुत कम थे। उन का अधिकांश समय मौज-बहार में कटता था। घर से जो रुपया आता था, वह सब नाच-रंग आदि में उड़ा दिया जाता था। इसी तरह काफ़ी समय तक अपनी युवावस्था और धन का अबाध व्यय करके वह अपने घर लौट आए।

तुर्गनेव की पहली पुस्तक "शिकारी का भ्रमण वृत्तान्त" नाम से प्रकाशित हुई। इस में उन की कहानियों का संग्रह था। अधिकांश कहानियां दास-प्रथा के ख़िलाफ़ थीं। उन में दास-प्रथा की वीभत्स अमानुषिकता का जीवित चित्रण किया गया था। रूस की जनता ने इन कहानियों को बहुत पसन्द किया और इस के द्वारा वहां गुलामी की प्रथा के विरुद्ध प्रबल लोकमत पैदा होगया। परिणाम यह हुआ कि इस पुस्तक के द्वारा रूस में-से दास-प्रथा दूर करने में बड़ी मदद मिली। यहां तक कि रूस के अतुलशक्ति-शाली सम्राट् अलेक्ज़ण्डर ने तुर्गनेव के पास स्वयं यह सन्देश भिजवाया कि अपने देश में-से दास-प्रथा बन्द कर देने की प्रेरणा मुख्यतः उन्हें "शिकारी का भ्रमण वृत्तान्त" पढ़ने से मिली है।

अपनी इस एक ही कृति से तुर्गनेव रूस-भर में प्रसिद्ध हो गए। प्रस्तुत संग्रह की तीसरी कहानी "चरागाह" 'शिकारी के भ्रमण-वृत्तान्त' में से ही ली गई है। इस रचना के बाद तुर्गनेव बाकायदा साहित्यक क्षेत्र में उतर आए, और क्रमशः अधिक-अधिक चमकते गए। उन की रचनाओं का यूरोप-भर की सम्पूर्ण भाषाओं में अनुवाद हुआ है। अँग्रेज़ी में तो उन की एक भी कृति अनूदित होने से बच नहीं पाई। लण्डन की विलियम हेनमैन (William Heinemann) से उन की सम्पूर्ण रचनाओं का संग्रह ४०-४५ रुपयों में प्राप्त हो सकता है। ये पुस्तकें १७ खण्डों (vols.) में प्रकाशित हुई हैं। इन में से मुख्य पुस्तकों के नाम हैं—

(1) Rudin. (2) A House of Gentle Folk.

का कोई विशेष मूल्य नहीं रह गया था। इस का परिणाम यह हुआ कि उन्हों ने मानवीय हृदय के उन भावों को कोई विशेष महत्ता नहीं दी, जिन्हें हम लोग उच्च और पवित्र भाव कहते हैं। परन्तु इस का यह अभिप्राय कदापि नहीं कि तुर्गनेव एक 'घासलेटी साहित्य के लेखक' थे। ऐसा समझने वाले लोग भयंकर गल्ती करेंगे। इन दोनों के भेद को मैं ज़रा आगे चल कर स्पष्ट करूंगा। यहां इतना ही कहना पर्याप्त है कि तुर्गनेव और टाल्स्टाय के आदर्शों में ज़मीन-आसमान का अन्तर था।

यह होते हुए भी इन दोनों महान साहित्यकों में एक दूसरे के प्रति अगाध स्नेह और आकर्षण के भाव थे। परन्तु वे दोनों जब कभी आपस में मिलते तो शीघ्र ही उन में किसी न किसी बात पर तीव्र मतभेद खड़ा होजाता और बात बहुत बढ़ जाती, और उस के बाद, दोनों में बहुत दिनों तक विग्रह बना रहता। इन दोनों के पारस्परिक सम्बन्ध का अनुमान पाठक इन दो चिट्ठियों से बखूबी कर सकेंगे।

जिन दिनों तुर्गनेव पेरिस में अपनी मृत्यु-शैया पर पड़े थे, उन दिनों टाल्स्टाय ने उन्हें लिखा था—

"आप की बीमारी की खबर से मुझे बड़ी व्याकुलता हुई। जब मैं ने सुना कि आप की बीमारी भयंकर है, तब मेरी समझ में यह बात आई कि मेरे हृदय में आप के लिए कितनी श्रद्धा है। यदि मेरे जीवित रहते आप का देहान्त होगया तो मुझे असीम वेदना पहुँचेगी।......परमात्मा करे कि हम लोग पुनः एक दूसरे को

मिल सकें। जब पहले-पहल मैं ने आप की भयंकर बीमारी का हाल सुना, तो मैं ने आप के पास, पेरिस आने का विचार किया।... आप स्वयं लिख सकें तो स्वयं, नहीं तो किसी अन्य से ही सही,—अपनी बीमारी का विस्तृत हाल भिजवाइए। मैं आप का अत्यन्त कृतज्ञ होऊँगा। प्यारे तुर्गनेव ! मेरे पुराने मित्र ! मैं यहीं से तुम्हारा स्नेहमय आलिंगन करता हूँ।"

इस चिट्ठी का जवाब तुर्गनेव ने अपने ही हाथों से इस प्रकार लिखा—

"प्यारे लिओ टाल्स्टाय,

मैं ने तुम्हें बहुत दिनों से कोई चिट्ठी नहीं लिखी, इस का कारण यही है कि मैं बीमार हूँ। सच बात तो यह है कि यह मेरी अन्तिम बीमारी है। मैं अब इस बीमारी से मुक्त नहीं हो सकता, अतः इस की चिन्ता करना व्यर्थ है। बस, मैं एक बात तुम से कहना चाहता हूँ। वह यह कि मैं इस बात में अपना बड़ा सौभाग्य अनुभव करता हूँ कि मैं तुम्हारा समकालीन रहा। आज मैं तुम से एक अन्तिम प्रार्थना करता हूँ। मेरे मित्र ! साहित्यक सेवा में फिर से जुट जाओ। तुम्हारी यह प्रतिभा उसी ईश्वर की देन है जो संसार की सभी शक्तियों का स्रोत है। यदि मुझे यह ज्ञात हो जाय कि तुम ने मेरी प्रार्थना स्वीकार कर ली तो इस से मुझे असीम प्रसन्नता होगी।

मैं तो अब समाप्ति पर हूँ। डाक्टरों को अभी तक यह भी नहीं मालूम हो सका कि मुझे बीमारी क्या है ! न मैं चल-फिर

सकता हूँ और न सो ही सकता हूँ। इन बातों को लिखने से मेरी थकावट और भी बढ़ती है। मेरे मित्र! मेरी जन्मभूमि रूस के महान लेखक! मेरी इस अन्तिम प्रार्थना को ज़रूर स्वीकार करना। इस चिट्ठी की पहुँच से सूचित करना। आओ, आज एक वार पुनः मैं तुम से, तुम्हारी पत्नी से और तुम्हारे बाल-बच्चों से छाती लगा कर मिल लूँ। अब और नहीं लिखा जाता। थक गया।"

तुर्गनेव की कला

मनुष्य जाति ने अपनी सदियों की प्रथाओं, अनुभवों और संस्कारों के अधार पर मानवीय हृदय के कुछ आधारभूत तत्वों को दैवीय गुण (गीता के शब्दों में 'दैवीय सम्पत्') माना हुआ है और कुछ को राक्षसीय वृत्ति (असुरी सम्पत्) करार दे रक्खा है। दैवीय और आसुरी भावों का वर्गीकरण करने के लिए प्रायः समाज के हित को परख बना कर काम लिया जाता है। मानवीय हृदय के सम्पूर्ण आधारभूत तत्व आवश्यक रूप से प्रत्येक मनुष्य के हृदय में विद्यमान हैं। (मानसिक अपाहिजों की बात जाने दीजिए, वे अपवादरूप हैं।) परन्तु व्यवहार में होता यह है कि प्रत्येक मनुष्य की अपनी-अपनी परिस्थितियों के अनुसार उस के हृदय का कोई एक या एक से अधिक तत्व तो बहुत विकसित हो जाते हैं और शेष का विकास नहीं होने पाता। सामाजिक संघर्ष में जब किसी व्यक्ति के ऐसे गुण प्रकाश में आते हैं, जो समाज की वर्तमान रचना की दृष्टि से लाभकर हैं, तो समाज उस व्यक्ति की बड़ी तारीफ़ करता है, दूसरी ओर जब किसी व्यक्ति के हृदय

के कड़वे अथवा सामाजिक रचना को हानि पहुँचाने वाले तत्व प्रकाश में आते हैं, तो उस की निन्दा होती है। परन्तु तत्वज्ञानी पुरुष इन दोनों दशाओं में अव्यवस्थित-चित्त नहीं होता। पापी से वह द्वेष नहीं करता और ईमानदार से वह रोब में नहीं आ जाता। वह दोनों को पहचानता है। समाज की दृष्टि में पतित समझे जाने वाले मनुष्य में भी जा "ईश्वरीय सम्पत्" छिपी पड़ी है, वह उस की आंखों से ओझल नहीं होने पाती। इसी तरह महान से महान समझे जाने वाले मनुष्य के हृदय में सभी तरह के तत्वों की विद्यमानता उसे स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। समाज में बड़ी प्रतिष्ठा के साथ देखे जाने वाले व्यक्ति की उच्चता में परिस्थितियों का जो हाथ है, उसे महान पुरुष अपने प्रयत्न-संचित पुण्य के आत्माभिमान में प्रायः भूल जाते हैं, परन्तु तत्वज्ञानी इस तथ्य को खूब अच्छी तरह समझता है। उच्चकोटि के लेखक प्रायः तत्वज्ञानी होते हैं। उन की मनोवृत्ति उदार होती है और वे कट्टरता को कहीं पसन्द नहीं करते। महान लेखक तुर्गनेव की भी यही मनोवृत्ति थी। उन की सम्पूर्ण कृतियों में समवेदना और उदारता कूट-कूट कर भरी मिलती ह।

तुर्गनेव की दूसरी विशेषता उन की कला का रंग-रहित और निर्मल आदर्श है। और इसी को मैं तुर्गनेव की सब से बड़ी विशेपता मामता हूँ। "कला का रंग-रहित और निर्मल आदर्श" ये शब्द कुछ अस्पष्ट-से प्रतीत होते हैं, अतः इन की व्याख्या करना आवश्यक है।

भाव (sentiments) और स्मृतियां मनुष्य के हृदय में लगाव (attachment) की वृत्ति उत्पन्न करती हैं। मैं ने काश्मीर में अपने जीवन के दो मास बड़े सुख से बिताए थे, इस लिए अपने काश्मीर के बन्धुओं के प्रति मेरे दिल में लगाव के गहरे भाव घर कर गए हैं। यहां तक कि वहां के हांजिओं, हतो और बेफ़िक्र मल्लाहों के सम्बन्ध में भी मेरे हृदय में सुखद स्मृति मौजूद है। इतना ही नहीं; काश्मीर के पहाड़, झरने, झीलें और सघन वन आदि के साथ भी मेरे दिल में विशेष तरह का स्नेह-भाव पैदा होगया है। यही दशा परिवारों, देशों, सम्प्रदाओं और मानव जाति की भी होती है। प्रत्येक परिवार, देश व सम्प्रदाय की अपनी-अपनी मधुर और दुखद स्मृतियां होती हैं। मानव हृदय के ये लगाव और खिंचाव के भाव ही हृदय के रंग हैं। लेखकों और वक्ताओं को मानव-हृदय के इन अनुकूल या प्रतिकूल रंगों से अपने चित्रण में बड़ी मदद मिलती है। आर्यसमाज में व्याख्यान देते हुए आप स्वामी दयानन्द के नाम पर चाहे जिस बात की अपील कर दीजिए, वह भक्त-श्रोताओं पर अवश्य ही प्रभाव करेगी। मुसलमानों में जोश भरने के लिए हज़रत मुहम्मद का नाम ही काफ़ी है। इस नाम की दोहाई देकर आप उन से चाहे जो काम करवा सकते हैं। साहित्य में भी मानव हृदय के ये रंग बड़ी आसानी से जान डाल देते हैं। यही कारण है कि राम या कृष्ण के सम्बन्ध में रद्दी-से-रद्दी ढंग पर लिखे गए नाटकों को भी हिन्दूजनता बहुत अधिक पसन्द करती

है और उन्हें अपनाती है। सुप्रसिद्ध फ्रैंच उपन्यासकार अनातोले फ्रान्स ने "जूडिया का शासक"❋ शीर्षक से एक कहानी लिखी है, यह कहानी यूरोप भर में अत्यधिक पसन्द की गई। इस का प्रधान कारण यही है कि इस कहानी के अन्त में अनातोले ने बड़े अच्छे ढंग पर क्राइस्ट का ज़िक्र कर दिया है।

जब मैं कहता हूँ कि तुर्गनेव की कला बिलकुल रंगरहित, निर्मल और उज्ज्वल है, तो इस का अभिप्राय यह है कि तुर्गनेव ने अपनी किसी भी कृति में लोगों की रुचि या नापसन्दगी की परवाह नहीं की। इतना ही नहीं, इस महान कलाकार ने मानवीय हृदय की भावुकता से अपनी कृतियों को बड़ी सफलता के साथ बचाए रक्खा है। कहीं-कहीं तो यह बात इस चरम सीमा तक जा पहुँची है कि पाठक के हृदय में हूक-सी उठने लगती है। उदाहरण के लिए तुर्गनेव ने अपने ('टौरैन्ट्स ऑफ़ स्प्रिंग')+ नामक छोटे-से उपाख्यान में 'प्रेम' नामक तत्व के साथ इतना निपुणतापूर्ण (masterly) परन्तु निर्दयता का व्यवहार किया है कि दिल को गहरी चोट पहुँचती है।

एक बात और भी है। साहित्य के विशुद्ध कलाकार, मनुष्य के हृदय की भावुकता से लाभ तो उठाते हैं, उस का इस्तेमाल भी करते हैं, परन्तु वे उस के वशीभूत नहीं हो जाते। मानव-हृदय

❋ "संसार की सर्वश्रेष्ठ कहानियां" पृष्ठ २७८ से २८१.

+ इस ग्रन्थ का अनुवाद दिल्ली के साहित्य मन्दिर से "यौवन की आंधी" नाम से प्रकाशित हुआ है।

के अच्छे या बुरे सभी तत्वों से कलाविद् लेखक सफलतापूर्वक निस्संग रहता है। वह दोनों का पूर्ण और सही-सही चित्रण करता है। यही तथ्य कलाविद् लेखक को जहां घासलेटी साहित्य का स्त्रोत नहीं बनने देता, वहां उसे सम्प्रदायवादी या 'धर्म प्रचारक' बनने से भी रोकता है। साहित्य में घासलेटीपन का प्रारम्भ ही उस स्थान से होता है, जहां लेखक की अपनी चित्त-वृत्ति निस्संग नहीं रहती। सफल कलाकार कामुकता सम्बन्धी नाज़ुक से नाज़ुक बातें लिख जाते हैं, परन्तु इस ढंग से कि उन की कृति घासलेटी नहीं बनने पाती।

तुर्गनेव की कला के सम्बन्ध में ये थोड़ी-सी बातें लिखकर मैं इस भूमिका को समाप्त करता हूँ। मुझे भय है कि मैं अपने विचारों को इस संक्षिप्त-सी भूमिका में पूरी तरह स्पष्ट नहीं कर सका। यदि आवश्यकता हुई तो 'विश्व-साहित्य-ग्रन्थमाला' की तरफ़ से प्रकाशित होने वाली तुर्गनेव की किसी अगली कृति में इस सम्बन्ध में अधिक विस्तार के साथ लिखूंगा।

तुर्गनेव की जीवनी लिखने में मुझे अपने मान्यमित्र पं० बनारसी दास जी के एक लेख से, जो 'प्रेम प्रपञ्च'❀ की भूमिका के रूप में दिया गया है, बड़ी सहायता मिली है, अतः मैं उनका कृतज्ञ हूँ।

लाहौर
२ अगस्त १९३२

—चन्द्रगुप्त विद्यालंकार

❀ प्रकाशक—"प्रवासी-सदन" कलकत्ता।

विषय सूची

विजयी प्रेम का सङ्गीत

गुस्ताव फ्लैबर्ट की स्मृति में समर्पित

इटली की एक प्राचीन हस्तलिखित पुस्तक में मैंने पढ़ा—

(१)

सोलहवीं सदी के मध्य में फ़रारा शहर पर जो शासक राज्य करता था, वह साहित्य और कला का बड़ा प्रेमी था। उस के राज्य में फ़रारा दिनबदिन तरक्की कर रहा था। उन्हीं दिनों फ़रारा में फ़ेबियो और मूज़िओ नाम के दो नौजवान रहते थे। दोनों की उम्र करीब करीब बराबर थी। दोनों परस्पर घनिष्ट मित्र थे और प्रायः साथ साथ ही रहा करते थे। बचपन ही से दोनों में

घनिष्टता पैदा होगई थी और बाद में दोनों की एक समान-किस्मत ने उसे और भी अधिक चमका दिया था। दोनों मित्र कुलीन थे, धनी थे और आज़ाद थे। उन पर कुटुम्ब का बोझ नहीं था। मूज़िओ को संगीत का शौक था और फ़ेबिओ को चित्रकला का। सम्पूर्ण फ़रारा नगर को इन दोनों पर अभिमान था। राजा के दरबार में, नागरिकों की सभा में अथवा नौजवानों के जमघट में,—सभी जगह इन दोनों की कदर थी। मगर शकलसूरत में वे दोनों एक दूसरे से नहीं मिलते थे। फ़ेबिओ दोनों में अधिक विशाल था। उस का रंग गोरा, बाल सुनहले और आंखें नीली थीं। दूसरी ओर मूज़िओ का चेहरा उतना चिट्टा न था, उसके बाल काले थे और आंखें भूरे रंग की थीं। उस की आंखों में प्रसन्नता की झलक नहीं थी। फ़ेबिओ के समान उस के चेहरे पर सदैव अभिनन्दन करती हुई मुस्कराहट भी नहीं बनी रहती थी। मूज़िओ लोगो से गपशप लड़ाने में भी उतना मज़ा नहीं लेता था। फिर भी, दोनों मित्रों की महिला समाज में कदर थी, क्योंकि दोनों नवयुवक जुदा जुदा ढङ्ग की उत्कृष्ट कुलीनता का नमूना थे।

उन्हीं दिनों फ़रारा में वैलेरिया नाम की एक कुमारी भी रहती थी। वह शहर भर की सब से अधिक सुन्दरियों में गिनी जाती थी। वैलेरिया लोगों की नज़र में बहुत कम आती थी, उसे एकान्तवास ही अधिक पसन्द था। सप्ताह में केवल एक ही दिन, वह गिरजे में जाने के उद्देश्य से अपने घर से बाहर निकलती थी। वह सैर

पर भी, बहुत कम, केवल त्यौहारों के दिन ही जाती थी। उस के घर में सिर्फ़ उस की मां थी। पिता का देहान्त हो चुका था, और भाई कोई नहीं था। वह अधिक धनी तो नहीं थी, मगर उस का खानदान कुलीन था।

वैलेरिया की चालढाल इतनी मोहक थी और अपनी असाधारण सुन्दरता से वह इतना अधिक गाफ़िल थी कि जो राहगीर उसे देखता था, वह उस की ओर आकृष्ट हुए बिना न रह सकता था। उस के दिल में इस कुमारी युवती के लिये अवश्य ही आदर और स्नेह के भाव उत्पन्न हो जाते थे। यह सच है कि उस का रंग कुछ अधिक पीलापन लिए हुए था। वह सदैव निगाह नीची करके चलती थी और उस की आंखों में लज्जा तथा भय के भाव सदैव बने रहते थे। वैलेरिया बहुत कम और वह भी थोड़ा ही-सा मुस्कराती थी। बहुत कम लोगों ने उसकी आवाज़ सुनी होगी। फिर भी सब जगह यह महशूर था कि उस की आवाज़ बहुत सुरीली है। उस के बारे में यह भी मशहूर था कि वह हररोज़ प्रातःकाल, जब सारी नगरी सो रही होती है, अपने कमरे में बन्द होकर मधुर स्वर में कोई पुराना गीत गाती है। उसे बांसुरी बहुत पसन्द थी और वह स्वयं भी सदैव बांसुरी ही बजाया करती थी। अपने पीलेपन के बावजूद भी वैलेरिया का स्वास्थ्य बहुत अच्छा था। यहां तक कि बूढ़े लोग भी उसे देख कर यह सोचे बिना न रह सकते थे—"वह नौजवान कितना सौभाग्यशाली

होगा, जिस के सामने यह अछूता मुकलित फूल, किसी दिन अपने को निस्संकोच होकर खोल देगा !"

(२)

फ़ेबिओ और मूज़िओ ने वैलेरिया को पहिलेपहिल उस दिन देखा जब कि वे फ़रारा के शासक द्वारा निमन्त्रित होकर शहर के एक समारोह में शामिल होने गए थे। यह समारोह फ्रान्स की राजधानी पेरिस से आए हुए, कुछ माननीय अतिथियों के स्वागत में किया जारहा था। शहर के एक मुख्यतम चौक में, कुलीन महिलाओं के लिये एक विशेप स्थान तैयार किया गया था। यहीं पर वैलेरिया अपनी मां के साथ बैठी थी। किस्मत से दोनों मित्र एक ही साथ उस अनिन्द्यसुन्दरी वैलेरिया की तरफ़ बेतरह आकृष्ट होगए। और क्योंकि दोनों एक दूसरे से अपने दिल की कोई बात नहीं छिपाते थे, इस लिये दोनों को उसी दिन मालूम होगया कि उन हृदयों पर क्या बीत रही है। आपस में सलाह कर के दोनों ने इस सम्बन्ध में एक समझौता कर लिया। वह यह कि दोनों खुले हृदय से, स्वाधीनतापूर्वक वैलेरिया को अपनी ओर आकृष्ट करने का प्रयत्न करें और यदि वह किसी एक की तरफ़, अपनी इच्छा से, आकृष्ट होजाय तो दूसरा इसे चुपचाप सहन करले।

मगर वैलेरिया से मिलना भी तो आसान नहीं था। उसे लोगों से मिलते जुलते रहना पसन्द नहीं था। तथापि ये दोनों

नौजवान शहर भर में इतने अधिक सर्वप्रिय थे कि दो तीन सप्ताहों की मिहनत के बाद वैलेरिया की माता ने इन्हें अपने घर आने जाने की आज्ञा दे दी। धीरे धीरे वैलेरिया दोनों से भली प्रकार परिचित होगई और वे प्रायः प्रतिदिन उससे मिलने के लिए आने जाने लगे।

दोनों मित्र वैलेरिया से मिलने के लिए सदैव एक ही साथ जाया करते थे। वैलेरिया दोनों ही से बहुत प्रसन्नता के साथ मिलती थी। दोनों का हृदय उसकी ओर धीरे धीरे और भी अधिक आकृष्ट होता जाता था। परन्तु अभी तक यह मालूम नहीं हो सका था कि वैलेरिया, उन दोनों में से किसे अधिक पसन्द करती है। यद्यपि यह स्पष्ट था कि उसे उन दोनों ही से मिलना अच्छा प्रतीत होता है। मूज़िओ से वह गाना सीखती थी, मगर गप्पें लड़ाना उसे फ़ेबियो से ही अधिक पसन्द था। उस के साथ वह अधिक खुल कर बात करती थी।

अन्त में दोनों मित्रों ने एक दिन अपनी किस्मत आज़माने का निश्चय किया। दोनों ने वैलेरिया को पृथक् पृथक् पत्र लिख कर उस से उसके दिल की बात पूछी। वैलेरिया ने वे दोनों पत्र अपनी मां के सामने लाकर रख दिये और कहा—"मैं तो बिना विवाह के ही सुखी हूँ, परन्तु यदि तुम्हारी यह इच्छा है कि मैं ब्याह कर लूँ, तो इस सम्बन्ध में मैं तुम्हारा चुनाव ही पसन्द करूंगी।"

बूढ़ी विधवा ने जब यह कल्पना की कि विवाह करके उसकी प्यारी पुत्री उससे जुदा हो जायगी तो उसकी आंखों में आंसू भर आए। परन्तु इस तरह अपनी लड़की को सदैव कुमारी रखना भी तो सम्भव नहीं था, विशेषकर अब तो उसे ऐसे योग्य वर नसीब हो रहे हैं। उसकी मां भी दोनों ही को अपनी कन्या के लिये उपयुक्त वर समझती थी, मगर मूज़िओ की अपेक्षा फ़ेबिओ की ओर उसका अधिक झुकाव था। उसका ख्याल था कि उस की पुत्री भी फ़ेबिओ को ही अधिक पसन्द करती है, इसलिये उसने फ़ेबिओ के पक्ष में अपनी सम्मति दी। अगले ही दिन फ़ेबिओ को अपने सौभाग्य की सूचना मिल गई और मूज़िओ के पास इसके अतिरिक्त और कोई चारा न रहा कि वह अपने वचन पर दृढ़ रहे और अपनी प्रबल आकांक्षा का दमन कर दे।

मूज़िओ ने अपना वचन तो निभाया, मगर उसमें यह हिम्मत नहीं थी कि वह अपने मित्र की विजय को अपनी आंखों से देख सके। इस कारण अपनी जायदाद के बड़े भाग को उसने बहुत शीघ्र बेच दिया और रुपया जमा करके वह पूर्वीय देशों की सैर के लिये निकल पड़ा। अपने मित्र से विदा लेते हुए उसने प्रतिज्ञा की कि वह तब तक फ़रारा में वापिस न आएगा, जब तक कि वह अपनी, इन दिनों की इच्छा का पूर्णरूप से दमन नहीं कर लेगा। फ़ेबिओ को अपने बाल्यबंधु से जुदा होते हुए दुख

तो अनुभव हुवा, मगर वह दुख सफल प्रेम के प्रवाह में शीघ्र ही वह गया।

थोड़े ही दिनों बाद वैलेरिया से फ़ेबिओ का विवाह हो गया और तब उसे यह पूरी तरह अनुभव हो सका कि उसके परम सौभाग्य से वैलेरिया के रूप में उसे कितना कीमती रत्न प्राप्त हो गया है। फ़रारा से कुछ ही दूरी पर उसका एक सुन्दर भवन था। अपनी पत्नी और सास के साथ वह उसी में जाकर रहने लगा। तब उस के जीवन का सब से अधिक चमकीला युग प्रारम्भ हुआ। वैलेरिया के दैवीय गुणों ने उसे पूर्ण बना दिया और शीघ्र ही वह बहुत उत्तम चित्रकार बन गया। वैलेरिया की माता इस प्रसन्न और सौभाग्यशाली जोड़े को देख कर फूली नहीं समाती थी।

स्वर्ग की-सी इस प्रसन्नता में, चार लम्बे लम्बे साल एक आनन्ददायी स्वप्न के समान बीत गए। परन्तु उसके बाद धीरे धीरे एक अभाव उन्हें खटकने लगा, एक दुख उन्हें अनुभव होने लगा—दोनों की कोई सन्तान नहीं थी। मगर आशा ने अभी उन का साथ नहीं छोड़ा था। थोड़े ही दिनों में उन पर एक और मुसीबत आई। वैलेरिया की माता बीमार पड़ी और दो चार दिनों तक रुग्णशैया पर पड़ी रहने के बाद, उस का देहान्त हो गया।

वैलेरिया ने बहुत अधिक आंसू बहाये। बहुत दिनों तक

प्रयत्न करके भी वह अपने इस दुख को भुला न सकी। धीरे धीरे एक वर्ष और बीत गया। क्रमशः जीवन का प्रवाह यथापूर्व बहने लगा। और देखो ! गरमियों की एक सुन्दर सांझ को मूज़िओ अचानक ही फ़रारा में लौट आया।

(३)

पिछले पांच सालों में मूज़िओ के सम्बन्ध में कोई कुछ भी नहीं जानता था। थोड़े दिनों तक उसके सम्बन्ध में कुछ अफ़वाहें सुनी जाती रही थीं, मगर धीरे धीरे उनका अवसान होगया था। सब लोग गायक मूज़िओ को इस तरह भूल गए थे, जैसे उस का देहान्त होगया हो। जिस दिन मूज़िओ फ़रारा में वापिस आया, उस दिन फ़ेबिओ भी किसी काम से, अकेला ही, शहर में आया हुवा था। किसी सड़क पर दोनों मित्रों का अचानक मेल हो गया। मूज़िओ को देख कर फ़ेबिओ चीख उठा। वह चीख निकली तो शायद भय की वजह ही से थी, मगर बाद में स्वयं ही उस में प्रसन्नता का भाव आगया था। दोनों मित्र बड़े प्रेम से मिले। फ़ेबिओ ने मूज़िओ को अपने निवासस्थान पर आकर रहने का निमन्त्रण दिया। उसका विशाल भवन जिस सुन्दर बाग में था, उस में एक और मकान भी था, फ़ेबिओ ने अपने मित्र से प्रस्ताव किया कि वह उसी में आकर रहे। मूज़िओ ने इसे सहर्ष स्वीकार कर लिया।

मूज़िओ अपना सामान लेकर अपने एक नौकर के साथ उस मकान में पहुंच गया। उस का यह नौकर एक बहुत ही रहस्यमय

व्यक्ति प्रतीत होता था। वह मलयद्वीप का रहने वाला था। वह बिल्कुल गूंगा था, मगर उस के कान सुनने में बहुत तेज़ थे। उस की नज़र में बुद्धिमत्ता मूर्त्तिमान होकर बसी हुई थी। उसकी जिह्वा थी ही नहीं, न जाने कब और किस ने काट ली थी। मूज़िओ ने पूर्वीय देशों की इस पांच साल की यात्रा में विचित्र विचित्र प्रकार का बहुत सामान जमा कर लिया था। यह सामान बीसियों संदूकों में ठूंस ठूंस कर भरा हुवा था। यह सब सामान फ़ेब्रिओ के मकान में पहुंचा दिया गया।

वैलेरिया को भी मूज़िओ के आने से बहुत प्रसन्नता हुई। उसने बड़े प्रसन्नतापूर्ण परन्तु संयत भाव से मूज़िओ का स्वागत किया। सभी चिन्हों से यही प्रतीत होता था कि मूज़िओ ने अपने मित्र से जो प्रतिज्ञा की थी, उसे उसने पूरी तरह निभाया है। पहले ही दिन उसने अपने गूंगे नौकर की मदद से वह सारा सामान घर में सजा कर रख दिया। इस सामान में पूर्वीय देशों के कम्बल, ग़लीचे, रेशम, कढ़ी हुई रंगीन पोशाकें, हथियार, प्याले, थालियां, पच्चीकारी के बर्तन, हाथी दांत और आबनूस का सामान, सोने चांदी और मोतियों से मढ़ी हुई चीज़ें, मसाले, सुगन्धित वस्तुएं, सुन्दर सुन्दर पक्षियों के पंख, जंगली हिंसक पशुओं के मुंह, उनकी खालें और अनेक तरह का अन्य भी बहुत-सा रहस्यमय सामान था। बहुत सी चीज़ें ऐसी थीं, जिन्हें फ़रारा का एक भी निवासी पहिचान नहीं सकता था। इन अलभ्य चीज़ों में कीमती

मोतियों का एक हार भी था, जो मूज़िओ को फ़ारस के शाह ने भेंट में दिया था। मूज़िओ ने वैलेरिया से प्रार्थना की कि वह उसे यह हार स्वयं अपने हाथों से पहिनाने की अनुमति दे। वैलेरिया ने लज्जापूर्ण मुस्कराहट के साथ इसे स्वीकार कर लिया। हार गले में पहिन लेने पर यह उसे बोझ में कुछ अधिक भारी अनुभव हुवा, परन्तु इसके स्पर्श में एक तरह की गरमी-सी थी, जो शरीर को बहुत भली जंचती थी।

सायंकाल को सब लोगों ने एक साथ भोजन किया और उसके अनन्तर बाग के एक सुन्दर चबूतरे पर सब लोग आराम करने के लिए जा बैठे। मूज़िओ ने अपनी यात्रा का हाल सुनाना शुरू किया। उसने बताया कि सुदूर पूरब में उसने बादलों से भी अधिक ऊंचे पहाड़ देखे हैं, समुद्र के समान प्रतीत होने वाली चौड़ी चौड़ी नदियों को पार किया है। वहां उसने बड़ी बड़ी और भयमिश्रित आश्चर्य उत्पन्न करने वाली इमारतें देखी हैं। हज़ार हज़ार बरस की उम्र के विशालकाय वृक्षों की छाया में उसने घण्टों तक बैठ कर आराम किया है। उसने बताया कि पूरब के देशों में इन्द्रधनुष के से रंग के मनोहर फूल खिलते हैं, सुन्दर सुन्दर पक्षी एक साथ हज़ारों की संख्या में मिल कर चहचहाते हैं। वहां बीसियों तरह के लोग रहते हैं। मूज़िओ ने सारा का सारा पूरब देख डाला है। उसने फ़ारस और अरब की सैर भी की है, जहां के घोड़े आदमियों से भी अधिक सुन्दर होते हैं। वह हिन्दोस्तान को एक सिरे से

दूसरे तक देख चुका है, जहां के निवासी एक सुन्दर और पुराने वृक्ष के समान हैं। वह चीन और तिब्बत भी देख आया है, जहां ईश्वर छोटी छोटी आंखों वाले 'दलाई लामा' का स्वरूप धारण करके मनुष्य के भेष में निवास कर रहा है। मूज़ियो की सब बातों को फ़बिओ और वैलेरिया बड़े कौतूहल के साथ सुनते रहे।

मूज़िओ में सचमुच परिवर्तन आगया था। उसका रंग तो जन्म ही से उतना चिट्टा न था, अब पांच बरसों तक पूरब के तेज़ सूरज के नीचे घूमते रहने से उस के रंग में हल्का-सा कालापन भी आगया था। उसकी आंखें अन्दर चली गई थीं। उसके चेहरे की मुद्रा में भी परिवर्तन आगया था। वह अब अधिक एकाग्र, गम्भीर और निर्भय प्रतीत होता था। वह शेर और चीतों से आबाद जंगलों में घूमा था। वह उन हिस्सों में भी गया था, जहां के निवासी राहगीरों को पकड़ कर अपने भयंकर देवता की मूर्त्ति के सामने बलि चढ़ा देते हैं। इन सब बातों ने उस के व्यक्तित्व को बिल्कुल बदल डाला था और अब वह, पहली नज़र में, इटली का निवासी ही नहीं जान पड़ता था।

इस यात्रा में वह हिन्दोस्तान के ब्राह्मणों से अनेक प्रकार की जादू की-सी क्रियाएँ भी सीख आया था। हिन्दुस्तान के लोग उन्हें 'योग की क्रियाएँ' कहते हैं। अपने नौकर की मदद से ये क्रियाएँ उसने अपने मित्र तथा उसकी पत्नी को दिखाईं। पहले वह पर्दे की ओट में छिप गया और बाद में ज़मीन से बहुत ऊपर, बिना किसी

सहारे के, आस्मान में समाधि लगा कर बैठा हुवा दिखलाई दिया। उसकी इस क्रिया को देख कर फ़ेबिओ और वैलेरिया बहुत अधिक डर गए। वैलेरिया सोचने लगी—"कहीं यह जादूगर तो नहीं वन गया!"

इस के वाद मूज़िओ ने एक पिटारी खोली। इस में विचित्र विचित्र प्रकार के वीसियों भयङ्कर सांप भरे हुए थे। मूज़िओ उन्हें निकाल कर उन के साथ खेलने लगा। यह देख कर तो वैलेरिया भय से चीख उठी और उसने प्रार्थना की कि यह दृश्य मेरी आंखों से ओझल कर दो।

रात के दस बजे मूज़िओ ने अपने मित्र तथा उसकी पत्नी को शिराज़ की शराब पीने के लिये दी। यह शराब एक बहुत ही सुन्दर बर्तन में रक्खी हुई थी। इस में से अत्यधिक सुगन्ध उठ रही थी। शराब का रङ्ग हल्की-सी हरी छाया लिए हुए सुनहला था। जब उसे प्याले में उंड़ेला जाता था, तो उस में से सुगन्ध की हल्की-सी फुआर उठती थी। यह यूरोप की अच्छी से अच्छी शराबों से भी बहुत अधिक मीठी और ज़ायकेदार थी। इस शराब के तीन प्याले भरे गए। फ़ेबिओ और वैलेरिया ने तो सदा की तरह अपना प्याला उठाया और धीरे धीरे सिप करना शुरू कर दिया, परन्तु मूज़िओ अपना प्याला सामने रख कर उंगलिआं झुका कर धीरे-से कुछ गुनगुनाया और इस के बाद गम्भीर होकर उसे सिप करने लगा। वैसे तो मूज़िओ की

प्रत्येक बात में कुछ विचित्रता दिखाई देती थी, परन्तु उस के इस कार्य से वैलेरिया को यकीन होगया कि अवश्य ही भारतवर्ष में जाकर मूज़िओ ने अपना धर्म भी परिवर्तित कर लिया है।

बातचीत के सिलसिले में वैलेरिया ने मूज़िओ से पूछा कि अपनी इस लम्बी यात्रा में कहीं वह संगीत को तो नहीं भूल गया। इस पर मूज़िओ ने अपने नौकर को हिन्दोस्तान का इसराज (दिलरुबा) लाने की आज्ञा दी। इस की रचना वायोलिन की तरह थी, सिर्फ चार के स्थान पर इस में तीन तारें थीं। इस के एक सिरे पर नीले रङ्ग के सांप का फण बना हुवा था, और दूसरे सिरे पर हीरे की चित्रकारी का काम था।

मूज़िओ ने पूरब के सब से अधिक गरिमाशाली देश भारतवर्ष की कुछ मधुर रागिनियां छेड़नी शुरू कीं। परन्तु फ़ेबिओ तथा वैलेरिया के इटैलियन कानों को ये पसन्द नहीं आईं, अपितु उन्हें इन में कुछ जङ्गलीपन की-सी झलक भी प्रतीत हुई। मूज़िओ बहुत हल्की स्वर में इसराज बजा रहा था, परन्तु जब उसने अपनी अन्तिम रागिनी छेड़ी, तो उसका स्वर कुछ उद्दीप्त हो उठा और राग के कम्पन बढ़ गए। यह एक बहुत ही अनुभूति-पूर्ण विषादमयी रागिनी थी। एक विचित्र समा बंध गया। ऐसा प्रतीत हुवा, जैसे वाद्य यन्त्र सजीव हो उठा है और अपना दिल चीर कर राग सुना रहा है। फ़ेबिओ और वैलेरिया के दिल भी साथ ही साथ कम्पन करने लगे, उनकी आंखों में आंसू भर

आए। मगर मूज़िओ को इस वक्त सभी कुछ भूल चुका था। वह इतना तन्मय था कि शायद उसे अपनी सत्ता का भी भान न रहा होगा। वह सिर नीचा कर के, अपने दिलरुबा पर ही नज़र जमाए हुए था। उस का हाथ हीरे से खचित स्थान पर बिजली की तेज़ी से दौड़ रहा था। धीरे धीरे ऐसा प्रतीत होने लगा कि मानों विश्व का सभी कुछ सजीव होकर रो उठा है। इसी समय अचानक यह राग समाप्त होगया; मूज़िओ ने इसराज को ज़मीन पर रख दिया। सहसा फ़ेब्रिओ आवेश में चिल्ला उठा—"ओह यह क्या! यह क्या बजाया तुम ने, जिसे सुन कर मेरा सम्पूर्ण शरीर रोमाञ्चित हो उठा है?"

वैलेरिया कुछ नहीं बोली, मगर उस का सम्पूर्ण शरीर इसी प्रश्न को सौगुना अधिक आतुरता के साथ पूछता हुवा प्रतीत होता था। मूज़िओ भद्रता के साथ मुस्कराया और गाते समय बिखर गए सिर के बालों को दायें हाथ से संभालता हुवा बोला—"यह गीत? यह रागिनी मैंने लङ्का में सुनी थी। वहां के लोग इसे 'प्रसन्नतापूर्ण विजयी प्रेम का गीत' कहते हैं।"

फ़ेबिओ ने साथ ही साथ कहा—"एक बार और बजाओ!"

मूज़िओ ने उत्तर दिया—"इस राग को एक साथ दो बार बजा सकना नामुमकिन है। अब देर भी बहुत होगई है। आप लोग आराम चाहते होंगे। मैं भी दिन भर का थका हुवा हूँ और अब आराम करना चाहता हूँ।"

वैलेरिया के साथ सारा दिन मूज़िओ का व्यवहार बहुत ही भद्रतापूर्ण सन्मान का रहा था, जैसे वे पुराने दोस्त हों। मगर जब वह इस समय वैलेरिया से विदाई लेने लगा, तो मूज़िओ ने उसकी हथेली में अपनी अंगुलियां बहुत आवेश के साथ दबायीं और उसके चेहरे की ओर आंखें गढ़ा कर देखा। यद्यपि वैलेरिया ने अपनी पलकों को ऊपर नहीं उठने दिया, तथापि उसके शर्म के मारे लाल होरहे गालों पर से यह साफ़ प्रतीत होता था कि वह मूज़िओ की इस समय की बदली हुई नज़र को समझ गई है। उसने अपना हाथ खींच लिया, मगर वह बोली कुछ नहीं। जब मूज़िओ दरवाज़े से बाहर चला गया, तब उसने दरवाज़े के बाहर, रात के कारण अन्धकाराच्छन्न होगए मार्ग की ओर भेदती हुई दृष्टि के साथ देखा। अब उसने सोचा—पिछले पांच सालों में भी तो वह इसी बात की कल्पना करके डरती रही है।...वह कुछ घबरा-सी गई। इस के बाद पति पत्नी सोने के लिये चले गए।

(४)

वैलेरिया को जल्दी नींद नहीं आई। उसका खून बड़ी तेज़ी के साथ गति कर रहा था, सिर भी घूमता हुआ अनुभव होता था। सोने से पूर्व उसने जो विचित्र शराब पी थी, शायद यह उसी का परिणाम हो। आज उसने मूज़िओ की अद्भुत बातें सुनी थीं, उस से भारतवर्ष की रागिनियां सुनी थीं—शायद सिर घूमने का यह भी एक कारण हो।

करीब तीन बजे जाकर उसे नींद आसकी। और उस दशा में भी उसने एक ख्वाब देखना शुरू किया उसने देखा —वह एक नीची छत वाले बड़े कमरे में मौजूद है। ऐसा कमरा उसने जन्म भर में और कहीं नहीं देखा। इस कमरे की सब दीवारें हल्का नीलापन लिए हुए सुनहरे रंग की हैं। छत सङ्गमरमर की है, जो चित्रित नक्काशी से बने हुए सुन्दर खम्बों पर आश्रित है। इस कमरे की दीवारें, छत, खम्बे, फ़र्श सभी चीज़ें अर्धपारदर्शक-सी प्रतीत होती हैं। इन में से गुलाबी रंग का हल्का-सा प्रकाश निकल कर सम्पूर्ण कमरे में एक समान रूप में व्याप्त होरहा है। शीशे के समान स्वच्छ और चिकने फ़र्श पर सोने की नक्काशी से चित्रित सुन्दर गलीचे बिछे हुए हैं। कमरे के कोनों में दो भयङ्कर जीवों की शक्ल के बत्तीदान पड़े हैं, और इन में कोई धूप की-सी चीज़ जल रही है, जिस से बहुत ही भीनी भीनी सुगन्ध उठ रही है। कमरे में कोई खिड़की नहीं है, दरवाज़ों पर जामनी रंग के रेशमी परदे पड़े हैं। वैलेरिया ने देखा—वह इस विचित्र कमरे में अकेली बैठी है। यह क्या ! अचानक परदा हटा और एक मनुष्य-मूर्त्ति कमरे में प्रविष्ट हुई। अरे, यह तो मूज़िओ है ? वह झुका, उसने अपनी बाहुएँ फैला दी और मुस्कराया। क्रमशः वह आगे बढ़ा और उसने वैलेरिया को अपने बाहुपाश में जकड़ लिया। वैलेरिया अपने सम्पूर्ण शरीर पर मूज़िओ के शुष्क ओठों का गरम स्पर्श अनुभव करने लगी। वह सहन न कर सकी और

गलीचे पर गिर पड़ी।

× × ×

गिरने के धक्के ने वह सपना तोड़ दिया। वैलेरिया चिल्लाकर जाग उठी। स्वप्न टूट जाने पर भी वह यह न समझ सकी कि वह इस समय कहां है। उस के शरीर भर में कपकँपी छूट गई। ओह, वह तो अपने पति फ़ेबिओ के निकट ही पड़ी है। फ़ेबिओ सो रहा है, कमरे में खुली चांदनी प्रवेश कर रही है, और चांद के मध्यम प्रकाश में फ़ेबिओ का चेहरा लाश के समान पीला दिखाई देरहा है। इस निद्रित चेहरे के भाव तो किसी लाश की अपेक्षा भी अधिक विषादपूर्ण हैं। वैलेरिया ने हाथ छुआ कर अपने पति को जगा दिया। उसने घबरा कर पुछा—"क्या बात है?"

वैलेरिया ने कांपते हुए जवाब दिया—"मैंने एक भयंकर सपना देखा है!"

मगर इसी क्षण दूर पर से, शायद बाग़ के परले किनारे से, संगीत की एक मधुर ध्वनि अस्पष्ट रूप में उन दोनों के कानों में पड़ी। दोनों ही इस रागिनी से भली प्रकार परिचित हैं। कल ही तो, दिल में समुद्र की-सी विशाल तरंगे पैदा करने वाला यह राग उन्हों ने सुना था। दूर पर, ब्राह्ममुहूर्त की इसशान्त वेला में मूज़िओ वही "विजयी प्रेम का संगीत" बजा रहा है। फ़ेबिओ ने देखा, वैलेरिया का मुंह तो बाहर की ओर है, मगर आंखें बन्द हैं।

वह भी चुपचाप बैठा रहा। दोनों तल्लीन होकर उस पवित्र गीत को तब तक सुनते रहे, जब तक वह समाप्त नहीं होगया। ज्यों ही, वह गीत समाप्त हुआ, उसी समय चांद बादलों की ओट में आगया और कमरे में अंधेरा होगया। पति-पत्नी दोनों ने अपना सिर सिरहाने पर डाल दिया, मगर मुंह से कोई कुछ नहीं बोला। न जाने किसे कब नींद आगई।

(५)

प्रातराश के समय मूज़िओ पुनः इन दोनों के पास आया। इस समय वह बड़ा प्रसन्न प्रतीत होता था। उसने बड़ी खुशी से वैलेरिया का अभिवादन किया। मगर वह कुछ अस्तव्यस्त-सी प्रतीत होती थी। उसने मूज़िओ के चेहरे का अध्ययन करना चाहा, और यह देखकर वह भी खुश होगई कि मूज़िओ के मुंह से प्रसन्नता टपक रही है। मूज़िओ पुनः अपनी यात्रा का वृत्तान्त शुरू करना चाहता था कि फ़ोबिओ ने उसे पहले ही वाक्य पर रोक दिया। उसने कहा—"यह स्पष्ट है कि इस नई जगह पर तुम्हें आराम की नींद नहीं आई। मैंने और वैलेरिया ने तुम्हें रात को गाते हुए सुना है।"

फेबिओ ने कहा— "क्या सचमुच तुम्हें भी मेरा गान सुनाई दिया था। हां, मैं गाया तो था, मगर उससे पहले खूब अच्छी नींद में सोया। रात मैंने एक अजीब स्वप्न देखा है।"

वैलेरिया के कान खड़े हो गए। उस ने पूछा—"किस ढंग का सपना?"

मूज़िओ ने वैलेरिया के चेहरे पर अपनी आंखें गढ़ाये रख कर जवाब दिया—"मैंने देखा कि नीची छत का, एक बहुत बड़ा और सुन्दर कमरा है। यह कमरा पूर्वीय देशों के ढंग पर सजाया गया है। इस की छत अनेक चित्रित खम्बों पर थमी हुई है। दीवारें पारदर्शक सुनहरी रंग की हैं। कमरे में यद्यपि कोई खिड़की या लैंप नहीं, तथापि वह गुलाबी रंग के प्रकाश से आलोकित है। उसके कोनों में सुगन्धित धूप जल रहे हैं और फर्श पर क़ीमती गलीचा बिछा हुआ है। इस कमरे के दरवाज़े का रेशमी परदा उठाकर मैंने अन्दर प्रवेश किया और इसी समय सामने के दरवाज़े का भी परदा उठ गया और उस मेंसे होकर एक सुन्दरी महिला ने इसी कमरे में प्रवेश किया। मैंने पहिचान लिया, यह तो वही महिला है, जिसे एक समय, मैं जीजान से प्यार करता रहा हूँ। स्वप्न में वह मुझे इतनी सुन्दरी प्रतीत हुई कि मेरा उस के प्रति बुझता हुआ प्रेम पुनः उद्दीप्त हो उठा।"

इतना कहकर मूज़िओ थोड़ी देर के लिए चुप हो गया। उसने देखा कि वैलेरिया के सांस की ध्वनि क्रमशः अधिक गहरी होती चली जारही है और उसका चेहरा पीला पड़ गया है। मूज़िओ पुनः बोला—"तब मेरी नींद उचट गई और मैंने इसराज बजाना शुरू कर दिया।"

फ़ेबिओ ने पूछा—"मगर वह स्त्री थी कौन ?"

"उस स्त्री के बारे में पूछते हो ? वह पंजाब में रहने वाले एक हिन्दोस्तानी की पत्नी थी। मैं उस से दिल्ली में मिला था। मगर अब वह ज़िन्दा नहीं है, उसका देहान्त हो चुका है।"

वैलेरिया स्पष्ट रूप में अनुभव कर रही थी कि मूज़िओ ने उस के पति के सवाल का झूठा जवाब दिया है !

फ़ेबिओ ने पूछा—"उसका पति आजकल कहां है ?"

मूज़िओ ने कहा—"सुना है कि उसका भी देहान्त हो चुका है। मुझे वे दोनों फिर कभी नहीं मिले।"

फ़ेबिओ ने कहा—"बड़ी अजीब बात है। आज वैलेरिया ने भी एक विचित्र-सा सपना देखा है, मगर वह उसने मुझे अभी तक सुनाया नहीं।"

मगर वैलेरिया इस पर भी कुछ नहीं बोली। वह उठकर दूसरे कमरे में चली गई। प्रातराश के बाद मूज़िओ ने कहा कि उसे एक विशेष काम से शहर में जाना है और वह सांझ से पहले वापिस नहीं लौट सकेगा।

(६)

मूज़िओ के आने से कई सप्ताह पहले फ़ेबिओ ने अपनी पत्नी का एक तैलचित्र बनाना शुरू किया था। इस चित्र में वैलेरिया की भावमुद्रा सन्त सेसिलिया के ढंग पर निर्माण की जा रही थी। फ़ेबिओ स्वयं भी निपुण चित्रकार था, उस पर, यह

चित्र बनाने में तो उसने फ़रारा के महान चित्रकार विन्सी के एक प्रधान शिष्य की भी सहायता ली थी, अतः यह चित्र बहुत ही अच्छा बन रहा था। चित्र लगभग समाप्ति पर था। केवल मुंह के भावों को अधिक अच्छी तरह व्यंजित करने की ही गुंजाइश थी।

आज, जब मूज़िओ फ़रारा के लिये चला गया, तो फ़ेबिओ अपनी चित्रशाला में पहुंचा। वैलेरिया प्रायः सदैव इस समय चित्रशाला में बैठकर उसकी प्रतीक्षा किया करती थी, मगर आज वह वहां मौजूद नहीं थी। फ़ेबिओ कुछ चिन्तित-सा होगया। वह उस की तलाश में निकला। उस ने घर के सम्पूर्ण कमरे देख डाले, परन्तु वह घर में नहीं थी। फ़ेबिओ बाग में गया। बाग़ के कोने के सघन कुंज में, एक शिलामूर्त्ति के नीचे वैलेरिया लकड़ी की बैञ्च पर अकेली बैठी हुई मिली। वह अपना सिर कोहनी पर टेक कर न जाने क्या सोच रही थी। पति को देखकर वह प्रसन्न हो उठी और फ़ेबिओ के पूछने पर उस ने जवाब दिया कि उसे मामूली-सा सिरदर्द अनुभव हो रहा था, इसी कारण वह बाग़ में चली आई। अब उसे कोई शिकायत नहीं और वह आराम के साथ चित्रशाला में बैठ सकती है।

अपने पति के कन्धे पर अपना बोझ देकर वैलेरिया चित्रशाला में आपहुंची और रोज़ की तरह अपनी कुर्सी पर बैठ गई। फ़ेबिओ ने उसके बाल आदि ठीक करके ब्रश उठाया और चित्र को पूरा करना शुरू किया। मगर उसे अनुभव हुवा कि आज यह

चित्र अभीष्ट रूप में नहीं बन सकेगा। वैलेरिया आज कुछ थकी हुई और पीली प्रतीत होरही थी, मगर चित्र न बन सकने का यह कारण नहीं था। असली कारण तो यह था कि फ़ेबिओ को आज वैलेरिया के मुख पर वह दैवीय और पवित्र भाव खोजने पर भी नहीं मिला, जिसका वह इतने दिनों से उपासक था। वैलेरिया की इसी स्वाभाविक दैवीय मुद्रा से आकर्षित होकर तो उस ने सन्त सेसिलिया के रूप में उसे चित्रित करना चाहा था। अन्त में निराश होकर उसने अपना ब्रश नीचे डाल दिया और कहा कि आज मेरी 'मूड' नहीं बन सकी। उसने वैलेरिया से यह भी कहा कि उसकी आंखों से थकावट के भाव प्रकट होरहे हैं, इसलिये उसे बैठे नहीं रहना चाहिये। वैलेरिया ने भी यह बात स्वीकार की और कहा कि मुझे पुनः सिरदर्द होने लगी है। इस के बाद वह अपने कमरे में सोने के लिये चली गई।

फ़ेबिओ अपनी चित्रशाला में ही बैठा रहा। आज उसे कोई ऐसा विचित्र भाव अनुभव होरहा था, जिसेवह खुद भी नहीं समझ सकता था। वह मूज़िओ को अपने यहां रहने के लिये स्वयं निमन्त्रित कर लाया था। अब वह सोचने लगा कि कहीं इस में ग़लती तो नहीं हुई। कहीं मूज़िओ वैलेरिया के प्रति ईर्ष्या के भाव तो नहीं रखता!

वह सोचने लगा—यह तो साफ़ है कि आज का मूज़िओ पुराना मूज़िओ नहीं है। आज वह जो कुछ बन आया है, वह

तो फेबिओ से बिल्कुल पराया, विचित्र और अदृष्टपूर्व है। वह उसका बचपन का मित्र मूज़िओ नहीं। उसकी रग रग में पूरब के देशों की गन्ध, पूरब का संगीत और पूरब का रहस्य आघुसा है। उस की पोशाक, रहन-सहन, बातचीत, श्वास-प्रश्वास— सभी कुछ विचित्र-से होगए हैं। और सब से अधिक विचित्र और अप्रिय प्रतीत हुआ उसे मूज़िओ का वह गूंगा नौकर। आज प्रातराश के समय वह उसकी ओर कितनी अप्रिय दृष्टि से घूर रहा था। इन सब बातों की याद ने फेबिओ के दिल में भय का-सा भाव उत्पन्न कर दिया। उसे याद आया कि मूज़िओ ने अपने इस गूंगे नौकर के सम्बन्ध में कहा था कि उसने अपनी जिह्वा कटवा कर उसके बदले में एक विशेष आश्चर्यजनक-शक्ति प्राप्त कर ली है। वह कौन सी शक्ति है ? और उसका जिह्वा की कुर्बानी के साथ क्या सम्बन्ध है ? यह सब बहुत ही विचित्र है, बहुत ही रहस्यमय है !

फ़ेबिओ अपने कमरे में नहीं बैठा रह सका। वह उठ खड़ा हुआ और अनायास ही वैलेरिया के कमरे में जा पहुँचा। वैलेरिया लेटी तो हुई थी, मगर सोई नहीं थी। अपने पति को देखते ही वह ठीक उसी तरह प्रसन्न हो उठी, जिस तरह बाग़ में हुई थी। फेबिओ निकट आकर उसके बिस्तरे पर ही बैठ गया और बड़े प्यार से वैलेरिया का हाथ अपने हाथ में पकड़ कर बोला— "कल रात जिस स्वप्न ने तुम्हें इतना डरा दिया था, वह क्या था?

कहीं वह मूज़िश्रो के स्वप्न के ढंग का तो नहीं था ?"

वैलेरिया का चेहरा लज्जा से लाल हो गया। वह घबरा गई और जल्दी जल्दी कहने लगी—"नहीं, नहीं! मैंने स्वप्न में एक राक्षस देखा था, जो मुझे निगल जाना चाहता था।"

फ़ेब्रिश्रो ने पूछा—"एक राक्षस ? क्या वह मनुष्य की शकल का था ?"

"नहीं, वह एक जङ्गली जीव, भयंकर जङ्गली जीव था।" बहुत जल्दी में इतना कह कर वैलेरिया ने अपना लज्जा से जलता हुआ चेहरा तकिये में छिपा लिया।

थोड़ी देरतक दोनों उसी दशा में चुपचाप बैठे रहे। वैलेरिया का हाथ अब भी फ़ेब्रिश्रो के हाथ में था। अन्त में फ़ेब्रिश्रो ने वैलेरिया का हाथ उठाया और उसे धीरे से अपने होंठों से लगा लिया। इस के बाद वह कमरे से बाहर चला गया।

पति और पत्नी दोनों का वह सारा दिन बहुत ही नीरस-सा रहा। ऐसा अनुभव होता था, जैसे उन पर कोई आपत्ति आने वाली है। मगर वह क्या है, इस सम्बन्ध में वे कुछ नहीं कह सकते थे। वे दोनों अपना दिल एक दूसरे के सामने खोल देने के लिये बार बार एक दूसरे से मिले, परन्तु इकट्ठे होजाने पर उन्हें यह भी समझ नहीं आता था कि बात क्या की जाय। बीच में फ़ेब्रिश्रो ने कोई और आसान चित्र बनाने का प्रयत्न किया, मगर 'मूड' अब के भी न बन पाई। इटली भर में उन दिनों एक कवि

की धूम थी। फ़ेबिओ उसकी रचनाएँ बहुत पसन्द करता था,—हार कर उसने उसी की कविताओं के एक सर्वश्रेष्ठ संग्रह की शरण ली। मगर आज वह महान कवि भी बेकाम का साबित हुआ। अन्त में, जब सांझ को सूर्य डूबे बहुत देर होगई थी, मूज़िओ शहर से वापिस लौट आया।

(७)

मूज़िओ इस समय शान्त और सन्तुष्ट प्रतीत होता था। आते ही वह फ़ेबिओ के साथ बचपन की मित्रता के दिनों की बातें करने लगा। अन्त में वह कहने लगा कि मैं नये पोप से मिलने के लिये रोम जाना चाहता हूँ। सोने से पहले उसने वैलेरिया के सामने कल वाली शीराज़ की शराब प्रस्तुत की, मगर उसने पीने से इन्कार कर दिया। इस पर मूज़िओ ने, जैसे वह खुद अपने ही से बोल रहा हो, कहा—"यह ज़रूरी नहीं कि आज ही पी जाय!"

रात अधिक होगई थी। सब लोग सोने के लिए चले गए। फ़ेबिओ को बहुत जल्द गहरी नींद आगई। मगर क़रीब एक घण्टा बाद ही उसकी नींद उचट गई। उसने बहुत ही आश्चर्य के साथ देखा कि वैलेरिया अपने बिस्तरे पर नहीं है। वह शीघ्रता के साथ उठ खड़ा हुवा। मगर इसी समय उसने देखा कि वैलेरिया बाग़ मेंसे कमरे में चली आरही है। उसने रात की पोशाक पहिन रक्खी है। आसमान में चांद चमक रहा था, मगर थोड़ी ही देर पहले एक

मामूली-से बादल ने हल्की हल्की बूंदें बरसाई थीं। वैलेरिया की आंखें खुली हुई थीं और उनमें से भय का भाव व्यक्त हो रहा था। उसने अपने हाथ सामने की ओर फैला रक्खे थे। वह सीधा अपने पलंग के निकट पहुँची और चुपचाप उस पर लेट गई। फेबिओ ने उस से कोई प्रश्न किया, परन्तु उसने कोई जवाब नहीं दिया। ऐसा प्रतीत होता था कि वह सोगई है। फेबिओ ने उसके शरीर का स्पर्श किया— उसने देखा कि वर्षा की बूँदों के कारण उसके कपड़े और बाल गीले हो रहे हैं, और उसके नंगे पैरों में रेत के कण लगे हुए हैं। तब वह शीघ्रता से बाग़ में चला गया। चांदनी में बाग़ का सभी कुछ मानो स्नान कर रहा था। फेबिओ मार्ग की ओर ग़ौर से देखने लगा। उसने पहिचाना, रेत पर दो व्यक्तियों के पैरों के निशान हैं, इन में एक के पैर नंगे हैं, और दूसरे ने जूता पहिन रक्खा है। ये दोनों निशान मूज़िओ के निवासस्थान की ओर जा रहे हैं।

फेबिओ को सूझ न पड़ा कि इस दशा में वह क्या करे। इसी समय मूज़िओ के निवासस्थान से उसी रागिनी की मधुर ध्वनि सुनाई पड़ने लगी। फेबिओ कांप गया और दौड़ कर उसी जगह पहुंचा। उस ने देखा कि मूज़िओ अपने कमरे के मध्य में खड़ा है और तन्मय होकर इसराज बजा रहा है। फेबियो ने चिल्ला कर कहा—"तुम अभी बाग़ में गए थे, तुम अभी बाहर थे। तुम्हारे कपड़ों पर वर्षा की बूँदें पड़ी हुई हैं।"

मूज़िओ अपने मित्र के इस तरह अचानक आजाने से घबरा गया। उस ने टूटती हुई आवाज़ में कहा—"नहीं... मुझे नहीं मालूम...मेरा ख्याल है...मैं घर से बाहर नहीं गया।"

फेबियो ने उसे बाहुओं से पकड़ कर ताने से कहा—"और इस समय तुम यह बाजा किस लिये बजा रहे हो। क्या आज भी कोई ख्वाब देखा है ?"

मूज़िओ अपने मित्र की तरफ़ आश्चर्य से देखता रहा, मगर उसने कोई जवाब नहीं दिया।

"मुझे जवाब दो !"

मूज़िओ धीरे धीरे मधुर स्वर के साथ एक गीत गुनगुनाने लगा—जैसे वह बेहोशी में गुनगुना रहा हो। उस गीत का अर्थ है—

"एक वृत्ताकार ढाल की तरह चांद आस्मान में चमक रहा है, नदी किसी सांप की तरह गोलमोल होकर पड़ी है। मित्र जाग रहा है, शत्रु सो रहा है। बाज़ ने मुर्गी के बच्चे को अपने पञ्जों में पकड़ लिया है। मदद करो ! मदद करो !"

फ़ेबिओ उसे छोड़ कर कुछ अन्तर पर जा खड़ा हुआ और कुछ देर तक मूज़िओ की ओर बड़े गौर से देखता रहा। इसके बाद वह अपने शयनागार में लौट आया।

वैलेरिया अपने सिर को बाएँ कन्धे की ओर झुका कर हाथ फैलाए हुए सोरही थी। फ़ेबिओ ने बड़ी कठिनता से उसे जगाया। जागते ही वह कांपने लगी और शीघ्रता से उसने अपना सारा

शरीर फ़ेबिओ के साथ सटा दिया। फ़ेबिओ ने बड़े प्यार से पूछा—"मेरी प्यारी ! सच बताओ, तुम्हें क्या बात दुख दे रही है ?"

मगर वह उसी तरह अपना बोझ फ़ेबिओ पर डाले चुपचाप पड़ी रही। थोड़ी देर बाद उसने अपना मुँह फ़ेबिओ के गले पर रख कर धीरे से कहा—"आह, मैंने कितना भयङ्कर नज़ारा देखा है !"

इस के बाद फ़ेबिओ ने उस से बात करने की कोशिश की, परन्तु उसने कोई जवाब नहीं दिया। केवल उसी तरह, कांपती हुई दशा में अपने पति से बिलकुल सिमट कर, पड़ी रही। घण्टों बीत गए, मगर दोनों को नींद नहीं आई।

घर की खिड़कियां जिस समय प्रातःकाल के प्रकाश से आलोकित होने लगीं, तब कहीं जाकर उन्हें नींद आसकी।

(८)

दूसरे दिन प्रातःकाल ही, बिना किसी से कुछ भी कहे सुने, मूज़िओ कहीं चला गया। वैलेरिया ने अपने पति से कहा कि वह नज़दीक के मठ में अपने आध्यात्मिक पिता से मिलने जाना चाहती है। वह एक वृद्ध और शान्दार पादरी थे। वैलेरिया को उ। में आगध विश्वास था। फ़ेबिओ ने पूछा कि वहां जाकर क्या करोगी। इसपर उसने जवाब दिया कि पिछले दिनों की बातों ने उसे उदास बना दिया है, इसलिये वे सब बातें अपने धर्मपिता से कह कर वह प्रसन्न बन सकेगी। फ़ेबिओ ने अनुभव किया कि

वैलेरिया की कान्ति कुछ बुझ-सी गई है और उस की आवाज़ धीमी पड़ गई है, इसलिए उस ने भी इस बात को पसन्द किया। उस ने सोचा कि शायद पिता लोरैन्ज़ो इसे शान्ति देसके और इसे कोई अच्छा साधन बता कर इस के सन्देह मिटा सके। अतः अपने चार नौकरों की रक्षा में उस ने वैलेरिया को मठ की ओर भेज दिया। मगर फ़ेबिओ स्वयं घर ही में रहा।

फ़ेबिओ घर पर रह कर ही अपनी पत्नी के लौट आने का इन्तज़ार करने लगा। वह अपने बाग़ में घूमफिर कर पिछले दो दिनों की घटनाओं पर विचार करने लगा। पिछली रात की घटना की याद से उस के हृदय में क्रोध, सन्देह और असीमित दुख का अनुभव होने लगा। वह कई बार मूज़िओ के घर में भी प्रविष्ट हुआ। वहां मूज़िओ नहीं था, केवल उस का गूँगा नौकर था जो हर बार चुपचाप फ़ेबिओ को घूरकर देखता था।

इस बीच में वैलेरिया ने सभी बातें अपने धर्मगुरु से कह दी थीं। ये बातें करते हुए, वह शर्म की अपेक्षा भय अधिक अनुभव कर रही थी। धर्मपिता ने उसकी बातें बड़े ध्यान के साथ सुनीं, उसे आशीर्वाद दिया और कहा कि तुम पापरहित हो। मगर वह अपने दिल में सोचने लगा—"अवश्य ही यह किसी जादू का प्रभाव प्रतीत होता है। इसे योंही छोड़ देने से काम नहीं चलेगा।" यह सोचकर उस ने वैलेरिया से कहा कि

वह उसे स्थायी शान्ति देने की इच्छा से स्वयं भी उस के निवास-स्थान पर चलेगा।

वृद्ध धर्मगुरु को अपने घर पर देख कर फ़ेबिओ कुछ चौंका। परन्तु अनुभवी वृद्ध ने पहले ही सोच लिया था कि उसे अपना कार्य किस ढंग से करना चाहिए। इस कारण जब उसे फ़ेबिओ से एकान्त में बात करने का अवसर मिला, तब भी उस ने वैलेरिया की सब बातें उस से नहीं कही। उसने फ़ेबिओ से इतना ही कहा कि तुम्हारे इस मेहमान ने अजीब अजीब ढग की बातें सुनाकर वैलेरिया को बहुत अधिक घबरा दिया है, इस लिए अच्छा हो कि आपने मित्र को तुम किसी प्रकार अपने यहां से विदा कर दो। उस ने यह भी कहा—"शायद मूज़िओ को अब अपने पवित्र धर्म पर भी पूरा विश्वास नहीं रहा। मूज़िओ इतने दिनों तक उन अभागे देशों में घूमता रहा है, जो ईसाइयत के ईश्वरीय प्रकाश से अभी तक वंचित हैं। इसी कारण शायद वह कुछ असत्य बातों पर भी विश्वास करने लगा है। मुमकिन है कि वह जादू टोने पर भी यक़ीन रखता हो। यद्यपि वह तुम्हारा पुराना मित्र है और इस कारण ही तुम ने उसे अपने यहां निमन्त्रित किया है, तथापि अपने घर की शान्ति को सुरक्षित बनाए रखने के लिये, अच्छा यह होगा कि तुम उसे कहीं और भेज दो।"

.फेबिओ भी धर्मपिता की सलाह से पूरी तरह सहमत था। जब उसने वैलेरिया को धर्मपिता की सलाह सुनाई तब स्पष्टरूप से

वह बहुत प्रसन्न हुई। धर्मगुरु लोरेन्ज़ो पति पत्नी की हार्दिक सद-भिलाषाएं और अपने मठ के लिये बहुत-सी भेंट लेकर वहां से विदा हुए।

फ़ेबिओ ने निश्चय किया था कि आज रात को भोजन के बाद वह रात की घटना के सम्बन्ध में मूज़िओ से कैफ़ियत तलब करेगा। मगर मूज़िओ बहुत रात बीत जाने पर भी वापिस नहीं आया। तब उसने निश्चय किया कि कल प्रातःकाल ही वह इस सम्बन्ध में मूज़िओ से बातचीत करेगा और इसके बाद वे दोनों सोने के लिये चले गए।

(६)

वैलेरिया को बहुत जल्दी नींद आगई, मगर आज फ़ेबिओ नहीं सो सका। अब तक उसने जो कुछ अनुभव किया था, जो कुछ देखा था, वह सब इस निशीथ वेला में उस के सामने और भी बड़ा और प्रत्यक्ष रूप धारण करके आ मौजूद हुआ। इस सन्नाटे में वह अधिक दृढ़ता के साथ खुद अपने आप से पूछने लगा—क्या मूज़िओ सचमुच जादूगर है? क्या उसने वैलेरिया को शीराज़ में कोई ज़हर मिला कर पिलाया है? तभी तो वह बीमार है.....मगर उसे बीमारी कौन-सी है? वह अपना हाथ सिरहाने पर रख कर अपना सिर उस पर सम्हाले हुए था, और यत्न पूर्वक अपने गरम श्वास को शब्दवान होने से रोके हुए था। इसी समय निर्मल आकाश में चन्द्रमा का उदय हुवा और उस

की स्वच्छ किरणें खिड़कियों के अर्ध पारदर्शक शीशों में से छन कर फ़ेबिओ के शयनगार में मध्यम-सा प्रकाश करने लगीं। इन किरणों के साथ ही साथ, फ़ेबिओ को दिखाई दिया कि बाग की तरफ से रंगदार सुगन्धित वायु का झोंका कमरे में आया है—सम्भव है कि यह फ़ेबिओ का मानसिक भ्रम हो। इस के बाद एक आग्रहपूर्ण और उत्तेजित हल्की-सी फुसफुसाहट कमरे में सुनाई पड़ने लगी और इसी समय फ़ेबिओ ने आश्चर्य के साथ देखा कि वैलेरिया निद्रित दशा में ही उठ खड़ी हुई है !

फ़ेबिओ अत्यधिक आश्चर्यान्वित होकर एकटक दृष्टि से देखने लगा—वैलेरिया उठ खड़ी हुई, उस ने अपने पैर बढ़ाने शुरू किये। उसके दोनों हाथ आगे की ओर फैले हुए थे। शायद वह अर्धनिद्रित अवस्था में थी, और अपनी लक्ष्यशून्य आंखों से सामने की ओर ताक रही थी। ऐसा प्रतीत होता था, जैसे कोई अदृश्य शक्ति जबरदस्ती से बाग की ओर खींचे लिए जा रही हो। एक क्षण तकतो फ़ेबिओ इस विस्मयकारक दृश्य को हतबुद्धि-सा हो कर देखता रहा और इस के बाद बिजली की तेज़ी से वह खिड़की में से बाहर फांद गया, और उसने बहुत जल्द कमरे का दरवाज़ा, जिस में से होकर वैलेरिया ने बाग़ में जाना था, बाहर से बन्द कर दिया। अभी कठिनता से वह सांकल ही लगा पाया था कि अन्दर से उसे ऐसी आवाज़ आने लगी, जैसे कोई दरवाज़ा खोलने का प्रयत्न कर रहा हो,—ज़ोर लगा रहा हो। यह आवाज़ बढ़ती गई

और अन्त में इस आवाज़ ने एक डरी हुई चीख़ का स्वरूप धारण कर लिया।

अचानक फ़ेबिओ को ध्यान आया—"मगर मूज़िओ तो इस वक्त तक लौटा नहीं था!"

वह मूज़िओ के घर की ओर भागा।

थोड़ी ही दूर पर उसने देखा—चांदनी से ढँके हुए राह की धूली पर मूज़िओ एक प्रस्तर मूर्त्ति की तरह, उस के शयनागार की तरफ़ अपनी दोनों बाहुएँ फैलाकर खड़ा है! फ़ेबिओ आश्चर्य-चकित रह गया। वह अभी कुछ नहीं कर पाया था कि मूज़िओ उसी दशा में घर की तरफ़ बढ़ा। ऐसा प्रतीत होता था, जैसे कि वह क़दम गिन गिन कर आगे बढ़ा रहा है। कुछ क़दम चल कर वह ठहर गया। फ़ेबिओ ने चांद के प्रकाश में देखा कि मूज़िओ के चेहरे पर मुस्कराहट है। फ़ेबिओ तेज़ी से चल कर मूज़िओ के निकट आ पहुंचा। वह उसे आवाज़ देकर बुलाना ही चाहता था कि उसे शयनागार की तरफ़ से ऐसी ध्वनि सुनाई दी, जैसे कोई खिड़की खोल कर बाहर आया हो।

सचमुच ही शयनागार की खिड़की पूरी तरह से खुली हुई थी, और उस में से होकर वैलेरिया बाहर, मूज़िओ की ओर, चली आरही थी। अभी तक उस के चेहरे पर वही भाव था। उस की बाहुएं सामने की ओर बढ़ी हुई थीं, जैसे मूज़िओ के निकट पहुँच जाने के लिए उसका सारा शरीर व्याकुल होरहा हो।

फ़ेब्रिश्रो को एकदम अत्यधिक तीव्र गुस्सा चढ़ आया। वह तीखी आवाज़ में चिल्लाया—"दुराचारी बदमाश!" अगले ही क्षण उस ने एक हाथ से मूज़िश्रो की गरदन पकड़ ली और दूसरे हाथ से अपनी कमर में से एक छुरी निकाल कर पूरे ज़ोर के साथ मूज़िश्रो की पसली में दे मारी।

मूज़िश्रो चीखा और अपने हाथों से कन्धे के सांघातिक घाव को पकड़ कर, लड़खड़ाती परन्तु भागती हुई टांगों से. वह अपने घर की तरफ़ लौट चला। ज्योंही मूज़िश्रो को छुरा लगा, उसी समय, मूज़िश्रो के साथ ही साथ वैलेरिया भी चीखी और अगले ही क्षण वह बेहोश होकर ज़मीन पर गिर पड़ी।

फ़ेबिश्रो दौड़ कर उस के निकट गया और उसे उठा कर अपने शयनागार में ले आया। मगर वह अभी तक बेहोश थी।

बहुत देर तक वह इसी दशा में पड़ी रही। अन्त में उस ने एक गहरी सांस लेकर अपनी आंखें खोल दीं। इस समय वह बहुत प्रसन्न प्रतीत होती थी; जैसे कोई आदमी मौत के मुंह से बचा लिया गया हो। आंखें खोलते ही उसकी निगाह अपने पति पर पड़ी। उसे देखते ही उसने अपनी बाहुएँ उसके गले में डाल दीं और अपने मुंह को उसकी छाती से सटा कर वह बहुतही आवेशपूर्ण परन्तु क्षीण स्वर में बोली—"तुम! तुम! तुम! आखिर तुम्हीं हो न?"

कुछ देर बाद उसने अपनी बाहुश्रों का बन्धन ढीला कर

दिया और अपना सिर सिरहाने पर डाल कर कहा—"ईश्वर का धन्यवाद है कि सब कुछ समाप्त होगया। मगर मैं बहुत थक गई हूँ।" इस के बाद उसे गहरी नींद आगई।

(१०)

फ़ेबिओ भी लेट गया, मगर उसे नींद नहीं आई। कुछ देर तक वह वैलेरिया के पीले, थके हुए परन्तु शान्त चेहरे की ओर देखता रहा। इस के बाद वह इस सम्पूर्ण घटना के सम्बन्ध में सोचने लगा—'यह सब क्या होगया? मुझे अब क्या करना चाहिये?' उसे ध्यान आया—'मैंने जितनी ज़ोर से मूज़िओ को छुरा मारा था, उस से तो उसे अब तक मर ही जाना चाहिए। अगर वह सचमुच मर गया हो, तो क्या होगा। इतनी बड़ी बात छिप तो सकेगी नहीं।' उसने सोचा—'मैं स्वयं ही गवर्नर से तथा जजों से यह सब बात कह दूँगा। मगर उन्हें मूज़िओ की मृत्यु का कारण कैसे समझाऊँगा? मुझे खुद तो यह सारा काण्ड समझ आया नहीं! मैंने अपने सब से घनिष्ट मित्र को, खुद अपने ही घर पर मार दिया है। लोग पूछेंगे—"यह किस लिये? कारण क्या था?"—मैं क्या जवाब दूँगा।'

"परन्तु यदि मूज़िओ मरा न हो तो?" फ़ेबिओ के हृदय में यह जानने की तीव्र अभिलाषा उठ खड़ी हुई कि मूज़िओ ज़िन्दा है या मर गया। यह देख कर कि वैलेरिया गहरी नींद में सोरही है, वह सावधानता के साथ उठ खड़ा हुआ और मूज़िओ के घर

की ओर चल दिया। वहां पहुंच कर उसने देखा कि सब तरफ़ सन्नाटा है, केवल एक खिड़की मेंसे हलका-सा प्रकाश आरहा है। चांदनी में उसने देखा कि सारे मार्ग पर खून के निशान हैं, और दरवाज़े के पास तो बहुत-सा खून जमा हुआ है। बुझे हुए दिल से फ़ेबिओ ने बाहर का दरवाज़ा खोला। पहले कमरे में अन्धकार था। बड़ी सावधानता से इसे पार कर के वह उस कमरे की देहली पर पहुंचा, जिस मेंसे प्रकाश आरहा था। इस कमरे में प्रवेश करते ही फ़ेबिओ आश्चर्यित रह गया।

उस ने देखा—कमरे के बीचोंबीच .फारस के बने एक गलीचे पर, एक जामनी शाल ओढ़े हुए मूज़िओ पड़ा है। उस का रंग हलदी की तरह पीला पड़ गया है। आंखें बन्द हैं, और पलकें नीली हो गई हैं। उस का शरीर कसी हुई-सी दशा में पट होकर पड़ा है। नाक ठीक छत की सीध में है। श्वास प्रश्वास का भी कोई चिन्ह प्रतीत नहीं होता, जैसे कोई लाश पड़ी हो। मूज़िओ के पैरों के पास ही उसका गूंगा नौकर एक जामनी शाल लपेट कर घुटने के बल बैठा था। उसके हाथ में कोई अज्ञात औषधी थी, जो एक छोटी-सी झाड़ी की तरह प्रतीत होती थी। वह एक-टक और स्थिर दृष्टि से अपने मालिक की ओर देख रहा था। पास ही फर्श पर एक मशाल जल रही थी, इस का प्रकाश हरा था; इस की ज्वाला बिल्कुल स्थिर थी और इस मेंसे धूआं नहीं निकलता था।

फेबिश्रो के कमरे में आने पर भी वह नौकर बिल्कुल नहीं हिला। केवल एक झपकी से उसकी तरफ़ देखकर वह पहले की तरह अपने स्वामी के चेहरे की ओर देखने लगा। थोड़ी थोड़ी देर बाद वह ज़रा-सा उठता था और उस झाड़ी को मूज़िओ की ओर झुका कर कुछ मन्त्र गुनगुनाने लगता था। फ़ेविश्रो को कुछ भी सुनाई नहीं देता था, केवल उसके होंठ हिलते हुए दिखाई देते थे। फ़ेविश्रो जहां खड़ा था उसके और मलाया नौकर के बीच में वह छुरा पड़ा था, जिससे मूज़िओ को जख़्मी किया गया था। थोड़ी देर बाद मलाया ने अपनी झाड़ी उस खून से भरी छुरी को छुआ दी।

एक मिनट गुजर गया, दो मिनट गुज़र गए। मगर कुछ न हुआ। तब फ़ेविश्रो ज़रा और आगे बढ़ा और उसने मलाया से पूछा—"क्या वह मर गए हैं?"

मलाया ने मुंह से कोई जवाब न देकर ज़रा-सा सिर झुकाया और शाल मेंसे अपना हाथ निकाल कर फ़ेविश्रो को दरवाज़े से बाहर चले जाने का संकेत किया। फ़ेविश्रो अपना प्रश्न दोहराना चाहता था, मगर मलाया अभी तक हाथ के इशारे से उसे बाहर चले जाने का निर्देश देरहा था। फ़ेविश्रो को गुस्सा तो बहुत आया मगर बिना कुछ भी कहे वह दरवाज़े से बाहर होगया।

शयनागार में आकर उसने देखा कि वैलेरिया उसी प्रकार सो रही है। इस समय उसका चेहरा और भी अधिक सन्तुष्ट

प्रतीत होता था। इस वार वह अपनी आरामकुर्सी पर लेट गया और इस घटना के सम्बन्ध में विचार करने लगा। क्रमशः सूरज निकल आया। वैलेरिया इस समय भी सोरही थी।

(११)

फ़ेविश्रो वैलेरिया के जागने की प्रतीक्षा कर रहा था। उसका विचार था कि आज हम दोनों शहर को जाएंगे। इसी समय किसी ने उसका दरवाज़ा खटखटाया। फ़ेविश्रो ने दरवाज़ा खोल कर देखा कि यह उस का बूढ़ा अर्दली एण्टोनिश्रो था।

बूढ़े ने कहा—"हजूर, मलाया ने कहा है कि जनाब मूज़िश्रो बीमार हैं और वह अपने सारे सामान के साथ शहर में चले जाना चाहते हैं। इस लिये वह आप से कुछ आदमी मांगते हैं, जो उनका सामान वन्द कर दें और दोपहर के भोजन के वाद उन्हें घोड़े, खच्चर और कुछ शरीर-रक्षक मिल जाएं—जिस से कि वे फ़ारा के लिये प्रस्थान कर सकें। अगर आप की आज्ञा हो तो इन बातों का प्रवन्ध किया जाए।"

फ़ेविश्रो ने पूछा—"मलाया ने यह बात तुझे कही किस प्रकार? वह तो गूंगा है।"

अर्दली ने एक काग़ज़ दिखाते हुए कहा—"जनाब, यह बात उस ने मुझे इस काग़ज़ पर लिख कर दी है। यह मज़मून शुद्ध इटैलियन भाषा में लिखा गया है।"

"क्या मूज़िश्रो बीमार है?"

"जी हां, बहुत बीमार हैं। उन्हें देखने से भी मना किया गया है।"

"क्या कोई डाक्टर नहीं बुलाया गया ?"

"नहीं जी, मलाया ने मुझे डाक्टर बुलाने से मना कर दिया है।"

"क्या यह चिट्ठी मलाया ने खुद ही लिखी है ?"

"जी हां।"

कुछ देर तक चुप रहने के बाद फ़ेबिओ ने कहा—"बहुत अच्छा। जैसे वह कहता है, वैसा ही करो।"

अर्दली चला गया।

फ़ेबिओ हैरान होने लगा। उस ने सोचा—क्या मूज़िओ ज़िन्दा है ? मैं तो उसे अभी लाश की-सी दशा में देख कर आया था। मलाया कहता है कि वह बहुत बीमार है। फ़ेबिओ को समझ न आया कि इस समाचार से खुश होना चाहिये या दुखी।

वह वैलेरिया के निकट गया। वैलेरिया इस वक्त तक जाग चुकी थी। दोनों ने एक दूसरे को बहुत ही अर्थपूर्ण दृष्टि से देखा। वैलेरिया ने अचानक पूछा—"क्या वह मर गया ?"

फ़ेबिओ कांप गया।

वैलेरिया कहने लगी—"क्या.........नहीं मरा ? क्या तुमने......क्या वह चला गया है ?"

फ़ेबिओ को कुछ शान्ति मिली। उसने कहा—"अभी गया तो नहीं, मगर आज चला जाएगा।"

"मैं उसे अब कभी नहीं, बिल्कुल नहीं, देखूंगी!"

"नहीं।"

"वे नज़ारे तो मुझे फिर नहीं देखने होंगे?"

"नहीं।"

वैलेरिया ने सन्तोष का एक श्वास लिया। उस के चेहरे पर मधुर मुस्कराहट दिखाई दी। उस ने अपने दोनों हाथ फ़ेबिओ के लिए फैला दिया।

इस के बाद वह कहने लगी—"हम कभी उस के सम्बन्ध में बात भी नहीं करेंगे। जब तक वह यहां से चला नहीं जाएगा, मैं इस कमरे से बाहर भी नहीं निकलूँगी। ज़रा मेरी नौकरानी को तो भेज दो। मगर ज़रा ठहरो—इसे लेते जाओ।" यह कह कर उस ने मूज़िओ का दिया हुआ वह कीमती मोतियों का हार उतार कर फ़ेबिओ को दे दिया और बड़े आवेश के साथ कहने लगी—"इसे लेजाओ, और किसी गहरे, अन्धेरे कूएं में गिरवा दो! मेरे प्यारे, मैं केवल तुम्हारी हूँ, तुम्हारी! जाओ, पहले उस आदमी को निकाल आओ, फिर यहां आओ।"

फ़ेबिओ ने वह हार लेलिया, उस के मोती कुछ मैले-से-होगए प्रतीत होते थे। वैलेरिया की इच्छानुसार वह हार उस ने बाग़ के कुएं में फेंक दिया। इस के बाद वह बाग़ में ही टहलने लगा। उसकी नज़र मूज़िओ के घर की तरफ़ थी। वहां सामान बंधना शुरु हो चुका था और सामान के पैक होने की आवाज़ फ़ेबिओ

के कानों में आरही थी। उस के नौकर सन्दूक उठा रहे थे और उन्हें घोड़ों पर लाद रहे थे। परन्तु इन में मलाया नहीं था। फ़ेविओ के दिल में यह जानने की पुनः प्रबल इच्छा उत्पन्न हुई कि अब मूज़िओ के साथ क्या बीत रही है। उसे याद आया कि उस घर के पिछवाड़े में एक चोर दरवाज़ा है, जो उसी कमरे में जाकर खुलता है। वह वहां गया और उस दरवाज़े मेंसे होकर मूज़िओ के कमरे के निकट पहुंच गया। दरवाज़े का परदा उठा कर उस ने अन्दर की ओर झांका।

(१२)

मूज़िओ अब गलीचे पर नहीं लेटा हुआ था। वह यात्रा की पोशाक पहिन कर एक आरामकुर्सी पर बैठा हुआ था। मगर उसका चेहरा इस समय भी किसी लाश के चेहरे के समान ही प्रतीत होता था। उस का सिर पीछे की ओर, कुर्सी के सहारे पड़ा था। हाथ निर्जीव से होकर पड़े थे और छाती में श्वास प्रश्वास की कोई गति दिखाई नहीं देती थी। फर्श पर, कुर्सी के चारों ओर, बहुत-सी औषधियां पड़ी थीं, और बीच बीच में प्याले रक्खे हुए थे, जिनमें कोई काली-सी चीज़ डाली हुई थी। कमरे भर में एक बहुत ही तेज़, करीब करीब दम घोटने वाली, गन्ध भरी हुई थी। मूज़िओ के सामने जो प्याले रक्खे थे, उन के चारों ओर ताम्बे के रंग के सांप मढ़े हुए थे, जिन पर सुनहरी रंग के अनेक दाग़ थे। उस से कुछ कदमों की दूरी पर विशालकाय

मलाया खड़ा हुआ था। उस ने एक अजीब-सी पोशाक पहिनी हुई थी और अपनी कमर में शेर की पूँछ पेटी की जगह लपेट रक्खी थी। सिर पर पगड़ी के आकार का एक प्याला रक्खा हुआ था, जिस में सींग लगे हुए थे।

मगर वह निश्चेष्ट नहीं था। पहले वह समाधिस्थ और ध्यान-मग्न-सा होकर ईश्वर-प्रार्थना करता हुआ मालूम पड़ा; इसके बाद वह अपने हाथ पूरे ज़ोर से ऊपर खींच कर पंजों के बल पर खड़ा होगया। अन्त में एक बार इधर उधर फैला कर उसने अपने हाथ मूज़िओ की ओर बढ़ा दिए, जैसे वह कोई आदेश दे रहा हो। उस की भवें संकुचित होगई थीं और वह अपने पैर ज़मीन पर मारने लगा था। यह स्पष्ट था कि यह सब करने में उसे बहुत अधिक शक्ति का प्रयोग करना पड़ रहा है। वह थका हुआ प्रतीत होता था, उसका श्वास बहुत वेग से चल रहा था और मुँह से पसीने की धार छूट रही थी। अचानक वह एक स्थान पर जम कर खड़ा होगया। उसने अपने फेफड़ों में अधिकतम हवा भर ली और तब भवें चढ़ा कर अपनी अकड़ाई हुई बन्द मुट्ठी को मूज़िओ की ओर इस तरह हिलाने लगा, जैसे उसने कोई लगाम संभाली हुई हो।

फ़ेबिओ यह देखकर डर गया कि उसके हाथ की गति के साथ ही साथ मूज़िओ का सिर अपने आप ही कुर्सी पर से उठ गया, जैसे कोई अदृश्य तार उसे सामने की ओर खींच रही हो।

मलाया ने अपने हाथ नीचे गिरा दिए और इसके साथ ही मूज़िओ का सिर भी कुर्सी पर पहले की तरह झुक गया। मलाया ने अनेक वार यह क्रिया की और प्रत्येक वार मूज़िओ के सिर ने उसका हुक्म माना। इसी समय सभी प्यालों में रक्खा हुआ वह काला काला द्रव हल्की आवाज़ के साथ खौलने लगा। यहां तक कि थोड़ी ही देर में स्वयं प्याले भी उछल उछल कर शब्द करने लगे और तांबे के सांप उनके चारों ओर घड़ी के पैण्डुलम की तरह हिलने लगे। तब मलाया एक क़दम और आगे बढ़ा। अपनी भवें ऊपर चढ़ा कर उसने अपनी आंखों को अधिकतम चौड़ा कर खोला और इस दशा में मूज़िओ के सामने सिर झुकाया। आश्चर्य की बात है कि इस के साथ ही साथ मूज़िओ के शव ने भी अपनी आंखें हिलानी शुरू कर दीं। मलाया के मुँह पर विजय की प्रसन्नता छा गई, उस का थका हुआ चेहरा खिल उठा। उसने अपने होंठ खोले और वह धीरे से कुछ बोला। महान आश्चर्य! साथ ही साथ मूज़िओ ने भी अपने होंठ खोल दिए और हल्की-सी आवाज़ में वह कराहा।

फ़ेबिओ और अधिक नहीं देख सका। ये सब काम उसे किसी आसुरी माया के समान भयङ्कर जान पड़े और वह भयभीत होकर चिल्ला उठा। फ़ेबिओ उल्टे पांव अपने घर की ओर भागा और अपने को इस जादू के प्रभाव से बचाने के लिये ईश्वर से प्रार्थना करने लगा।

(१३)

तीन घण्टे बाद वही अरदली पुनः फ़ेबिओ के पास आया और उसने सूचना दी—"यात्रा की पूरी तैयारी होगई है। सारा सामान बँध चुका है और जनाब मूज़िओ भी सफ़र के लिये तैयार हैं।"

फ़ेबिओ अपने नौकर से इस सम्बन्ध में कोई प्रश्न करने का साहस नहीं कर सका। वह धीरे धीरे आंगन की उस जगह पर जा खड़ा हुआ, जहां से मूज़िओ का निवास-स्थान भली प्रकार दिखाई पड़ता था। उसने देखा, वहां अनेक लदे हुए घोड़े खड़े हैं। दरवाज़े पर एक ज़बरदस्त काला घोड़ा तैयार खड़ा था। इस पर एक बड़ी, दो व्यक्तियों को बैठाने लायक, काठी पड़ी थी। वहां अनेक नौकर भी खड़े थे, जिन के सिर नंगे थे। प्रत्येक की कमर में कोई न कोई हथियार लटक रहा था।

घर का दरवाज़ा खुला और अपने मलाया नौकर का सहारा लेते हुए मूज़िओ बाहर आया। उस का चेहरा इस समय भी शव के समान प्रतीत होता था। उस के हाथ भी निर्जीव-सी दशा में लटक रहे थे। मगर वह चल रहा था,—सचमुच चल रहा था। एक के बाद एक कदम रखते हुए वह घोड़े पर सवार होगया और उसने लगाम संभाल ली। मलाया भी कूद कर उसी घोड़े पर सवार होगया और उसने मूज़िओ की कमर में हाथ डाल कर उसे संभाल लिया। तब वह सारा जलूस रवाना होगया।

घोड़े मामूली चाल से चलते हुए फ़ेबिओ के घर के निकट आ पहुंचे। जब वे नज़दीक आगए तो फ़ेबिओ ने देखा कि मूज़िओ के काले चेहरे पर दो सफ़ेद निशान चमक रहे हैं। उस ने सोचा, क्या मूज़िओ की आंखें इस प्रकार की हो गई हैं!

जब वे और भी निकट आगए तो मलाया ने साधारण तौर से फ़ेबिओ को नमस्कार किया। परन्तु मूज़िओ उसी प्रकार बैठा रहा।

क्या वैलेरिया ने भी यह सब कुछ देखा? उसकी खिड़की तो बन्द थी, मगर शायद उसके पीछे खड़ी रह कर वह मूज़िओ का यह जलूसयुक्त निर्वासन देख रही थी।

(१४)

भोजन के समय वह खाने की टेबल पर पहुंची। इस समय वह पूर्णतः शान्त और सुन्दर प्रतीत होती थी। अब भी वह थकी हुई अवश्य थी। मगर वह अब विचलित, डरी हुई या चकित नहीं रही थी। भोजन के बाद वह स्वयं सदा की तरह चित्रशाला में जा बैठी। फ़ेबिओ को मुद्दत के बाद आज उसके चेहरे पर उसी पवित्र और दैवीय भाव की सुन्दर झलक दिखाई दी, जिसका वह शुरू से उपासक था। वह अपना चित्र पूर्ण करने लगा।

पति पत्नी पहले की तरह अपना जीवन बिताने लगे। मूज़िओ की याद को वे शीघ्र ही भूल गए। वह उनकी दृष्टि में

मर गया था। दोनों ने एक दूसरे से यह समझौता कर लिया था कि वे कभी एक दूसरे को उस जादूगर की दुखपूर्ण याद नहीं दिलाएंगे। उन्होंने उस का भविष्य जानने का भी प्रयत्न नहीं किया। मूज़िओ कहां चला गया, और उसके साथ क्या बीती, इसे फ़रारा का कोई अन्य निवासी भी नहीं जान सका।

बहुत समय बीत जाने पर फ़ेब्रिओ एक दिन जानबूझ कर वैलेरिया को उस घटनापूर्ण रात की बातें सुनाने लगा। उसका .ख्याल था कि अब वैलेरिया इसे शान्त भाव से सुन सकेगी। परन्तु यह प्रकरण शुरू होते ही वैलेरिया का चेहरा पीला पड़ गया और उसकी आंखें इस तरह झपक गईं, जैसे कोई उस पर प्रहार करने लगा हो। फ़ेब्रिओ समझ गया कि घाव अब भी गीला है; वह बात को बड़ी बुद्धिमत्ता से टाल गया।

शिशिर ऋतु की एक सुन्दर प्रातःकाल फ़ेबिओ अपनी चित्र-शाला में बैठ कर कोई चित्र बना रहा था और वैलेरिया निकट ही बैठी हुई अपना वायोलिन बजा रही थी। अचानक उसकी अंगुलियां वायोलिन में से विजयी प्रेम की वही रागिनियां निकालने लगीं, जिन्हें समस्त इटली भर में केवल मूज़िओ ही निकाल सकता था। अपने विवाह के बाद से अभी तक, आज जाकर उसे जो हार्दिक उल्लास और नया जीवन अनुभव हुआ, वह उसे पहले कभी नहीं हुआ था।

इस का अर्थ क्या है ? क्या यह घटना..............."

× × ×

बस; वह हस्तलेख यहां आकर समाप्त हो जाता है।

जिरेसिम

मास्को शहर के बाहर के हिस्से में एक सम्पन्न महिला रहा करती थी। यह बड़ी उम्र की विधवा इस समय बिल्कुल अकेली थी। उसके लड़के बड़े होकर सरकारी नौकरी, उर्फ़ अफ़सरी कर रहे थे और लड़कियां विवाह करके अपने पतियों के पास रहती थीं। विधवा का कोई निजू कुटुम्बी उसके पास न रहता था; मगर उसके घर में दास दासियों की बड़ी भरमार थी। धनसम्पन्न होने पर भी इस नारी का यौवन सुख से नहीं बीता था और आजकल धन धान्य, घर बार आदि सभी कुछ मौजूद रहने पर भी उसका जीवन बिल्कुल निरानन्द था।

उस के नौकरों में जिरेसिम नाम का एक व्यक्ति अत्यधिक उल्लेखनीय था। यह जन्म का निपट बहरा और इसी लिये गूँगा भी था। परन्तु इन दो इन्द्रियों के बदले में ईश्वर ने उसे दिल खोल कर ताकत दे डाली थी। जब मैं कहता हूँ कि जिरेसिम का कद साधारण मनुष्यों से एक फीट ऊंचा था और उसमें चार मनुष्यों के समान शक्ति थी, तो आप विश्वास कीजिए कि मैं जरा भी अत्युक्ति नहीं कर रहा होता। पहले उसकी मालकिन ने उसे एक गांव में रक्खा हुआ था; वहां वह आसामियों से लगान वसूल किया करता था और खाली समय में अपने हृष्टपुष्ट हाथों से खेती-बाड़ी किया करता था। हल खींचने में उसके घोड़ों को जितनी शक्ति लगानी पड़ती थी, उतनी शक्ति वह उसमें अपनी ओर से भी सम्मिलित कर देता था। नतीजा यह होता था कि उसकी एक ही जोत दो जोतों का काम दे जाती थी। वह जो काम करता था, बड़े मनोयोग और सामर्थ्य के साथ करता था, इस पर उसकी निरन्तर चुप्पी कार्य की मर्यादा को और भी अधिक गम्भीरता का स्वरूप दे देती थी। जिरेसिम में सभी गुण थे। यह निश्चित है कि यदि वह गूँगा और बहरा न होता तो कोई भी किसान कन्या उसे पति के रूप में वरण करके अपने को सौभाग्यशाली मानती। मगर देवता के प्रकोप से वह बहरा और गूँगा दोनों ही था, इसलिये वह अभी तक अविवाहित था।

कुछ ही समय पूर्व जिरेसिम की मालकिन ने उसे गांव से

मास्को में बुला लिया था और यहां उसे दरबान के काम पर नियुक्त कर दिया था। मास्को पहुंचते ही उसे एक नया बूट, एक शहरी कोट और ओढ़ने के लिये भेड़ की खाल ले दी गई। इन वस्तुओं को धारण कर वह गंवार से नागरिक बन गया। परन्तु जिरेसिम को यह नागरिकपना ज़रा भी पसन्द नहीं आया। शहर का रहन-सहन उसे कैदखाने का रहन सहन प्रतीत हुआ। वह बहरा था, इस लिए जब उसे मालिक का कारिन्दा अपने साथ गांव से मास्को की ओर ले जारहा था, तब वह यह नहीं समझ सका था कि आखिर उसे कहां लेजाया जारहा है। राह भर में वह बहुत ही दुखी और किंकर्तव्यविमूढ़-सा रहा था। ठीक इस तरह से जैसे किसी मोटे ताज़े सांड को कच्चे गेहूं के हरेभरे खेतों मेंसे पकड़ कर ज़बरदस्ती, मालगाड़ी के चारों ओर से ढके हुए अन्धकारपूर्ण और गरम डिब्बे में बन्द कर दिया गया हो; रेलगाड़ी धकधक करती और सीटियां बजाती उसे उड़ा लिए जा रही हो और वह शक्ति-शाली विशालकाय जन्तु मातृहीन बछड़े की तरह से 'बां, बां' कह कर पुकारने लगे।

यहां उसके दो काम थे। सुबह आंगन को बुहारना और उस के बाद फावड़ा लेकर फाटक पर बैठे रहना। भला जिरेसिम जैसे ताकतवर आदमी के लिये यह भी कोई काम था। झाड़ू देना भी कोई ताकत का काम है! यह काम तो कोई छप्पन साल की बुढ़िया भी कर सकती है। फिर अर्दली जैसा निठल्ला और कौन

हो सकता है। दरवाज़े पर मक्खियां भी तो नहीं होतीं कि पकड़ पकड़ कर उन्हीं को मारा करे। जिरेसिम को मास्को का कुछ भी पसन्द नहीं आया। अर्दली के काम से जा समय बच रहता, उसे वह अपने निर्जन कमरे में, .फर्श पर पट पड़े रह कर चुपचाप काट देता। बात तो वह कर ही नहीं सकता था, काम करता था, सो मालकिन ने छीन लिया।

परन्तु धीरे धीरे खुदबखुद ही उसने अपने काम बढ़ा लिये। वह पानी भर कर लाने लगा। रसोईघर के सब नौकर लकड़ी फाड़ने के काम को एक दूसरे पर डालना चाहते हैं, यह देख कर एक दिन उसने स्वयं कुल्हाड़ा उठा कर बहुत थोड़े समय में यह काम समाप्त कर दिया। उस दिन के बाद से लकड़ियां काटना भी उसी का काम होगया। थोड़े ही दिनों बाद खुदबखुद रात के पहले हिस्से में वह पहरा भी देने लगा। इस तरह से अपने लिए अनेक काम निकाल लेने पर अब जिरेसिम को अपना मास्को का जीवन भी उतना कष्टप्रद नहीं प्रतीत होने लगा।

मास्को के उस भाग की गलियों के सम्पूर्ण निवासी शीघ्र ही जिरेसिम की असाधारण शक्ति से परिचित होगए। एक दिन बरसात के कारण पास की गली में बहुत कीचड़ जमा होगया था। जिरेसिम अपने टट्टू पर पानी के पीपे लाद कर चला आ रहा था कि अचानक टट्टू कमर तक कीचड़ में जा धँसा। गली भर के लोग यह तमाशा देखने के लिये आ जुटे। जिरेसिम को यह

देख कर इतना जोश आया कि उसने अपनी बलिष्ट बाहुओं मे टट्टू को उठा कर कीचड़ के बाहर रख दिया। एक और दिन जिरेसिम के पहरे में दो चोर उस मकान में चोरी करने आए। उन्हें मालूम था कि पहरेदार बहरा है, इस लिये हम लोग बेफ़िक्र होकर चाहे जितनी आवाज़ कर सकते हैं, सिर्फ़ उसकी नज़र से बचे रहना चाहिए। परन्तु जिरेसिम इतना सतर्क रहता था कि उससे बच सकना बड़ा कठिन था। उसने इन दोनों चोरों को देख लिया। वे भागे तो सही मगर शीघ्र ही पकड़ लिए गए। दोनों हाथों में एक एक चोर को पकड़कर जिरेसिम ने उन दोनों के सिर आपस में इतनी ज़ोर से टकरा दिए कि फिर उन्हें पालीस के सुपुर्द करने की ज़रूरत ही नहीं रह गई।

इन दोनों घटनाओं से जिरेसिम की ख्याति सब ओर फैल गई। यहां तक कि दिन के समय भी जो अजनबी मकान के अन्दर आता था, वह बड़े भद्रतापूर्ण इशारों से जिरेसिम को अपने भलेमानस होने की बात अवश्य कह देता था। मगर इस की कोई आवश्यकता नहीं थी। जिरेसिम खुद भी इतना समझदार अवश्य था कि वह अकारण ही किसी को कष्ट नहीं पहुंचा सकता था। विधवा के और सब नौकर भी उससे डरते थे। उनमें कोई उसका मित्र नहीं था, फिर भी कोई उसका कुछ बिगाड़ने का प्रयत्न भी नहीं करता था। जिरेसिम और लोगों से घनिष्टता बढ़ाने का प्रयत्न ही नहीं करता था; मगर घर के अन्य नौकरों को

वह अपना समझ कर उनके प्रति सद्भाव अवश्य रखता था।

जिरेसिम गूँगा और बहरा था। इसी कारण स्वभावतः इशारों को समझने की उसमें असाधारण शक्ति थी। नौकरों को मालूम था कि जिरेसिम को क्या क्या बातें नापसन्द हैं, इस लिए वे वैसी बातें स्वयं ही नहीं करते थे। फाटक पर उसका जो स्टूल पड़ा रहता था, उस पर उसकी अनुपस्थिति में भी कोई व्यक्ति बैठने का साहस नहीं कर सकता था। यह उसी की गद्दी थी, इस पर किसी और का बैठना एक गम्भीर अपराध था। इसी प्रकार घर के आंगन में ज़रा भी कूड़ा न फेंका जाय, इसके लिये जिरेसिम बहुत अधिक सतर्क रहता था। यहां तक कि घर के पक्षी भी उसकी शक्ति से परिचित थे। जिरेसिम की मौजूदगी में मुर्गे आपस में लड़ तक नहीं सकते थे। बात यह हुई थी कि एक दिन उसने दो मुर्गों को आंगन में लड़ते हुए देख लिया था, उसने उन दोनों को पकड़ कर ज़ोर से पांच पांच कलाबाज़ियां देकर बहुत दूर फेंक दिया था। उस दिन के बाद से यदि कभी आंगन में दो मुर्गे लड़ रहे होते और दूर से जिरेसिम आता दिखाई दे जाता तो वे अपने महायुद्ध को बीच ही में स्थगित करके इधर उधर भाग जाते थे। मकान के आंगन में कुछ हंस भी रहते थे। जिरेसिम इनका आदर करता था, और इन्हें अपने हाथ से दाना खिलाया करता था।

जिरेसिम को रहने के लिए जो कमरा मिला हुआ था, उसे उसने

अपनी रुचि के अनुसार सजा रक्खा था। एक तरफ़, दीवार के नजदीक लकड़ी के चार मज़बूत कुन्दों पर उसने कुछ तख्ते डाल कर अपने सोने के लिए चारपाई बना रक्खी थी। यह चारपाई इतनी मज़बूत थी कि इस पर चालीस, पचास मन का बोझ रक्खा जा सकता था। चारपाई के नीचे जिरेसिम के कपड़ों का सन्दूक पड़ा था। कमरे की दूसरी दीवार के निकट एक मज़बूत टेबल तथा एक तिपाई रक्खी हुई थी। इस कमरे पर जो ताला लगाया जाता था, उसकी चाबी सदैव जिरेसिम की कमर में लटकती रहती थी। जिरेसिम यह बिल्कुल पसन्द नहीं करता था कि कोई और व्यक्ति उसके कमरे में आए। क्रमशः उसे मास्को में रहते रहते एक साल बीत गया। उन्हीं दिनों एक घटना का सूत्रपात हुआ।

इस विधवा के पास दर्जनों नौकर थे। उसने धोबिन, दर्जिन, बढ़ई आदि सभी अपने नौकर रक्खे हुए थे। एक घोड़ों के साज बनाने वाला तथा पशु-चिकित्सक भी था। यही आदमी नौकरों के इलाज का काम भी करता था। इन के अतिरिक्त उसने जूता गांठने, पालिश आदि करने के लिये एक चमार भी रक्खा हुआ था। इस का नाम था कैप्रिन। कैप्रिन अपने को बहुत ही लायक और सब नौकरों से अधिक कीमती समझता था। उसे यह शिकायत थी कि लोग उसकी कदर नहीं जानते। वह पीटर्सबर्ग में भी रह चुका था और लोगों के सामने बातचीत करते हुए वह मास्को को तो कुछ गिना ही न करता था। उसे शराब पीने की लत भी पड़ गई

थी। यदि कोई उसे इस बात का ताना देता तो बड़े क्षोभ के साथ अपनी छाती पर मुक्का मार कर वह कहता—"तुम क्या जानो कि किन किन मुसीबतों ने मुझे शराब पीने को लाचार किया है। अगर मैंने इस तरह ग़म को ग़लत न किया होता, तो न जाने कब का मर गया होता!"

एक दिन यही कैप्रिन शाम के समय घर की सड़क पर शराब पीकर बदमस्ती की दशा में पड़ा हुआ पाया गया। मालकिन ने भी उस का यह हाल देखा और अपने प्रधान नौकर गैवरीला को बुलाकर कैप्रिन की इस दुर्दशा पर बड़ा शोक प्रकाशित किया। बातचीत के प्रसंग में मालकिन ने कहा—"गैवरीला, अगर कैप्रिन की शादी करा दी जाय, तो क्या वह कुछ सुधर न जायगा?"

"निस्सन्देह, यदि उस का विवाह हो जाय तो अवश्य ही उस में कुछ न कुछ परिवर्तन आजायगा।"

मालकिन ने बड़े सन्देह के साथ कहा—"मगर उसके साथ विवाह करने पर राज़ी कौन होगा?"

"अगर आप चाहें तो क्यों नहीं हो सकता। यदि उसका विवाह नहीं किया जायगा, तो उसका सुधार असम्भव हो जायगा।"

"मेरा ख़्याल है कि कैप्रिन धोबिन टैन्यूशा को चाहता है।"

गैवरीला मालकिन की इस बात के उत्तर में कुछ कहना चाहता

था, परन्तु न जाने क्या सोच कर उसने कोई जवाब नहीं दिया।

मालकिन ने नस्य की एक चुटकी नाक में चढ़ाई और दो एक बार छींक कर, जैसे पहले की अपेक्षा कुछ हल्की होगई हो, कहा—"हां, टैन्यूशा से कैम्पिन का विवाह अवश्य हो जाना चाहिये। सुना तुम ने?"

गैवरीला एक बार धीरे से "जी हां," कह कर वहां से चला गया।

वहां से वह सीधा अपने कमरे में पहुँचा। वह कुछ विचलित-सा प्रतीत होता था। घर में आकर सब से पहले उस ने अपनी पत्नी को किसी बहाने से बाहर भेजा दिया और इस के बाद उसने कैम्पिन को बुला भेजा। जब तक कैम्पिन वहां पहुँचता है, तब तक मुझे टैन्यूशा का परिचय दे लेने दीजिये।

टैन्यूशा उस विधवा की धोबिनों में एक थी। उस की उम्र अठाइस बरस की थी। शरीर इकहरा था। बाल सुन्दर थे और आंखें शोकपूर्ण थीं। उस के बाएं गाल पर तिल का निशान था। बाएं गाल पर तिल का निशान होना अभाग्य का चिन्ह समझा जाता है। और टैन्यूशा सचमुच एक जन्म की अभागिनी स्त्री थी। बचपन ही से उस अनाथ लड़की को किसी ने प्यार नहीं किया था। उसकी अब तक की उम्र कड़ी मेहनत में ही कटी थी; फिर भी उसे बहुत कम वेतन मिलता था। दो तीन चचों को छोड़ कर उसका कोई रिश्तेदार न था। ये चचे किसान थे। इन से भी

उसका व्यवहार बहुत कम था। अपने नवयौवन के प्रारम्भ में वह भी कुछ न कुछ सुन्दरी हो उठी थी। मगर किसी दिशा से प्यार और सन्मान न मिलने के कारण उसका सौन्दर्य बहुत शीघ्र नष्ट होगया था। वह स्वभाव ही से डरपोक थी, और प्रायः अपने काम को छोड़ कर और किसी चीज़ से मतलब न रखती थी। अपनी मालकिन से तो उसे बहुत ही अधिक डर लगता था। उस के नाम से भी वह कांप जाती थी; यद्यपि उसने आजतक अपनी इस नौकरानी से शायद ही कभी कुछ कहा सुना हो।

जिस समय जिरेसिम पहले पहल देहात से मास्को में लाया गया, उस समय उसके भारी भरकम डीलडौल और मज़बूत शरीर को देखनेमात्र ही से वह अधमरी के समान होगई थी। उस दिन के बाद से वह सदा इस प्रयत्न में रहती थी कि वह कभी जिरेसिम के सामने न पड़े। परन्तु उस के इसी प्रयत्न ने जिरेसिम के हृदय पर एक और ही प्रकार का प्रभाव डाला। टैन्यूशा उसे देखते ही भयभीत होजाती थी, और उसकी डरी हुई मुखमुद्रा को देख कर जिरेसिम अनायास ही मुस्करा उठता था। क्रमशः जिरेसिम टैन्यूशा की तरफ़ अधिकाधिक आकृष्ट होता चला गया। पहले वह उसे देख कर मुस्करा देता था, अब वह उसे देखने के लिये उत्सुक रहने लगा।

एक दिन की बात है, टैन्यूशा अपनी मालकिन का एक रेशमी जाकट धोकर उसे अपने हाथों पर फैलाए हुए आंगन मेंसे चली

जा रही थी कि किसी ने उसकी कोहनी पकड़ ली। टैन्यूशा ने पीछे मुड़ कर देखा तो चीख उठी—जिरेसिम ने अपने फौलादी हाथ में उसकी कोमल कोहनी थामी हुई थी। टैन्यूशा को चीखता देखकर जिरेसिम बड़ी मूर्खतापूर्ण हंसी हंसा। अपने दूसरे हाथ में उसने एक मुर्ग़ा थाम रक्खा था। बड़े प्रयत्न पूर्वक अस्पष्ट-सी भाषा में कुछ गुनगुना कर जिरेसिम ने यह मुर्ग़ा टैन्यूशा को भेंट करने के लिये उसकी तरफ़ बढ़ाया। गरीब टैन्यूशा के लिये यद्यपि यह एक बड़ा कीमती उपहार था, तथापि उसने इसे लेने से इन्कार कर दिया। मगर जिरेसिम इस इन्कारी को कहां सुनता था, उस ने ज़बरदस्ती वह मुर्ग़ा टैन्यूशा के हाथों में पकड़ा दिया और बड़ी प्रेमभरी दृष्टि से उसकी तरफ़ देख कर कुछ गुनगुनाते हुए वहां से चला गया।

इस दिन के बाद से जिरेसिम का साहस बढ़ गया। वह सदैव टैन्यूशा के पीछे पीछे रहने लगा। टैन्यूशा के सामने आकर वह उस की ओर देख कर मुस्कराता, कभी वह उस के सामने का मार्ग साफ़ करता और कभी अपने कोट के अन्दर से रेशमी फीता निकाल कर उसके हाथों में पकड़ा देता। टैन्यूशा भी अब उसे देख कर उतना विचलित नहीं होती थी। वह निश्चय ही नहीं कर पाती थी कि वह जिरेसिम के साथ क्या सलूक करे।

धीरे धीरे गूँगे दरबान के प्रेम की बात घर भर में मशहूर हो गई। टैन्यूशा की जान आफ़त में आगई। उसे जो देखता, मज़ाक

करता। परन्तु जिरेसिम के साथ हँसी मज़ाक करने का साहस किसी में नहीं था। यहां तक कि उसकी मौजूदगी में कोई टैन्यूशा के साथ भी हंसी करने का साहस नहीं कर सकता था। परिणाम यह हुआ कि घर के लोगों की हंसी से बचे रहने के लिये टैन्यूशा लाचार होकर जिरेसिम की आंखों के सामने अधिकतर रहने लगी। इच्छा से या अनिच्छा से वह अब उसी के संरक्षण में रहने लगी। सभी गूँगे और बहरे मनुष्यों के समान जिरेसिम भी स्वभाव ही से बड़ा शक्की था। उसे और टैन्यूशा को एक साथ देख कर जब लोग मुँह छिपा कर अन्दर ही अन्दर भी हँसते तो वह झट से ताड़ जाता था और उन्हें इस के लिये समुचित दण्ड दिए बिना न रहता था। एक दिन सब नौकर भोजन कर रहे थे कि एक नौकरानी ने टैन्यूशा को बड़ा तंग किया। वह रुआंवनी सी बन गई। यह देख कर जिरेसिम एकाएक उठ खड़ा हुआ और अपने मज़बूत हाथ से उस नौकरानी के सिर को ज़रा-सा झकोर दिया। इतने ही से उस बेचारी का सिर टेबल से जा टकराया। तब उसे छोड़ कर वह पुनः अपनी थाली पर आ बैठा। कमरे भर में सन्नाटा छागया। वह नौकरानी वहां से अपने कमरे की ओर भागी और वहां पहुँचते ही बेहोश होगई। सब नौकर यह दृश्य देखकर धीमे स्वर में बड़बड़ाने लगे—"यह गूँगा बड़ा शैतान है!"

एक और मौके पर जिरेसिम ने कैप्तिन को टैन्यूशा के साथ घुल घुल कर बातें करते देख लिया। इस पर उस ने इशारे से

कैप्तिन को अपनी तरफ़ बुलाया और उसे गाड़ी वाले कमरे में ले गया। वहां जाकर उसे वह एक लाठी दिखा कर धमकाने लगा। इस लाठी का भयङ्कर मतलब कैप्तिन के दिमाग़ शरीफ़ में खुद ही साफ़ साफ़ प्रतिबिम्बित हो गया।

पहले दिन की, नौकरानी के सिर को दबा देने वाली घटना क्रमशः मालकिन के कानों में भी पहुँची। मगर न जाने किस कारण से यह सब बात सुन कर, उसे गुस्सा आना तो दूर रहा, उस की प्रसुप्त रसिकता अचानक जाग उठी। मालकिन ने उस नौकरानी को बुला कर उसे यह प्रत्यक्ष दिखाने को मजबूर किया कि जिरेसिम ने किस तरह उसके सिर को झटका दिया था और किस तरह वह टेबल से जा टकराया था। यहां तक कि अगले दिन मालकिन ने इस घटना के उपलक्ष में जिरेसिम को तीन रुपयों का पुरस्कार भिजवा दिया। जिरेसिम स्वभाव ही से स्वामि-भक्त था अतः मालकिन भी उस पर कृपादृष्टि रखती थी। इतने पर भी जिरेसिम अपनी मालकिन से बहुत डरता था। तथापि उसे विश्वास था कि वह अपने प्रभाव से जिरेसिम का विवाह टैन्यूशा के साथ करवा देगी, और विवाह के समय उसे एक सुन्दर कोट भी इनाम में देगी। जिसे पहिन कर वह टैन्यूशा की नज़रों में सुन्दर जंच सकेगा। गूँगा दरवान मन ही मन इन सब बातों का बड़ा सुन्दर कल्पनात्मक चित्र खींचा करता था कि अचानक इन्हीं दिनों मालकिन ने टैन्यूशा का विवाह कैप्तिन के साथ कर

देने का निश्चय कर लिया।

अपनी खिड़की में बैठ कर गैवरीला सोच रहा था—"अगर जिरेसिम अपनी मालकिन से टैन्यूशा के प्रति अपने प्रेम की बात कह सके तो निस्संदेह वह उसे उससे विवाह करने की अनुमति दे देगी। मगर जिरेसिम तो गूँगा है। उसकी ओर से मैं यह बात मालकिन से कह सकता था, मगर मुझे क्या गरज़ पड़ी है कि बेचारी टैन्यूशा को एक गूँगे और बहरे आदमी के साथ बांध देने की सिफ़ारिश करूं। दूसरी ओर टैन्यूशा का विवाह कैप्टिन से कर देना भी तो आसान नहीं। जिरेसिम इसे बरदाश्त करेगा? वह कहीं कैप्तिन का सिर ही न तोड़ दे। उसे किसी युक्ति से भी तो कायल नहीं किया जा सकता। उससे परमात्मा ही बचाए।"

इसी समय कैप्तिन वहां आपहुँचा। वह इस समय बड़ा घिनौना प्रतीत होता था। उसकी टांगें लड़खड़ा रही थीं और हाथ टेढ़े हो रहे थे। वह सिर हिलाते हिलाते दीवार से लग कर खड़ा हो गया। गैवरीला ने कैप्तिन की ओर उस निगाह से देखा जिससे मालिक अपने नौकरों की ओर देखता है। इस के बाद वह कुछ भी बोले बिना अपने पैरों से खिड़की का किवाड़ खटखटाने लगा। इसी समय अपनी आंखें सिकोड़ कर और दांत निकाल कर कैप्तिन ने कहा—"मैं आगया हूँ। मुझे किस लिये बुलाया है?"

गैवरीला ने कहा—"तुम कितने सुन्दर लग रहे हो!" एक

क्षण रुक कर उसने पुनः दोहराया—"निस्सन्देह तुम बहुत सुन्दर हो !"

कैप्तिन इस ताने को समझ गया। उसके जी में आया कि कह दे—"कम से कम तुम तो मुझ से अधिक खूबसूरत नहीं हो।" परन्तु उसने कहा कुछ नहीं

गैवरीला ने अबकी बार बड़ी घृणा से कहा—"ज़रा आइने के सामने खड़े होकर अपनी सूरत तो देखो। तुम्हें खुद अपने से नफ़रत न आजाय तो मुझे कहना।"

कैप्तिन कुछ अप्रतिभ-सा होकर अपना पाजामा तथा कोट आदि झाड़ने लगा। एक निगाह उसने अपने फटे पुराने जूतों पर भी डाल ली और कहा—"मुझे यहां किस लिये बुलाया था?"

गैवरीला ने पुनः कहा—"तुम्हारी सूरत किसी बुड्ढे बन्दर की तरह बदसूरत प्रतीत होती है।"

कैप्तिन चुपचाप रह कर जल्दी जल्दी अपनी आंखें मिच-मिचाने लगा।

गैवरीला ने कहा—"तुम ने इस वक्त फिर शराब पी ली न? सच सच कहो—पी है न। बोलो, जल्दी बोलो।"

कैप्तिन ने जवाब दिया—"हां, अपनी तन्दुरुस्ती क़ायम रखने के लिये मुझे थोड़ी बहुत शराब पीनी ही पड़ती है।"

"क्या खूब! तन्दुरुस्ती कायम रखने के लिये! निकम्मे कहीं के। पीटर्सबर्ग में काम सीखकर भी बिल्कुल निठल्ले बैठे रहते हो।"

कैप्तिन ने बड़ी गम्भीरता से कहा—"मेरा न्याय परमात्मा को छोड़ कर और कोई नहीं कर सकता। वही जानता है कि मैं कितना अनथक काम करता हूँ। जब देखो, दुनियां भर मुझे शराब पीने का उलाहना देती है। मगर कोई भलामानस यह नहीं सोचता कि इसमें मेरा अपना क्या कसूर है। कोई मुझ से पूछे, तब तो पता भी चले। मेरे एक मित्र ने ज़बरदस्ती मुझे यह व्यसन लगाया था। वह हज़रत मुझे फंसा कर खुद तो भाग निकले और मैं........"

"और तुम फंसे ही रह गए। खैर; जाने दो। मैंने तुम्हें एक ख़ास काम के लिए बुलाया था। मालकिन की इच्छा है कि तुम्हें सुधारने के लिये शीघ्र ही तुम्हारा विवाह कर दिया जाय। मेरी बात सुन रहे हो न ?"

"जी हां, सुन रहा हूँ।"

"अच्छा, तो इस विवाह की खुशख़बरी को कई गुना अधिक आनन्ददायक बना देने वाला समाचार यह है कि मालकिन ने जिसे तुम्हारी धर्मपत्नी बनाने का निश्चय किया है, उसे तुम बहुत अधिक पसन्द करते हो।"

कैप्तिन ने अपनी प्रसन्नता को छिपाए रखने का भरसक प्रयत्न किया, मगर उसके दांत इस प्रयत्न में उसका साथ न दे सके। उसने ज़बरदस्ती फूट-रही अस्पष्ट मुस्कराहट के साथ कहा—"जी हां! विवाह क सम्बन्ध में मेरा विचार है कि यह एक अच्छी

चीज़ है। कम से कम मैं स्वयं तो विवाह कर लेने के ही पक्ष में हूँ।"

गैवरीला ने बहुत गम्भीर होकर कहा—"तुम तो विवाह कर लेने के पक्ष में ज़रूर हो। मगर जो स्त्री तुम्हारी धर्मपत्नी बनेगी, वह बेचारी बदक़िस्मत ही होगी।"

इतनी कड़ी चोट को भी खुशी से सह कर कैप्तिन ने उत्सुकता पूर्वक पूछा—"परन्तु वह है कौन ?"

"टैन्यूशा।"

"टैन्यूशा !" बड़ी प्रसन्नता के साथ टैन्यूशा के नाम का उच्चारण करते ही कैप्तिन में इतने जीवन का संचार हो आया कि वह दीवार का सहारा छोड़ कर सीधा खड़ा होगया।

गैवरीला ने पूछा-"वह तुम्हारे पसन्द की है न ?"

"यह भी कोई पूछने की बात है भाई साहब !" मगर इतना कह लेने के बाद उसे जैसे कोई बात ध्यान में आगई और वह कुछ चिन्तित-सा होकर चुप होगया। दो एक क्षणों की चुप्पी के बाद वह बोला—"मुश्किल यह है कि वह जंगली गूँगा राक्षस टैन्यूशा के पीछे पड़ा हुआ है।"

गैवरीला ने कहा—"यह तो मुझे मालूम है, परन्तु मालकिन की······।"

उसकी बात को बीच में काट कर कैप्तिन बोल पड़ा, इस तरह से जैसे वह नशे से जगा हो अथवा सम्भव है कि उसे जिरेसिम की विकरालता का पूरा पूरा स्मरण हो आया हो। उसने

कहा—"मेरे सिर की कसम मेरे मालिक! उस शैतान के घूंसों की मज़बूती तो मैं भूल ही गया था। बदमाश कितने ज़ोर के मुक्के मारता है। जब उस की चपेट किसी अभागे के नंगे गाल पर पड़ती है तो ऐसी आवाज़ निकलती है, जैसे बिजली कड़की हो; मगर उस गधे को सुनाई भी तो नहीं देता कि वह अपनी चपेट की भीषणता का ही अन्दाज़ा लगा सके। बस, बेतहाशा पीटता ही चला जाता है। वह वज्रमूर्ख है। मुझे मालूम है कि उस में मेरे पैरों की एड़ी के बराबर भी अक्ल नहीं। उस बहरे को दलीलें देने से भी तो काम नहीं चल सकता। बस; यह तुम लोगों ने खूब सोची। तुम सब तो अब मुझे मार ही डालोगे। तुम मेरा विवाह थोड़ा ही करना चाहते हो; तुम तो मुझे पिटवाना चाहते थे, और उसी के लिए तुम लोगों ने यह षड्यन्त्र रचा है।"

गैवरीला ने डांट कर कहा—"बस, बस! अब बको मत!"

मगर कैप्तिन कब चुप होने वाला था। वह बोलता ही चला गया—"हे ईश्वर! इतना बदकिस्मत बनाने के लिए तुझे क्या कोई और आदमी नहीं मिला? सारी उम्र मुझे तू मार ही खिलाता रहा है। बचपन में मुझे एक जर्मन ने बुरी तरह पीटा था। जवानी में मेरे पड़ोसियों ने ही मुझे इतना पीट डाला था कि भरता बनने में थोड़ी ही कसर रह गई थी। अब मेरा विवाह होने लगा है तो वह भी मार से खाली नहीं। हे ईश्वर!"

गैवरीला ने देखा, यह सनकी अब पूरी तरह से दिमाग चाटे

बिना नहीं मानेगा, इसलिए उसने कहा—"बस कैप्टिन, अब यहां से चलते बनो।"

कप्टिन वापिस लौट पड़ा। इसी समय गैवरीला ने आवाज़ देकर पूछा—"तुम टैन्यूशा को तो पसन्द करते हो न ?"

कैप्टिन फिर से कुछ प्रसन्न होगया। उसने कहा—"हां, इस में क्या शक है ?"

गैवरीला ने अब टैन्यूशा को बुला भेजा। थोड़ी ही देर में वह वहां आ गई और उस ने कोमल स्वर में गैवरीला से पूछा—'कहिए, क्या आज्ञा है ?'

गैवरीला ने भी भद्रता के साथ पूछा—"तुम विवाह करना पसन्द करोगी ?"

टैन्यूशा के स्वीकृति सूचक उत्तर के बाद गैवरीला ने कहा—"मालकिन ने तुम्हारे लिए एक पति चुना है।"

"वह कौन है ?"

"कैप्टिन।"

"अच्छा !"

"इस में तो सन्देह नहीं कि वह बहुत निकम्मा आदमी है मगर दिल का बुरा नहीं। मालकिन को विश्वास है कि उस से तुम्हारा विवाह होजाने का परिणाम यह होगा कि वह सुधर जायगा। परन्तु दिक्कत यह है कि गूँगा जिरेसिम आजकल तुम्हारे

प्रेम का प्यासा हो रहा है। इस कारण कैप्रिन से विवाह करने के बाद तुम्हें कोई दिक्कत न उठानी पड़े।"

टैन्यूशा ने घबरा कर कहा—"निस्सन्देह। तब तो वह मुझे जान से ही मार देगा।"

"हैं! जान से कैसे मार देगा। जान से मारना कोई मज़ाक है क्या?"

"यह तो मैं नहीं जानती। मगर होगा यही।"

"तुम कैसी डरपोक हो। हां, तुम ने उसे अपने प्रेम का वचन तो नहीं दिया न?"

"भला यह भी कभी सम्भव था?"

कुछ देर तक न जाने क्या सोचते रहने के बाद गैवरीला ने कहा—"मुझे मालूम नहीं था कि तुम इतनी सभ्य स्त्री हो। खैर; इस समय जाओ।"

टैन्यूशा चली गई। गैवरीला एकान्त में बैठ कर इस समस्या पर विचार करने लगा। उसने सोचा कि यदि जिरेसिम इस विवाह के सम्बन्ध में उत्पात करेगा तो उसे पोलीस के हवाले कर दिया जाएगा। इस के बाद उसने सोचा कि मैं क्यों व्यर्थ में इस समस्या को इतना गम्भीर बना रहा हूँ। तब वह अपनी पत्नी को आवाज़ देकर घर के कामों में लग गया।

आज सारा दिन टैन्यूशा अपने कपड़े धोने के कमरे से बाहर नहीं निकली। शुरू शुरू में तो उस कमरे में से लोगों को किसी के रोने

और सिसकियां लेने की आवाज़ भी सुनाई दी थीं, मगर बाद में दिन भर कपड़े धोने की आवाज़ ही आती रही। उधर कैप्रिन आज बड़ा खुश था। रात को बहुत देर तक शराबख़ाने में बैठ कर अपने किसी हम-पियक्कड़ के साथ वह बेसिर-पैर की बातें बनाता रहा। इस बातचीत के सिलसिले में उसने यह भी कहा कि सम्भव है; उसे विवाह करने के लिए शीघ्र ही रुपयों की ज़रूरत पड़े, तब वह अपने इस मित्र को अवश्य कष्ट देगा। परन्तु उसका साथी इस बात में दिलचस्पी न ले सका। उसने कहा—अब सोने का वक़्त हो गया है। इस के बाद दोनों सोने के लिये चले गए।

मगर बूढ़ी विधवा के दिल में कैप्रिन और टैन्यूशा के विवाह की बात किसी पुरानी सनक के समान घर कर गई थी। यहां तक कि रात भर अपने साथ की स्त्रियों से—जिन्हें अपने घर में सोने का उसने स्थिर-निमन्त्रण दे रक्खा था—भी वह इसी सम्बन्ध में बातचीत और हंसी-मज़ाक करती रही। प्रातःकाल ज्योंही गैवरीला उसके सामने उपस्थित हुआ, उसने पहला प्रश्न कैप्रिन के विवाह के सम्बन्ध में ही किया।

अपनी मालकिन को इस मामले में इतनी दिलचस्पी लेते हुए देख कर गैवरीला ने 'जिरेसिम की समस्या' को सुलझाने का गम्भीर प्रयत्न शुरू किया। उसने उसी समय इस प्रश्न पर विचार करने के लिए अपने घर पर ही मुख्य मुख्य नौकरों की परामर्श-समिति बुलाई। इस समिति में प्रत्येक महकमें का

एक न एक प्रतिनिधि अवश्य था। उधर बहरे जिरेसिम को खुदबखुद ही यह शक होगया कि आज चारों तरफ़ उसकी टैन्यूशा को लेकर ही बातचीत चल रही है, इस लिए सुबह से वह टैन्यूशा के कपड़े धोने के कमरे की सीढ़ियों पर धरना देकर बैठ गया। गैवरीला ने बड़ी चतुराई से पहले तो उसे पानी के हौज़ वाले कमरे में भेजा और जब वह वहां चला गया तो उस कमरे को बाहर से बन्द करवा दिया।

अनेक प्रकार के उल्टे सीधे साधनों पर विचार करने के बाद गैवरीला की इस विचार-समिति को यह समस्या सुलझाने का सचमुच एक बहुत ही सफल और मनोवैज्ञानिक उपाय सूझ गया। यह सब को ज्ञात था कि जिरेसिम को शराबियों से अत्यधिक घृणा है। इसलिए, यह सोचा गया कि यदि टैन्यूशा उसके सामने से मतवाली बन कर झूमती-झामती और अंट-संट बकती हुई निकल जाय, तो अवश्य ही जिरेसिम उससे घृणा करने लगेगा। टैन्यूशा को बुला कर उसे यह सारी बात समझाई गई। वह जिरेसिम से इतना अधिक डरती थी कि उस से वह कभी प्यार कर सकेगी, यह कल्पना भी कर सकना असम्भव था। तथापि वह उसके सामने यह छल करने को तैयार न हुई। परन्तु अन्त में सब लोगों ने कह सुन कर उसे इस बात के लिये तैयार कर ही लिया।

जिरेसिम को कमरे मेंसे बाहर कर दिया गया। वह आंगन

में आकर अपने फावड़े की मदद से कोई काम कर रहा था कि दूर से उसे टैन्यूशा उसी तरफ़ आती हुई दिखाई दी। जिरेसिम के मुँह पर मुस्कराहट छा गई और फावड़ा छोड़ कर वह उसकी ओर भागा। उसकी कमर में आज एक लाल रूमाल लटक रहा था। नज़दीक पहुँच कर उसने देखा कि आज टैन्यूशा नशेबाज़ों की तरह झूम रही है। यह दृश्य देख कर उस अभागे गूँगे के हृदय पर कड़ी चोट पहुँची। उसने टैन्यूशा की बांह पकड़ ली और उसे गैवरीला के कमरे की तरफ़ ले चला। गैवरीला के पास कैप्तिन सहित कुछ और लोग भी बैठे थे। वहां पहुँच कर जिरेसिम ने टैन्यूशा को कैप्तिन की तरफ़ ज़ोर से ढकेल दिया और एक बार बड़े ज़ोर से अट्टहास करके वहां से वापिस लौट गया।

इस घटना ने जिरेसिम पर जो प्रभाव डाला, वह सच्चे अर्थों में अवर्णनीय है। वह बेचारा पूरे चौबीस घण्टों तक अपने कमरे से बाहर नहीं निकला। पहले तो वह बहुत देर तक फ़र्श ही पर औंधा पड़ा रहा, उसके बाद वह उठ कर बैठ गया और अपने तख्त पर बैठे बैठे पशुओं की-सी मूक भाषा में कुछ गुनगुनाता रहा। घर के अन्य नौकर दरवाजे के छेदों में से बार बार अन्दर की ओर झांकते थे। जब जिरेसिम तख्त पर बैठकर गुनगुनाने लगा तो उसकी आवाज़ किसी अत्यधिक शोकपूर्ण गीत से कम करुण नहीं थी।

तीसरे दिन जिरेसिम अपने कमरे के बाहर निकला। वह

कुछ उदास प्रतीत होता था। आज जब टैन्यूशा उसके सामने से गुज़री तो उसने उसकी तरफ़ आंख उठा कर भी नहीं देखा। गैवरीला का काम बन गया। बस, एक सप्ताह के अन्दर ही कैप्तिन और टैन्यूशा का विवाह कर दिया गया। विवाह वाले दिन जिरेसिम में और तो कोई अन्तर नहीं दिखाई दिया। सिर्फ़ जब वह पीपे लेकर अपने घोड़े सहित पानी भरने के लिये दरिया पर गया तो अपने सम्पूर्ण पीपों को पानी में बहा कर बिना पानी लिए ही वापिस लौट आया!

कैप्तिन और टैन्यूशा का विवाह हुए भी क्रमशः एक वर्ष हो गया। बूढ़ी विधवा ने खेद के साथ देखा कि विवाह के बाद कैप्तिन सुधरने की बजाय और भी अधिक बिगड़ गया है। यह देख कर मालकिन ने उसे मास्को से गांव में भेज देने का निश्चय कर लिया। कैप्तिन और टैन्यूशा के लिये वास्तव में यह एक प्रकार का देश निकाला था।

निश्चित समय पर एक बैलगाड़ी आई और कैप्तिन के घर के दरवाज़े के सामने आकर खड़ी होगई। वे दोनों अपने सामान सहित उस पर सवार होगए। गाड़ी चलने ही वाली थी कि उसी समय जिरेसिम वहां आ पहुँचा। उसके हाथ में लाल रंग का एक सुन्दर सूती रूमाल था। यह रूमाल उसने गत वर्ष, उस अभागे दिन से सिर्फ़ चौबीस घण्टा पहिले, टैन्यूशा को उपहार देने के लिए ही खरीदा था, जिस दिन उसने उसे शराब पीकर झूमते हुए देखा था।

पिछले सम्पूर्ण वर्ष उसने कभी टैन्यूशा की तरफ़ आंख उठा कर भी नहीं देखा था। परन्तु आज विदाई के समय उसने वह रूमाल बड़े स्नेह के साथ टैन्यूशा को भेंट में दे दिया।

बेचारी टैन्यूशा विवाह कर के सचमुच और भी अधिक अभागिनी बन गई थी। आज इस रूमाल को लेकर वह फूट कर रो पड़ी। उसे जन्मभर में केवल एक आदमी ने प्यार किया था, परन्तु उसका वह प्रणयी गूँगा और बहरा था, इसलिये वह उसके प्यार को स्वीकार न कर सकी। जिसके साथ, सुखी जीवन बिताने की इच्छा से, उसने विवाह किया था, उसने उस का जीवन और भी अधिक कष्टमय बना दिया।—आज टैन्यूशा ने साल भर से दिल में जमा होरहे दुखों को पानी बना कर आंखों की राह इस मामूली से लाल रूमाल पर बहा देने का शायद सफल प्रयत्न किया।

गाड़ी चल पड़ी। जिरेसिम भी साथ ही साथ चला। शायद उसका इरादा था कि वह टैन्यूशा को शहर की सीमा तक विदा दे आए। मगर कुछ दूर तक जाकर ही वह खड़ा होगया। टैन्यूशा के कहने से गाड़ी रोकी गई और टैन्यूशा ने एक सच्चे ईसाई के समान जिरेसिम को तीन वार चूम कर उस से विदा ली। जिरेसिम लौट पड़ा। मगर घर जाने को उसकी इच्छा न हुई। सैर के इरादे से वह नदी की तरफ़ चल दिया।

जिरेसिम नदी के किनारे पर पहुँचा। सांझ होगई थी, सूरज

डूबने वाला था। वह नदी के जल की तरफ़ देखते देखते आगे बढ़ रहा था कि किनारे के कीचड़ में उसने किसी छोटी-सी काली काली चीज़ को हिलतेडुलते देखा। जिरेसिम उसके निकट आया। उस ने देखा कि काले रंग का एक छोटा-सा कुत्ते का बच्चा कीचड़ में धंसा हुआ है और बारबार बाहर निकलने का व्यर्थ प्रयत्न कर रहा है। जिरेसिम ने आगे बढ़ कर उसे बाहर निकाल लिया और पानी से धोकर अपने रूमाल से पोंछ डाला। मगर इतनी देर तक कीचड़ में धँसे रहने के कारण वह बेचारा पिल्ला सरदी के मारे कांप रहा था। उसे कांपता देख कर जिरेसिम ने उसे अपने कोट के अन्दर, छाती के नज़दीक चिपका लिया। इस के बाद वह आगे न बढ़ कर बड़ी तेज़ी से अपने घर की तरफ़ लौट पड़ा।

घर पहुँच कर जिरेसिम ने कुत्ते के इस पिल्ले को अपने बिस्तरे पर डाल दिया और अपना गरम कम्बल उसे ओढ़ा दिया। फिर वह शीघ्रता से अस्तबल में जाकर थोड़ा-सा घासफूँस और रसोई-घर में जाकर एक प्याला दूध ले आया। अपने कमरे में उसने यह घासफूँस बिछा कर उस पर दूध का प्याला रख दिया। पिल्ला अभी बहुत छोटा था। उसकी उम्र बीस दिनों से अधिक न होगी, उस की आंखें हाल ही में खुली थीं और इसी कारण इस समय एक आंख से दूसरी आंख अधिक बड़ी प्रतीत होतीं थी। अभी तक उसने प्याले मेंसे दूध पीना नहीं सीखा था। इस कारण

सामने दूध पड़ा रहने पर भी वह उसे पी न सका। यह देख कर जिरेसिम ने उसका सिर पकड़ कर, उसकी नाक दूध के प्याले में डुबो दी। पिल्ले को दो एक छींकें आगई, वह चीखा चिल्लाया भी,—मगर शीघ्र ही खुदबखुद दूध भी पीने लग गया। जिरेसिम ने जब पिल्ले का इस तरह छटपटाते, छींकते और अन्त में दूध पीते देखा तो वह खिलखिला कर हंस पड़ा। रात होगई थी। सोने से पहिले उसने पिल्ले के शरीर को खूब अच्छी तरह पोंछ कर पूरी तरह सुखा दिया, इस के बाद उसे अपनी छाती से लगा कर वह सो गया।

अगले दिन पिल्ले की जांच करने पर जिरेसिम को ज्ञात हुआ कि वह कुतिया है। जिरेसिम बड़ी तन्मयता के साथ उसकी देखभाल करने लगा। माता के समान वह उस पिल्ले को खिलाता पिलाता, डांट-डपट करता और यहां तक कि उसकी टट्टी भी साफ़ करता था। शुरू शुरू में यह पिल्ला कुछ बदसूरत प्रतीत होता था, मगर क्रमशः यह एक सुन्दर कुतिया के रूप में परिवर्तित होगया। उसका जिस्म भर आया और शरीर पर लम्बे लम्बे सुन्दर बाल निकल आए। कुतिया के कान लम्बे और लटके हुए, आंखें बड़ी बड़ी और पूँछ झब्बरेदार थी। जिरेसिम बोल नहीं सकता था, सिर्फ़ गुनगुना सकता था; इस करण उसने इस कुतिया का नाम रक्खा—"मूमू।"

मूमू घर म सर्वप्रिय होगई। अब वह आठ महीने की थी। सब

नौकर उस के साथ खेलते थे, मगर वह प्यार करती थी, केवल उसी गूँगे और बहरे जिरेसिम से। जिरेसिम के दैनिक जीवन में मूमू इस तरह हिलमिल गई थी, जैसे वह उसके शरीर का ही हिस्सा हो। प्रातःकाल वह ठीक समय पर जिरेसिम को, उसका कपड़ा खींच कर जगा देती। जिरेसिम उठ कर मुंह हाथ धोने लगता, इस बीच में वह अस्तबल में जाकर जिरेसिम के पानी ढोने वाले टट्टू को, उसकी लगाम मुंह में पकड़ कर, जिरेसिम के कमरे तक ले आती। इस टट्टू से भी उसकी घनिष्ट मित्रता होगई थी। जब जिरेसिम पानी भरने जाता तो वह सदैव उसके साथ साथ रहती। वह उसके टट्टू और फावड़े की हिफ़ाजत करती। उसके कमरे में किसी और को जाने न देती। जिरेसिम ने अपने कमरे के किवाड़ में उसके आने जाने लायक एक छेद बना दिया था। बाहर के कामों से फ़ुर्सत पाकर मूमू इस छेद मेंसे कूद कर कमरे में पहुँचती और जिरेसिम के बिस्तरे पर पड़ कर सो रहती। इस समय वह घर की स्वामिनी प्रतीत होती थी। मूमू सदैव सतर्क रहती, परन्तु बिना कारण कभी न भौंकती। कुछ आलसी और कमज़ोर कुत्ते, दिन में कई कई बार अपनी नाक को बन्दूक की नोक के समान आस्मान की तरफ़ तान कर यों ही भौंकना या चीखना शुरू कर देते हैं। मानों वे बैठे बैठे तंग आगए हों और इसी कारण, खुद अपने ही से खीज कर भौंकने लगे हों। मगर मूमू उन बेवकूफ़ कुत्तों में नहीं थी। वह सिर्फ़ तभी भौंकती, जब कोई

नावाकिफ़ आदमी अकेले में उसे आता दिखाई देता अथवा रात के समय उसे कोई सन्देह उत्पन्न करने वाली खड़खड़ाहट सुनाई देती।

इसी घर में एक और कुत्ता भी था, जिसे सब लोग 'भेड़िया' कहा करते थे। 'भेड़िया' अब बुड्ढा होगया था और उसमें ज़रा भी ताकत नहीं बची थी। यह कुत्ता सदैव आंगन में एक ज़ंजीर के सहारे बंधा हुआ पाया जाता। वह इतना कमज़ोर और बंधे रहने का इतना अभ्यस्त होगया था कि यदि अब उसके गले से ज़ंज़ीर खोल ली जाती, तो भी वह चुपचाप वहीं पड़ा रहता। भौंकने के लिए बड़े से बड़ा अवसर आने पर भी वह सिर्फ़ दो एक बार हल्की-सी आवाज़ करके रह जाता, जैसे अपने भौंकने की निरर्थकता को वह ख़ुद भी समझता हो।

मूमू को इस घर में रहते इतनी मुद्दत हो गई थी, मगर आज तक वह मालकिन के पास कभी नहीं गई थी। वह घर के अन्दर कभी जाती ही न थी। जिस समय जिरेसिम किसी काम से घर के अन्दर जाता तो वह दरवाज़े पर ही बैठी रह कर उसके वापिस आने की इन्तज़ार किया करती। इसी तरह धीरे धीरे एक वर्ष निकल गया। मूमू भी अब एक वर्ष की हो गई।

गरमियों के प्रातःकाल मालकिन घर के आंगन में टहल रही थी। उसके नौकर चाकर उसे घेरे हुए थे। आज वह असाधारण प्रसन्न थी, और इसी कारण अपने नौकरों स थोड़ा बहुत हंसी मज़ाक

भी करती जाती थी। परन्तु नौकर चाकर उसके इस हंसी मज़ाक में हार्दिक प्रसन्नता के साथ मनोयोग नहीं देरहे थे। कारण यह था कि उसकी प्रसन्नता का आधार इतना लचर था कि केवल ज़रा-सी बात से ही उस की वह प्रसन्नता, क्रोध में परिवर्तित हो सकती थी। वास्तव में प्रति दिन उठने के साथ ही वह ताश के पत्तों से अपनी भाग्यपरीक्षा किया करती थी। आज के दिन उसके हिस्से में एक साथ चार इस ढंग के पत्ते आए थे, जिन का अर्थ इच्छापूर्त्ति होना है। इसी कारण आज प्रातःकाल चाय पीते हुए उसने सदा की तरह, रद्दी चाय तैयार करनेकी बात कहकर डांटफटकार नहीं बताई, अपितु चाय की प्रशंसा करके रसोईदारिन को दो आना इनाम भी दिया था। इस समय आंगन के बाग़ में टहलते टहलते अचानक बुढ़िया की नज़र गुलाब के एक पौधे के नीचे बैठ कर कोई सूखी हड्डी चबाती हुई मूमू पर पड़ी। मालकिन ने अपने पास की दासी से एकाएक पूछा— "यह किस की कुतिया है ?"

उस दासी ने पहले तो घबराकर कह दिया—"मैं नहीं जानती।" उसके बाद संभल कर कांपती हुई आवाज़ में उसने कहा—"शायद उस बहरे जिरेसिम की है।"

मालकिन ने दासी की बात को बीच में ही काट कर कहा— "बड़ी अच्छी कुत्तिया है। क्या यह यहां बहुत दिनों से है ? मैं ने तो पहले इसे कभी नहीं देखा। इसे मेरे पास ले आओ।"

इस पर एक स्त्री परिचारिका ने दौड़ कर बाग़ में काम करने

वाले किसी आदमी को आवज़ देकर कहा—"फुलवारी में, गुलाब की एक झाड़ी के नीचे 'मूमू' बैठी है। मालकिन का हुक्म है कि उसे पकड़ कर यहां ले आओ।"

मालकिन ने कहा—"अच्छा! इस कुतिया का नाम 'मूमू' है। बड़ा अच्छा नाम है।"

"जी हां! बहुत अच्छा नाम है।"

बाग़ में काम करने वाले इस नौकर का नाम स्टीपन था। मालकिन के नाम से आज्ञा मिलते ही वह फुलवारी की तरफ़ दौड़ गया और मूमू को पकड़ने की कोशिश करने लगा। परन्तु उसे अपनी ओर आता देख कर मूमू उठ खड़ी हुई और अपने मालिक के पास दौड़ गई। जिरेसिम रसोईघर के पानी के बड़े बरतन को इस तरह साफ़ कर रहा था, जैसे वह किसी खिलौने को उलटपुलट रहा हो। मूमू वहां पहुँची और जिरेसिम की टांगों के बीच में दुम हिलाती हुई जा खड़ी हुई। शीघ्र ही स्टीपन भी वहां आगया और उसने मूमू को पकड़ने के लिए अपने हाथ बढ़ाए। मूमू को उसकी यह चेष्टा सर्वथा अनधिकारपूर्ण प्रतीत हुई, इस लिए उसने अपने मालिक की चरणछाया में खड़े रह कर स्टीपन को दांत दिखा दिए। स्टीपन भयभीत होकर थोड़ा-सा पीछे हट गया। परन्तु अगले ही क्षण उसने इशारों द्वारा जिरेसिम को यह बात समझा दी कि मालकिन मूमू को देखना चाहती हैं। स्टीपन की बात समझ कर जिरेसिम पहले तो कुछ

चौंका, परन्तु शीघ्र ही मूमू को अपनी तरफ़ बुला कर उसे स्टीपन की गोद में दे दिया।

मालकिन इस वक्त अपने एक चित्रागार में जा कर बैठ गई थी। स्टीपन मूमू को उठाए हुए वहां पहुँचा और उसे फर्श के गलीचे पर छोड़ दिया। मूमू अपनी ज़िन्दगी में आजतक कभी ऐसे सुन्दर और सजे सजाए कमरे में नहीं आई थी, इसलिए यहां पहुँच कर वह घबरा गई और दरवाज़े की तरफ़ दौड़ी। परन्तु स्टीपन वहां पहले ही सावधान हो कर खड़ा था। उसने मूमू को पुनः अन्दर की ओर खदेड़ दिया। मूमू उधर से भाग कर एक तरफ़ की दीवार के साथ सटक गई।

बुढ़िया बड़े प्यार से उसे अपने पास बुलाने लगी—"मूमू! मूमू! पुच्! पुच्! इधर आओ! डरो मत! पुच्! पुच्!" परन्तु मूमू भयभीत दृष्टि से मालकिन की ओर देखती रह कर चुपचाप अपनी जगह पर ही बैठी रही।

बुढ़िया ने बड़े उत्साह से कहा—"आह, बेचारी न जाने कब से भूखी है। इसे किसी ने कुछ खाने को नहीं दिया। जाओ इस के लिये थोड़ा-सा दूध ले आओ।"

इस के बाद उसने दो एक बार मूमू को अपनी तरफ़ आने के लिये वृथा उत्साह दिला कर अपनी नौकरानियों से कहा—"यह बेचारी कुतिया अपनी मालकिन से इतना क्यों डरती है?"

एक स्त्री ने जवाब दिया—"यह श्रीमती जी के पास शायद

पहले कभी नहीं आई। इसीलिये घबराती है।"

इस समय तक एक प्याले में दूध लाकर मूमू के सामने रख दिया गया। मगर उस ने दूध की तरफ़ आंख उठा कर भी नहीं देखा। केवल पहले ही के समान कांपती हुई बैठी रही।

यह देख कर मालकिन उस की तरफ़ इस इच्छा से झुकी कि उस की पीठ पर थपकी दे। मालकिन ने मुँह से कहा—"आह! मूमू तुम कितनी अनाड़ी हो!" और अपना दाहना हाथ उस की पीठ पर फेरा। मूमू इस बात के लिए तैयार नहीं थी, वह बेचारी घबरा कर पीछे की तरफ़ हटी; मगर पीछे तो दीवार थी। उस से टकरा कर वह झुंझला उठी और उस ने बिल्ली के समान "हिस्स" कर के अपने दांत दिखा दिए। यह देख कर बुढ़िया चीख़ पड़ी, उस ने अपना हाथ झट से पीछे खींच लिया।

कमरे भर में सन्नाटा छा गया। बेचारी मूमू को शायद खुद ही समझ आगया कि इस तरह दांत दिखा कर उस ने अच्छा नहीं किया। बड़े ही क्षमाप्रार्थी और करुण स्वर में धीरे-से कराह कर वह पूँछ हिलाने लगी।

एक क्षण के बाद सब लोग बुढ़िया से बड़ी चिन्ता के साथ पूछने लगे—'कहीं मूमू ने श्रीमती जी को काटा तो नहीं?'—हालांकि प्रत्येक नौकर इस बात को जानता था कि मूमू ने आजतक घर के किसी आदमी को काटने का प्रयत्न तक भी नहीं किया था।

बुढ़िया ने बहुत गम्भीर होकर कहा—"यह बिल्कुल रद्दी कुतिया है। इसे यहां से उठा ले जाओ। मैं इस की सूरत नहीं देखना चाहती।"

इतना कह कर वह उठ खड़ी हुई और अपने निजू कमरे की तरफ़ चल दी। दरवाज़े से बाहर होते होते उसने अपना मुँह फेर कर बड़े क्रोध के साथ सब नौकरानियों से कहा—"तुम लोग यहां क्यों जमा हो। क्या तुम्हें कोई काम नहीं? मैंने तो किसी को यहां नहीं बुलाया था।"

सब लोग तितर बितर हो गए। स्टीपन मूमू को उठा कर जिरेसिम के पास फेंक आया। थोड़ी देर बाद घर भर में एक तरह की विशेष गम्भीरता पाई गई, जो घर के मालिक के नाराज़ हो जाने पर कहीं भी देखी जा सकती है। बुढ़िया अपने सोफ़े पर जाकर लेट गई। उसका चेहरा आज बादल की तरह काला और गम्भीर दिखाई देता था।

आपने खुद अपने जीवन में भी तो, कभी यह अनुभव किया ही होगा कि कई बार छोटी छोटी घटनाएँ भी मनुष्य को व्यर्थ ही में बहुत अशान्त बना देती हैं।

बुढ़िया का सारा दिन बहुत ही बुरी दशा में व्यतीत हुआ। वह न किसी से बोली चाली और न आज उसने ताश ही खेला। इतना ही नहीं, अपितु बात बात में आज उसने नौकरों को फटकारा। रात के भोजन में उसे किसी चीज़ में मीठा अधिक

डाल दिया गया प्रतीत हुआ और किसी में मसाला कम। अपने तकिये के गिलाफ़ में से आज उसे साबुन की गन्ध आती रही और इस पर उसने धोबी को बुलाकर खूब डांट-डपट बताई।

दूसरे दिन की प्रातःकाल भी उसका गुस्सा शान्त नहीं हुआ था। इस का सबूत यह था कि उसने गैवरीला को आज सदा की अपेक्षा एक घण्टा पहले ही बुला भेजा। गैवरीला धड़कते हुए दिल से ज्योंही अपनी मालकिन के सामने पहुँचा, त्योंही उसने कहा—"रात भर हमारे आंगन में से किसी कुत्ते के भौंकने की आवाज़ आती रही है। बताओ, वह किस का कुत्ता है? मैं तो उसके मारे सारी रात जागती रही।"

गैवरीला ने लड़खड़ाती-सी आवाज़ में कहा—"कुत्ता? सरकार कौन-सा कुत्ता? हज़ूर, शायद वह जिरेसिम की कुतिया ही होगी।"

"वह जिरेसिम की कुतिया है या किसी और की,—इस से मुझे कोई मतलब नहीं। सवाल तो यह है कि उसे यहां रक्खा क्यों गया है। हमारे आंगन में पहले भी तो एक कुत्ता था। वह मर गया है क्या?"

"नहीं जी! वह कुत्ता अब भी आंगन में मौजूद है। उसका नाम 'भेड़िया' है।"

"तो फिर यह दूसरा कुत्ता क्यों लाया गया। यहां और अधिक कुत्तों की क्या ज़रूरत थी। मालूम होता है, इस घर में

कोई किसी से कुछ पूछने वाला नहीं। जिधर देखो, उधर मन-मानी ही की जाती है। उस बहरे ने यह कुतिया क्यों रक्खी है। इसे यहां रहने की इजाज़त किस ने दी। कल मैंने बाग में देखा था कि वह गुलाब के नए पौधों को कुचल कर उन पर बैठी थी और कोई घिनौनी चीज़ चबा कर वह स्थान खराब कर रही थी।"

गैवरीला चुपचाप खड़ा रहा। बुढ़िया ने आज्ञा के ढंग पर कहा—"उस कुतिया को आज ही यहां से हटा दो। सुनते हो ?"

"जी हां सरकार !"

"अच्छा, जाओ। शाम को मैं तुम्हें बुला कर पूछूँगी कि तुम ने कुतिया को यहां से हटाया या नहीं।"

मालकिन पर अपनी तत्परता का रोब डालने के लिए गैवरीला ने मेज़ के किनारे पर पड़ी हुई घण्टी को उठा कर दूसरी मेज़ पर ठीक ढंग से रख दिया, दो एक अस्तव्यस्त होकर पड़ी किताबों को ठीक ढंग से लगा दिया और इस के बाद बाहर चला आया। बरामदे में पहुँच कर उस ने देखा कि स्टीपन अभी तक सोया पड़ा है, ठीक इस तरह से जैसे युद्धक्षेत्र के चित्रों में सिपाहियों की लाशें पड़ी हुई दिखाई जाती हैं। अपना कोट उस ने टांगों पर ओढ़ रक्खा था और अपनी बाहुओं को पेट के साथ सटा कर वह अभी तक गहरी नींद में सो रहा था। गैवरीला ने बूट की ठोकर मार कर उसे जगा दिया। उसे कोई आज्ञा दे

कर वह वहां से चला और घर की सीढ़ियों पर जा खड़ा हुआ।

अभी पांच मिनट भी न बीते होंगे कि कटी हुई लकड़ियों का एक भारी बोझ उठाए हुए जिरेसिम बाहर से उसी तरफ़ आता दिखाई दिया। मूमू भी उस के साथ थी। बुढ़िया वसन्त की इस मौसम में भी अपना सोने का कमरा आग से गरम करवाया करती थी और जिरेसिम इस काम के लिए लकड़ियां लाया करता था। सदा की तरह जिरेसिम दरवाज़ा खोल कर अन्दर चला गया और मूमू सीढ़ियों पर ही खड़ी रह कर उस के लौट आने का इन्तज़ार करने लगी।

यह मौका देख कर गैवरीला झट से वहां पहुँचा और मूमू पर इस तरह झपटा, जिस तरह बाज़ चिड़िया पर झपटता है। उसने मूमू को अशक्त करके उसे अपनी बाहुओं में उठा लिया और नंगे सिर ही बाहर की तरफ़ दौड़ पड़ा। घर से बाहर आकर, गली में, उसे सब से पूर्व किराये का जो टांगा मिला, उस पर भाव तय किए बिना, वह सवार होगया और बाज़ार की तरफ़ चलने का हुक्म दे कर अन्दर बैठ गया। बाज़ार में उस ने मूमू जैसी सुन्दर और चतुर कुतिया को केवल आठ रुपयों में ही बेच दिया। परन्तु उस ने गाहक से यह प्रतिज्ञा करवाली कि वह मूमू को कम से कम एक सप्ताह तक एक मिनट के लिये भी बन्धन से नहीं खोलेगा। इस के बाद वह घर की तरफ़ लौट गया और जिरेसिम से कहीं

सामना न होजाय, इस भय से पिछवाड़े के दरवाज़े से अन्दर प्रविष्ट हुआ।

उधर लकड़ियों को यथास्थान रख कर जब जिरेसिम बाहर आया तो उसे मूमू दिखाई न दी। जिरेसिम ने सीढ़ियों पर खड़े रह कर चारों ओर निगाह दौड़ाई। इस के बाद फुलवारी में जाकर वह पौधों के नीचे उस की तलाश करने लगा। मूमू जब उसे वहां भी न मिली, तो वह अपने घर की तरफ़ गया। उसे विश्वास था कि मूमू कोठरी में नहीं हो सकती, क्योंकि इस वक्त जिरेसिम को अकेला छोड़ कर वह आज तक कभी इस तरह अपनी कोठरी में नहीं गई थी। तथापि उसे कोठरी में ढूंढ़ना भी ज़रूरी था। अपने कमरे के बाहर ही से उसने आवाज़ दी—"मूमू! मूमू!" मगर अन्दर से किसी ने उसकी पुकार का स्वागत नहीं किया। जिरेसिम ने भीतर जाकर देखा,—कमरा खाली पड़ा था।

जिरेसिम वहां से लौटा तो उसे अपने पैर तक भारी प्रतीत होने लगे। उसका दिल धड़कने लगा। उसे सन्देह होगया कि उस की मूमू के साथ अवश्य ही कोई न कोई असाधारण बात होगई है। वह नौकरों के पास पहुंचा और इशारों से पूछने लगा कि किसी ने उस की मूमू को तो नहीं देखा। अधिकांश नौकर मूमू के सम्बन्ध में सचमुच कुछ भी नहीं जानते थे; जो जानते थे उन्होंने भी ठीक जवाब नहीं दिया। जब गैवरीला ने दूर ही से जिरेसिम को उस तरफ़ आते हुए देखा तो उसने इतना गम्भीर

मुँह बना लिया कि जैसे उसे इन छोटी छोटी बातों से कोई मतलब ही न हो। जिरेसिम को और भी अधिक निकट आया देख कर गैवरीला अपनी झेंप मिटाने के लिए पास ही खड़े हुए एक गाड़ीवान को डांटने लगा। जिरेसिम सचमुच उस के गेब में आगया और उससे कुछ भी पूछे बिना वहां से वापिस लौट चला।

जिरेसिम घर से बाहर निकल गया और फिर शाम से पहले वापिस नहीं लौटा। सायंकाल अपने धूल से भरे मुँह और अस्त-व्यस्त होरहे कपड़ों के साथ जब वह घर में वापिस आया, तो साफ़ प्रतीत होता था कि वह आज मास्को की कम से कम आधी गलियों की ख़ाक छान कर आरहा है। घर में आकर वह पुनः अपने विकृत, अत्यधिक मोटे परन्तु बहुत ही विषादपूर्ण स्वर में पुकारने लगा—"मूमू! मूमू!"—जिस तरह कोई गाय 'बां! बां!' कर के अपने बछड़े को पुकार रही हो। उस की इस करुण पुकार का जब किसी ने जवाब नहीं दिया, तो वह चुपचाप, बिना कुछ भी खाए पिए, अपनी कोठरी में चला गया और अन्दर से सांकल चढ़ा कर पड़ रहा। सब नौकर उसकी गम्भीर और करुण मुखमुद्रा को चुपचाप खड़े होकर देखते रहे। उससे कोई कुछ नहीं बोला।

अगले दिन की प्रातःकाल पहरेदारों ने अन्य नौकरों को बताया कि वे रात भर जिरेसिम के कमरे में से रोने और कराहने की आवाज़ सुनते रहे हैं। क्रमशः दिन निकल आया, परन्तु

जिरेसिम किसी को दिखाई न दिया। आज वह पानी लेने भी नहीं गया। उसकी जगह गैवरीला ने किसी और नौकर को पानी का टट्टू लेकर भेज दिया। वह बेचारा राह में टट्टू की दुलत्ती से पीटा जाकर ज़ख्मी होगया और आज रसोईघर में पानी एक घण्टा देरी से पहुँचा।

इधर मालकिन ने गैवरीला को बुला कर पूछा—"तुम ने उस कुतिया को यहां से हटा दिया है न ?"

गैवरीला "जी हां !" कह कर वहां से अपनी कोठरी में चला गया।

दोपहर को जाकर जिरेसिम अपनी कोठरी से बाहर निकला और सीधा रसोईघर में जाकर, किसी भी तरह का कोई इशारा तक किए बिना, कुछ खा पी आया और इस के बाद मूमू की तलाश में बाहर चला गया। उस का चेहरा पहले भी निर्जीव-सा प्रतीत होता था, परन्तु आज तो वह पत्थर का घड़ा हुआ ही मालूम होने लगा था।

तीन चार घण्टों तक मास्को की गलियों में पुनः घूमते फिरते रहने के बाद वह घर में वापिस लौट आया और अपने कमरे में न जाकर आंगन में पड़े हुए घास के एक ऊँचे ढेर पर ही पड़ रहा। क्रमशः सूरज डूब गया। रात होगई। सब ओर चांदनी छिटक आई। परन्तु जिरेसिम इस मचान से नहीं उठा। वह वहीं

पड़े रह कर करवटें बदलने लगा। बीच बीच में वह बड़े दर्द से कराह उठता था।

काफ़ी देर होगई। अचानक उसे प्रतीत हुआ कि कोई उस का कोट पकड़ कर उसे अपनी तरफ़ खींच रहा है। जिरेसिम को योंही सन्देह हुआ कि यह शायद उसका भ्रम है, अतः वह उसी तरह पड़ा रहा। परन्तु अब की बार स्पष्ट रूप से उसे अनुभव हुआ कि किसी ने उसके कोट को दुवारा अपनी तरफ़ खींचा है। जिरेसिम उछल कर उठ खड़ा हुआ। उसने देखा कि मूमू आगई है, और पूँछ हिला हिल कर उसे अपनी तरफ़ आकृष्ट करने का प्रयत्न कर रही है। उसके गले के सहारे एक लम्बी रस्सी लटक रही है। यह साफ़ प्रतीत होता था कि वह रस्सी तोड़ कर कहीं से भाग आई है। मारे खुशी के जिरेसिम का दिल गद्गद् होगया। उसके मुंह से 'मूमू!' तक भी नहीं निकल सका। बड़े आग्रह के साथ मूमू को उठा कर उसने अपनी छाती से लगा लिया। उसकी आंखों में आनन्द के आंसु छलक आए। मूमू इस समय बड़ी आतुरता से अपनी झबरेदार पूँछ हिला रही थी। जिरेसिम की छाती के साथ सट कर वह एकबारगी ही, बड़े प्यार के साथ उसकी नाक, कपोल, दाढ़ी, मूंछ और होंठ तक को चाटने लगी। कुछ क्षणों तक जिरेसिम उसी जगह खड़ा रहा और उसके बाद मचान से नीचे उतर कर, लोगों से नज़र बचाते हुए अपनी कोठरी में चला गया। जिरेसिम को पहले ही यकीन था कि

मूमू स्वयं रास्ता भूल कर नहीं भटकी, अपितु मालकिन ने ही उसे कहीं दूर भिजवा दिया है। अब मूमू के गले में पड़ी रस्सी को देख कर उसे इस बात पर पूर्ण विश्वास होगया और मूमू को बुढ़िया की नज़र से बचाए रखने का उसने निश्चय कर लिया।

फिर उसे .ख्याल आया कि मूमू अभी भूखी होगी। उसने एक रोटी उसे खाने को दी। इसके बाद वह उसे अपनी छाती के साथ चिपका कर अपने बिस्तरे पर लेट गया और इस बात पर विचार करने लगा कि मूमू को मालकिन की नजरों से किस तरह बचाया जा सकता है। अन्त में उसने यही निश्चय किया कि भविष्य में वह दिन भर मूमू को कमरे में ही बन्द रक्खा करेगा और रात को उसे लेकर सैर के लिए निकला करेगा।

दूसरे दिन उसने अपने दरवाज़े के छेद को पुराने कोट की मदद से बन्द कर दिया। इसके बाद मूमू को अन्दर ही छोड़ कर वह बाहर चला गया, जैसे उसे अपने प्रयत्न में पूर्ण .सफलता मिली हो। उस बेचारे बहरे को यह तो ज्ञात ही नहीं था कि 'आवाज़' भी कोई चीज़ होती है, जिसके द्वारा कमरे में बन्द मूमू के वापिस लौट आने की बात घर भर में शीघ्र ही सभी को ज्ञात हो सकती है। हुआ भी यही। मूमू को कोठरी में बन्द रहना बड़ा नागवार गुज़रा और वह चीखने चिल्लाने लगी। शीघ्र ही सब लोग जान गए कि मूमू वापिस लौट आई है और जिरेसिम

के कमरे में बन्द है। प्रायः सभी नौकर मूमू को अच्छी निगाह से देखते थे, इस कारण किसी ने मालकिन से उसके वापिस लौट आने की शिकायत नहीं की। गैवरीला को जब यह समाचार मिला तो उसने भी इतनी ही टिप्पणी की—"ईश्वर कुशल करे। कहीं बुढ़िया को कुतिया के वापिस लौट आने की बात मालूम न पड़ जाय।" परन्तु जिरेसिम अभी तक यही समझता था कि मूमू के लौट आने की बात उसे छोड़ कर और कोई नहीं जानता।

आज जिरेसिम ने अपना काम इतने उत्साह से किया कि देखने वाले दंग रह गए। अपने दैनिक कार्य को तो उसने कुछ मिनटों में ही समाप्त कर दिया, इसके बाद उसने आंगन भर के घास को खूब साफ़ कर दिया। बाग़ की बेलों को उसने ठीक खड़ा कर दिया। यहां तक कि मालकिन को भी उसके आज के असाधारण उत्साह की सूचना मिल गई। इस बीच में वह दो बार अपनी कोठरी की तरफ़ जाकर अपने कैदी का हालचाल भी देख आया।

रात को करीब दो बजे तक तो वह सोता रहा। उसके बाद मूमू को साथ लेकर वह सैर के लिए बाहर निकला। करीब एक घंटे तक आंगन में ही टहलते रहने के बाद, लगभग तीन बजे, वह अपनी कोठरी की तरफ़ लौट रहा था कि आंगन के घेरे के बाहर से खड़खड़ाहट की आवाज़ मूमू के कानों में पड़ी। उस के

कान खड़े हो गए। यह आवाज़ दुबारा सुनाई दी और मूमू उस तरफ़ को दौड़ पड़ी। वहां पहुँचते ही मूमू ज़ोर ज़ोर से भौंकने लगी। असल में बात यह थी कि कोई शराबी बदमस्त होकर उसी तरफ़ निकल आया था और आराम करने की इच्छा से, घेरा फांद कर अन्दर आने का प्रयत्न कर रहा था। उधर बुढ़िया रात के शुरू से लेकर अब तक सिर्फ़ करवटें ही बदलती रही थी और अब जाकर उसे नींद आ सकी थी। मूमू के ज़ोर ज़ोर से भौंकने की आवाज़ सुन कर उस की नींद उचट गई। उस का दिल कांप गया और उसे मूर्छा आने लगी। उस ने अपनी दासियों को पुकारा। वे शीघ्र ही उसके कमरे में आ पहुँचीं। अपनी एक बांह को बिस्तरे पर मार कर बुढ़िया ने कहा—"हे ईश्वर! मैं मरी! फिर वही कुतिया! डाक्टर! डाक्टर! मुझे बचाओ! हाय! हाय!"

यह कहते कहते उस का सिर लुढ़क गया, जैसे उसे बेहोशी आगई हो। उसी क्षण दो आदमी उस के डाक्टर ले आने के लिए दौड़ा दिए गए। इस डाक्टर का नाम हैरीटन था। इस में सब से बड़ी खूबी यह थी कि यह शान से रहना जानता था और बड़े नरम हाथों से नाड़ी देखता था। वहां पहुँचते ही उसने बुढ़िया का माथा और नाड़ी टटोली। इस के बाद उसे एक स्वादिष्ट शरबत पीने को दिया। शर्बत पीकर बुढ़िया को कुछ आराम प्रतीत हुआ। वह बड़बड़ाने लगी—"अरे मुझ अभागिन की

कौन परवाह करता है। मुझे तो सब मार ही डालना चाहते हैं। तुम्हारी मर्ज़ी है कि बुढ़िया मरे और पाप कटे।"

इधर यह काण्ड हो रहा था और उधर मूमू का भौंकना अब तक जारी था। बहरे जिरेसिम को यह तो ज्ञात नहीं था कि मूमू के भौंकने से क्या गुल खिल गया है। फिर भी वह बार बार मूमू को अपनी तरफ़ बुलाता था। परन्तु मूमू उस की पुकार पर ध्यान ही नहीं देती थी।

मूमू की आवाज़ सुन कर बुढ़िया ने चिल्ला कर कहा—"अरे कोई उसे पकड़ता भी तो नहीं। देखो, वह अभी तक भौंक रही है!"

इतना कह कर बुढ़िया ने अपने आंखों की पुतलियां एक बार पुनः ऊपर चढ़ा लीं। यह देख कर डॉक्टर ने एक दासी के कान में कहा कि जाओ गैवरीला को बुला लाओ। स्टीपन बरामदे में सो रहा था। दासी ने उसे जगा कर गैवरीला को बुलाने के लिए भेज दिया। गैवरीला को जब जगाया गया तो वह इतना खिजा कि उसने घर के सम्पूर्ण नौकरों को जगा देने का हुक्म दे दिया। सब लोग जाग गए; लैम्प जलाए जाने लगे। चारों तरफ़ शब्द और प्रकाश की लहरें चल पड़ीं।

जिरेसिम ने जब यह चहलपहल देखी तो उसका माथा ठनका। उसने मूमू को पुकार कर आवाज़ दी। जब वह इस पर भी न मानी तो उसने मूमू को ज़बरदस्ती गोद म उठा लिया और

अपने घर की तरफ़ भगा ले चला। कोठरी में पहुँचते ही उसने अन्दर से दरवाज़ा बन्द कर लिया और मूमू को साथ लेकर तख्त पर लेट गया। थोड़ी ही देर में जिरेसिम के कमरे के दरवाज़े पर अनेक नौकर जमा होगए और बाहर से ठोकरें मार मार कर जिरेसिम को दरवाज़ा खोल देने के लिए प्रेरित करने लगे। इसी समय गैवरीला भी वहां आपहुँचा। उस ने इन लोगों को इस तरह हुल्लड़ मचाने से मना कर दिया। इसके बाद अपने चार पांच दोस्त नौकरों के साथ जाकर उस ने बुढ़िया से कहा कि वह कुतिया न जाने किस तरह इस वक्त वापिस लौट आई है। आप की आज्ञा से कल ज़रूर ही उसे जान से मार दिया जाएगा। बुढ़िया इस बात से भी शान्त न हुई। वह अब भी बहुत अधिक बकझक करती, अगर डाक्टर उसे नींद की दवाई का बहुत बड़ा डोज़ देकर शीघ्र ही सुला न देता।

गैवरीला को उम्मीद थी कि प्रातःकाल उसे खूब डांट पड़ेगी। मगर ऐसा न हुआ। बुढ़िया जब जागी, तो उसने इतनी अधिक कमज़ोरी का बहाना किया कि जैसे उस में अब डांट डपट करने की शक्ति भी नहीं रही हो। उसने अपनी एक दासी को बुला कर कहा—"जाओ, गैवरीला से कह दो कि वह शीघ्र ही, इसी समय, उस कुतिया का यथोचित प्रबन्ध कर दे। उस से कहना कि क्या उसे कुतिया की जान मेरी जान की अपेक्षा भी अधिक प्यारी है।"

वह दासी गैवरीला के पास गई और उसे मालकिन का संदेश

देकर बहुत देर तक बातें करती रही। उन दोनों की बातें जब समाप्त हुईं तो नौकरों का एक झुण्ड जिरेसिम की कोठरी की तरफ़ जाता हुआ दिखाई दिया। गैवरीला स्वयं इस झुण्ड का नेतृत्व कर रहा था। इस झुण्ड ने शीघ्र ही एक जुलूस का रूप धारण कर लिया। घर भर के सम्पूर्ण नौकर इस जुलूस में आ मिले। उछल कूद करते हुए छोटे छोटे बच्चे भी इस झुण्ड के पीछे पीछे चलने लगे। क्रमशः यह सम्पूर्ण जलूस जिरेसिम के दरवाज़े पर पहुँचा। दरवाज़े की सीढ़ियों पर, और उन के नीचे, आदमी ही आदमी जमा होगए। गैवरीला ने आवाज़ दे कर कहा—"दरवाज़ा खोलो!"

अन्दर से कोई आवाज़ नहीं आई। तब दरवाज़े पर जूतों की मार पड़ने लगी। मगर जिरेसिम अब भी नहीं उठा, सिर्फ़ मूमू के भौंकने की आवाज़ सुनाई पड़ने लगी। गैवरीला ने पुनः एक वार चिल्ला कर कहा—"जिरेसिम, मेरा हुक्म है कि दरवाज़ा खोलो!"

स्टीपन ने कहा—"अरे भाई, अपना हुक्म किसे सुना रहे हो। वह तो बहरा है!"

इस पर सब लोग हंस पड़े। गैवरीला ने कुछ शर्मा कर पूछा—"तो फिर क्या किया जाय?"

स्टीपन ने कहा—"दरवाज़े के छेद मेंसे एक लकड़ी अन्दर डालो और उसे अन्दर ही अन्दर घुमाओ।"

इस पर किसी ने दरवाज़े का निरीक्षण करके कहा—"भाई, दरवाज़े का छेद तो किसी चीज़ से बन्द कर दिया गया प्रतीत होता है।"

स्टीपन ने कहा—"उस चीज़ को भी लाठी की मदद से अन्दर ढकेल दो।"

इसी समय मूमू का भौंकना फिर से सुनाई पड़ा। किसी ने कहा—"सुनो, वह फिर से बोल रही है।"

इस पर पुनः एक कहकहा पड़ा। गैवरीला ने कान खुजाते खुजाते स्टीपन से कहा—"तुम्हीं यह छेद खोल दो न?"

स्टीपन आज बड़ा बहादुर बना हुआ था। लाठी अपने हाथ में लेकर छेद में फंसे हुए कोट को उसने अन्दर ढकेल दिया और छेद मेंसे अन्दर की तरफ़ लाठी हिलाने लगा। अचानक इसी समय दरवाज़ा खुल गया और जिरेसिम हुंकार मार कर दरवाज़े पर आ खड़ा हुआ। सब नौकर भाग गए। इन भागने वालों में गैवरीला और स्टीपन सब से आगे थे।

सीढ़ियों से नीचे उतर कर और जिरेसिम की कोठरी से बहुत दूर पहुँच कर गैवरीला ने जिरेसिम को आवाज़ दी—"चुपचाप यहां चले आओ। मालकिन तुम्हें बुला रही हैं।"—डर के मारे वह इतना भी भूल गया था कि जिरेसिम के कान सिर्फ़ देखने भर के ही हैं।

जिरेसिम इस समय अपने दरवाज़े के पास अपनी बाहुओं

को छाती के साथ बांध कर निश्चल भाव से चुपचाप खड़ा था। सीढ़ियों के नीचे बीसियों नौकर खड़े थे, मगर जिरेसिम के पास जाने का साहस किसी में नहीं था। जिरेसिम ने रूसी किसानों के ढंग का लाल कुर्ता पहिन रक्खा था और इस समय सचमुच के किसी विशालकाय राक्षस की तरह प्रतीत हो रहा था। इसी समय गैवरीला अन्य नौकरों से एक कदम आगे बढ़ कर इशारों द्वारा जिरेसिम को समझाने लगा। अब उसे जिरेसिम के बहरा होने का ध्यान हो आया था। गैवरीला ने इशारों से कहा कि मूमू हमें सौंप दो। मालकिन ने उसे मँगवा भेजा है। वह उससे बहुत नाराज़ हैं। यदि तुम उसे हमारे सुपुर्द नहीं करोगे तो मालकिन तुम्हें कड़ा दण्ड देंगीं।

इसी समय मूमू भी अन्दर से निकल आई और जिरेसिम के पास आकर खड़ी होगई। वह कभी मुँह उठा कर जिरेसिम की तरफ़ देखती थी और कभी नीचे की ओर, दूर पर ठहरे हुए नौकरों के झुण्ड की तरफ़।

जिरेसिम ने मूमू की ओर देख कर अपने गले के चारों ओर रस्सी बांध कर फांसी देने का-सा इशारा किया। इस इशारे द्वारा वह गैवरीला से पूछ रहा था—"क्या मूमू को फांसी देनी है?"

गैवरीला ने सिर हिला कर स्वीकृति दी—" हां, ऐसा ही करना है।

तब एक मिनट भर गम्भीर भाव से चुपचाप मूमू की तरफ़

देखते रह कर जिरेसिम ने जो अगला इशारा किया, उसका अभिप्राय यह था कि मूमू को फांसी देने का कार्य वह अपने ज़िम्मे लेता है।

गैवरीला ने इशारों से पूछा कि तुम हमें धोखा तो नहीं दोगे।

इस पर जिरेसिम बड़ी घृणा-व्यंजक हँसी हँसा और तब अपनी छाती पर एक मुक्का मार कर वहां से अन्दर चला गया। कोठरी का दरवाज़ा पुनः अन्दर से बन्द होगया।

नौकरों की कौन्सिल में फिर से विचार होने लगा। गैवरीला ने कहा—"आखिर जिरेसिम ने बात क्या कही है? एक ओर तो उस ने मूमू को फांसी देने का ज़िम्मा स्वयं अपने पर लिया है और दूसरी ओर वह दरवाज़ा बन्द करके अन्दर जा बैठा है।"

स्टीपन ने कहा—"गैवरीला, अब इस बात की चिन्ता न करो। जिरेसिम इतना सत्यवादी है कि वह जो कुछ कहता है, उसे पुरा करके रहता है। वायदा पूरा करने में वह हम सब लोगों से बहुत अच्छा है।"

बाक़ी सब लोगों ने भी स्टीपन के साथ सहमति प्रकट की और अन्त में यही निश्चय हुआ कि अब मूमू को जिरेसिम से छीनने की आवश्यकता नहीं है। गैवरीला ने इतनी सतर्कता अवश्य की कि उसने जिरेसिम के दरवाज़े पर से पहरा नहीं उठाया।

क्रमशः सब लोग तितर बितर हो गए। जिरेसिम की सीढ़ियों पर कुछ लड़कों और दो लाठीबन्द पहरेदारों को छोड़ कर और कोई न बचा। गैवरीला ने मालकिन के पास यह सम्वाद भेज दिया कि कुतिया का पूरा प्रबन्ध कर लिया गया है और पोलीस को बुलाने के लिए भी एक आदमी थाने पर भेज दिया गया है। बुढ़िया ने नींद की दवा का जो डोज़ लिया था, वह इतना तीव्र था कि प्रातःकाल की चाय पी लेने के बाद उसे पुनः नींद आगई।

करीब एक घण्टा बाद जिरेसिम मूमू सहित अपनी कोठरी से बाहर निकला। आज उसने अपना सब से बढ़िया कोट पहिना हुआ था। उसके एक हाथ में टोपी थी और दूसरे हाथ में उसने मूमू के गले की ज़ंज़ीर को थामा हुआ था। पहरेदार ने दौड़ कर गैवरीला को सूचना दी कि जिरेसिम मूमू सहित बाहर जा रहा है। उसने एक पहरेदार को जासूस की तरह जिरेसिम का पीछा करने के लिए नियुक्त कर दिया। इस पहरेदार का नाम इरोशका था। इरोशका जिरेसिम से काफ़ी अन्तर पर उसके पीछे पीछे चलने लगा। उसने दूर ही से देखा कि जिरेसिम मूमू सहित एक होटल के अन्दर प्रविष्ट होगया है। वह भी वहां जा पहुंचा। जिरेसिम ने होटल में पहुँच कर इशारे से सर्वोत्तम मांस की एक बड़ी प्लेट मंगवाई। होटल के परिचारक उसे पहिचानते थे और उसके इशारों को समझते थे। जिरेसिम एक कुर्सी पर बैठ गया और सामने रक्खी हुई टेबल पर उसने अपनी बाहुएं फैला दीं। मूमू

भी शान्त भाव से उसकी बगल में बैठ गई । जिरेसिम उसकी तरफ़ बड़े प्यार से देखने लगा । आज उसने मूमू को बड़े प्रयत्न से साफ़ किया था और उसके सुन्दर बालों पर कंघी करके उसे सजाया था ।

शीघ्र ही शोरबे की एक बड़ी प्लेट वहां लाकर रख दी गई । जिरेसिम ने इसमें बढ़िया फ्रैञ्च रोटी के कुछ टुकड़े मिला दिए और यह प्लेट मूमू के सामने रख दी । अबोध मूमू बड़े उत्साह के साथ यह स्वादु भोजन करने लगी और जिरेसिम अपना उदास मुख उसकी तरफ़ झुका कर एकटक दृष्टि से उसे खाता हुआ देखने लगा । अचानक विशालकाय जिरेसिम की आंखों में दो बूंद आंसू भर आए और शीघ्र ही भारवान हो कर, उसके कपोलों को भिगोते हुए, नीचे की तरफ़ लुढ़क पड़े । नीचे मूमू अपना भोजन कर रही थी । जिरेसिम की आंख का एक आंसू उसकी प्लेट में गिरा और दूसरा मूमू के माथे पर । मूमू ने एक बार नज़र उठा कर जिरेसिम की तरफ़ देखा और इसके बाद वह फिर से अपना भोजन करने लगी । थोड़ी ही देर में मूमू तृप्त होगई और आधी प्लेट की जूठन छोड़ कर उठ खड़ी हुई और पूँछ हिलाने लगी । जिरेसिम भी उठा और होटल का बिल चुका कर बाहर चला आया । इरोशका फिर से उसका पीछा करने लगा ।

होटल से बाहर निकल कर जिरेसिम धीमी चाल से बेलक्ष्य के आगे बढ़ने लगा । जब वह गली के मोड़ पर पहुँचा तो कुछ

देर के लिए रुक कर खड़ा हो गया। शायद वह अपने कार्य की विधि पर विचार कर रहा था। इस के बाद वह ज़रा तेज़ चाल से पुनः चल दिया। अब वह जिन रास्तों पर होकर जारहा था, वे शहर से बाहर ले जाने वाले थे। राह में उसने देखा कि एक नया मकान बनाया जा रहा है। यहां से दो ईंटें उठा कर उसने अपने रूमाल में बांध लीं और पुनः आगे बढ़ने लगा। थोड़ी ही देर में वह शहर के बाहर, नदी के किनारे पर पहुँच गया। नदी की रेत पर, पानी के निकट ही एक झोंपड़ी पड़ी हुई थी और पानी में दो छोटी छोटी नावें तैर रही थीं। जिरेसिम मूमू सहित कूद कर इन में से एक नाव पर सवार हो गया। नाव खोल दी गई और जिरेसिम डांड़ चला कर उसे पानी के प्रवाह के विपरीत, ऊपर की तरफ़ ले जाने लगा। इसी समय झोंपड़ी मेंसे एक बूढ़ा व्यक्ति निकला। जिरेसिम को विना इज़ाज़त के नाव लिए जाते देखकर वह ज़ोर ज़ोर से शोर मचाने लगा। परन्तु जिरेसिम इतनी तेज़ी से नाव चला रहा था कि वह इस समय तक कम से कम दो सौ गज़ ऊपर की तरफ़ बढ़ चुका था। उसने बूढ़े की तरफ़ आंख उठा कर भी नहीं देखा। कुछ देर तक इसी तरह बकझक करते रहने के वाद बूढ़ा पुनः झोंपड़ी में चला गया।

क्रमशः नाव शहर की सीमा पार करके हरेभरे खेतों से आवृत स्थान पर आ पहुँची। चारों ओर सन्नाटा था। कहीं कहीं नदी के किनारे पर कुछ घोड़े, बैल या दो एक किसानदिखाई दे जाते

थे। आस्मान में दोपहर का सूरज चमक रहा था। नदी के प्रवाह में उस का उज्ज्वल प्रतिबिम्ब दूर तक हिलता-डुलता दिखाई देता था। नदी के ऊपर, बहुत ऊँचाई पर, शान्त भाव से बहुत-सी चीलें उड़ती दिखाई दे रही थीं। पानी की लहरों की सन्नाटा उत्पन्न करने वाली ध्वनि को छोड़ कर वहां और कोई शब्द नहीं था। जिरेसिम के डांड़ चलाने की आवाज़ इस सन्नाटे को रह रह कर भंग करती थी और मूमू इस आवाज़ को बिल्कुल निश्चल होकर सुन रही थी।

नाव थोड़ी ही देर में शहर से दो मील की ऊँचाई पर पहुँच गई। इतनी दूर तक लगातार प्रवाह के विपरीत डांड़ चलाते रहने के कारण जिरेसिम थक गया था। उसका शरीर पसीने से तर हो गया था। यहां पहुँच कर उसने डांड़ें रख दीं। नाव पानी के प्रवाह के साथ नीचे की ओर बहने लगी। नदी के ऊपर की गीली और शीतल हवा ने शीघ्र ही जिरेसिम का पसीना सुखा दिया। वह एकटक दृष्टि से चुपचाप मूमू की तरफ़ देखने लगा। नदी के पेंदे में खूब पानी भर आया था, इस लिए मूमू जिरेसिम से करीब दो गज़ की दूरी पर नाव के पतवार की तरफ़, ऊँचाई पर बैठी थी। जिरेसिम के चेहरे पर आज क्रोध, शोक और उद्वेग स्पष्टता के साथ लिखे हुए-से प्रतीत होते थे।

जिरेसिम ने अपना रूमाल खोल कर दोनों ईंटें बाहर निकाल लीं और नाव की मज़बूत रस्सी को खोल कर उसमें उन्हें बांध

दिया। इसके बाद वह उठा, और मूमू के पास पहुंचा। यह स्पष्ट प्रतीत होता था कि वह अजान पशु भी जिरेसिम के आज के व्यवहार में कुछ असाधारणता अनुभव कर रहा है। जिरेसिम को पास आता देख कर मूमू ने बड़े स्नेह के साथ अपनी नाक ऊपर की तरफ़ उठा दी और धीरे धीरे पूँछ हिलाने लगी। जिरेसिम उसके निकट ही बैठ गया। पहले उसने मूमू को दो चार थपकियां दीं। इसके बाद उसने उसे गोद में बैठा लिया और उसके माथे का एक चुम्बन लेलिया। मूमू ने अपना मुँह बढ़ा कर जिरेसिम के वज्र सदृश कपोलों को बड़े स्नेह के साथ चाटना शुरू किया। इसी समय जिरेसिम ने रस्सी में बंधी वे दोनों ईंटें मूमू के गले में बांध दीं। बेचारी मूमू पूर्ण विश्वास के साथ जिरेसिम की तरफ़ देखती और उसके मुँह को चाटती रही। रस्सी बँध गई। जिरेसिम की आंखों में आंसू भर आए। इनमें से एक बूँद मूमू की जिह्वा पर गिरा। आंसू के नमकीन-से स्वाद ने मूमू को चौंका दिया, उसने अपनी जिह्वा ज़रा-सी हटाई ही थी कि जिरेसिम ने अपना मुँह दूसरी ओर को कर लिया और मूमू को उठा कर नदी के प्रवाह में फेंक दिया।

नदी की विशाल लहरें मूमू को एक ही क्षण में अपने अन्दर विलीन कर गईं। पानी में गिरते हुए वह ज़ोर से चीखी थी; उसी क्षण उसके पानी में गिरने की 'छप' से आवाज़ भी हुई थी। परन्तु बहरे जिरेसिम ने इन दोनों में से कुछ भी नहीं सुना।

उसने जब अपनी गर्दन मोड़ कर उस तरफ़ देखा, तो उसे, जिस स्थान पर मूमू गिरी थी, वहां अभी तक छोटी छोटी भँवरगेरियां-सी बनती दिखाई दीं। नदी के वक्षस्थल पर इन भँवरगेरियों के अतिरिक्त मूमू का और कोई चिन्ह बाकी नहीं बचा था।

इरोशका ने जिरेसिम को मूमू सहित नाव पर सवार होते देखा था और इसके बाद वह अपने घर वापिस लौट गया था। गैवरीला ने यह समाचार सुन कर कहा था कि अवश्य ही जिरेसिम मूमू को पानी में डुबो देगा।

उसके बाद दिन भर जिरेसिम किसी को दिखाई नहीं दिया। रात के समय जब सब नौकर भोजन के लिए बैठे तो उस समय भी वह घर में नहीं आया। नौकरों में जिरेसिम को लेकर बात-चीत चलने लगी। एक धोबिन ने कहा—"वह भी अजीब आदमी है। भला कभी एक कुतिया के लिए भी मनुष्य को इतना दुखी होना चाहिए!"

सब लोग इस पर अपनी अपनी टिप्पणियां चढ़ा ही रहे थे कि स्टीपन वहां आ पहुँचा। जिरेसिम की बात चलती देख कर उस ने चिल्ला कर कहा कि अभी कोई दो घण्टा पहले उसने जिरेसिम को अपनी कोठरी की तरफ़ जाते और फिर वहां से निकलते हुए देखा है। स्टीपन ने बताया कि उसने जिरेसिम से यह पूछा था कि वह मूमू को कहां छोड़ आया है, इस पर उसने उसकी गरदन पकड़ कर एक ओर को ढकेल दिया। स्टीपन ने बताया कि इस एक ही धक्के

ने उसके दिमाग़ को चकरा दिया। अन्त में उसने कहा—"जिरे-सिम के घूँसे भी उसी की शकल के होते हैं !"

सब लोग हंस पड़े। भोजन समाप्त होगया था। सब नौकर अपने अपने घरों की तरफ़ चले गए।

मास्को शहर के बाहर की सड़क पर इसी समय एक विशाल-काय यात्री अपने कन्धे पर एक थैला रक्खे चला जा रहा था। यह व्यक्ति जिरेसिम ही था। मूमू को पानी में डुबो देने के बाद उसने निश्चय कर लिया था कि अब वह मास्को में नहीं रहेगा। वह चुपके से अपनी कोठरी में गया था और वहां से अपना आव-श्यक सामान उठा कर इधर चला आया था।

तीन साल हुए, जिरेसिम को गांव से शहर में लाया गया था। जिस किसी तरह इतना समय मास्को में काट लेने के बाद वह इस परिणाम पर पहुँचा था कि अब उसकी मास्को में निभ नहीं सकेगी। उसका गांव मास्को से सिर्फ़ ८० मील की दूरी पर ही था। अपने गांव की ओर जाते हुए आज वह एक विशेष प्रकार की शान्ति अनुभव कर रहा था। रात के समय इस सड़क पर की खुली हवा शहर की दुखद स्मृतियों को भुलाने और उसके हृदय के घावों को शीतलता पहुँचाने में बड़ी मदद देरही थी। आसमान में तारे छिटके हुए थे। पश्चिम दिशा में अब भी सूर्यास्त की थोड़ी थोड़ी लालिमा बाकी थी। सड़क के दोनों ओर रात के पतंगे शोर मचा रहे थे। किनारों के वृक्षों में चिड़ियां अभी तक

चहचहा रही थीं। मगर यह सब ध्वनि जिरेसिम के लिए अश्राव्य थीं। उस बहरे के लिए शब्द की कोई सत्ता ही नहीं थी। अपनी पीठ पर थैली लटकाए वह बड़ी तेज़ रफ़्तार से अपने गांव की तरफ़ बढ़ा जारहा था। इस तरह से, जैसे गाय का बछड़ा अपनी मां के पास जाता है।

सारी रात वह चलता ही रहा। राह की ठण्डी हवा उड़ उड़ कर उससे गले मिलती थी। सड़क के दोनों तरफ़ फूले हुए सरसों के खेत थे। बरसों के बाद उन की भीनी भीनी सुगन्ध सूँघ कर जिरेसिम गद्गद होरहा था। इन नई परिस्थितियों में न उसे थकावट मालूम हुई और न नींद। यहां तक कि पूरब दिशा में लाली छिटक आई। तारे धीरे धीरे अस्त होने लगे और चारों ओर का सभी कुछ प्रातःकाल के प्रकाश से आलोकित हो उठा। जिरेसिम इस वक़्त तक तीस मील चल आया था।

दो ही दिनों में वह अपने गांव में पहुँच गया। उस की झोंपड़ी में अब किसी मृत सिपाही की विधवा ने डेरा डाल दिया था। वह जिरेसिम को लौट आया देख कर चकित होगई। जिरेसिम अपनी झोंपड़ी के अन्दर गया और सब से पहले घुटने टेक कर उसने ईश्वर को नमस्कार किया। इस के बाद वह गांव के मुखिया के पास गया। अपने ग्रामीण भाई बन्धुओं से मिल कर उसे बड़ी सान्त्वना मिली। वह फिर से अपने गांव में रहने लगा।

मास्को में बहुत दिनों तक जिरेसिम का कोई समाचार नहीं

मिला। बुढ़िया के नौकरों ने सब स्थान देख डाले, मगर जिरेसिम का पता न चला। अन्त में वे लोग इसी परिणाम पर पहुंचे कि जिरेसिम ने अपनी कुतिया के साथ ही साथ नदी में कूद कर आत्मघात कर लिया है। गैवरीला ने इस बात की रपट थाने में जाकर भी लिखवा दी। जब बुढ़िया को बताया गया कि मूमू के साथ जिरेसिम ने भी आत्मघात कर लिया है, तो वह फूट फूट कर रोने लगी। बुढ़िया ने कहा कि उसने मूमू को मार डालने की कभी आज्ञा नहीं दी। वह तो सिर्फ़ उसे यहां से हटा देना चाहती थी। उस का दावा था कि यह सब गैवरीला की बदमाशी है। इस के लिए उस ने उसे बड़ी डांट डपट बताई।

कुछ दिनों बाद बुढ़िया के घर में भी यह खबर पहुंच गई कि जिरेसिम आजकल अपने गांव में है, वह मरा नहीं। यह समाचार सुन कर पहलेपहल तो वह बड़ी प्रसन्न हुई और उस ने आज्ञा दी कि जिरेसिम को पुनः मास्को ले आया जाय। परन्तु बाद में वह खुदबखुद ही कहने लगी—"नहीं, जिरेसिम फरमाबरदार नहीं है। उसे मास्को लाने की ज़रूरत नहीं।"

बुढ़िया तो कुछ ही समय बाद गुज़र गई और उस के भाइयों ने उसका घर भी शीघ्र ही उजाड़ दिया। परन्तु जिरेसिम आज भी अपने गांव में ज़िन्दा है। उस के जिस्म में अब तक भी चार आदमियों के बराबर शक्ति है और गांव भर के किसान उस की प्रतिष्ठा करते हैं। जिरेसिम के सम्बन्ध में दो बातें प्रसिद्ध हैं।

एक तो यह कि वह कभी किसी स्त्री से बात तक नहीं करता। और दूसरा यह कि कुत्तों के लिए उसके दिल में प्रेम के भाव रहने पर भी, वह कोई कुत्ता नहीं पालता। गांव के लोग इन दोनों बातों का असली कारण तो जानते नहीं, इस लिए उन्हों ने खुद ही उन के कारण भी ईजाद कर रक्खे हैं। उनका कथन है कि जिरेसिम गूंगा और बहरा है इस लिए स्त्रियां उसे पसन्द नहीं करतीं और वह भी उनकी परवाह नहीं करता। उस के कुत्ता न पालने के सम्बन्ध में लोगों की धारणा यह है कि वह इतना मज़बूत है कि उसे अपनी झोंपड़ी की रक्षा के लिए कुत्ता रखने की ज़रूरत ही नहीं। आप भारी इनाम का लालच देकर भी कोई ऐसा चोर नहीं ढूंढ सकते, जो जिरेसिम की चोरी करने का साहस कर सके।

चरागाह

जुलाई की मौसम मुझे बहुत पसन्द है। इन दिनों का प्रभात बहुत सुहावना होता है। सूर्योदय के समय न तो आंधियों के दिनों की-सी लालिमा-मिश्रत धुंध होती है और न उदय के साथ ही सूरज चमकीली धूप द्वारा दुनियां को तपाने लगता है। इन दिनों आस्मान स्वच्छ होता है, मगर फिर भी धूप नरम और जीवन देने वाली होती है। सूरज किसी महीन, उज्ज्वल और सफ़ेद चंदुए की ओट से प्रकाश देता हुआ प्रतीत होता है। अन्तरिक्ष की सीमान्त रेखाएं हल्का पीला रङ्ग लिए रहती हैं, उन में स्थिरता होती है। आकाश में बादल नहीं होते, सिर्फ़

कभी कभी बदली के दो तीन छोटे छोटे टुकड़े इधर उधर लुढ़कते फिरते दिखाई देजाते हैं। बादलों की ये नीली-सी रेखाएं जब कभी किसी स्थान पर हल्की-सी बूंदाबांदी भी करती हैं तो दूर से ऐसा प्रतीत होता है, जैसे नीले बादलों के ये पतले-से टुकड़े हवा में घुलते चले जा रहे हों। सूर्यास्त के समय ये सब टुकड़े जमा होकर पूरब में जा खड़े होते हैं, जैसे विश्व के इस महान सिनेमा-हाल के रिज़र्व्ड बौक्सों पर बैठ कर वे सूर्यास्त का मनोहर दृश्य देख रहे हों। निर्मल पश्चिम में सूरज उसी शान से अस्त होता है, जिस शान से वह उदय हुआ था। बादलों के टुकड़े लाल लाल आग जैसे बन जाते हैं। पश्चिम दिशा सुनहरी आभा धारण कर लेती है। क्षण क्षण में दृश्य बदलता है और अन्तरिक्ष का यह सुनहरापन धीरे धीरे जामनी रङ्ग में परिवर्तित होता जाता है। क्रमशः आस्मान में टिमटिमाते तारे दिखाई देने लगते हैं, जैसे आकाश की खुली छत पर रक्खे ये मिट्टी के दीये खुली हवा के झोंकों से शीघ्र ही बुझ जाने वाले हों। मगर ज्यों ज्यों तारे संख्या में बढ़ते जाते हैं, त्यों त्यों इन का प्रकाश भी अधिक उज्ज्वल, स्पष्ट और स्थिर होता जाता है।

इस मौसम में आस्मान के सभी रंग स्पष्ट परन्तु कोमल होते हैं, मगर उनमें चमक नहीं होती। प्रत्येक चीज़ में सीमा के अन्दर एक उल्लास रहता है। किसी किसी समय गरमी बढ़ भी जाती है, मगर वायु का प्रवाह गरमी को किसी एक जगह जमा

नहीं होने देता।

जुलाई के एक ऐसे ही सुन्दर दिन, मैं तूला सरकार के एक ज़िले में बटेरों का शिकार करने के उद्देश्य से निकल गया। इस सुन्दर पहाड़ी प्रदेश में शिकार में बहुत कामयाबी हासिल हुई। मेरा शिकार का थैला इतना भर गया कि उसके बोझ से मेरे कन्धे दुखने लगे। क्रमशः सूरज डूब गया और आकाश का बढ़ता हुआ अन्धकार सामने की हरी भरी घाटी पर भी प्रतिबिम्बित होने लगा। तब जाकर मुझे ख्याल आया कि इस तरह से जंगल में अकेले खड़े रह कर तारों के उदय का मनोहारी दृश्य देखना खतरे से खाली नहीं है, इस लिए मैं बड़ी तेज़ी से अपने आश्रय-स्थान की तरफ़ लौट चला। झाड़ झंखाड़ों से भरे उस स्थानको पार कर, मैं रास्ता ढूढ़ने की गरज़ से एक पहाड़ी शिखर पर चढ़ गया। वहां से यह देख कर मुझे बड़ी निराशा हुई कि इस जगह तो मैं आज तक पहले कभी नहीं आया था। मैं ने देखा, सामने एक तंग मैदान है, दाईं ओर घना जंगल है। बड़ी चिन्ता के साथ मैंने सोचा—"ओह, मैं तो राह भूल गया!"

मेरा ख्याल था कि ग़ल्ती से मैं बहुत बाईं ओर चला आया हूँ, इस लिए पहाड़ी पर से उतर कर मैं तलहटी के घने जङ्गल मेंसे होते हुए अपने दाईं ओर को बढ़ने लगा। इस समय तक रात के जीवों का मूर्त्तिरहित गीत प्रारम्भ होचुका था। मेरे सिर पर चिमगादड़ वृत्ताकार घेरे में मंडराने लगे थे। मगर इन सब की

ओर मेरा ज़रा भी ध्यान नहीं था। मैं सोच रहा था कि मैं अधिक से अधिक अपनी राह से मील भर ही दूर निकला होऊँगा। बस, अब शीघ्र ही वहां पहुँच जाऊँगा।

अन्त में मैं जंगल के पार तो पहुँच गया, मगर राह कहीं दिखलाई न दी। मैंने देखा, सामने सरकण्डे और कांटेदार झाड़ियों के छोटे छोटे झुरमुट हैं। यह स्थान कुछ ऊँचाई पर है, इस से कुछ ही दूरी पर एक सुनसान और निर्जन मैदान फैला हुआ है। मुझे कुछ समझ न आया कि मैं किस जगह पर हूँ। रात का अन्धकार प्रतिक्षण घना होता चला जाता था। मैं रास्ता भूल गया था, इस कारण मुझे थोड़ा थोड़ा भय प्रतीत होने लगा। इन झाड़ियों से अपने को बचाते हुए मैं बड़ी शीघ्रता से दाईं ओर को चल दिया। थोड़ी ही देर में मुझे एक पगडण्डी दिखाई दी। इस पर बड़ी बड़ी घास उगी हुई थी। यह साफ़ प्रतीत होता था कि इस पगडण्डी पर आवागमन नहीं के बराबर होता है। मगर मेरे लिये राह का मिल जाना भी बहुत था। दूर पर, मैदान के एक पार्श्व में, जंगल-सा दिखाई दे रहा था, यह पगडण्डी मुझे उसी तरफ़ लिए जा रही थी।

काफी दूर चल लेने के बाद मैं चौंक कर खड़ा होगया। अन्धकार काफ़ी बढ़ गया था, मगर फिर भी मुझे साफ़ दिखाई दे गया कि जिसे मैं दूर से जंगल समझ रहा था, वह तो छोटी छोटी पहाड़ियां की पंक्ति है। "हे ईश्वर मैं किधर आ भटका हूँ?"

—मगर यहां खड़े रहने से क्या लाभ। मैं पुनः आगे बढ़ने लगा। एक पहाड़ी खतम होती है, दूसरी शुरू होजाती है। मैं चलता चला जा रहा हूँ। पैर थक गए हैं, मगर किया क्या जाय। यह लो, पहाड़ियां खतम होगईं। अब मैदान शुरू होगया। मैं आस्मान के तारों की मदद से दिशाओं का अन्दाज़ा लगा कर चुपचाप आगे बढ़ता चला जा रहा हूँ। इतनी निर्जनता मैंने पहले कभी नहीं देखी। मेरे चारों ओर फैली दिशाओं में मानवीय प्रकाश का कहीं चिन्हमात्र भी दिखाई नहीं देता। वायु शान्त है। जीव जन्तु सभी जैसे सो चुके हैं। सिर्फ़ रात के कीड़ों की अव्यक्त और ऊंची नीची आवाज़, पृथ्वी के न जाने किस किस कोने से, आरही है,—यह आवाज़ इस नीरवता को और भी अधिक बढ़ा रही है।

जब मेरी थकान बढ़ गई तो मैं ने सोचा कि अब मुझे घास पर ही कहीं लेट जाना चाहिये और कल के प्रातःकाल की प्रतीक्षा करनी चाहिये। अपनी नज़र से अन्धकार को भेद कर इस काम के लिये मैं किसी उचित स्थान की खोज करने लगा। अचानक मुझे दिखाई दिया, मैं तो एक ऊँची और सीधी चट्टान के किनारे पर आ पहुंचा हूँ। अगर एक भी कदम आगे बढ़ता तो अथाह खड्ड में जा गिरता! मैं सम्हल कर खड़ा होगया। सामने खूब निचाई पर एक लम्बी चौड़ी घाटी फैली हुई है। इस घाटी में एक बड़ी-सी नदी अर्धवृत्ताकार होकर लेटी हुई है। नदी के पानी

की चमक मुझे साफ़ साफ़ दिखाई दे रही थी। नदी के इस ओर घास से भरा एक मैदान था; इस मैदान में दो तीन स्थानों पर आग जलती हुई दिखाई दे रही थी, इन अग्नियों से धूआं उठ कर कुछ ऊँचाई तक पहुंचने के बाद विलीन होजाता हुआ प्रतीत होता था। उसके नज़दीक ही हिलती जुलती कुछ मनुष्य मूर्त्तियां की छायाएँ भी दिखाई देती थीं।

अब जाकर मुझे समझ आ गया कि मैं किस जगह आ पहुंचा हूं। यह तो वैज़हिन की सुप्रसिद्ध चरागाह है! मैंने सोचा कि अब यह रात सब से नज़दीक वाली अग्नि के निकट जाकर ही काटूंगा। उस अंधकार में, बहुत ही सावधानी से, मैं नीचे उतरने लगा। उतरते हुए तो कोई दुर्घटना न हुई, मगर ज्योंही मैं मैदान में पहुँचा, उसी समय निकट की आग के पास से दो कुत्ते झपट कर मुझ पर आ टूटे। मैंने उनके मालिकों को बुलाना शुरू किया। वे दौड़ कर मेरे निकट आए और उन्हों ने अपने कुत्तों को पुचकार कर शान्त किया।

इन लोगों को मैंने व्यापारी समझा था, जो रात होजाने के कारण यहां विश्राम कर रहे थे। मगर जब वे मेरे निकट आए, तो मैंने देखा कि वे सब बालक हैं, जो नज़दीक के गांव से अपने घोड़ों और टट्टुओं को चराने के लिये यहां आए हुए हैं।

आग के निकट पहुंच कर मैंने लड़कों से कहा कि मैं राह भूल कर इधर निकल आया हूं। मैं साथ ही पड़े हुए एक बड़े पत्थर पर

बैठ गया। लड़कों ने मुझ से पूछा कि आप कहां से आरहे हैं। मैंने जवाब दे दिया। इसके बाद फिर चुप्पी हो गई।

मैं थका हुआ था, इस लिये मैंने अपना लबादा बिछाया और उस पर लेट गया। पास ही टिमटिमाती हुई आग बल रही थी। आस्मान में तारे चमक रहे थे। चारों ओर सन्नाटा था। आग के निकट पांच लड़के बैठे थे। इन की बातचीत से मुझे इन सब के नाम मालूम होगए। इनके नाम थे—फ़ेदिआ, पावलूचा, इल्यूशा, कोस्तिआ और वेनिआ। वे दोनों कुत्ते भी निकट बैठे थे और यह साफ़ प्रतीत होता था कि इन कुत्तों को मेरी उपस्थिति अभी तक बहुत खटक रही है, मगर वे अपने मालिकों, यानी उन लड़कों का रुख देख कर मुझ पर आक्रमण न करने के लिये बाधित हैं। आग से कुछ ही दूरी पर अनेक घोड़े चर्र चर्र आवाज़ करते हुए घास चर रहे थे। उनके लटकते हुए लम्बे लम्बे मुँह इस अन्धकार में एक विशेष प्रकार का दृश्य उत्पन्न कर रहे थे। मैं पाठकों से प्रार्थना करता हूँ कि वे मुझे इन पांचों लड़कों का परिचय दे लेने दें।

इन में फ़ेदिआ की उम्र करीब चौदह साल की होगी। उसके अङ्ग कोमल और सुन्दर थे। बाल घुंघराले, आंखें चमकीलीं और नज़र साहसभरी तथा आज़ाद थी। मुँह पर जो मुस्कराहट आती थी, उसमें आधी गम्भीरता और आधा हास्य होता था। उस की सम्पूर्ण रचना से यह स्पष्ट प्रतीत होता था कि वह किसी सम्पन्न कुटुम्ब का बालक है और आज रात को केवल मौज के उद्देश्य से

ही यहां आया हुआ है।

इस टोली का दूसरा बालक पावलूचा था। उस के बाल काले और अस्तव्यस्त थे। चेहरे की हड्डियां उभरी हुई. आंखें भूरी और रंग पीला था। चेहरा बड़ा था परन्तु उसकी गढ़न असुन्दर नहीं थी। सिर बड़ा था, क़द कुछ नाटा था। उसकी रचना में ऐसी कोई बात नहीं थी जिस की तारीफ़ की जासके, फिर भी उसने मुझे अपनी ओर सब से ज़्यादा आकृष्ट किया। उसकी दृष्टि से अक्लमन्दी और खुलापन टपकता था। उस के स्वर से उस के चरित्र की मज़बूती स्पष्ट विदित होती थी। उस की उम्र बारह बरस की होगी।

तीसरे बालक इल्यूशिआ की मुखाकृति बहुत मामूली थी। उस का मुँह बड़ा, नाक और ठोड़ी पतली और आंखें कमज़ोर थीं। उसके होंठ स्थिर और अचल थे, भवें आपस में मिल रही थीं, और शायद आग की वजह से उस की आंखें बार बार झपकियां लेती थीं। उसके भूरे और लम्बे बाल नीचे की ओर लटक रहे थे, जिन्हें वह हर समय अपने हाथ की मदद से बिखर जाने से रोकता था। उस की उम्र भी करीब करीब पावलूचा के बराबर ही होगी। इल्यूशिआ देखने में बड़ा अप्रिय-सा प्रतीत होता था।

कोस्तिआ की उम्र दस साल से अधिक न होगी। उसकी विषादपूर्ण मुखमुद्रा के कारण मेरा ध्यान उस की ओर विशेष-रूप से आकृष्ट हुआ। उस का चेहरा पतला, छोटा और उभरा

हुआ था। नाक तोते की नाक की तरह नोकीली थी। उसके होंठ इतने पतले थे कि उन में भेद कर सकना तक मेरे लिये कठिन होरहा था। उसकी बड़ी बड़ी काली आंखें असाधारण थीं। उन में पिघली हुई चमक भरी पड़ी थी। ऐसा प्रतीत होता था कि मानो वह अभी बोलेगा। मगर बच्चों की सारी बातचीत में वह एक अक्षर भी नहीं बोला। वह छोटा था, मुलायम था और गरीबों के से कपड़े पहिने हुए था।

पांचवें बालक वेनिआ पर पहले तो मेरी निगाह ही नहीं पड़ सकी। वह घास पर एक चादर ओढ़े लेटा हुआ था। उसकी उम्र सात साल से अधिक न होगी। सारी बातचीत में बहुत थोड़ी बार उसने अपना सिर ऊपर उठाया।

मैं एक झाड़ी के नज़दीक लेटे रह कर इन बालकों की ओर देख रहा था। उन्हों ने आग पर एक बर्तन रक्खा हुआ था, इस में आलू उबाले जा रहे थे। यह काम पावलूचा के सपुर्द था। वह घुटनों के बल बैठ कर अपने काम में दत्तचित्त था। फ़ेदिआ उस के निकट ही आधी लेटी हुई दशा में पड़ा था। इल्यूशिआ कोस्तिआ के निकट लेटा हुआ था और बार बार अपनी आंखें झपका रहा था। कोस्तिआ दूर पर, अन्धकार में न जाने क्या चीज़ देख रहा था। वेनिआ अपनी चटाई पर चुपचाप और स्थिर होकर पड़ा था। मैं भी इस तरह लेटा हुआ था, जैसे नींद में पड़ा हूँ। क्रमशः बच्चों में बातचीत का दौरदौरा पुनः अबाधित रूप से

चलने लगा।

पहले तो वे इधर उधर की कुछ बातें करते रहे। इस के बाद फ़ेदिश्रा ने इल्यूशिश्रा को लक्ष्य कर के कहा—"तुम ने भूत को देखा है ?"

इल्यूशिश्रा ने कांपती हुई श्रावाज़ में जवाब दिया—"नहीं, मैं ने नहीं देखा। उसे कोई नहीं देख सकता। हां, मैंने उसकी आवाज़ सुनी है। और भी बहुतों ने उसकी आवाज़ सुनी है।"

पाल ने पूछा—"जब वह तुम्हारे पास श्राया था, तो कहां ठहरा था ?"

"कागज़ों के कारखाने में टब रखने का जो कमरा है—वह चक्की की दूसरी तरफ़—उस में।"

"ओह, क्या तुम कारखाने में काम करते हो ?"

"हां, मेरे भाई ! मैं कागज़ों को चिकना करने वाले विभाग में थोड़ा बहुत काम करता हूँ।"

"ओह, तो तुम मज़दूर हुए न ?"

इसी समय फ़ेदिश्रा ने पूछा—"मगर तुम ने भूत की आवाज़ कैसे सुनी ?"

"मैं तुम्हें बताता हूँ। मेरे सब भाई अवदिश्रा, फ़ीदर, कोसोई, कोफ़ आदि भी उसी कारखाने में काम करते हैं। एक दिन काम ज्यादा था, अतः हम सब शाम को बहुत देर तक काम करते रहने के बाद जब कारखाने से चलने लगे तो फ़ोरमैन ने श्राकर कहा

कि कल सुबह तुम सब को बहुत जल्दी यहां आना पड़ेगा, इस लिए अच्छा यह हो कि आज रात को तुम लोग यहीं सो जाओ। इस पर हम लोग वहीं ठहर गए और रात को टब रखने के कमरे में सोए। हम लोग अभी लेटे ही थे कि मेरे भाई अवदिया ने कहा—"अगर आज रात यहां भूत आजाय तो!" उसका इतना कहना ही था कि हम अपने ऊपर से एक विचित्र-सी आवाज़ सुनाई देने लगी। हम लोगों का कमरा निचली मंज़िल में था और यह आवाज़ ऊपर के दाएँ भाग से आरही थी। कुछ देर बाद यह आवाज़ चक्कर में से आने लगी। वीच वीच में छत के तख्ते तक हिल उठते थे। थोड़ी देर बाद भूत पानी में घुस गया और वहां से गुनगुनाने लगा। चक्कर का एक सिरा पानी में था। थोड़ी देर में चक्कर चल पड़ा। आश्चर्य की बात यह है कि फोरमैन ने सोने से पहले चक्कर को अच्छी तरह से बांध भी दिया था। चक्कर कई बार घूमा और फिर ठहर गया। उस के बाद भूत ऊपर के कमरे से नीचे उतरने लगा। सीढ़ियों पर उस के धीमे धीमे उतरने की आवाज़ साफ़ साफ़ सुनाई देती थी। वह बहुत धीरे से उतर रहा था, क्योंकि उसका भार बहुत ज़्यादा है। सीढ़ियां उसके भार से टूटने को हो रही थीं।......... अन्त में नीचे उतर कर वह दरवाज़े की ओट में, न जाने किस लिए, खड़ा हो गया। हमने देखा.........थोड़ी देर में दरवाज़ा पूरे तौर से खुल गया। हम लोग डर के मारे आधे मर

गए। मगर फिर भी हमारा देखना उसी तरह जारी रहा । थोड़ी देर तो सब ओर शान्ति रही, उसके बाद टब के नज़दीक पड़ा हुआ एक बड़ा कड़छा खुदबखुद उठा और टब में जा पड़ा। थोड़ी देर में वह खुदबखुद बाहर निकल कर अपनी जगह लौट आया। शीघ्र ही यह कड़छा उस टब से दूसरे टब की तरफ़ चला गया और क्रमशः दरवाज़े के बाहर चला गया। यह भूत की ही करामात थी। बाहर जाकर वह भेड़ की तरह से, बड़ी ऊँची आवाज़ में मिमियाने और खांसने लगा। उस की इस आवाज़ से हमें इतना डर लगा कि हम सब एक दूसरे से चिपट गए; जैसे ठोस सीसे का एक ढेर बन गया हो। वह डर भी बड़ा मज़ेदार था।"

पाल ने पूछा—"भूत को खांसी क्यों आगई?"

"मालूम नहीं। शायद ओस की वजह से..."

थोड़ी देर तक चुप्पी रही। बाद में फ़ेदिआ ने पूछा—"आलू तैयार होगए या नहीं?"

पाल ने एक आलू निकाल कर देखा और कहा—"अभी नहीं हुए!"

इसके बाद दरिया की ओर देख कर वह बोला—"ओह, तुमने सुना? वह कैसे कूदा? यह ज़रूर कोई मच्छ होगा।"

अगले ही क्षण आस्मान की ओर देख कर वह चिल्लाया—"देखो, देखो, पुच्छल तारा!"

इसी समय कोस्तिआ ने एक कमज़ोर-सी आवाज़ में कहा—

"भाइयो, सुनो, मेरी चाची ने मुझे उस दिन जो कुछ बताया था, वह मैं तुम्हें सुनाता हूँ।"

फ़ेदिआ ने अपनाने की-सी आवाज़ में कहा—"बहुत अच्छा, सुनाओ। हम लोग ध्यान से सुन रहे हैं।"

"उस गांव के बढ़ई गोवरीलो को तो तुम सब जानते ही होगे।"

"हां, हां......तो फिर?"

"तुम्हें पता है कि वह इतना दुखी क्यों रहता है? वह किसी से बात क्यों नहीं करता? मैं तुम्हें इसका कारण बताता हूँ। मेरी चाची ने मुझे बताया है कि एक दिन वह जंगल में अखरोट चुनने के लिए गया। जब वहां से लौटने लगा तो राह भूल गया। इतने में रात होगई। बहुत देर तक इधर उधर भटकने के बाद उसने सोचा कि यहीं कहीं रात काट कर सुबह अपना मार्ग खोजूँगा। यह सोच कर वह एक वृक्ष पर सवार होकर होशियारी के साथ लेट गया और उसे गहरी नींद आगई। थोड़ी देर बाद उसे सुनाई दिया, कोई उसका नाम लेकर बुला रहा था—"गोवरीलो! गोवरीलो!" वह जाग गया और बुलाने वाले को खोजने लगा। परन्तु उसे कोई दिखाई नहीं दिया। वह फिर से सो गया, परन्तु शीघ्र ही उसे पुनः सुनाई दिया—"गोवरीलो! गोवरीलो!" अब के उसने अच्छी तरह से खोज की। उसे दिखाई दिया कि सामने की एक शाखा पर एक परी बैठी है और चांद की रोशनी में उस का सफ़ेद शरीर चमक रहा

है। परी इतनी चिट्टी थी, जैसे वह चांदी की बनी हो। जब परी ने देखा कि गोवरीलो बहुत अधिक डर गया है, तो वह ज़ोर से हंस पड़ी और उस ने हाथ के इशारे से उसे अपनी तरफ़ बुलाया। गोवरीलो उधर चलने ही वाला था कि अचानक उसे अपने क्रास का ध्यान आगया। उसने अपने हाथों से क्रास को छूना चाहा, मगर उसके हाथ मानों पत्थर के होगए थे। बड़ी कठिनता से वह क्रास तक अपना हाथ पहुँचा सका। परन्तु ज्यों ही उसने अपने क्रास को छुआ, त्योंही परी ने रोना शुरु कर दिया और उसका मुँह हरे हरे पत्तों से ढँक गया, जैसे वह पत्तों में ही छिप गई हो। गोवरीलो ने उस की तरफ़ देखकर पूछा—'तुम रो क्यों रो रही हो?' परी ने कहा—'मेरे प्यारे मनुष्य! तुम ने अपने क्रास को क्यों छू लिया। यदि तुम इसे न छूते तो हम दोनों अनन्त काल तक यहां आनन्द पूर्वक रहते। मगर अब मुझे बहुत तकलीफ़ें उठानी पड़ेंगी। साथ ही मैं अकेली ही तकलीफ़ में नहीं रहूँगी, तुम्हारा जीवन भी दुखमय होजायगा।' इस के बाद गोवरीलो को अपना रास्ता भी खुदबखुद मालूम हो गया और वह अपने गांव में लौट आया। मगर उस रात के अनन्तर उसे किसी ने खुश नहीं देखा।"

फ़ेदिआ के मुँह से अनायास ही निकला 'शैतान परी!' इस के बाद एक क्षण तक रुक कर उस ने कहा—"मगर वह बेईमान परी एक सच्चे ईसाई को तकलीफ़ में कैसे डाल सकी?"

कोस्तिआ ने जवाब दिया—"यह तो नहीं मालूम, मगर मैंने जो कुछ कहा है वह बिल्कुल सच है। गोवरीलो का कहना है कि परी की आवाज़ मेंढ़क की आवाज़ के समान शोकपूर्ण थी।"

फ़ेदिआ ने कहा—"बड़ी अजीब बात है!...मगर गोवरीलो इतना उदास क्यों होगया?"

"परी उसे फंसाना चाहती थी। उन का काम ही यही है।"

"कहीं इस जगह तो कोई परी न होगी?"

कोस्तिआ ने कहा—"नहीं, यहां नहीं हो सकती। एक तो यह खुली जगह है, फिर यह दरिया का किनारा है।"

सब चुप होगए। अचानक दूर पर शोक और निराशा की-सी एक निशीथ चिल्लाहट सुनाई दी। जिन लोगों ने कभी इस तरह से जंगल में रात काटी है, उन्हें वन्य-निस्तब्धता के इस रात्रि-रुदन से परिचय अवश्य होगा। रात की यह परिभाषा-हीन और अनिर्वचनीय चिल्लाहट मानों नीरवता से ही उत्पन्न होती है और उठ कर वायुमण्डल के किसी हिस्से में थोड़ी देर के लिए लटक-सी जाती है। उसके बाद इसका अवसान होजाता है। सुनने वाले को मानों कुछ सुनाई तो नहीं देता, मगर उसके कानों में से एक ध्वनि गुज़र जाती है। आज इस वक़्त ऐसा सुनाई दिया, जैसे अन्तरिक्ष की सुदूर सीमान्त रेखा पर कोई चिल्लाया है और जंगल के दूसरे सिरे से किसी ने उस चिल्लाहट का जवाब हंसी में दिया है। इस के साथ ही साथ नदी के तल से हिस-हिस की क्षीण-सी

आवाज़ भी सुनाई दी।

बच्चों ने एक दूसरे की तरफ़ देखा और वे सब कांप गए।

इला गुनगुनाई—"क्रास हमारी रक्षा करे!"

पाल ने चिल्ला कर कहा—"अरे भाई! सब डर गए?······ आओ देखें, आलू पक गए या नहीं।"

चारों छोटे छोटे सिर आलू के बर्तन पर झुक गए। केवल वेनिआ ही अपनी जगह से नहीं हिला। उन्होंने भाप निकाल रहे आलुओं को खाना शुरू किया। पाल ने वेनिआ की ओर देख कर कहा—"तुम नहीं खाओगे क्या?" मगर इतने पर भी वेनिआ उसी प्रकार चादर में सिमट कर पड़ा रहा।

थोड़ी देर में बर्तन खाली होगया।

इल्यूशिआ ने कहा—"भाइयो, तुम्हें पता है कि हमारे नज़दीक के गांव में क्या हुआ था?"

फ़ेदिआ ने पूछा—"उस पुरानी दीवार के नज़दीक?"

"हां, हां, उसी वीरान दीवार के नज़दीक, जिस के सब तरफ़ बड़े बड़े छेद हैं। जहां अनगिनित जाले वाली मकड़ियां हैं और बीसियों सांप रहते हैं।"

"अच्छा, तो वहां क्या हुआ था?"

"शायद तुम्हें नहीं मालूम फ़ेदिया! वहां एक आदमी की लाश गढ़ी हुई है। साथ का पोखर जिस ज़माने में बहुत गहरा था, उस ज़माने में उस में एक आदमी डूब गया था। उसकी लाश

वहीं गाढ़ दी गई थी। अब उसकी कब्र साफ़ दिखाई नहीं देती। उसकी जगह सिर्फ़ ज़रा-सी उचान भर ही बाकी रह गई है। एक दिन कारिन्दे ने शिकारी इरमिल को किसी काम से पोस्ट पर भेजा। इरमिल अपने घोड़े पर सवार होकार पोस्ट तक गया और शीघ्र ही अपना काम समाप्त करके गांव की ओर वापिस लौट पड़ा। जब वह उस दीवार के निकट पहुँचा, उस समय तक शाम होगई थी। उस जगह के निकट से गुज़रते हुए उसने देखा कि कब्र पर एक सफेद और बड़ा ही सुन्दर भेड़ का मेमना बैठा है। इरमिल बड़ा ही दयालु आदमी है, उसे ख्याल आया कि रात को भेड़िये इसे फाड़ डालेंगे, इस लिए वह घोड़े से नीचे उतरा और मेमने को अपनी गोद में उठा कर पुनः घोड़े पर सवार होगया। मेमने को उसने अपने सामने बैठा कर घोड़े की रास हिलाई, उसी समय उसने देखा कि मेमना उसकी आंखों की ओर बड़ी विचित्र नज़र से देख रहा है। यह देख कर उसे हैरानी तो ब हुई, मगर फिर भी उसने मेमने को पुचकारा—'पुच्! पुच्!' आश्चर्य यह कि मेमने ने भी अपने दांत दिखा कर हूबहू इरमिल की नकल में कहा—'पुच्! पुच्!'......"

इल्यूशिआ ने अभी अपनी बात समाप्त नहीं की थी कि दोनों कुत्ते उछल कर उठ खड़े हुए, और भौंकते हुए बड़ी तेज़ी से एक दिशा में निकल गए। सब लड़के, यहां तक कि वेनिआ भी, चौकन्ने होकर उठ बैठे। पाल उठ खड़ा हुआ और चिल्लाते हुए

कुत्तों के पीछे दौड़ा। कुत्तों का भौंकना प्रतिक्षण दूर पर दूर होता जाता था। शीघ्र ही पाल भी अन्धकार में विलीन होगया। दूर ही से वह कुत्तों को पुचकार पुचकार कर उन का उत्साह बढ़ाता हुआ सुनाई देरहा था—"ग्रे, ग्रे, शाबास! ब्लैकी, ब्लैकी, पकड़ो!!" क्रमशः यह सभी कुछ सुनाई देना बन्द होगया। करीब पन्द्रह मिनट तक पाल उस अन्धकार में ही उन शिकारी कुत्तों का नेतृत्व करता रहा; इसके बाद वह उन दोनों के साथ वापिस लौट आया। कुत्ते हांफ गए थे। उन की लाल लाल जिह्वाएं बाहर की ओर लटकी हुई थीं।

बच्चों ने चिल्ला कर पूछा—"क्या था? यह क्या था?"

पालने जवाब दिया—"कुछ नहीं। कुत्तों को किसी जीव की, शायद भेड़िये की, आवाज सुनाई दी होगी। इसी कारण वे भाग चले होंगे। मगर अंधेरे के सबब से कुछ दिखाई नहीं दे सका।" इतना कह कर वह ऊँचे ऊँचे श्वास लेते हुए अपनी थकान मिटाने लगा।

इस वक़्त पाल बहुत ही सुन्दर प्रतीत हो रहा था। मैंने सोचा—यह बालक कितना साहसी है। इस अन्धकार में बिना किसी भय के इस प्रकार दौड़ा चला गया!

इसी वक़्त डरपोक कोस्तिआ ने कहा—"ओह, यहां भेड़िये भी हैं!"

पाल ने बेपरवाही के साथ कहा—"रात को खेतों में भेड़िये

घूमा ही करते हैं। मगर सरदियों के अतिरिक्त अन्य ऋतुओं में वे किसी पर हमला नहीं करते।"

इस के बाद पाल आराम करने की इच्छा से लेट गया। अचानक उसका हाथ पास ही बैठे हुए एक कुत्ते की पीठ पर जा पड़ा, कुत्ते ने पाल की तरफ़ स्वामि-भक्ति की कृतज्ञतापूर्ण दृष्टि के साथ देखा। पाल ने भी अपना हाथ खींचा नहीं, उसका हाथ उसी तरह कुत्ते की पीठ पर शाबास देते हुए पड़ा रहा। इस सन्नाटे में वेनिआ फिर से अपनी चादर में सिमट गया।

फ़ेदिआ को अपने धनी घर के होने का जो अभिमानपूर्ण ज्ञान था उसके कारण वह अपना अधिकार समझता था कि दूसरे बालक कहानियां सुना सुना कर उसका मनोरंजन करते रहें। उसने इल्यूशा से कहा—"हां, तुम क्या सुना रहे थे? तुम अपने घर के नज़दीक वाले भुतहे स्थान की बात कर रहे थे न?"

"मेरे घर के नज़दीक? हां, वहां भी एक भूत रहता है। इसे घूमते फिरते कई लोगों ने देखा है। लोग कहते हैं कि वह लम्बा कोट पहिन कर टहलता है, ठण्डे श्वास लेता है और न जाने क्यों, ज़मीन की ओर ताकता रहता है। एक दिन हमारे गांव के पादरी ने उसे देखा और पूछा कि तुम यहां क्या खोजा करते हो?"

फ़ेदिआ ने हैरानी से पूछा—"क्या कहा! पादरी उससे बोला भी था!"

"हां।"

"तो भूत ने क्या जवाब दिया ?"

"उसने बहुत धीमी और बेजान आवाज़ में जवाब दिया—'मैं यहां जादू की बूटी ढूँढ़ा करता हूँ।' पादरी ने कहा—'अब तो तुम मर चुके हो, अब जादू की बूटी लेकर क्या करोगे।' उसने कहा—'यहां ज़मीन में मेरा दम घुटता है, मुझे बड़ी तकलीफ़ होती है, मैं उसका इलाज करूंगा।"

फ़ेदिआ ने कहा—"अजीब आदमी है ! मर चुका है और फिर भी दवा मांगता है। वह शायद छोटी उम्र में ही मर गया होगा।"

कोस्तिआ ने कहा—"यह बड़ी विचित्र बात है। मेरा ख्याल था कि मरे हुए लोगों को श्राद्ध के शनिवार के अतिरिक्त और कभी देख सकना असम्भव है।"

इल्यूशा ने बड़े विश्वास के साथ जवाब दिया—"नहीं, उन्हें जब चाहें, तभी देखा जा सकता है। हां, देखने का तरीक़ा अवश्य आना चाहिये। श्राद्ध के शनिवार को तो सिर्फ़ उन्हीं लोगों को देखा जा सकता है जिनकी मौत जल्दी होने वाली हो। उस दिन अगर तुम चर्च की सीढ़ियों के ठीक बीच में, तन कर, जी भर भी हिले बिना बैठ जाओ और सामने की तरफ़ देखो तो उस साल जिन जिन की मौत होनी है, वे तुम्हें दिखाई देने लग जाएंगे। पिछले साल बुड्ढी ओलिआना ने यही किया था न।"

कोस्तिआ ने उत्सुकता से पूछा—"उसे कोई दिखाई दिया ?"

"हां। पहले तो वह कुछ देर तक चुपचाप ठीक ढँग से बैठी

रही। उसे न कुछ दिखाई दिया और न सुनाई दिया। इसके बाद कुत्तों के भौंकने की आवाज़ सुनाई दी और अन्त में एक लड़का दिखाई दिया। ओलिआना ने पहिचाना—यह इवाश्का था।"

"इवाश्का! जो बेचारा पिछली वसन्त में मरा था?"

"हां वही। इवाश्का जब ओझल हो गया था, तब भी ओलिआना उसी प्रकार बैठी रही। थोड़ी देर में उसे एक बुढ़िया आती दिखाई दी। ओलिआना ने आश्चर्य के साथ पहिचाना, वह खुद ओलिआना ही थी।"

फ़ेदिआ ने कहा—"उसने खुद अपने को आते हुए देखा!"

"इस में हैरानी की क्या बात है? उसने अपने को ही देखा।"

"मगर वह तो अभी तक ज़िन्दा है।"

"अभी साल भी तो ख़तम नहीं हुआ। हमारे गांव में चल कर देखो, उसका क्या हाल होगया है!"

सब चुप होगए। आग बहुत मध्यम पड़ गई थी, पाल ने घास फूँस और सूखी लकड़ियों का एक छोटा-सा ढेर उस पर डाल दिया। कुछ क्षणों तक आग छिपी रही। फिर घास फूँस में गति आने लगी। शीघ्र ही 'तिड़-तिड़' की लय रहित आवाज़ सुन पड़ने लगी। बाद में अनेक रंगों का घना धुँआ उठ खड़ा हुआ और तब एक साथ उस ढेर में से आग की ऊँची और चमकीली ज्वाला भभक उठी। इसी समय अन्धकार मेंसे एक

कबूतर उड़ता हुआ आया और इस अग्नि के प्रकाश में दो तीन वार लुढ़क पुढ़क कर पुनः अन्धकार में ही विलीन हो गया।

पाल ने बड़ी दया के साथ कहा—"आह, बेचारा कबूतर घर भूल कर भटक गया है। अब सारी रात तकलीफ़ उठाएगा।"

कोस्तिआ ने कहा—"यह स्वर्ग की ओर जारहे किसी सज्जन की आत्मा नहीं हो सकती ?"

आग में और अधिक घास फूँस डालते हुए पाल ने जवाब दिया—"शायद...शायद ऐसा ही हो।"

फ़ेदिआ ने कहा—"पाल ! क्या तुमने...उसे क्या कहते हैं... हां, सूर्य-ग्रहण देखा है ?"

"ओह ! जब सूर्य काला हो जाता है...हां, मैंने देखा है।"

"उसे देख कर तुम बहुत डर गए होगे।"

"हां, और हम गरीब किसान ही क्या, गांव का ज़मींदार भी उस दिन बहुत डर गया था। उस दिन एक बुढ़ी औरत, जो किसी धनी के घर में रसोईदारिन का काम करती थी, अपनी भट्ठी तपा कर रोटी पकाने बैठी ही थी कि सूर्य को ग्रहण लग गया। वह बुढ्ढी इतना घबराई कि उस ने अपने सब बर्तन और रसोई का सामान यह कह कर आग में फेंक दिया कि प्रलय का दिन आगया; अब कौन पकाएगा और कौन खाएगा। उस दिन गांव में सब लोग कह रहे थे कि आज सफ़ेद पंखों वाले दो कबूतर आएँगे और वे दोनों सब को खा जाएंगे। उनके आने से पहले

एक प्रेत दिखाई देगा।"

कोस्तिआ ने पूछा—"यह प्रेत क्या होता है?"

इल्यूशा ने ज़रा गरम होकर जवाब दिया—"मूर्ख कहीं के! इतना भी नहीं जानते। मालूम होता है, तुम्हारे गांव के लोग जब आपस में मिल कर बैठते हैं तो कोई बातचीत नहीं करते। बस मिट्टी के बुतों की तरह चुपचाप बैठे रहते हैं। यह प्रेत बड़ा अजीब होता है। एक दिन हमारे गांव में भी ज़रूर आएगा। उसे लोग साफ़ साफ़ देखेंगे। वह आदमी के समान ही दिखाई देता है। उसे पकड़ कर तुम अच्छी तरह बांध दो, वह खुदबखुद ही खुल जायगा। उसे आग में डाल दो, वह जलेगा नहीं। पानी में पत्थर बांध कर डुबा दो, पानी उसका कुछ नहीं कर सकेगा। वह बड़ा ही विचित्र प्राणी होता है।"

इसके बाद पाल ने कहना शुरू किया—"हां, हां, सब लोग इसी प्रेत को हमारे गांव में प्रतीक्षा कर रहे थे। सबका कहना था कि आज अगर ग्रहण लगा, तो प्रेत ज़रूर आएगा। जब ग्रहण लगना शुरू हुआ तो सब लोग अपने घरों से बाहर, सड़कों पर निकल आए। गांव के बाहर का मैदान और सड़कें, सब आदमियों से भर गईं। पलकें तक झपकाए बिना सब लोग सूर्य की तरफ़ देख रहे थे। अचानक सामने की पहाड़ी पर एक आदमी के ढंग की मूर्त्ति दिखाई दी। इसका सिर बड़ा ही अजीब, लोहे का बना हुआ-सा, प्रतीत होता था। सब लोग चिल्ला उठे—"हाय! हाय! प्रेत

आगया ! भागो, भागो !" जिसे जिधर सूझा, उधर ही भाग खड़ा हुआ। गांव का कारिन्दा एक खाई में कूद पड़ा। उसकी पत्नी एक बैलगाड़ी के नीचे छिप गई। बहुत से लोग पास के खेतों में जाकर लेट गए। डर के मारे सब क सब अधमरे हो रहे थे। मजा तो यह था कि वह नवागन्तुक हमारे गांव का अपना लोहार ही था। गांव का यह हाल देख कर वह और भी अधिक डर गया था। वह शहर से, कीलों से जड़ी एक लोहे की चादर खरीद कर ला रहा था और उठाने में आसानी करने के लिए उसने यह चादर सिर पर डाल ली थी।"

पांचों बालक खिलखिला कर हंस पड़े। उसके बाद सन्नाटा छा गया। कोई कुछ नहीं बोला। रात काफ़ी बीत चुकी थी। अर्ध-रात्रि की ठण्डी हवा के हल्के हल्के झोंके आने शुरू होगए थे। आस्मान के तारों का जगत जागृत था। हमारे ऊपर की आकाश गंगा उनकी सराय प्रतीत होती थी।...थोड़ी ही देर बाद अचानक एक चीखती हुई शोकपूर्ण आवाज़ सुन पड़ी। ऐसा प्रतीत हुआ कि नदी के वक्षस्थल के ऊपर कोई दो बार चिल्लाया है। थोड़ी देर बाद यह आवाज़ पुनः सुनाई दी, परन्तु इस बार और भी अधिक दूर से।

कोस्तिआ कांप गया उसने कहा—"यह क्या है ?"

पाल ने शान्ति से जवाब दिया—"यह पपीहा है।"

"पपीहा ! पपीहा !...मगर कल शाम को मैंने सुन था......

शायद तुम ने भी तो सुना था पाल ?"

"तुम किस बात का ज़िक्र कर रहे हो, मैं नहीं समझा।"

"मैं अपने गांव से पूरब की ओर जा रहा था। राह में घने जंगल के नज़दीक पहाड़ी झरने की बदौलत जो लाल कीचड़ जमा है, वह तो तुम ने देखा ही होगा। जब मैं उस स्थान के निकट पहुंचा, तो अचानक मुझे एक बड़ी दुखभरी आवाज़ सुनाई दी—"हौ, हौ, हौ, हई ! हौ, हौ, हौ, हई !!" यह आवाज़ मुझे बहुत देर तक सुनाई देती रही। यह इतनी शोकपूर्ण थी कि इसे सुन कर मैं रो पड़ा। बताओ, यह किस की आवाज़ होसकती है।"

पाल ने कहा—"पिछले साल डाकुओं ने एक पहरेदार को जान से मार कर उस की लाश उसी नाले में फेंक दी थी। यह उसी की आवाज़ होगी।"

"ओह, मुझे यह बात नहीं मालूम थी। नहीं तो इस आवाज़ से मैं इतना न डरता।"

पाल ने कहा—"एक बात और भी है। मैंने सुना है कि कई बार पानी में मेढ़क भी ठीक इस तरह चिल्लाते हैं, जैसे आदमी रो रहे हों।"

"मेढ़क ! नहीं पाल, वह मेढ़कों का चिल्लाना कभी नहीं था।"

—नदी के ऊपर पपीहा एक बार पुनः पुकारा।

कोस्तिआ ने कहा—"वह देखो ! एक और भी है ! यह ज़रूर जङ्गल की पिशाचिनी की आवाज़ है।"

इल्यूशा ने बड़ी प्रामाणिकता के साथ उस की बात काटी और कहा—"नहीं, पिशाचिनी नहीं हो सकती। पिशाचिनी बोला नहीं करती। वह गूंगी होती है। वह तो तालियां बजा कर आवाज़ करती है।"

फ़ेदिआ ने कहा—"तुम ने शायद उसे देखा है ?"

"नहीं। मैंने उसे नहीं देखा। ईश्वर न करे कि वह कभी मुझे दिखाई दे। अभी परसों वह हमारे एक किसान को मिली थी। वह बेचारा रात के समय अकेला जंगल में रह गया था। उसे अकेला देख कर पिशाचिनी ने ज़बरदस्ती उसे एक झाड़ी की तरफ़ ढकेल दिया। सारी रात वह वहां से उठ कर चलने का प्रयत्न करता रहा, मगर पिशाचिनी उसे हर बार झाड़ी की ओर ढकेल देती थी। उसमें बड़ी ताक़त होती है।

"उस किसान ने तो पिशाचिनी को देखा होगा ?"

"हां! उसका कहना है कि पिशाचिनी बहुत विशाल और गहरे भूरे रंग की होती है। वह हर समय अपना शरीर हरे पत्तों से ढके रहती है। वह कभी चांद के प्रकाश में नहीं आती, इस लिए उसे कोई नहीं देख सकता; परन्तु वह सबको देखती है।"

फ़ेदिआ चीख़ उठा—"आह, इतनी भयंकर !"

पाल ने कहा—"मुझे समझ नहीं आता कि ये घृणित जीव ज़िन्दा कैसे रहते हैं।"

इल्यूशा ने डांट कर कहा—"हुश! उसके बारे में ऐसा मत

कहो। वह गूँगी तो है मगर बहरी नहीं। वह सुन लेगी तो बड़ा भयंकर बदला लेगी।"

इस के बाद कुछ देर तक भूतों और प्रेतों के स्वभाव पर विचार होता रहा। फिर थोड़ी देर तक सब लोग तारों की ओर ध्यान से देखते रहे। बाद में पाल ने वेनिआ से पूछा—"तुम्हारी बहिन अन्युता का क्या हाल है?"

"अच्छा है।"

"उस से कहना वह मुझ से मिली क्यों नहीं।"

"मुझे मालूम नहीं कि वह क्यों नहीं आसकी।"

"अच्छा, कल उसे भी आने को कहना।"

"कह दूँगा।"

"उस से कहना, मैं उसे एक बड़ी अच्छी चीज़ दूँगा।"

"मुझे नहीं दोगे?"

"तुम्हें भी दूँगा।"

बालक वेनिआ ने एक ठण्डा श्वास लिया और एक क्षण की चुप्पी के बाद कहा—"नहीं; मुझे कुछ नहीं चाहिए। मेरा हिस्सा भी अन्युता को दे देना। वह बड़ी अच्छी है...बहुत अच्छी है।"

इसी समय पाल एक खाली बर्तन लेकर उठ खड़ा हुआ। फ़ेदिआ नें पूछा—"क्यों, किधर जाने का इरादा है?"

"नदी की तरफ़। मुझे प्यास लग रही है।" कुत्ते भी उठ खड़े हुए और पाल के पीछे पीछे चलने लगे।

इल्यूशा ने चिल्ला कर कहा—"पाल ! ख्याल से पानी भरना। कहीं पानी में न गिर जाना ।"

फ़ेदिश्रा ने कहा—"वह पानी में कैसे गिर सकता है। वह तो बड़ा होशिश्रार है।"

"नहीं गिर सकता !, तुम्हें कैसे पता ? क्या यह नहीं हो सकता कि वह नदी में हाथ डाल कर पानी भर रहा हो और 'पानी का भूत' उसका हाथ पकड़ कर उसे अन्दर खींच ले। लोग तो झट से कह देंगे—'बेचारा अचानक पानी में गिर कर डूब गया !' मगर सच्ची बात किसी को पता नहीं लगेगी। 'अचानक पानी में गिर गया' कह देना बड़ा आसान जो है !...ओह ! उस झाड़ी को कौन हिला रहा है !"

सब लड़कों के कान चौकन्ने हो गए ! मगर कुछ सुनाई न दिया ।

कोस्तिश्रा ने पुनः वही प्रकरण जारी किया। उसने कहा—"हां, इल्यूशा की बात तो ठीक है। देखा नहीं, बेचारी अकुलीना जब से पानी में गिरी, तब से उसका क्या हाल हो गया है ।"

इल्यूशा ने उत्साहित होकर कहा—"हां, हां, देखो न, वह कितनी भयानक बन गई है। कहते हैं, पानी में गिरने से पहले वह बड़ी सुन्दर थी। पानी के भूत ने ही उस का यह हाल कर दिया ।"

इस अभागिनी अकुलीना को मैं स्वयं भी देख चुका हूँ। वह

बेचारी एक पगली-सी औरत है। उसकी मुखाकृति बड़ी भयंकर है। काला चेहरा चेचक के दागों से भरा है, दांत बाहर निकले हुए है। वह फटे पुराने चीथड़े पहिने रहती है। जहां पहुँच जाती है, घंटों खड़ी रहती है।

कोस्तिआ ने कहा—"मगर लोग कहते हैं कि उसने तो जानबूझ कर अपने को पानी में गिरा दिया था, क्योंकि उसके प्रेमी ने उसे धोखा दिया था।"

"बिल्कुल ठीक है।"

कोस्तिआ ने बड़ी उदासी से कहा—"और तुम्हें वासिआ की याद भूल गई क्या?"

फेदिआ ने पूछा—"वासिआ कौन?"

"ओह, वह बेचारा जो नदी में डूब गया था। वह बच्चा कितना सुन्दर था। सब उसे प्यार करते थे। उसकी मां भी कितनी अच्छी थी। उसे पता नहीं क्यों, शुरू से यह डर लगा रहता था कि उसका लड़का पानी में डूब कर मरेगा। इस लिये वह सदा उसे अपने सामने ही स्नान कराती थी। अगर वह कभी हम लोगों के साथ नदी की ओर स्नान करने के लिये आ जाता, तो उसकी माता का चिन्ता के मारे बुरा हाल हो जाता था। वह स्वयं नदी के किनारे मौजूद रहती थी। एक दिन वह अपनी माता से बिना कुछ भी कहे सुने इसी चरागाह की तरफ़ निकल आया था, और नदी के किनारे खेल रहा था। उसकी माता ने

जब उसे घर में अनुपस्थित देखा तो वह बेचारी बड़ी घबराई। बस उसी दिन उसके सिर की टोपी नदी में तैरती हुई पाई गई। मालूम नहीं, उसकी लाश का पानी में क्या होगया। उस दिन के बाद से उसकी माता भी पागल होगई है और प्रायः सामने के नदी-तट पर बैठ कर ऊँचे स्वर में एक शोकपूर्ण गीत गाया करती है। गाते गाते सदैव उस का गला रुंध जाता है, तब वह रोने लगती है।—ईश्वर उस बेचारी पर दया करे।"

फेदिआ ने कहा—"वह देखो, पाल लौटा आरहा है।"

सचमुच पाल वहां आखड़ा हुआ। उस के हाथ में पानी से भरा बर्तन था। एक क्षण तक तो वह चुपचाप खड़ा रहा। इस के बाद बड़ी धीमी आवाज़ में उस ने कहा—"आह, भाइयो! यह कितना भयंकर है......"

कोस्तिआ ने अधीर होकर पूछा—"क्या हुआ ?"

"मैंने नदी में से वासिया की कोमल आवाज़ सुनी है।"

सब बच्चे कांप गए।

कोस्तिआ ने कांपती हुई आवाज़ में कहा—"क्या कहते हो ? क्या ?......"

"ईश्वर मेरा साक्षी है। मैं पानी भरने के लिये ज्योंही नदी की ओर झुका, त्योंही अन्दर से मुझे वासिआ की आवाज़ सुनाई दी—'पावलूचा! पावलूचा! यहां आओ! यहां आओ!' मैं डर कर जल्दी से वहां से भाग आया।"

चारों बच्चे करीब करीब रोते हुए स्वर में कहने लगे—"ईश्वर ! हम पर दया करो !" इस के बाद सब ने तीन तीन बार क्रास का चिन्ह बनाया। पाल इस समय सब से अधिक गम्भीर था।

फ़ेदिआ ने यह गम्भीरता भंग की। उसने कहा—"तब तो ज़रूर ही तुम्हें पानी के भूत ने बुलाया होगा। अभी एक ही मिनट हुआ है कि हम लोग बेचारे वासिआ की ही बात कर रहे थे।"

इल्यूशा ने चिन्तित होकर कहा—"यह एक अपशकुन है ......भयंकर अपशकुन है !"

पाल आग के पास बैठ गया और उसने बड़ी स्थिरता के साथ कहा—"खैर; जो होना है वह तो होकर ही रहेगा ! अपने भाग्य से कोई नहीं बच सकता। ईश्वर हमारी रक्षा करे।"

पाल की इस बात का बच्चों पर बड़ा अच्छा असर पड़ा। थोड़ी देर और बातें करने के बाद सब के सब सोने की तैयारी करने लगे और आग के चारों ओर लेट गए।

थोड़ी देर में कोस्तिआ ने अपना सिर उठा कर कहा—"वह आसमान में कौन बोल रहा है ?"

पाल ने पहले तो सुनने की कोशिश की, फिर जवाब दिया—"यह कैरव पक्षियों का झुण्ड जा रहा है।"

"किधर ?"

"ये पक्षी पूरब की ओर के ऐसे देशों में जा रहे हैं, जहां सरदी नहीं होती।"

"ओह, क्या दुनियां में कोई ऐसा अभागा देश भी है ?"

"हां, है क्यों नहीं । मगर बड़ी दूर है ।"

"कितनी दूर ?"

"बड़ी दूर। कई समुद्रों के परे ।"

इस के बाद सब सो गए ।

मुझे यहां आए तीन घण्टे हो चुके थे। मैं यद्यपि बहुत अधिक थका हुआ था, परन्तु इन बालकों की बातचीत में मुझे इतना अधिक मज़ा आरहा था कि अभी उनकी बातें सुनने के लिए मैं तीन घण्टा और जाग सकता था । मगर वे तो सो गए थे। थोड़ी देर में चांद की एक क्षीण कला पूरब दिशा में दिखाई दी। हवा का ठण्डापन बढ़ गया। बच्चों की आग उन की बातों के समान ही बुझ कर शान्त हो गई और मुझे भी नींद आगई ।

गरमियों की रात समाप्त होने में बहुत वक़्त नहीं लगता । फिर भी सूर्योदयसे पूर्व, काफ़ी प्रभात में ही, मैं उठ खड़ा हुआ । अभी आस्मान में लाली तक भी नहीं छाई थी, यद्यपि संसार प्रकाशमान होता जारहा था और तारे धुंधले हो गए थे। मैं उठ कर बच्चों के निकट गया। रात की आग इस समय तक सफ़ेद राख के रूप में परिवर्तित हो चुकी थी, जिसे घेर कर यह बालक-मण्डली सुख की नींद में सोरही थी। मेरे वहां पहुँचते ही पाल उठ कर बैठ गया।

मैंने पाल से विदा का नमस्कार किया। वह मुझ से बड़े प्रेम से

मिला। एक क्षण तक उसकी ओर देखते रह कर मैं ने उसे पुनः विदाका नमस्कार किया और इसके बाद अपने घर की तरफ़ लौट चला। प्रभात के कारण राह का दृश्य बड़ा सुन्दर हो गया था। चारों ओर ओस के असंख्य बिन्दु मोतियों के समान चमक रहे थे। नीचे नदी का पानी शान्त और संयत स्वर में गान कर रहा था। उस मेंसे घना कोहरा उठता प्रतीत होता था। सारी घाटी हल्के-हल्के सफ़ेद कोहरे से व्याप्त थी। घास पर पड़ी ओस-बिन्दुओं में इन्द्र धनुष के सब रंग दिखाई दे रहे थे। आस्मान में सुन्दर सुन्दर पक्षियों का जानदार संगीत शुरु होचुका था। क्रमशः मैं ऊँची पहाड़ी पर चढ़ गया। इस समय तक प्रकाश का अखण्ड साम्राज्य स्थापित होचुका था। दूर पर गावों के गिरजाघरों के घण्टों का शब्द अस्पष्टरूप में सुनाई देरहा था। वैज़हिन की चरागाह इस समय तक जीवन से पूर्ण होगई थी। सब बालक जाग चुके थे और वे अपने अपने घोड़ों को चराने में व्यस्त थे।

इस सम्पूर्ण वृतान्त के अन्त में अपने पाठकों को यह बताते हुए मुझे बड़ा दुख होता है कि उस दिन के बाद से एक साल के अन्दर ही पाल का देहान्त होगया। मगर उसकी मृत्यु पानी में डूबने से नहीं, अपितु घोड़े की पीठ से गिरने के कारण हुई थी। वह बहुत ही अच्छा लड़का था। पाठकों से मेरा अनुरोध है कि इस कहानी को समाप्त करते हुए पाल की स्मृति में वे एक गहरा श्वास अवश्य लें।

एन्टन चैख़ोव



एन्टन पावलोविच चेख़ोव

रूस—१८६० से १९०४ तक

भूमिका

'विश्व-साहित्य ग्रन्थमाला' के पहले 'सेट' में संसार के चार महान लेखकों की कहानियों के पृथक्-पृथक् संग्रह प्रकाशित किए जा रहे हैं। इन चारों की अपनी-अपनी विशेषता है। रूस का इवान तुर्गनेव उन्नीसवीं सदी का सब से बड़ा कलाविद् लेखक हुआ है; कला की दृष्टि से उन की कहानियां बहुत उन्नत हैं। इंगलैण्ड के थॉमस हार्डी की लेखन-शैली इतनी शक्तिपूर्ण है कि इस दृष्टि से कोई अन्य कहानी-लेखक उन का मुकाबला नहीं कर सकता। फ्रान्स के गी दी मोपासां अनेक लोगों की राय में संसार के सब से बड़े मनोवैज्ञानिक लेखक हुए हैं। उन की कहानियां मनोविज्ञान का बहुत मनोरंजक और सही पाठ होती हैं, और रूस के एण्टन चैखोव की विशेपता उन की गहरी अन्तर्दृष्टि है।

"पाप" इन्हीं एएटन चैखोव की सात कहानियों का संग्रह है। चैखोव ने अपने जीवनभर में जितनी कहानियां लिखी थीं, उन का अंग्रेज़ी अनुवाद तेरह बड़े-बड़े खण्डों में लण्डन की 'चैटो एण्ड विण्डस' ने प्रकाशित किया है। उन्हीं में से ये कहानियां ली गई हैं।

एएटन पावलोविच चैखोव का जन्म १७ जनवरी सन १८६० के दिन दक्षिणी रूस के एक छोटे-से शहर में हुआ था। वहां उन के पिता दूकानदारी का काम करते थे। उन की आर्थिक दशा बहुत मामूली थी। चैखोव ने सन १८८४ में मास्को युनिवर्सिटी से चिकित्सा शास्त्र में डिग्री प्राप्त की। इस के बाद उन्होंने चिकित्सा की दूकान खोल ली, परन्तु इस कार्य में उन्हें सफलता नहीं मिली।

चैखोव को कहानियां लिखने का शौक शुरू ही से था। डाक्टरी के कार्य में उन्हें जो आय होती थी, उन्हों ने अनुभव किया कि उस की अपेक्षा अधिक आय तो उन्हें साहित्य-सेवा द्वारा ही हो सकती है। तब उन्हों ने अपनी दूकान बन्द कर दी, और इस के बाद आजीवन साहित्य-सेवा में ही लगे रहे। उन की कहानियों का पहला संग्रह सन १८८६ में प्रकाशित हुआ था। जब उन्हें इस कार्य में कुछ आय होने लगी, तो मास्को प्रान्त के एक सुन्दर स्थान पर ज़मीन खरीद कर वह वहीं पर रहने लगे। सन १८९२ से १८९८ तक वह इसी स्थान पर रहे। सन १८९९ में उन्हें क्षयरोग हो गया और वह एक पहाड़ी स्थान पर चले गए। वहां उन का स्वास्थ्य पर्याप्त अंश तक सुधर गया। सन १९०१ में ओल्गा निपर नाम की

एक सिनेमा-स्टार से उन का प्रेम होगया और शीघ्र ही दोनों का विवाह होगया। इस सम्पूर्ण अवधि में उन की साहित्य-सेवा बदस्तूर जारी थी। सन १९०४ के शुरू में उन की बीमारी फिर से उग्र रूप धारण कर गई और उसी वर्ष की २ जुलाई को उन का देहान्त होगया। अपने देहावसान तक वह रूस भर में खूब ख्याति प्राप्त कर चुके थे। उन का शव मास्को में लाया गया और उन के देहावसान पर देशभर में शोक मनाया गया।

अपने बीस साल के साहित्यिक जीवन में चैखोव ने बहुत अधिक लिखा। उन्हों ने कुछ नाटक भी लिखे, जो बहुत सर्वप्रिय हुए। उन की कृतियों का अनुवाद संसारभर की सम्पूर्ण सभ्य भाषाओं में हुआ है।

चैखोव की अन्तर्दृष्टि कितनी सूक्ष्म और गहरी है, यह बात पाठक इन कहानियों से भली प्रकार जान सकेंगे। इस संग्रह की सभी कहानियां बिभिन्न दृष्टियों से छांटी गई हैं। मैं कह नहीं सकता कि इन कहानियों का हिन्दी-जगत में कैसा स्वागत होगा, परन्तु मुझे इस बात का निश्चय अवश्य है कि कहानी-कला के प्रेमी इन कहानियों को खूब पसन्द करेंगे और इन से लाभ उठाएँगे।

इस संग्रह की अन्तिम कहानी "ऊँघ में—" का पिछला भाग मैं ने कुछ संक्षिप्त कर दिया है, परन्तु इस बात का यथासम्भव पूर्ण प्रयत्न किया है कि इस से कहानी के भाव-प्रवाह में कोई त्रुटि न आने पाए।

चैखोव की "डार्लिंग" शीर्षक एक कहानी मुझे बहुत पसन्द

है। वह कहानी मैं ने इस संग्रह में इसी लिए शामिल नहीं की, क्यों कि वह "पिस्तौल का निशाना" ❀ नाम की रूसी कहानियों के एक संग्रह में प्रकाशित हो चुकी है।

मुझे विश्वास है कि इन कहानियों से हिन्दी-जगत का दृष्टिकोण अधिक उदार और व्यापक बनेगा।

लाहौर
५ अगस्त १९३२ } —चन्द्रगुप्त विद्यालंकार

❀ प्रकाशक—"प्रवासी-सदन" कलकत्ता। अनुवादक—श्री ब्रजमोहन वर्मा।

विषय सूची

पाप

कालेज का प्रोफ़ेसर मीगेव शाम को टहलते टहलते एक लैम्प-पोस्ट के नीचे जाकर ठहर गया। इधर सन्नाटा था, आने-जाने वालों की संख्या बहुत कम थी। मीगेव इस समय बहुत चिन्ता-मग्न दिखाई देता था। आज से सिर्फ़ छः दिन पहले, जब कि वह ठीक इसी जगह अकेला टहल रहा था, उसे आगिआना मिली थी। आगिआना कुछ ही समय पहले तक उस के घर में धाय का काम करती रही थी। वह सुन्दरी थी, इसलिए मीगेव उस की तरफ़ आकृष्ट होगया था। उन्हीं दिनों वह गर्भवती हो गई थी; यह नहीं कहा जा सकता कि किस तरह से। परन्तु यह तथ्य मालूम होते ही मीगेव ने उसे अपनी नौकरी से बर्खास्त कर दिया था। उस दिन मीगेव को एकान्त में पाकर आगिआना ने

बड़े क्रोध के साथ कहा था—"याद रक्खो, मैं तुम्हारी सब पोल खोल दूँगी। तुम अबोध लड़कियों का जीवन इस तरह बरबाद करते रहते हो! मैं वह बच्चा तुम्हारी देहलीज़ पर रख आऊँगी और यह सब बात तुम्हारी पत्नी को भी सुना दूँगी।"

आगिआना ने उसे यह धमकी देकर दस हज़ार रुपए मांगे थे और कहा था कि यदि मीगेव यह राशि उस के नाम पर बैंक में जमा करवा देगा, तो वह इस रहस्य को किसी पर प्रकट न करेगी।

आज इस जगह पहुँच कर प्रोफेसर मीगेव को वे सब बातें याद आगईं और वह बहुत दुखित होकर सोचने लगा कि मैंने इस तरह क्षणिक आवेश में अपनी आत्मा को पतित क्यों होजाने दिया था।

मीगेव का सैर में जी नहीं लगा, वह घर की तरफ़ वापिस लौट पड़ा। उस के बँगले के आंगन में पूर्ण सन्नाटा छाया हुआ था। वह दरवाज़े के नज़दीक ही एक कुर्सी पर बैठ गया। इस समय तक रात के दस बज चुके थे। आसमान में चांद बादलों के साथ आंख-मिचौनी खेल रहा था। सामने की गली में कोई आदमी दिखाई नहीं देता था। बूढ़े और बच्चे इस समय तक सो चुके थे, नवयुवक शहर के बाग़ों की सैर कर रहे थे—इस लिए सड़कें और गलियां प्रायः सुनसान पड़ी थीं। दरवाज़े की सीढ़ियों पर उस के बंगले की छाया पड़ रही थी, इस लिए वहां प्रकाश नहीं था। थोड़ी देर बाद मीगेव ने सिगरेट पीने की इच्छा से दिआसलाई की एक सींक जलाई। क्षणभर के लिए मीगेव के

आसपास प्रकाश होगया। इस प्रकाश में, उसे दिखाई दिया कि दरवाज़े की सीढ़ियों पर लम्बे आकार का एक सफेद बण्डल-सा पड़ा हुआ है। कोई लम्बी-सी चीज़ किसी नोकीले-से आवरण में बँधी पड़ी है। मीगेव इस तरह चौंका, जैसे उसे अचानक सांप दिखाई दे गया हो। वह उठा, और उस बण्डल के निकट पहुँचा। बण्डल एक तरफ़ से खुला हुआ था। मीगेव ने उसे छूकर देखा—कोई गरम गरम और गीली-सी जानदार चीज़ थी। कालेज का प्रोफ़ेसर मीगेव इस चीज़ को देख कर बहुत अधिक भयभीत होगया। वह चारों ओर ऐसी दृष्टि से देखने लगा, जैसे कोई अपराधी पोलीस से बचने के लिए सब तरफ़ देखता है।

अपनी दोनों मुट्ठियां बांध कर वह बड़े क्रोध में बड़बड़ाया—"वह आख़िर इसे यहां छोड़ ही गई!...मेरा उस दिन का पाप यह मूर्त्तिमान होकर पड़ा है! हे ईश्वर!"

वह क्रोध, लज्जा और भय से बौखला-सा हो उठा।—अब मुझे क्या करना चाहिए? मेरी पत्नी इस समय अगर इस बच्चे को देख ले तो वह क्या कहेगी? मेरे साथी क्या कहेंगे? गवर्नर साहब मेरे मित्र हैं; वह जब मिलेंगे तो ज़रूर मुझे ताने देंगे—"मीगेव मैं तुम्हें बधाई देता हूँ...हि-हि-हि! तुम्हारे बाल तो बेशक बूढ़े होगए हैं, मगर तुम्हारा दिल अभी तक जवान है! ...तुम छटे हुए बदमाश हो!" कल तक ही मेरे इस कलंक की कहानी सम्पूर्ण शहर-भर में फैल जाएगी। कुलीन घरों की माताएँ अब अपने घरों का दरवाज़ा मेरे लिए बन्द कर देंगीं।

अख़बार वाले भी तो इन खबरों को खोज खोज कर छापा करते हैं। वे मुझे क्यों छोड़ेंगे। परसों तक मुझ बेचारे का नाम सम्पूर्ण रूस-भर में प्रसिद्ध हो जाएगा।

बंगले के आहार-गृह की खिड़की खुली हुई थी। उस कमरे में रोशनी थी। अन्दर उस की पत्नी रात के भोजन के लिए टेबल पर जो बर्तन चुन रही थी, उन की आवाज़ धीमे रूप में मीगेव के कानों में पड़ रही थी। आंगन के एक कोने में उसका चपरासी अपनी कोठरी में बैठा हुआ कोई गाना गा रहा था। इसी समय वह बच्चा हिला, मानों उसकी नींद टूट गई हो। मीगेव ने यह देखा और वह घबरा गया। उसे प्रतीत हुआ कि बच्चा अभी रोने लगेगा। उस ने निश्चय किया कि अब बहुत शीघ्रता से काम लेने की आवश्यकता है।

वह गुनगुनाया—"जल्दी! जल्दी!...इसी क्षण मैं इसे किसी और के दरवाज़े पर रख आता हूँ।"

मीगेव ने वह बण्डल उठा लिया और बड़ी सावधानता से चल कर वह आंगन पार करके गली में आपहुँचा। वह अब एक तरफ़ को बढ़ चला।

राह में वह तटस्थ-सा होकर इस घटना पर विचार करने लगा—"कैसी अजीब परिस्थिति है। कालेज का एक सम्माननीय प्रोफ़ेसर इस तरह एक बच्चे को छिपा कर लिए चला जारहा है। या खुदा! इस समय अगर मुझे कोई देख ले और वह सारा मामला समझ जाय, तो मेरी कितनी दुर्दशा होगी।...इसी पास

के दरवाज़े पर ही क्यों न रख दूँ ? ठीक तो है ।...मगर नहीं, वह ऊपर की खिड़की खुली हुई है, उस में से कोई मुझे इसे यहां रखते हुए न देख ले। फिर इसे लेकर कहां जाऊँ ? अगर यह रोना ही शुरु कर दे तो ! ओह, ठीक याद आया, इसे व्यापारी मैक्लिन के यहां लेजाता हूँ ।...वह अमीर है, और नरम हृदय का है । उसकी अपनी कोई सन्तान भी नहीं । सम्भव है कि वह इसे अपना दत्तक पुत्र बना ले और यह बच्चा मिल जाने के कारण ईश्वर का धन्यवाद करे।

परन्तु उस व्यापारी का मकान यहां से बहुत दूर, गली के अन्त पर, दरिया के किनारे था। फिर भी प्रोफ़ेसर ने इस बच्चे को वहीं लेजाने का निश्चय कर लिया।

मीगेव की विचारधारा उसी तरह जारी थी। शीघ्रता से कदम बढ़ाते हुए उसने सोचा —"ईश्वर करे कि वहां पहुँचने तक यह इसी तरह चुपचाप पड़ा रहे, रोए-चिल्लाए नहीं ।...यह भी खूब मज़ेदार बात है ! मैं एक ज़िन्दा मानवीय व्यक्ति को इस तरह लिए जारहा हूँ, जैसे वह कपास का बण्डल हो ! एक मानवीय व्यक्ति, जिसमें जीवन है, जिस में आत्मा है और जिसमें अनुभव करने की शक्ति है !...क्या जाने, कभी यह भी कोई बड़ा प्रोफ़ेसर बन जाय, कोई सेनापति बन जाय या कोई यशस्वी लेखक बन जाय ! यह कुछ भी बन सकता है। आज मैं इस प्राणी को एक तुच्छ बण्डल की तरह उठाए लिए जा रहा हूँ; मुमकिन है कि आज से तीस-पैंतीस बरस बाद मैं इसके नज़दीक जाने की

हिम्मत भी न कर सकूँ !"

मीगेव इस समय एक तंग-सी, लम्बी और सुनसान गली में चला जा रहा था। इस गली के दोनों तरफ़ दीवारें थी और उन के साथ-साथ नीबू के पेड़ों की कतारें लगी थीं। अचानक उसे अनुभव हुआ कि वह कोई बहुत क्रूर काम कर रहा है।

इस समय तक वह नींबुओं की छाया से निकल कर चांद के प्रकाश में आगया था। चांदनी में उस ने पहली बार इस बच्चे का चेहरा देखा।

वह आप-ही-आप कहने लगा—"सो रहा है !...ओ छोटे-से गधे ! तेरी नाक हूबहू मेरी नाक से क्यों मिलती है ?... ओह, बेचारा अपने पिता की गोद में सोरहा है, मगर यह नहीं जानता कि मैं ही इसका पिता हूँ ?...यह तो एक नाटक-सा हो रहा है। मेरे बच्चे ! मुझे माफ़ करना ! मुझे ज़रूर माफ़ करना !... तेरी क़िस्मत ही यही थी !"

प्रोफेसर मीगेव ने अपनी आंखों की पुतलियां झपकाईं। उसे अनुभव हुआ कि उस के चेहरे पर भावावेश के चिह्न आने लगे हैं। उस ने उसी क्षण बच्चे का चेहरा कपड़े से ढंक दिया और तेज़ी से कदम बढ़ाकर व्यापारी के बंगले से अधिक-अधिक नज़दीक होने लगा। उस का हृदय इस समय सामाजिक प्रश्नों से ओतप्रोत था और उस की छाती के नीचे उस की अन्तरात्मा घायल-सी होकर पड़ी थी।

उस ने सोचा—"अगर मैं कोई भला और ईमानदार आदमी

होता, तो किसी भी बात की परवाह न करके इस बच्चे को अपनी पत्नी के पास ले जाता और उसके सामने घुटने टेक कर कहता—'मुझे क्षमा करो ! यह मेरा बच्चा है। मैं ने पाप किया था ! उस की मुझे जो चाहे सज़ा दो, मगर इस बच्चे को प्यार करो !—यह निर्दोष है ! हमारी कोई सन्तान नहीं। क्यों न तुम भी इसे अपना ही पुत्र मान लो।' वह बड़े कोमल स्वभाव की है।...वह अवश्य इसे स्वीकार कर लेती ।...और तब मेरी यह सन्तान सदैव मेरे ही पास रहती !...ओह, अगर यह हो सकता !"

उस ने सोचा—"यह कितना नीच काम है । इस से अधिक नीचता की कल्पना भी नहीं हो सकती !...यह अभागा बच्चा उत्पन्न होने के साथ ही एक दरवाज़े से दूसरे दरवाज़े पर क्यों फेंका जा रहा है ? सभी लोग पैदा होते हैं, फिर इस बेचारे ने पैदा होकर कौन-सा अपराध कर दिया। इस ने हम लोगों का कुछ बिगाड़ा नहीं। इस ने कोई पाप नहीं किया ।...पापी तो हम लोग हैं। अपनी खुशी के लिए बदमाशी तो करते हैं हम लोग, और उसका दण्ड उठाना पड़ता है, इन निष्पाप अभागे बच्चों को ! कोई यह नहीं सोचता कि यह कहां का न्याय है ! मैं ने अपराध किया था और उसका नतीजा यह हुआ है कि इस बच्चे का सम्पूर्ण जीवन अभाग्यपूर्ण बन गया ! मैं इसे व्यापारी के घर पर छोड़ आऊँगा। वह शायद इसे हस्पताल में भेज देगा । वहां यह अनजान और अनाथ बच्चों में पलेगा।...वहां न इसे कोई प्यार

करने वाला होगा, न कोई थपकियां देने वाला होगा और न कोई इसकी निष्पाप शरारतों की सराहना करने वाला होगा।...जब यह कुछ बड़ा होजाएगा तो काम सिखाने के लिए किसी चमार के सपुर्द कर दिया जाएगा।...वहां यह गालियां बकना और शराब पीना सीख जाएगा। न इसे भरपेट भोजन मिलेगा और न पहिनने को अच्छे कपड़े ही मिलेंगे। एक कुलीन, प्रतिष्ठाशाली प्रोफ़ेसर का पुत्र होकर भी यह जूते बनाने वाला चमार बन जाएगा!... ओह, यह मेरा ही तो हिस्सा है! इस में मेरा ही खून और मेरा ही मांस है!"

वह व्यापारी मैक्लिन के मकान के निकट पहुँच गया। कुछ क्षण तक तो वह दुविधा की-सी दशा में खड़ा रहा। उस के मानसिक नेत्रों के सामने एक चित्र आया—'वह अपनी बैठक में प्रातःकाल का अखब़ार पढ़ रहा है। इसी समय सुन्दर फ्राक पहिने हुए एक मनोहर बच्चा, जिस की नाक हूबहू उस की नाक से मिलती है, रेंगता हुआ उस के पास आता है, और अपनी बड़ी बड़ी आंखों से उस की तरफ़ देखता हुआ मूक-अनुरोध करने लगता है कि "पिता! मुझे अपनी गोद में उठा लो!"'... अचानक इस चित्र पर परदा गिर गया। वह अब नया चित्र देखने लगा—"उस के पाप की बात रूसभर में महशूर होगई है। उस के साथी उसे छेड़ते हैं; और गवर्नर उस के रंगेपन पर उसे ताने देता है!"

उसी क्षण मीगेव ने इस बच्चे को धीरे से कोठी के बरामदे

में रख दिया। उस का हृदय बड़े वेग से धुकधुकी करने लगा।

अब के वह गुनगुनाया—"मुझे माफ़ करना मेरे बच्चे! मैं बदमाश हूँ! मैं डरपोक हूँ! बड़े होकर मुझे शाप मत देना!"

वह वापिस लौट चला और पुनः गली में पहुँच गया। परन्तु उसी क्षण उस के दिल में असीम साहस का उदय हुआ। उस ने निश्चय कर लिया—"जो कुछ होना है, हो जाय! मैं किसी की परवाह नहीं करता! मैं इसे अपने से जुदा नहीं करूँगा। लोग जो चाहे, कहें—मैं उन की रत्ती भर भी परवाह नहीं करूँगा!"

मीगेव ने बच्चे को उठा लिया और तेज़ी के साथ घर की तरफ़ लौट चला।

वह सोच रहा था—"लोग जो चाहें कहें। मैं तो अब सीधा अपनी पत्नी के पास जाऊँगा और घुटने टेक कर उससे क्षमा-प्रार्थना करके इस बच्चे को अपनाने का अनुरोध करूँगा।... वह बहुत भली है। वह बड़ी समझदार है, इस लिए मुझे अवश्य क्षमा कर देगी।...हम दोनों इसे अपनी सन्तान बना लेंगे... यदि यह लड़का है तो मैं इस का नाम रक्खूँगा—'वैल्डेमीर' और अगर यह लड़की है तो हम इसे 'अन्ना' कह कर बुलाया करेंगे। यह हमारे बुढ़ापे में हमारा सहारा होगा।"

आखिर उस ने किया भी यही। लज्जा और भय से करीब करीब मूर्छित-सा होकर रोती हुई दशा में वह अपने घर पहुँचा; परन्तु साथ ही साथ उस के हृदय में आशा, अस्पष्ट परन्तु मधुर कल्पना के भाव भी मौजूद थे। घर में पहुँचते ही सीधा वह अपनी पत्नी

के पास गया और उस के सम्मुख घुटने टेक कर खड़ा होगया। उस बण्डल को उस ने अपने और अपनी पत्नी के बीच में रख दिया।

अन्ना फ़िलीपोवना इस तरह अचानक अपने सम्मुख अपने विद्वान पति को घुटने टेक कर खड़ा हुआ देख कर अभी भली प्रकार चौंक भी न पाई थी कि मीगेव सिसकियां भर भर कर कहने लगा—"अन्ना फ़िलिपोवना! मुझे सज़ा देने से पहले कम से कम मेरी पूरी बात ज़रूर सुन लेना।...मैंने पाप किया था... भयङ्कर पाप किया था...परिणाम यह हुआ है कि यह मेरी सन्तान है!...तुम्हें आगिआना की याद है न?...मुझ पर शैतान सवार होगया था..."

मगर इस के बाद वह आगे न बोल सका। लज्जा और भय ने उसे उस दशा में ला दिया, जब कि बोल सकना असम्भव हो जाता है। वह उठा और जवाब की प्रतीक्षा किए बिना ही वहां से बाहर की ओर भाग गया।

बाहर आकर उसे कुछ चेतना आई। उस ने सोचा—"जब तक वह मुझे स्वयं अपने पास नहीं बुलाएगी, मैं वहां नहीं जाऊँगा। अब उसे इस सारी घटना को समझने का, इसे सहने योग्य बनने का, अवसर देना चाहिए।"

मीगेव अपने घर के बाहर, दरवाज़े के पास पड़ी हुई उसी कुर्सी पर जाकर बैठ गया। इसी समय उस का चपरासी यरमले अपने कन्धे उचकाता हुआ मीगेव को सलाम करके धीरे-धीरे उस

के पास से निकल गया। यरमले अपने मालिक की तरफ़ बड़े भय के साथ देखते हुए जिस तरह उस के आसपास चक्कर काट रहा था, उस से साफ़ प्रतीत होता था कि वह मीगेव से कुछ कहना चाहता है, मगर डर के मारे उस की हिम्मत नहीं हो रही।

यह देख कर मीगेव ने उस से कठोर आवाज़ में पूछा—"यहां इस तरह चक्कर क्यों लगा रहे हो ?"

यरमले ने एक बार और सलाम करके कहा—"हजूर ! आप की धोबिन मोरिया कुछ समय पहले यहां कपड़े देने आई थी।...उ—उ—उ—स के बाद थोड़ी देर के लिए ज़रा मे—मे—मेरी कोठरी में चली गई थी। अपनी मूर्खता से वह अपना छोटा-सा बच्चा, जो एक कपड़े में लिपटा हुआ था, इस दरवाज़े की सीढ़ियों पर छोड़ गई।...जब वह लौट कर आई तो उस का बच्चा नहीं मिला। पता नहीं कौन उठा लेगया।

मीगेव बहुत ही चकित हो गया। उस ने चिल्ला कर कहा—"क्या ?...क्या कहा तुम ने ?"

यरमले ने समझा कि धोबिन के मेरी कोठरी में जाने की बात सुन कर मालिक नाराज़ हो गए हैं; इस लिए एक गहरा श्वास लेकर उस ने बड़ी नम्रता से कहा—"हजूर माफ़ करें... मगर आजकल, इस मौसम में...स्त्रियों के बिना गुज़ारा भी तो नहीं होता।...मे—मे—मेरा मतलब—"

जब उस ने देखा कि उस का मालिक उस की तरफ़ घूर कर देख रहा है तो उस ने बड़े क्षमाप्रार्थी स्वर में कहा—"मालिक !

यह पाप ज़रूर है। मगर किया भी क्या जाय। आपने यहां स्त्रियों का आना बिलकुल बन्द कर रक्खा है। पहले—"

मीगेव ने यरमले को डांट कर कहा—"दूर हो, बदमाश कहीं के!"—इस के बाद वह बड़ी शीघ्रता से अपनी पत्नी के पास चला गया। उस के चेहरे की रंगत अब बिलकुल बदल गई थी।

अन्ना फ़िलिपोवना अभी तक बहुत ही दुख और क्रोध से भरी हुई उसी प्रकार बैठी थी और अचल दृष्टि से उस बच्चे को देख रही थी। उस की आंखों से आंसू बह रहे थे।

अपने पीले चेहरे पर ज़बरदस्ती मुसकराहट लाकर मीगेव ने अन्ना फ़िलिपोवना से कहा—"वाह श्रीमती जी!...तुम्हें खूब परेशान किया!...यह बच्चा मेरा नहीं है, यह धोबिन का है!... मैं तुम से मज़ाक कर रहा था...तुम इतना भी नहीं समझीं! इसे यरमले के पास भिजवा दो।"

घटना

प्रातःकाल। उदय होते हुए सूर्य की नरम और उज्ज्वल किरणें, खिड़की के स्वच्छ शीशों में से लांघ कर बच्चों के शयनागार में पड़ रही हैं। अन्दर बढ़िया पलंगों पर दो बच्चे सो रहे थे, एक बालक वान्या, जिसकी उम्र छः साल होगी; दूसरी बालिका नीना, जो अभी चार साल की है। बालक की नींद टूट गई। सिर उठा कर पलंग के सिरहाने के सींकचों में से वह अपनी बहिन की ओर देखने लगा। वह भी स्वयं ही जाग गई। दोनों सिर उठा कर एक दूसरे की तरफ़ चुपचाप देखने लगे।

इसी समय धाय चिल्लाती हुई आई—"ऊ! ऊ! कितने शरारती बच्चे हैं! सब अच्छे आदमी इस वक़्त तक नाश्ता भी कर चुके और तुम अभी तक उठे ही नहीं!"

सूर्य की नरम किरणें बच्चों के बिस्तरों, घर की दीवारों और धाय के कपड़ों पर इस तरह पड़ रही थीं, जैसे वे उन्हें खेलने के लिए निमन्त्रित कर रही हों। परन्तु बालकों ने उन की तरफ़ ध्यान भी नहीं दिया। वे दोनों बच्चे आज खुश नहीं थे। कुछ देर की शीतल चुप्पी के बाद नीना ने रुआंसी-सी होकर कहा—"ऊँ! ऊँ! नाश—ता!"

वान्या उठ कर बैठ गया। अपनी आंखें मसल कर वह भी कुछ कहना ही चाहता था कि साथ के चित्रागार से उसी तरफ़ आती हुई अपनी माता की आवाज़ उन दोनों बालकों के कानों में पड़ी। वह कह रही थी—"आज बिल्ली को दूध पिलाना न भूल जाना। वह अब बच्चों वाली होगई है!"

दोनों बच्चों के मुरझाए-से चेहरे हरे होगए। उन्हों ने आश्चर्य की दृष्टि से एक-दूसरे को देखा। इस के बाद वे दोनों चिल्लाते हुए अपने पलंगों से नीचे उतर आए और कोठी भर की हवा को अपनी पतली चीखों से भरते हुए वे रात की पोशाक में नंगे ही पैरों रसोई-घर की तरफ़ भाग पड़े।

वे चिल्ला रहे थे—"बिल्ली ने बच्चे दिए हैं! आहा, बिल्ली ने बच्चे दिए हैं!!"

रसोई घर की बैंच के नीचे लकड़ी का एक बक्स पड़ा था। इस बक्स में घर का नौकर स्टीपन कोयला रक्खा करता था। बिल्ली इसी बक्स में-से झांक रही थी।...उसकी नज़र से यह साफ़ प्रतीत होता था कि उस समय उसे जो असाधारण प्रसन्नता

अनुभव हो रही है, उस प्रसन्नता में सिर्फ़ एक बात की ही कसर बाकी है, वह यह कि बच्चों का बाप, जिसे आज से काफ़ी समय पहिले ही वह तलाक़ देचुकी थी, इस खुशी के मौके पर उपस्थित नहीं है। वह इस समय इतनी कमज़ोर है कि 'म्याऊँ! म्याऊँ!' भी नहीं कर सकती। बक्स के अन्दर से पिल्ले बड़ी पतली, बिलकुल इकहरी आवाज़ में चीख रहे हैं।

दोनों बच्चे इस बक्स के पास घुटने उठा कर बैठ गए और चुपचाप, निस्तब्ध दशा में, बड़े कौतूहल के साथ बिल्ली की इस नई सृष्टि को देखने लगे। वे बहुत चकित, प्रभावित और मग्न-से दिखाई देते थे। उन की आंखों में विशुद्धतम प्रसन्नता चमक रही थी।

वास्तव में पालतू जानवर, बालकों पर, अनजाने में ही बहुत शिक्षाप्रद प्रभाव डाला करते हैं। अगर आप अपने बचपन के सुनहरे दिनों की याद करेंगे तो आप को स्मरण आएगा कि उन दिनों आप के घर के कुत्ते, बिल्ली, खरगोश, बतख, गाय, भैंस आदि, आपको अपने से कितने अधिक निकट के प्राणी प्रतीत हुआ करते थे और उन का दैनिक जीवन आप पर किस तरह प्रभाव डाला करता था। मैं तो यहां तक कहूँगा कि छोटे बच्चों के लिए घेरलू जानवरों की समीपता की स्वाभाविक शिक्षा उस शिक्षा से बहुत कीमती है जो उन की अध्यापिका, उन्हें क्लास रूम में बन्द करके, पानी किन गैसों से बनता है, आदि के रूप में देती है।

नीना ने हर्षोत्फुल्ल-लोचन होकर मुसकराते हुए कहा—

"आहा, कितने छोटे बच्चे हैं! ये तो चुहिया-से मालूम पड़ते हैं।"

वान्या ने उन की गिनती शुरू की—"एक, दो, तीन। तीन पिल्ले हैं। एक तेरा, एक मेरा, एक बिल्ली का।"

घर के बालकों को अपने पिल्लों में इतनी दिलचस्पी लेते देख कर बिल्ली खुश हो रही थी। वह बोली—"म्याऊँ! म्याऊँ!"

जब पिल्लों को इस तरह देखते रहने से बच्चों का जी नहीं भरा, तो उन्हों ने साहस करके, उन्हें बिल्ली के नीचे से निकाल लिया। पहले तो वहीं बैठ कर उन्हें प्यार किया, इस के बाद उन्हें अपने कपड़ों के अन्दर बन्द कर लिया। जब इस से भी जी न भरा तो वे उन्हें उठा कर और कमरे में भाग गए! बिल्ली बेचारी 'म्याऊँ, म्याऊँ' करती और पूँछ हिलाती ही रह गई।

माता अपने चित्रागार में बैठ कर बाहर से आए एक अपरिचित सज्जन के साथ बातचीत कर रही थी। पिल्लों को अपनी गोद में लेकर दोनों बच्चे उसके पास जा पहुँचे और चिल्लाने लगे—"अम्मा! अम्मा! बिल्ली के बच्चे देखो!"

अपने कुलीन बालकों को इस तरह रात की पोशाक में, बिना नहाए धोए और नंगे पैरों ही एक अपरिचित के सामने आया देख कर माता ने डांट कर कहा—"हटो नालायको! जाकर नहाओ, धोओ; नहीं तो मार खाओगे। धाय कहां है?"

मगर बच्चों ने अपनी माता की डांट-डपट की ज़रा भी परवाह नहीं की और चित्रागार के गलीचे पर उस अपरिचित सज्जन के

सामने ही इन पिल्लों को डालकर वे उन से खेलने लगे। यह देख कर माता उठ खड़ी हुई और वह ज़बरदस्ती उन्हें उन के कमरे में खींच लेगई। स्टीपन को आवाज़ देकर पिल्लों को उस ने पुनः उसी बक्स में डलवा दिया। धाय ने बच्चों को ज़बरदस्ती स्नान कराया, कपड़े बदले, बालों में कंघी की और उन से ईश्वर की प्रार्थना करवाई। इस के बाद उन्हें नाश्ता करवाया गया। मगर आज इन सब बातों में बच्चों का दिल ज़रा भी नहीं लगा। आखिर नाश्ते की आफ़त से छूट कर, जब उन्हें खेलने की छुट्टी मिली तो वे दोनों भाग कर पुनः रसोईघर में जा पहुँचे।

बिल्ली के इन तीन बच्चों का इस दुनिया में आना एक इतनी बड़ी घटना थी, जिस के सामने वान्या और नीना के लिए जगत् की अन्य सम्पूर्ण चीज़ें बिलकुल तुच्छ पड़ गईं थीं। आज अगर इन पिल्लों के बदले में कोई उन्हें २४ रबर की गेंदें या दस हज़ार पैसे अथवा चाकलेट के ४० डिब्बे भी देने को तैयार होता तो वे इस सौदे को कभी स्वीकार न करते। धाय और रसोइए के बार बार मना करने पर भी वे दोनों दोपहर के भोजन तक उसी बक्स के पास ही बैठे रहे—बैठे क्या रहे, शरारतें करते रहे। पिल्लों के भविष्य में दोनों बालक बड़ी बड़ी स्कीमें बनाते रहे। निश्चय हुआ कि एक पिल्ला प्यार के लिए अपनी मां के पास ही रहने दिया जाएगा, दूसरा अपने पहाड़ वाले ग्रीष्मावास में भेज दिया जायगा और तीसरे को तहखाने के स्टोर में रक्खा जायगा, क्यों कि वहां चूहें बहुत हैं।

अचानक नीना ने बड़े आश्चर्य से कहा—"अरे ! ये हमारी तरफ़ देखते क्यों नहीं ? ये तो भिखारियों की तरह अन्धे हैं।"

वान्या भी इस प्रश्न का ठीक जवाब नहीं दे सका। उसने एक पिल्ला उठा लिया और उसकी आंखों को ज़बरदस्ती खोलने का प्रयत्न करने लगा। पिल्ला दर्द से 'चीं, चीं' करता था और वह उसे पुचकार पुचकार कर पुनः उसकी आंखें खोलने का प्रयत्न करने लगता था। परन्तु अन्त तक वान्या का यह निराला ऑप-रेशन असफल ही रहा। बीच-बीच में वे दोनों प्यालियों में दूध भर-भर कर उन पिल्लों के सामने रखते थे और उनकी नाक पकड़ कर उसे दूध में डुबा देते थे, परन्तु इस पर भी पिल्ले दूध नहीं पीते थे और उनके सामने का वह सम्पूर्ण दूध उनकी माता 'भूरी बिल्ली' ही पी जाती थी।

वान्या ने प्रस्ताव किया—"चलो नीना, हम सब बच्चों के लिए अलग अलग घर बनाएँ। फिर इनकी माता बारी-बारी से इन सब से मिला करेगी।"

दोनों बच्चे अपनी टोपियों के गत्ते के डिब्बे उठा लाए और उन्हें रसोई घर के तीन कोनों में खड़ा करके रख दिया। इस के बाद प्रत्येक डिब्बे में एक-एक पिल्ला रख दिया गया। मगर पिल्लों के ये नये घर अधिक देर तक कायम न रह सके। उनकी मां उन्हें शीघ्र ही पुनः उसी लकड़ी के डिब्बे में उठा लाई।

वान्या के सामने अचानक एक समस्या आ खड़ी हुई। उसे सुलझाने के लिए उसने अपनी बहिन की मदद मांगी। उसने

कहा—"नीना! इन की माता तो बिल्ली है, मगर पिता कौन है?"

नीना ने भी दोहराया—"हां इन का पिता कौन है?"

"इनका पिता होना ज़रूर चाहिए!"

प्रस्ताव सर्व सम्मति से पास होगया। अब दोनों बच्चे मिल कर बड़ी गम्भीरता से इस प्रश्न पर विचार करने लगे कि इनका पिता किसे बनाया जाए। अन्त में वे एक निश्चय पर भी पहुँच गए। स्टोर-रूम की दीवार का एक पूरा तख़्ता इन दोनों के टूटे हुए और पुराने खिलौनों से भरा पड़ा था। इन खिलौनों में मिट्टी का एक बहुत बड़ा लाल रंग का घोड़ा भी था, जिस की पूँछ, वान्या की कृपा से इस घर में पहुँचने के साथ ही टूट गई थी। इसी घोड़े को इन पिल्लों का बाप नियत कर दिया गया। नौकर से कह कर उन्होंने वह घोड़ा तख़्ते पर से उतरवा लिया और उसे पिल्लों वाले बक्स के पास लाकर खड़ा कर दिया।

मिट्टी के इस घोड़े को वहां रखते ही वान्या ने उसे बड़ी गम्भीरता से चेतावनी दी—"देखो, अब तुम इन के पिता हो! इन का अच्छी तरह ख़्याल रखना!"

थोड़ी ही देर बाद, घोड़े की मौजूदगी में ही वान्या ने एक पिल्ला बक्स में-से उठा लिया और उसे लेकर वह अपने पिता के पढ़ने के कमरे में चला गया। नीना भी उस के साथ थी। कमरे में कोई नहीं था। वान्या ने पिल्ले को अपने पिता की मेज़ पर रख दिया। वह पिल्ला मेज़ के कागज़ों पर से धीरे-धीरे खिसक कर लैम्प की तरफ़ बढ़ने लगा और वान्या एक पैन्सिल

उठा कर उसके मुंह में डालने लगा। इसी समय उसके पिता वहां आ पहुँचे।

उन्हों ने डांट कर कहा—"यह क्या होरहा है?"

वान्या इसी बात की तो इन्तज़ार में था कि कब उसके पिता आएं और वह उन्हें ये पिल्ले दिखलाए। उसने बड़े उत्साह के साथ कहा—"पापा! ये देखो, बिल्ली ने पिल्ले दिए हैं?"

पिता ने गुस्से से भर कर कहा—"चल नालायक! मेरे सब कागज़ खराब कर दिए! उठा इन्हें यहां से!"

वान्या को यह देख कर बड़ा दुखपूर्ण आश्चर्य हुआ कि इन पिल्लों को देख कर उसकी तरह खुश होजाने की बजाय उस के पिता और भी गुस्से हो गए हैं।

इसी समय वान्या के कान खींच कर पिता ने अपने नौकर को आवाज़ दी—"स्टीपन! इस वाहियात पिल्ले को यहां से उठा लेजाओ।"

भोजन के समय एक और घटना हुई। नीना चोरी चोरी एक पिल्ले को अपने फ्रॉक के नीचे छिपाए बैठी थी। अभी भोजन शुरू हुए थोड़ा ही समय हुआ था कि पिल्ला उसके फ्रॉक के नीचे से 'चीं, चीं' करने लगा। बेचारी नीना साफ़ पकड़ी गई। उस के पिता ने डांट कर कहा—"नीना! इसे नीचे फेंक दो!" इसके बाद उन्हों ने एकदम से इन पिल्लों के लिए प्राणदण्ड की व्यवस्था दे डाली—"आज इन्हें गन्दी नाली में फेंक दिया जाएगा! इन्हें घर में रखने से गन्दगी बढ़ती है।"

वान्या और नीना बहुत अधिक डर गए। गन्दी नाली में ये बेचारे पिल्ले अवश्य मर जाएँगे। उन्हें कितना दुख होगा। यह कितनी भयंकर क्रूरता है। इतना ही नहीं, इनकी माता को कितना कष्ट होगा और हमारी आज की स्कीमों का क्या होगा। बच्चों के दिमाग़ में ये सब बातें घूम गईं और वे ज़ोर ज़ोर से रोने लगे। आख़िर, लाचार होकर उनके पिता ने वचन दिया कि यदि वान्या और नीना उनके पास नहीं जाएँगे तो उन्हें घर में ही रहने दिया जाएगा।

भोजन के बाद वे दोनों बहुत उदास होकर अपने कमरे में जा बैठे। धाय के बहुत कहने पर भी फलों की डिश को उन्हों ने छुआ तक नहीं; न मिठाई ही खाई। अपनी माता के सामने भी वे निरन्तर गुस्ताख़ और उदास बने रहे। कई घण्टे इसी तरह निकल गए।

सायंकाल को उन का चचा पैट्रूशा घर में आया। वह अभी २२, २३ वर्ष का अविवाहित नवयुवक था। दोनों बच्चे उसे बड़ा प्यार करते थे और दिनभर में अपने पिता या माता से उन्हें जो जो शिकायतें होती थीं, उन की फ़िहरिस्त अपने इस चाचा को सुना दिया करते थे। आज उन्हों ने उस से यह भी कहा कि उन के पिता इन पिल्लों को गन्द की नाली में फेंकने लगे थे!

अन्त में उन्हों ने गिड़गिड़ा कर कहा—"चाचा! माता से कहो कि वह पिल्लों को हमारे कमरे में रख दें। ऊँ! ऊँ! ज़रूर कहो।"

"तुम्हारे कमरे में ? बहुत अच्छा; मैं ज़रूर कह दूँगा।"

चाचा पैट्रूशा जब आता है, तो प्रायः अकेला नहीं आता। उस के साथ उस का बड़ा-सा कुत्ता नीरो भी होता है। नीरो काले रंग का है। उस के कान लम्बे लम्बे हैं और पूँछ छड़ी के समान सख़्त है। वह चुपचाप रहने वाला, खुश्क मिज़ाज और घमण्डी जानवर है। वान्या और नीना को तो वह कुछ समझता ही नहीं। इन की तरफ़ वह देखता तक भी नहीं। जब कभी वह इन के निकट से गुज़रता है, तो इस बात की ज़रा भी परवाह नहीं करता कि उस की हिलती हुई सख़्त पूँछ कहीं इन्हें लग न जाय; जैसे वे दोनों भी निर्जीव कुर्सियों के समान ही हों! दोनों बच्चे उस से अपने हृदय के अन्ततम से घृणा करते हैं। परन्तु आज उसे देख कर वान्या को एक नई बात सूझ गई।

उस ने अपनी आँखें चौड़ा कर कहा—"नीना! नीना! घोड़े की जगह हम नीरो को ही पिल्लों का बाप क्यों न बना दें! देखो न, घोड़ा तो मरा हुआ है और यह ज़िन्दा है। यह असली बाप बन सकेगा।"

दोनों बच्चे इस नए प्रस्ताव को क्रिया में लाने के लिए छट-पटाने लगे। वे इस इन्तज़ारी में रहे कि कब उन के पिता भोजन के बाद ताश खेलने जाएँ और हम नीरो को लेकर रसोई घर में पहुँचें। आख़िर उन के पिता ताश खेलने के लिए दूसरे कमरे में चले गए और माता चाय बनाने में लग गई।

बच्चों को मनमानी करने का प्रसन्नता पूर्ण अवसर मिल ही

गया। दोनों ने नीरो को रसोई घर में ले जाकर बक्स के नज़दीक खड़ा कर दिया और मिट्टी के घोड़े को उठा कर वे अपने कमरे में चले आए।

कुछ देर बाद सब लोग चाय के लिए जमा हुए। इसी समय स्टीपन ने आकर घोषणा कर दी—"बीबी जी! नीरो सब पिल्लों को खा गया है!"

वान्या और नीना पीले पड़ गए और बहुत अधिक भयभीत होकर वे स्टीपन की तरफ़ देखने लगे।

नौकर हँस कर कहने लगा—"नीरो उन्हें सचमुच चट कर गया है। मैं अभी कोइले के लिए वहां गया था। देखा तो, तब तक वह तीनों को समाप्त कर चुका था।"

वान्या और नीना को विश्वास था कि इस भयङ्कर दुर्घटना को सुन कर घर के सब आदमी स्तब्ध होजाएँगे और वे बदमाश नीरो को उचित दण्ड देंगे। परन्तु वैसा तो कुछ नहीं हुआ। अपितु उन के पिता ने हँस कर कहा—"नीरो का पेट बहुत बड़ा है! वह तीनों पिल्लों को एक साथ कैसे खा गया।"

बच्चों के मां, बाप और चचा तीनों मिल कर ज़ोर से हंस पड़े। इसी समय नीरो अपना मुंह चाटते और पूंछ हिलाते हुए वहां आ उपस्थित हुआ। उनका चचा उसे थपकियां देने लगा। बच्चों ने यह सब देखा और उन के कोमल हृदय पर भयङ्कर ठेस पहुँची।

इन बच्चों के अतिरिक्त घर के सब लोग खुश हैं। केवल

वह बेचारी भूरी बिल्ली बड़े ही करुण स्वर में 'म्याऊं, म्याऊं' करती हुई, बड़ी बेचैनी के साथ एक कमरे से दूसरे कमरे में चक्कर काट रही है !

इसी समय माता ने कहा—"चलो बच्चो ! सोने का वक्त होगया।"

दोनों बालक टूटे हुए दिलों से अपने बिस्तरों पर चले गए। उनकी आंखों से आंसू बह रहे हैं; उनके हृदय में बिल्ली के लिए गहरी सहानुभूति के भाव हैं और नीरो के लिए अत्यधिक घृणा और क्रोध है।

कफ़नियत

था तो यह एक छोटा-सा शहर; मगर जैकोब के लिए यह एक गांव से भी बुरा था, क्योंकि यहां बहुत कम मौतें होती थीं। जैकोब अर्थियां बनाने का काम करता था और यहां जेल तथा हस्पताल तक में भी बहुत थोड़ी मौतें होतीं थीं। मतलब यह कि काम मन्दा था। जैकोब अगर किसी और शहर में यह काम करता होता तो मुमकिन है कि, इस समय तक उसने अपना मकान बना लिया होता और लोग बड़े सम्मान के साथ 'श्रीयुत जैकोब इवानोफ़' कहकर उसका नाम लिया करते होते। मगर इस शहर में, अपनी गरीबी के कारण, अभी तक वह 'जैकोब' के नाम से ही प्रसिद्ध था। यहां तक कि लड़कों ने चिढ़ाने के लिए उस का नाम "ब्रौन्ज़े" (कांसी) रख दिया था। वह अपनी पत्नी मार्था के

साथ किराए के एक रद्दी-से मकान में रहता था। इस मकान में एक ही कमरा था, जिस में एक तरफ़ को दो चारपाइयां, एक पुरानी मेज़, कुर्सी तथा एक अंगीठी पड़ी रहती थी। इसी कमरे में दूसरी तरफ़ अर्थियां रक्खी रहती थीं। जैकोब अब अपनी ज़िन्दगी की अन्तिम मंज़िल पर था। उस की कोई सन्तान नहीं थी। आज से एक पीढ़ी पहले, जिन दिनों वह जवान था, उस के एक सुन्दर-सा पुत्र उत्पन्न हुआ था, परन्तु उस का बचपन में ही देहान्त हो गया था। उस के बाद इन दोनों की कोई सन्तान उत्पन्न नहीं हुई। उसकी उम्र अब सत्तर बरस की थी, परन्तु उसके समान स्वस्थ और मज़बूत आदमी उस ज़िले भर में कोई दूसरा न होगा।

जैकोब जो अर्थियां बनाता था, वे मज़बूत और सुन्दर होती थीं। ये अर्थियां सस्ती और महंगी दोनों किस्मों की होती थीं। शहर में जब किसी भले आदमी की मौत होती, तो जैकोब उसके शव का माप लेकर झट से अर्थी तैयार कर देता था। इस काम के लिए लकड़ी आदि उस के पास पहले ही तैयार रहती थी। बच्चों की अर्थियों के लिए माप लेना वह व्यर्थ समझता था; उन के लिए वह अनुमान से ही काम चला लेता था। यदि कोई मां-बाप इस काम के लिए उस पर ज़ोर भी देते तो वह इसे स्वीकार नहीं करता था। जैकोब बिलकुल नीरस, कठोर और निर्दय स्वभाव का व्यक्ति था; परन्तु किसी बालक की निर्जीव लाश एक ऐसी चीज़ थी, जिसे वह देख तक भी नहीं सकता था।

अर्थी बनाने के काम में उसे बहुत कम आय होती थी, इस

लिए उस ने एक और पेशा भी शुरू कर रक्खा था। वह वाएलिन बहुत अच्छी बजाता था। शहर में यहूदियों की एक बैण्ड-पार्टी थी, जो नागरिकों के विवाह तथा अन्य उत्सवों पर बैण्ड बजाने का काम किया करती थी। इस पार्टी में जैकोब को भी निमन्त्रित किया जाता था। अपने वाएलिन से वह ऐस ऐसे स्वर निकालता, जो इस पार्टी का अन्य कोई व्यक्ति नहीं निकाल सकता था। जिस दिन वह इस काम पर बुलाया जाता, उस दिन उसे एक रुपया आठ आना पार्टी की तरफ़ से मिलता था और प्रायः श्रोता लोग भी कुछ न कुछ पुरस्कार आदि दे ही दिया करते थे। विवाह के अवसरों पर उसे भरपेट मिठाई और अच्छा भोजन तो मिल ही जाता था, इस कारण वह ऐसे अवसरों के लिए बहुत उत्सुक रहता था। जब बैण्ड-पार्टी में शामिल होकर वह वाएलिन बजाने लगता तो उस का चेहरा सेब की तरह से लाल हो जाता और उस पर से पसीने की धाराएँ बहने लगती थीं। उस के वाएलिन का स्वर ज्यों ही धीमा पड़ता, उसी समय पार्टी का ब्रास बैण्ड, ऊँचे स्वर में, उत्साह से भर देने वाला राग शुरू कर देता था। ब्रास बैण्ड के रुकते ही, बाईं ओर से, बहुत ही पतली और मधुर-सी आवाज़ में बांसुरी रोने लगती थी। बांसुरी बजाने वाले इस यहूदी का नाम था रौथ-शील्ड। वह लाल दाढ़ी वाला एक कमज़ोर-सा नौजवान था। यह यहूदी अधिक से अधिक उत्साह-भरी और वीरता पूर्ण तर्ज़ों को भी अपनी बांसुरी पर इस ढंग से निकालता था, मानों वे

करुण स्वर में रो रही हों। यह बात जैकोब को बिलकुल नागवार गुज़रती थी। क्रमशः वह इस नवयुवक से तीव्र घृणा करने लगा। वैसे आम-तौर से वह सम्पूर्ण यहूदियों से ही घृणा करता था। एक दिन वह किसी ज़रा-सी बात पर रौथशील्ड से लड़ पड़ा; उसे जी-भर कर गालियां दीं और अन्त में उसे पीटने पर भी तैयार होगया। रौथशील्ड पहले तो जैकोब की यह ज़बरदस्ती सहता चला गया; परन्तु अन्त में उसे भी बहुत अधिक क्रोध आगया। क्रोध के आवेश में कांपता हुआ वह बोला—"अगर तुम्हारे संगीत के लिए मेरे दिल में इज़्ज़त का भाव न होता तो मैं तुम्हें इस खिड़की की राह कभी का नीचे फैंक चुका होता!"

इतना कहते ही रौथशील्ड की आंखों में आंसू भर आए। वह इतना भावुक था। परिणाम यह हुआ कि पार्टी के सम्पूर्ण यहूदी जैकोब से बिगड़ गए। अब वे उसे अपने यहां तभी निमन्त्रित करते थे, जब इस बात के लिए लाचार होजाते थे। जैकोब को इस बात से बड़ा नुक्सान हुआ।

जैकोब कभी खुश नहीं रहता था। वह सदैव अनुभव करता था कि मुझे बड़ा भारी आर्थिक नुक्सान हो रहा है। वह एक कट्टर ईसाइ था। इस लिए वह रविवार और धार्मिक त्यौहारों के दिन काम करना पाप समझता था। सोमवार उस की निगाह में बहुत ही अपशकुन वाला दिन था; इस लिए वह सोमवार को भी काम नहीं करता था। परिणाम यह होता था कि साल के ३६५ दिनों में से करीब २०० दिन वह धार्मिक भय से लाचार

होकर हाथ पर हाथ धरे बैठा रहता था। यह उसे एक बड़ा भारी नुक्सान था। इन २०० दिनों में यदि कोई त्यौहार या विवाह आजाता, तो वह उस में भी भाग नहीं ले सकता था। यह उसे दूसरा भारी नुक्सान था। उस ने एक डायरी रक्खी हुई थी, जिस में वह अपने ये सब नुक्सान बाकायदा दर्ज किया करता था। जब से यहूदियों ने उस का बायकाट कर दिया था, तब से उसे यह एक और नुक्सान होने लगा था। इस शहर के पोलीस-इन्स्पैक्टर को दो साल से तपेदिक थी। वह धनी आदमी था, अतः जैकोब उस के मरने की उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहा था। परन्तु जैकोब की बदकिस्मती से इन दो वर्षों के बाद वह अपना इलाज करवाने के लिए किसी पहाड़ी स्थान पर चला गया और वहां पहुँचने के दो सप्ताह बाद ही उस का देहान्त होगया। बेचारे जैकोब को यह एक और नुक्सान होगया। उसे यकीन था कि पोलीस इन्स्पैक्टर के लिए वह जो अर्थी बनाएगा, उस में उसे कम से कम ३० रुपयों की बचत अवश्य होगी।

अपने आर्थिक नुक्सानों की चिन्ता जैकोब को दिन की अपेक्षा रात के समय अधिक तंग करती थी। वह अपने वाएलिन को बगल में रख कर बिस्तरे पर लेट जाता और अपने नुक्सानों का हिसाब लगाने लगता। जब कभी, ऐसी दशा में उसे अधिक दुख अनुभव होता तो वह उठ कर बैठ जाता और अंधेरे में ही अपनी वाएलिन बजाने लगता। इस से उसे बड़ी सान्त्वना प्राप्त होती थी।

पिछले साल की छटी मई को उस की पत्नी मार्था बीमार पड़ी। उस दिन की प्रातःकाल जब वह अपने बिस्तरे से उठी तो उसे तेज़ बुखार अनुभव हो रहा था। परन्तु उसने इस बात की कोई परवाह नहीं की। उठ कर उस ने अपने पति के लिए भोजन तैयार किया और यहां तक कि सदा की तरह वह कुएं से पानी भर कर भी लाई। यह दिन जेकोब की छुट्टी का था। वह दिन-भर निकम्मा बैठे रह कर वाएलिन बजाता रहा, परन्तु उस की पत्नी की यह हिम्मत न हुई कि इस बीमारी की दशा में भी उस से कुछ मदद करने को कह सके। जब रात होगई तो और कोई काम न होने के कारण जैकोब अपने नुक्सानों की डायरी खोल कर बैठ गया। अपने सालभर के नुक्सानों का उस ने टोटल किया तो यह संख्या ३००० रुपयों तक जा पहुँची! यह संख्या उस ने अपनी कापी पर दर्ज कर ली। मानों उस के सामने एक रहस्य खुल गया। वह बिलकुल बेचैन हो उठा और अपने पैर फर्श पर मारने लगा। उस ने बड़ी उदासी से दो एक ठण्डी आहें भरीं। उस के चेहरे पर पसीना आगया। अचानक उसे याद आया कि यदि उस ने यह रुपया किसी बैंक में रक्खा होता तो इसका सूद ही कम से कम १२० रुपया हो जाता। सो यह १२० रुपयों का उसे एक और नुक्सान हुआ! उस ने अपनी कापी उठाई और उस पर यह राशि भी दर्ज कर ली।

इसी समय अचानक उस की पत्नी चिल्लाई—"जैकोब! मैं मर रही हूँ!"

जैकोब ने अपनी पत्नी की तरफ़ देखा । उसे इस समय तेज़ बुख़ार चढ़ा हुआ था। परन्तु फिर भी उस का चेहरा असाधारण प्रसन्न दिखाई दे रहा था। अपनी पत्नी के चेहरे को इस तरह प्रसन्न देख कर जैकोब को दुख हुआ, क्यों कि मार्था को सदैव पीला, उदास और भयभीत देखने का उसे अभ्यास होगया था। जैकोब को ऐसा प्रतीत हुआ जैसे वह सचमुच मर गई है और इस झोंपड़ी तथा अपने पति को छोड़ते हुए उसे बड़ा सुख अनुभव हो रहा है। वह मुंह सीधा कर के छत की तरफ घूर रही थी। उस के होंठ धीरे-धीरे खुद-ब-खुद ही हिल रहे थे, जैसे वह अपने संकटत्राता यमराज से बातें कर रही हो।

सारी रात इसी तरह से बीत गई। जैकोब जब नींद से जगा तो उस समय पूर्व दिशा के आकाश पर लालिमा दिखाई दे रही थी। इस समय जब उस ने अपनी बीमार और वृद्धा पत्नी की तरफ़ देखा, तब अकस्मात् ही उस के दिल में उस के प्रति दया उपज आई। वह आजीवन उस के प्रति कितना कठोर रहा है। अपनी पत्नी को उस ने कभी एक पीतल का छल्ला या एक रूमाल तक भी तो लाकर नहीं दिया। विवाहों में बैण्ड बजाने के बाद वह स्वयं तो वहां भरपेट मिठाई खाता रहा है, परन्तु घर लौट कर उसने मार्था को मिठाई का एक कतरा तक भी नहीं दिया। बल्कि वह तो मार्था को ही अपने नुक्सानों के लिए ज़िम्मेवार ठहरा कर उसे सदैव गालियां देता रहा है। यहां तक कि अनगिनत बार वह मार्था को अपना मुक्का तान कर भी दिखा चुका है। यह ठीक है कि

उस ने उसे कभी पीटा नहीं, मगर उसे डराया तो बहुत है। वह बेचारी कितनी गरीब और भलीमानस बन कर रही। उस ने कभी अपने पति की गालियों का जवाब तक नहीं दिया। वह सदैव चुप-चाप, बहुत अधिक भयभीत होकर, यह डांट-फटकार सुनती रही। पिछले अनेक वर्षों से मार्था ने चाय का भी एक घूंट तक नहीं पिया, वह गरम पानी से ही अपना काम चलाती रही है, यद्यपि जैकोब ने कभी चाय से नागा नहीं किया।—बूढ़े जैकोब को ये सब बातें स्मरण आईं और उसे समझ आगया कि आज यह संसार छोड़ते हुए मार्था के मुंह पर प्रसन्नता की झलक क्योंकर दिखाई देरही है।

ज्यों ही दिन चढ़ा, जैकोब अपने एक पड़ोसी से घोड़ा मांग लाया और उसे अपने छकड़े में जोत कर अपनी पत्नी सहित हस्पताल के लिए रवाना होगया। हस्पताल में आज मरीज़ों की भीड़ नहीं थी, इस लिए जैकोब को अधिक इन्तज़ार नहीं करनी पड़ी। सिर्फ़ तीन घण्टों की प्रतीक्षा के बाद ही उसे अन्दर बुला लिया गया। आज डाक्टर साहब नदारद थे इस लिए मरीज़ों को देखने का काम निकोले नाम का एक कम्पाउण्डर कर रहा था। गरीब लोगों में मशहूर था कि यह बूढ़ा कम्पाउण्डर यद्यपि शराबी तथा रूखी तबीयत का है, तथापि वह डाक्टर साहब से भी बहुत अधिक लायक है। इस लिए आज इस व्यक्ति को डाक्टर का कार्य करते देख कर जैकोब को बड़ी खुशी हुई।

"बन्दगी हज़ूर!"—निकोले के सामने पहुँचते ही अपनी

पत्नी सहित जेकोब ने खूब झुक कर सलाम किया और बड़ी नम्रता से कहा—"जनाव ! अपनी ज़रा-सी तकलीफ़ के कारण आप का कीमती समय खराब करने के लिए मैं हजूर से माफ़ी मांगता हूँ। आप देख ही रहे हैं कि आप की प्रजा का यह तुच्छ जीव बीमार पड़ गया है। यह मेरे जीवन की संगिनी —"

बेचारी मार्था बहुत अधिक थकी-हुई दशा में एक स्टूल के ऊपर ढेर-सी होकर बैठी थी। निकोले अपनी भूरी भँवें चढ़ा कर उस की तरफ़ बड़े ग़ौर से देख रहा था। मार्था अपनी पतली और लम्बी नाक वाले चेहरे के साथ मुँह खोल कर सांस लेते हुए इस तरह प्रतीत होती थी, जैस कोई प्यासा पक्षी सिमट कर पड़ा हो।

डाक्टर ने एक सांस लेकर धीरे से कहा—"अच्छा, अच्छा; —हां—इसे इन्फ्लुएन्ज़ा होगया है, मुमकिन है कि बुखार हो; आजकल शहर में टाइफ़ाइड फैल रहा है, शायद टाइफ़ाइड भी हो। यह बूढ़ी औरत ईश्वर की मेहरबानी से काफ़ी समय तक जी चुकी है। इस की उम्र कितनी है ?"

"जनाव ! सत्तर साल पूरे होने में अभी एक की कसर बाकी है।"

"अच्छा, अच्छा; यह बहुत समय तक जी चुकी है। आखिर मरना तो सभी ने है।"

जैकोब ने बड़ी नम्रता से मुसकरा कर कहा—"आप बिलकुल ठीक कह रहे हैं हजूर ! आप की इस कृपा के लिए हम दोनों आप

के बड़े कृतज्ञ हैं। परन्तु हजूर क्या मुझे यह कहने की आज्ञा देंगे कि मरना तो कीड़े भी नहीं चाहते ! फिर इन्सान तो—"

"कोई परवाह मत करो !"—बुड्ढा कम्पाउण्डर इस तरह बोला, जैसे मार्था को ज़िन्दा रखना या मार डालना उसी के बस की बात हो—"देखो, इस तरह करो। इस बुढ़िया के सिर पर ठण्डे पानी की टकोर करो और दो, दो घण्टों के बाद इसे यह चूरण खाने को दो। अच्छा, नमस्कार।"

जैकोब को प्रतीत हो रहा था कि मार्था की बीमारी मामूली नहीं है। यह उस का जीवन लेकर ही जाएगी। इस लिए डाक्टर की इतनी उपेक्षा देख कर उस ने बड़ी नम्रता से कहा—"हजूर इस की नस से थोड़ा-सा खून निकालना क्या लाभकर न होगा ?"

"मेरे पास समय नहीं है ! मेरे पास समय नहीं है ! जाओ अपनी बुढ़िया को जल्दी से ले जाओ।"

जैकोब ने गिड़गिड़ा कर कहा—"जनाब, कृपा करके इस का थोड़ा-सा खून अवश्य निकाल दीजिए। आप ने तो चूरण दे दिया है। चूरण तो तब काम आता है; जब पेट में कोई शिकायत हो। इसे तो सरदी का बुखार चढ़ा है, इस में थोड़ा-सा खून निकाल देना बहुत लाभकर होता है !"

मगर डाक्टर ने इस समय तक अगले मरीज़ को बुला लिया था। एक गरीब औरत अपने बच्चे के साथ कमरे में आगई थी। डाक्टर ने जैकोब से चिल्ला कर कहा—"जाते हो कि नहीं ! इस तरह बकवास करने से कोई फ़ायदा नहीं।"

"ईश्वर आप को इस दया का पुरस्कार देगा! ज़रा इस बुढ़िया को अच्छी तरह देख तो लीजिए!"

डाक्टर का पारा अब एकदम चढ़ गया। उस ने गरम होकर कहा—"अब एक शब्द भी बोलोगे तो मार खाओगे! बेवकूफ़ कहीं के!"

यह सुन कर जैकोब को भी गुस्सा आगया। उस का चेहरा तमतमा उठा। परन्तु एक शब्द भी बोले बिना वह हस्पताल से बाहर निकल आया। अपने छकड़े पर सवार होकर वह गुस्से मे बड़बड़ाने लगा—"सरकार ने ऐसे बदमाशों को डाक्टर बना दिया ह! कोई अमीर होता तो उस का घण्टों तक खुद ही इलाज करता और हमें हाथ लगा कर देखने को भी तैयार नहीं होता! सूअर कहीं का!"

घर पहुँच कर मार्था ने कोशिश की कि वह अपने पति के लिए भोजन तैयार कर दे। वह जैकोब मे इतना अधिक डरती थी। इस काम के लिए वह उठ कर चूल्हे के नज़दीक भी गई, मगर बुखार की कमज़ोरी के कारण वहीं गिर पड़ी। आखिर उसे चारपाई पर लेट ही जाना पड़ा। इधर जैकोब अपनी जगह पर अनमना-सा होकर बैठा था। अचानक उसे ध्यान आया कि कल सेंट जॉन का दिन है, परसों सेंट निकोलस का दिन है, चौथ रविवार है और अगले दिन सोमवार है। इन चारों दिनों में कोई काम नहीं किया जा सकता। उमीद है कि मार्था इन चार दिनों में से एक दिन ज़रूर ही मर जाएगी। इस लिए उस की

अर्थी अभी से तैयार कर लेनी चाहिए। यह ध्यान आते ही उस ने अपना गज़ उठाया और चारपाई पर लेटी हुई मार्था का माप लेना शुरू कर दिया! इस के बाद वह अर्थी बनाने के काम में जुट गया।

यह काम शीघ्र ही समाप्त करके उस ने अपनी नोट बुक निकाली और अपनी बेकमानियों की रुपहली ऐनक नाक पर चढ़ा कर उस ने दर्ज किया—

"१ अर्थी, मार्था के लिए; नुक्सान—७रुपया १० आना।"

यह नोट करके उस ने एक ठण्डा श्वास लिया।

मार्था सारा दिन आंखें बन्द कर के चुपचाप पड़ी रही मगर शाम के समय वह कुछ बेचैन दिखाई देने लगी। उस ने ऊँची आवाज़ में जैकोब को अपने पास बुलाया। वह उस के सिरहाने जाकर बैठ गया। मार्था उस की ओर देखे बिना ही बड़बड़ाने लगी—"जैकोब! क्या तुम्हें याद है? आज से पचास साल पहले ईश्वर ने हमें एक सुन्दर-सा बच्चा दिया था? उस के सुनहले बाल कितने मनोहर थे।...क्या तुम्हें याद है कि जवानी के उन स्वर्गीय दिनों में हम दोनों नदी के किनारे, चिनार की घनी छाया के नीचे, घण्टों तक बैठा करते थे और वहां मैं तुम्हें गीत गा-गा कर सुनाया करती थी!"

मार्था इतना कह कर चुप होगई। थोड़ी ही देर बाद उस ने मुसकरा कर कहा—"मगर शीघ्र ही भगवान ने वह बच्चा हम से छीन लिया!" अब के वह अपने पति की तरफ़ देख रही थी।

यह बात तो उसने मुसकरा कर कही थी, मगर जैकोब ने देखा कि उस की धुंधली आंखों में आंसू भर आए हैं !

जैकोब ने कहा—"तुम स्वप्न देख रही हो।"

वह इन लक्षणों का परिणाम समझ गया। उसने पादरी को बुला भेजा।—अगले दिन की प्रातःकाल ही बूढ़ी मार्था का देहान्त होगया।

पड़ोस की बूढ़ी औरतों ने मार्था के शव को स्नान करवा दिया और उसे कपड़े पहिना दिए। इस के बाद उसे अर्थी में रख दिया गया। पादरी को कुछ देना न पड़े, इस लिए बाइबल के वाक्यों का पाठ जैकोब ने खुद ही कर लिया। मार्था की कबर बनाने में भी उस का कोई खर्च नहीं हुआ; क्योंकि कबरिस्तान का पहरेदार उस का चचेरा भाई ही था। चार किसान मार्था की लाश को कबरिस्तान तक उठा ले गए; पैसों के लिए नहीं—अपितु सहानुभूति के कारण ही। पड़ोस की कुछ बूढ़ी औरतें, कुछ भिखमंगे कुछ ग्रामीण और दो तीन आवारागर्द इस अर्थी के ज़नाज़े में शामिल थे। जैकोब इस बात से मन ही मन बड़ा सन्तुष्ट था कि सब काम अच्छी तरह से होगया और उसे खर्च कुछ भी नहीं करना पड़ा।

मगर जब मार्था को कबरिस्तान में दफ़ना कर वह अकेला अपने घर की तरफ़ लौटा तो दुश्चिन्ताओं ने उस के हृदय पर बलात् कब्ज़ा कर लिया। उस ने अनुभव किया कि उसे भी बुखार ही आया है। उस का सांस उखड़ रहा था, टांगों से चला नहीं जा

रहा था और सख्त प्यास अनुभव हो रही थी। इस के साथ ही उस के दिमाग़ में हज़ारों तरह के विचार उठ रहे थे। मार्था की याद उसे रह रह कर सताने लगी और इन स्मृतियों के कारण उस के दिल में मार्था के प्रति दया के जो भाव उठते थे, वे उसे और भी अधिक व्यथा पहुँचाने लगे। पूरे बावन बरसों तक वे दोनों एक दूसरे के साथ रहे!—मगर उस ने अपनी पत्नी के प्रति प्रेम का एक शब्द भी कभी नहीं कहा। पूरी अर्ध-शताब्दी उस के स्मृतिपट पर बिछाई-हुई-सी पड़ी है!—इस सम्पूर्ण समय में वह अपनी पत्नी से, घर में ज़बरदस्ती आकर पड़ गए पालतू कुत्ते या बिल्ली का-सा ही व्यवहार करता रहा है। परन्तु मार्था फिर भी उस की खूब अच्छी तरह सेवा-टहल करती रही। उस के लिए भोजन बनाती रही; घर बुहारती और बरतन साफ़ करती रही; यहां तक कि उस के लिए पानी भर कर भी लाती रही। उसे याद आया कि विवाहों के बाद जब वह खूब मिठाई खाकर और शराब पी कर झूमता झामता घर पहुँचता था तो किस तरह मार्था उसकी वाएलन उठा कर किल्ली पर टांग देती थी और किस तरह उसके कपड़े उतार कर उसे बड़े आराम के साथ बिस्तरे पर लिटा देती थी।—ये सब स्मृतियां जैकोब के हृदय को व्यथित करने लगीं।

इसी समय जैकोब की निगाह अपनी तरफ़ आते हुए यहूदी रौथशील्ड पर पड़ी। नज़दीक आकर रौथशील्ड जैकोब की तरफ़ देखकर मुसकराया और उसे प्रणाम करके कहने लगा—"चचा जैकोब! मैं तुम्हें ही ढूँढ़ रहा था। मोज़िज़ शेक्स ने तुम्हें प्रणाम

भेजा है और कहा है कि इसी समय उस के यहां आओ।"

जैकोब की मूड इस समय कुछ भी करने की नहीं थी। उसने चिल्ला कर कहा—"मुझे कुछ मत कहो!" इस के साथ ही साथ वह आगे बढ़ता चला गया।

रौथशील्ड भी उसके पीछे पीछे दौड़ा और उसने भयभीत होकर कहा—"ओह, तुम यह कैसे कहते हो? मोज़िज़ नाराज़ होजाएगा। वह तुम्हें अभी मिलना चाहता है।"

जैकोब इस यहूदी से पहले ही बहुत घृणा करता था। इस समय उसकी डरी हुई पतली-सी आकृति भूरी दाढ़ी और हरी पोशाक उसे बहुत नागवार गुज़री। उस ने चिल्ला कर कहा—"मुझे इस तरह धमकी कैसे देते हो! कीचड़ कहीं के! भागो यहां से!"

यहूदी को भी गुस्सा आगया। उस ने भी उसी स्वर में जवाब दिया—"इस तरह भौंको नहीं, वर्ना मैं तुम्हें उठा कर दूर फेंक दूंगा!"

जैकोब अपनी मुट्ठी बांध कर गुर्राया—"इधर तो आ, बदमाश कहीं के! आज तुझे सीधा करता हूँ!"

रौथशील्ड बहुत अधिक डर गया। अपनी दोनों कोहनियों को अपने सिर तक उठा कर वह इस तरह झुका, जैसे उस पर मार पड़ने लगी हो। इस के बाद वह तेज़ी से, उलटे पैरों दौड़ पड़ा। उसे इस तरह दौड़ता हुआ देख कर बच्चे तालियां बजा-बजा कर हंसने लगे। शहर के आवारागर्द "ही! ही!" करके तालियां देने लगे और यह सब हंगामा देख कर कुछ कुत्ते भी उस

के पीछे लग गए। इसी समय किसी लड़के ने शरारतभरी एक सीटी बजाई और कुत्तों का भौंकना और भी अधिक तेज़ होगया। बड़ी मुश्किल से बेचारा रौथशील्ड अपने को इन कुत्तों से बचा सका।

इधर जैकोब पुनः अपने में मस्त होकर आगे बढ़ता जा रहा था। चलते चलते वह शहर के दूसरे किनारे पर जा पहुँचा। वहां छोटे-छोटे बच्चे उसे देख कर चिल्लाने लगे—"बुड्ढा ब्रौन्ज़े आगया! बुड्ढा ब्रौन्ज़े आगया!"

जैकोब यहां से दरिया के किनारे चला गया। वहां पानी पर बतकें तैरती हुई शोर मचा रही थीं, किनारे की झाड़ियों में से झिल्लियों का शोर सुनाई दे रहा था। दोपहर हो चुकी थी। नीले आसमान में सूरज चमक रहा था। उसका प्रकाश इतना तेज़ था कि आसमान की तरफ़ आंख उठा कर भी नहीं देखा जा सकता था। नदी के किनारे, उथले जल में कुछ बालक मछलियां पकड़ने का प्रयत्न कर रहे थे; जैकोब को देख कर वे भी चिल्लाने लगे—"बुड्ढा ब्रौन्ज़े! बुड्ढा ब्रौन्ज़े!" जैकोब ने इस तरफ़ ज़रा भी ध्यान नहीं दिया। सामने नदीतट पर चिनार का एक बहुत बड़ा और घनी छाया वाला वृक्ष था। इस की घनी शाखाओं में सैकड़ों पक्षिओं के घर बने हुए थे। जैकोब इस वृक्ष के नीचे पहुँचा। अचानक जैकोब को अपने सुनहले बालों वाले सुन्दर पुत्र का ध्यान हो आया। मार्था ने अन्तिम समय में इसी वृक्ष का ही तो ज़िक्र कया था। हां, सचमुच यह वही वृक्ष था—इतना हरा, इतना

शान्त और इतना विषादपूर्ण ! अब पचास सालों के बाद वह और भी अधिक बूढ़ा होगया है।

इस पेड़ के नीचे, जल की तरफ़ मुंह करके, बूढ़ा जैकोब बैठ गया। पुराने ज़माने की स्मृतियां उस के मस्तिष्क में चक्कर काटने लगीं। नदी के दूसरे पार एक लम्बी चौड़ी चरागाह दिखाई देरही थी। आज से पचास बरस पहले वहां शीशम का घना जंगल था। सामने के पहाड़ की जो तलहटी आज बिलकुल नंगी दिखाई देरही है, आज से आधी शताब्दी पूर्व वहां नास्पातियों का जंगल था। नदी का वक्षस्थल आज शून्य-सा पड़ा था; उस पर चमकीले सूर्य के तीव्र प्रतिबिम्ब और कुछ बतकों को छोड़ कर और कुछ दिखाई न देता था। आज से दो पीढ़ियां पहले इस जगह पाल वाली बीसियों नौकाएं तैरती हुई दिखाई दिया करती थीं। नदी के दूसरे किनारे पर कुमारी कन्या के समान सुन्दर नास्पाती का केवल एक ही पेड बाकी बचा था। जैकोब के निकट जल की सतह पर थोड़े से हंस तैर रहे थे। क्रमशः एक एक कर के उनकी संख्या बढ़ने लगी और वहां हंसों का एक झुण्ड-सा लग गया।

जैकोब को यह सोच कर बड़ा आश्चर्य और खेद-सा होने लगा कि पिछले पचास सालों में वह इस सुन्दर नदीतट पर फिर कभी क्यों नहीं आया। इस अरसे में वह इस तरफ़ से गुज़रा भी है, परन्तु उस ने कभी प्रकृति की इस असाधारण सुन्दरता की ओर ध्यान नहीं दिया। उस की हिसाबी प्रकृति शीघ्र ही उसे अपनी तरफ़ खींच लेगई। उस ने सोचा—अगर खाली समय

में मैंने इस जगह आकर नदी में से मछलियों का शिकार ही किया होता, तो इस से मुझे अच्छी आय हो जाती। यह पेशा वैसे भी अर्थी बनाने के काम की अपेक्षा अधिक आमदनी वाला था। यह सब उस ने क्यों नहीं किया! वह कल्पना करने लगा कि अगर मैं मछियारे का पेशा करता होता तो शीघ्र ही एक नाव रख लेता, बहुत से हंस पाल लेता और फिर चांदनी में नाव पर बैठ कर वाएलिन बजाया करता! मेरा वह जीवन कितना सुखी होता। परन्तु मेरी ज़िन्दगी कितनी नीरस दशा में गुज़री है। मैंने कितने नुक्सान उठाए हैं! यह सोचने लगा कि मनुष्य समझते बूझते भी अपने को नुक्सानों से बचा क्यों नहीं सकता। सामने का वह सुन्दर जंगल काट क्यों दिया गया? पहाड़ की घाटी का वह नाख्पातियों का बाग वीरान क्यों कर दिया गया? मनुष्य ठीक वही काम क्यों करता है, जो उसे नहीं करने चाहिएँ? मैंने आजीवन अपनी पत्नी को पीड़ित क्यों किया, सदैव उसे गालियां क्यों देता रहा? अभी-अभी मैंने उस बेचारे यहूदी को डराया क्यों था?

नदीतट पर घण्टों तक इसी तरह की बातें सोचते रहने के उपरान्त वह अपने घर की तरफ़ चला गया। रातभर, सपनों में भी वह बार बार अपने पुत्र तथा नदीतट के उन दृश्यों को देखता रहा। उसे अच्छी नींद नहीं आई। मार्था का बीमार चेहरा बार-बार उस के सामने आजाता था। रात भर में पांच बार वह अपने बिस्तरे पर उठ कर बैठ गया और अन्धकार में ही

वाएलिन बजाता रहा ।

प्रातःकाल बड़ी दिक्कत के साथ वह हस्पताल में गया । डाक्टर साहब अभी वापस नहीं आए थे । इस लिए उसी कम्पाउण्डर ने उस की बीमारी की भी जांच की । जैकोब को भी उस ने वही चूरण दिया और सिर पर ठण्डे पानी की टकोर करने को कहा । जैकोब लक्षणों से समझ गया कि आसार अच्छे नहीं हैं । बड़ा अनमना-सा होकर वह घर की तरफ़ लौटा । राह में, छकड़े में बैठे बैठे उसे एक बात ध्यान में आई और इस से उसे बड़ी सान्त्वना मिली । उसे ख्याल आया कि कब्र में चले जाने के बाद, कयामत के दिन तक उसे न तो टैक्स देने पड़ेंगे, न किसी दूकान से कुछ खरीदना पड़ेगा और न धोबी के बिल ही चुकाने होंगे । यह तो बड़ा भारी लाभ है । लगातार हज़ारों बरसों तक यही मौज रहेगी । फिर लोग मौत से घबराते क्यों हैं ?

जैकोब के दिल में मौत से जो थोड़ा बहुत डर था, वह अब सचमुच जाता रहा । परन्तु घर पहुँच कर जब उस की नज़र अपनी वाएलिन पर पड़ी, तब उसे यह सोच कर पुनः पीड़ा होने लगी कि मर जाने के बाद कब्र में वह वाएलिन बजाने लायक नहीं रहेगा । उस की प्यारी वाएलिन अनाथ हो जाएगी और शायद इस का भी वही भाग्य हो जाएगा जो नदी पार के उन जंगलों का हुआ है ।

जैकोब ने अपनी वाएलिन को किल्ली से उतार लिया और उसे अपनी छाती से चिपका कर वह दरवाज़े की देहलीज़ पर

चुपचाप बैठ रहा। थोड़ी देर तक इसी तरह निश्चेष्ट-सा रहने के बाद वह बड़े ही करुण स्वर में अपना वाद्ययन्त्र बजाने लगा। अपने इस विषादभरे राग की इस गम्भीर करुणध्वनि का यद्यपि उस के मस्तिष्क पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ा, तथापि उस की आंखें खुद-ब-खुद ही डबडबा आईं। उस के वाएलिन का स्वर क्षण-प्रति-क्षण और भी अधिक क्षीण, करुण और शोकपूर्ण होता चला गया।

इसी समय हलकी-सी आवाज़ के साथ उसके आंगन का दरवाज़ा खुला, और उस में से होकर रौथशील्ड अन्दर प्रविष्ट हुआ। दरवाज़े से लेकर जैकोब तक की आधी राह तो वह निर्भयता से बढ़ता चला आया, परन्तु इस के बाद वह रुक कर खड़ा हो गया। इतनी दूर पर खड़े रह कर घबराई हुई-सी दशा में वह अपने हाथों की उँगलियां मोड़ने लगा।

यह देख कर जैकोब ने बड़ी भद्रता के साथ कहा—"यहां आजाओ! घबराओ नहीं। क्या बात है?"

बड़े अविश्वास के साथ वह पतला-सा यहूदी नवयुवक धीरे-धीरे जैकोब की तरफ़ आगे बढ़ा, और अब भी उस से दो गज़ की दूरी पर ही ठहर गया। इतनी दूर से उस ने बग़लें झांकते हुए कहना शुरू किया—"कृपा करके मुझे मारना नहीं। मोज़िज़ ने मुझे दुबारा आप के पास भेजा है। उन्हों ने मुझ से कहा कि 'डरो नहीं। उन से कहना कि उन के बिना काम ही नहीं चल सकता।' श्रीमन्, आप को मालूम ही होगा कि अगले बृहस्पति

वार को एक बड़े धनी के यहां विवाह है। दोनों पक्षों के लोग इस विवाह को बड़े धूमधाम से करना चाहते हैं।"—इतना कह कर रौथशील्ड ने अपनी आंखें मटकाईं।

जैकोव ने अब के भी बड़ी शान्ति से कहा—"भाई, मैं तो सख्त बीमार हूँ। मैं कहीं जाने लायक नहीं हूँ।"

इस के बाद वह पुनः अपनी वाएलिन बजाने में लग गया। उस का स्वर अब भी उतना ही करुण था। जैकोब की आंखें पुन. गीली हो गईं। रौथशील्ड उसी तरह चुपचाप खड़े रह कर यह करुण राग सुनने लगा। दोनों बाहुओं को अपनी छाती पर बांध कर रौथशील्ड बिलकुल निश्चल भाव से खड़ा था। उस के मुँह पर क्रमशः शोक और विषाद के चिन्ह दिखाई देने लगे। थोड़ी ही देर के बाद सहसा उस के मुँह से निकला "ऊ—ऊ—ऊः!" और इस के बाद वह फुफकार कर रो पड़ा।

× × ×

जैकोब का बुखार क्रमशः बढ़ता चला गया। शाम तक वह चुपचाप अपने बिस्तरे पर जाकर लेट गया। सूरज डूबने के समय उस का कोई पड़ोसी एक पादरी को बुला लाया। उस ने जैकोब से कहा कि तुमने अपने जीवन में यदि कोई विशेष पाप किया हो तो उसे कह डालो।

जैकोव इस समय भी अपने जीवन की धुँधली स्मृतियों में उलझा हुआ था। उस के सामने एक बार और अपनी अभागिनी पत्नी का उदास चेहरा आया और उस के बाद उसे बेचारे

रौथशील्ड की डरी हुई चीख़ याद आई। उस ने बड़ी अस्पष्टता के साथ इतना ही कहा—

"मेरी वाएलिन रौथशील्ड को दे देना!"

पादरी ने कहा—"ऐसा ही होगा।"

जैकोब की मृत्यु के बाद जब वह वाएलिन रौथशील्ड के पास पहुँच गई तो सब लोग हैरान होते थे कि यह उसके पास कैसे आ गई।

उस दिन के बाद से रौथशील्ड ने बांसुरी बजाना छोड़ दिया है। अब वह जैकोब की वाएलिन ही बजाता है। जिन विषादभरी रागिनियों को वह अपनी बांसुरी से निकाला करता था, उन्हें अब वह इस वाएलिन पर बजाता है। कभी कभी वह इस वाएलिन पर उस राग को निकालने का सफल प्रयत्न भी करता है, जो उस ने देहलीज़ पर बैठे हुए जैकोब से अन्तिम वार सुना था। जब रौथशील्ड वह राग निकालने लगता है, तो सुनने वालों की आंखों में आंसू भर आते हैं। जब यह करुण ध्वनि अन्त में बहुत क्षीण पड़ जाती है तब रौथशील्ड के मुँह से अनायास ही निकलता है—"ऊ—ू—ू!" शहर भर में वह राग इतना सर्वप्रिय है कि बड़े बड़े व्यापारी और सरकारी ओहदेदार रौथशील्ड को अपने घरों पर बुलाते हैं और कहीं कहीं तो उस से वह राग दस दस बार सुना जाता है।

दुर्भाग्य

सायंकाल के पांच बजे थे। उन दिनों मौसम बहुत सुहावना था। ट्रस्टी ल्यूबा की धर्मपत्नी सोफ़ी इस समय इलिन नाम के अपने एक वकील मित्र के साथ, जंगल के पेड़ काट कर बनाई गई एक छायादार और घास से मढ़ी हुई सड़क पर धीरे-धीरे टहल रही थी। आकाश में बगुले के पंखों के समान शुभ्र बादल छितराए हुए थे। इन सफ़ेद बादलों के अन्तराल में-से दिखाई देने वाली आकाश की उज्ज्वल और गहरी नीलिमा, चादर पर पड़े धब्बों के समान दिखाई दे रही थी। ऐसा प्रतीत होता था कि मानों आसमान, बादलों के आवरण में छेद करके नीचे की ओर झांक रहा है। बादलों में गति नहीं थी, जैसे इस पहाड़ी जंगल के ऊँचे ऊँचे और नोकदार वृक्षों ने अपने शिखरों के

भालों में बादल के इन सफ़ेद टुकड़ों को थाम रक्खा हो। हवा शान्त थी और वातावरण घुटा-हुआ-सा था।

कुछ ही दूरी पर एक रेलवे लाइन इस सड़क को क्रास करती थी। रेलवे लाइन को, दोनों तरफ़ से मिट्टी और पत्थर डाल कर ऊँचा किया गया था। इस क्रौसिंग पर एक सिपाही, धीरे-धीरे चहलकदमी करते हुए पहरा दे रहा था। रेलवे लाइन की ओट में, दूर पर, एक चर्च का ऊँचा गुम्बज़ दिखाई दे रहा था। चारों तरफ़ सन्नाटा था। इन दोनों के अतिरिक्त उस सिपाही को छोड़ कर वहां अन्य कोई आदमी नहीं था।

सोफ़ी कुछ गम्भीर-सी होकर नीचे की तरफ़ देख रही थी। अपनी उद्विग्नता मिटाने के लिए वह सड़क पर बिखरे हुए, सूखे पत्तों की पीठ पर छड़ी द्वारा छेद करती जा रही थी। उस ने धीरे-धीरे इलिन से कहना शुरु किया—"मुझे उमीद नहीं थी कि तुम मुझे यहां मिलोगे। तुम्हें देख कर मुझे बड़ी खुशी हुई है। मैं आज तुम्हें बड़ी गम्भीरता के साथ एक बात कहना चाहती हूँ और उस के सम्बन्ध में सदा के लिए फ़ैसला कर लेना चाहती हूँ। इलिन! मैं तुम से प्रार्थना करती हूँ कि अगर तुम मुझे सचमुच प्यार करते हो तो कृपा करके इस तरह मेरा पीछा करना छोड़ दो! पिछले दिनों से मैं देख रही हूँ कि तुम छाया की तरह मेरे पीछे लगे रहते हो, मेरे चेहरे की तरफ़ किसी विशेष नज़र से निरन्तर देखते रहते हो। तुम ने मुझे अपना प्रेमपात्र बना लिया है। तुम मुझे अजीब-अजीब तरह के पत्र लिखते हो और

...और मुझे समझ नहीं आता कि इस सब का अन्त क्या होगा! तुम्हीं बताओ, इस का क्या परिणाम हो सकता है?"

इलिन ने कोई जवाब नहीं दिया। सोफ़ी कुछ कदम और आगे बढ़ी और उसने कहना शुरु किया—"हम दोनों की मित्रता तो पांच साल से भी अधिक पुरानी है। पहले तो कभी ऐसी कोई बात नहीं हुई थी। अब इन पिछले दो-तीन सप्ताहों से ही अचानक तुम्हें यह क्या होगया?"

सोफ़ी ने चुपके-से एक निगाह इलिन के चेहरे पर डाली। वह अपनी आँखों को ऊपर की ओर करके आसमान के बादलों की तरफ़ देख रहा था। उस के चेहरे पर क्रोध, खिज और अनमनेपन-के-से भाव दिखाई दे रहे थे, जैसे किसी दुखित आदमी को कोई मूर्खताभरी बात ध्यान से सुनने के लिए बाधित किया जा रहा हो।

अपने कंधों को हिला कर श्रीमती ल्यूबा ने पुनः कहना शुरू किया—"मुझे आश्चर्य है कि तुम स्वयं इस बात के परिणाम को नहीं देखते। मैं विवाहिता हूँ, मैं अपने पति को प्यार करती हूँ, उन की प्रतिष्ठा करती हूँ...मेरी एक पुत्री भी है...इस सब का स्पष्ट मतलब भी क्या तुम्हारी समझ में नहीं आता? तुम मेरे पुराने मित्र हो; पारिवारिक जीवन और विवाह की पवित्रता के सम्बन्ध में मेरे जो विचार हैं, उन्हें अच्छी तरह जानते हो—फिर एक असम्भव बात के लिए क्यों परेशान होते हो?"

इलिन ने अपना गला साफ़ कर के एक गहरा श्वास लिया।

वह धीरे से बोला—"विवाह की पवित्रता !...या खुदा !" उस के स्वर में क्रोध-के-से भाव थे।

"हां, हां। विवाह की पवित्रता ही। मैं अपने पति को प्यार करती हूँ, उन की प्रतिष्ठा करती हूँ। मैं अपने घर की शान्ति को सब से अधिक कीमती चीज़ समझती हूँ। अपने पति और पुत्री को कष्ट पहुँचाने की अपेक्षा में मर जाना अधिक पसन्द करूँगी। मैं तुम से ईश्वर के नाम पर प्रार्थना करती हूँ कि तुम मेरी पारिवारिक शान्ति में खलल मत डालो। आओ, हम दोनों फिर से पहले के समान मित्र बन जाएँ। इन उबासियों और ठण्डे श्वासों को छोड़ दो। यह तुम्हें शोभा नहीं देता। बताओ इलिन ! इस बात का अन्तिम फैसला हो गया न ? चलो, अब हम किसी और विषय पर बातचीत करें।"

सोफ़ी ने एक बार पुनः छिपी निगाहों से अपने साथी के चेहरे पर देखा। वह अभी तक ऊपर की तरफ़ देख रहा था। उस का चेहरा पीला पड़ा हुआ था। वह अपने निचले होठों को दातों में भींच कर खड़ा था। उस स्वयं ही यह समझ नहीं आ रहा था कि उस की इस परेशानी और क्रोध का कारण क्या है।

सोफ़ी ने बड़ी नरम आवाज़ में कहा—"नाराज़ मत होओ इलिन ! मेरी बात तुम्हें मंज़ूर है न ? मेरा यह मित्रता का हाथ स्वीकार करो।"

इलिन ने उस सुन्दर और नाज़ुक-से हाथ को चुपचाप अपने दोनों हाथों में कर लिया, उसे थोड़ा-सा दबाया और इस के बाद

उसे उठा कर अपने होठों से लगा लिया।

वह बोला—"मैं कोई बालक नहीं हूँ। जिस स्त्री को मैं अपने अन्तस्तल से प्यार करता हूँ, वह मुझे केवल मित्रता के नाम पर प्रलोभित नहीं कर सकती।"

दोनों चलते चलते अब जिस स्थान पर आ पहुँचे थे, उस के निकट ही एक बैञ्च पड़ी हुई थी। सोफ़ी ने कहा— "बस, बस; उस का तो अब फैसला हो चुका। अब उस सम्बन्ध में और कुछ मत कहो। आओ, कुछ देर के लिए इस बैञ्च पर बैठ जाएँ।"

दोनों चुपचाप उस बैञ्च पर बैठ गए। इस समय तक इतने नाज़ुक विषय के सम्बन्ध में अपने भाव प्रकट करते हुए सोफ़ी को बड़ी बेचैनी अनुभव हो रही थी। अब अपने सब उद्गार प्रकट करके उस का दिल हलका होगया। उस के चेहरे पर पुनः प्रसन्नता दिखाई देने लगी। उस ने अपनी आंखें उठा कर निस्संकोच भाव से इलिन के चेहरे की ओर देखा। वह अभी तक गुमसुम-सा बनकर बैठा था। इस वक़्त, इलिन को इस दशा में देख कर अन्दर ही अन्दर सोफ़ी को एक विशेष प्रकार की गहरी प्रसन्नता अनुभव हुई। वह प्रसन्नता, जो किसी का दिल मुफ़्त ही में जीत लेने के बाद अनुभव होती है। उस की अन्तरात्मा को यह देख कर बड़ा सुख पहुँचा कि एक इतना बड़ा, परिपक्व और मज़बूत व्यक्ति, जो अपने शहर के सर्वश्रेष्ठ वकीलों में है, जो खूब पढ़ा-लिखा, सभ्य और प्रतिष्ठित है, जिस की विद्वत्ता के सब लोग कायल हैं, इस तरह आज्ञापालक-सा बन कर बड़ी

उत्सुकता के साथ उस के चरणों में बैठा है।

दो-तीन मिनटों की चुप्पी के बाद इलिन ने कहना शुरु किया—"कुछ भी फ़ैसला नहीं हुआ!...तुम तो कितानी मुहावरे दोहराती जाती हो! 'मैं अपने पति की प्रतिष्ठा और प्यार करती हूँ', 'विवाह की पवित्रता'...ये सब बातें मैं स्वयं भी जानता हूँ और अगर ज़रूरत हो तो इन सामाजिक समस्याओं पर तुम्हें सैकड़ों नई नई बातें भी सुना सकता हूँ। मैं तो स्वयं ही इस बात को स्वीकार करता हूँ कि मैंने जो राह पकड़ी है, वह पापपूर्ण है, वह अनाचार की तरफ़ ले जाने वाली है। इस से अधिक सख्त शब्द और कोई क्या कहेगा! मगर ये बातें कहने से लाभ ही क्या? इस से यह बहुत अधिक अच्छा था कि इतना बड़ा लैक्चर देने की बजाय तुम ने मुझे कोई उपाय सुझाया होता।"

सोफ़ी ने बड़ी गम्भीरता से कहा—"मैंने तुम्हें वह भी तो बताया है—यहां से कहीं और चले जाओ और फिर कभी मेरे पास मत आओ!"

"बिलकुल ठीक। मैंने यह उपाय भी तो आज़माया है। मैं एक बार नहीं, पांच बार यहां से यह इरादा करके रवाना हुआ हूँ कि अब कभी इस तरफ़ को आंख उठा कर भी नहीं देखूँगा। मगर नतीजा क्या हुआ? पांचों बार खूब दूर-दूर के टिकट खरीद कर मैं बड़े निश्चय के साथ रेल पर सवार हुआ और पांचों बार अगले ही स्टेशन से वापस लौट आया। तुम्हें विश्वास न हो तो मैं तुम्हें वे पांचों टिकट दिखा सकता हूँ, वे मेरे पास संभाल कर

रक्खे हुए हैं।...किया क्या जाय! मैं इतनी मज़बूत इच्छा शक्ति कहां से लाऊँ, जो मुझे तुम्हारे जादू से मुक्त कर दे? मैं अन्दर ही अन्दर अपने से लड़ रहा हूँ...बड़ी भयङ्करता से लड़ रहा हूँ। मगर मैं निर्बल हूँ, मेरी रीढ़ ही टूट गई है, फिर जीत किस तरह पाऊँ! मैं 'प्रकृति' पर विजय नहीं पा सकता। तुम समझ रही हो न? मैं कदापि जीत नहीं सकता! मैं यहां से दौड़ता हूँ और प्रकृति मुझे शीघ्र ही बलात् यहीं खींच लाती है! ओह, मैं कितना घृणित हो गया हूँ, कितना कमज़ोर होगया हूँ।"

यह सब कहते कहते उस का चेहरा लज्जा से लाल होगया। वह बैञ्च से उठ खड़ा हुआ और धीरे-धीरे उस के आसपास टहलने लगा।

अपनी मुट्ठी बांध कर वह इस तरह बोलने लगा, जैसे वह अपने ही से कह रहा हो—"मेरी दशा कुत्ते से भी बदतर हो रही है। मैं स्वयं अपने से घृणा करता हूँ! हे ईश्वर! स्कूलों के दुराचारी बालकों के समान मैं एक विवाहिता नारी से प्रेम करने लगा हूँ, उसे अजीब अजीब चिट्ठियां लिखता हूँ। आह! मैंने अपने को कितना पतित कर लिया है!"

इलिन ने अपने सिर के बाल अपनी मुट्ठियों में पकड़ कर एक गहरा और सशब्द श्वास लिया और इस के बाद वह पुनः बैञ्च पर बैठ गया।

थोड़ी देर तक चुप रहने के बाद उस ने पुनः कहना शुरु किया—"सोफ़ी! तुम अपने हृदय की भी परीक्षा करो! तुम

कहती हो कि मैं तुम्हारे इस आचरण से घृणा करती हूँ; मगर फिर तुम मेरे बुलाने पर यहां आ क्यों गईं ? अपने पत्र में तो मैंने अपने प्रश्न का निश्चित जवाब मांगा था—हां या नहीं; मगर इन में से कोई सीधा जवाब दे देने की बजाय तुम ने स्वयं मुझे इस तरह से एकान्त में मिलने का मौका दिया और अब तुम किताबी मुहावरे सुना कर मुझे शान्त करना चाहती हो !"

सोफ़ी ये बातें सुन कर कुछ डर-सी गई। उस का चेहरा लज्जा से लाल होगया। किसी भले घर की लड़की को अगर अचानक कोई उस दशा में देख ले, जब उसने बिलकुल अधूरे कपड़े पहिन रक्खे हों, तब उस की जो दशा होती है, वही दशा सोफ़ी की भी हुई।

उस ने कहा—"तुम्हें शायद यह सन्देह है कि मैं तुम्हारे साथ खिलवाड़ कर रही हूँ ! मैंने तो सदैव तुम्हें सीधे जवाब दिए हैं, सिर्फ़...सिर्फ़ आज मैंने तुम से यह प्रार्थना की है कि..."

"अः ! ऐसे मामलों में प्रार्थना का मतलब ही क्या होता है ! अगर तुमने सीधे तौर से मुझे डांट कर कहा होता—"चले जाओ !"—मैं बहुत देर का चला गया होता। मगर तुम ने ऐसा तो कभी नहीं कहा। तुम ने मुझे कभी कोई निश्चित उत्तर नहीं दिया। यह भी तुम्हारा एक अजीब अनिश्चय है ! कुछ समझ नहीं आता। या तो तुम मेरे साथ खिलवाड़ कर रही हो अथवा..."

इलिन अपना वाक्य पूरा न कर सका। बीच ही में सिर झुकाकर चुप हो गया। इलिन के मुँह से यह दोषारोप सुन कर सोफ़ी ने

अपने अन्तस्तल को टटोलना शुरू किया। वहां उसे साफ़ साफ़ दिखाई दिया कि उस ने इलिन के इस प्रेम को एक क्षण के लिए भी वाञ्छनीय नहीं समझा, वह सदैव इस बात को तीव्र विरोध-भाव से देखती रही है। परन्तु फिर भी उसे वकील की बात में तिलभर सत्य की मात्रा भी अवश्य दिखाई दी। उस ने इलिन के इस दोषारोप का जवाब देना चाहा; मगर वह ऐसा न कर सकी। थोड़ी देर तक चुप रहने के बाद उस ने बड़ी उदासी से इतना ही कहा—"अच्छा। तो फिर सारा कसूर मेरा ही है!"

इलिन ने एक गहरा श्वास लेकर कहा—"नहीं; मैं तुम्हें दोष नहीं देता। मैं जो कुछ कह गया हूँ, मेरा वह मतलब नहीं था। तुम ने इस सम्बन्ध में जो कुछ किया वह बिलकुल स्वाभाविक था। दुनियां में अगर सब लोग अपने हृदय को बिलकुल ठीक ठीक समझ सकें, अपने भावों को पूर्णरूप से पहिचान सकें तो यह दुनियां कुछ और न बन जाय! लोग अपने भावों को पहिचानने का प्रयत्न ही नहीं करते, इस काम के फल से उन्हें डर लगता है। संसार में कोई मनुष्य पूर्णरूप से सच्चा नहीं है!"

इस तरह की दार्शनिक मीमांसाओं से सोफ़ी को डर लगा करता था, परन्तु इस वक़्त बात बदल देने की गरज़ से उसने इसी चरचा को चलाए रखना उचित समझा। उसने पूछा—

"मगर इसका कारण क्या है?"

"वर्तमान सभ्यता ने मनुष्य को जिस ढंग पर सुखाभिलाषी बना दिया है, उस में सम्भोग की पवित्रता और हृदय की सचाई

का स्थान ही नहीं है। केवल जंगली स्त्रियां और जानवर ही हृदय से सच्चे होते हैं।"

यह कह कर इलिन ने अपनी छड़ी के मुट्ठे पर इतना दबाव डाला कि वह कई इंचों तक ज़मीन में धंस गई। सोफ़ी उस की बात बड़े ध्यान से सुन रही थी। यह सारी गम्भीर फिलासफ़ी उस की समझ में तो नहीं आई, मगर फिर भी वह उस में काफ़ी आनन्द ले रही थी। उसे इस बात का बड़ा अभिमानपूर्ण आनन्द अनुभव हो रहा था कि आज वह एक माने हुए विद्वान के साथ एक गम्भीर विषय पर बातचीत कर रही है। इलिन की सारी बात समझ में न आने पर भी उसे यह देख कर बड़ा सन्तोष हुआ कि आजकल के पढ़े-लिखे नौजवान किस तरह बड़े बड़े और नाजुक सामाजिक प्रश्नों पर खुलेरूप में विचार करते हैं और स्वतन्त्रतापूर्वक उन के सम्बन्ध में अपने परिणाम निकालते हैं। इस समय दार्शनिक मीमांसा करते हुए इलिन का पीला और गम्भीर चेहरा उसे काफ़ी आकर्षक जान पड़ा।

अचानक उस ने अनुभव किया कि वह इलिन को पसन्द करने लगी है।—वह डर गई!

उस ने जल्दी से कहा—"मुझे क्षमा करो; मैं कुछ नहीं समझी! इस सम्बन्ध में कुछ कहने-सुनने की ज़रूरत ही क्या है? मैं अपनी प्रार्थना पुनः दोहराती हूँ। कृपा करके तुम पुनः पहले समान मेरे मित्र बने रहो।...मुझ पर दया करो; मुझे अकेले छोड़ दो। क्या मेरी यह प्रार्थना स्वीकार न करोगे?"

"बहुत अच्छा। मैं पुनः प्रयत्न करूँगा। मगर मुझे सन्देह यही है कि मेरे प्रयत्नों का कोई नतीजा नहीं निकलेगा। ओह, मेरा अन्त कितना बुरा होगा! या तो मैं अपने सिर पर गोली लगा कर मर जाऊँगा या पागलों की तरह शराब में बदमस्त रहने लगूँगा। प्रत्येक चीज़ की कोई सीमा है—प्रकृति से लड़ाई करने की भी एक सीमा है! मुझे बतलाओ, पागलपन के खिलाफ़ किस तरह लड़ा जाता है? एक शराबी किस तरीके से अपने व्यसन से छुटकारा पा सकता है? ......तुम्हारी प्रतिमा मेरी आत्मा पर अंकित होगई है। अब मेरे लाख प्रयत्न करने पर भी यह छाप मिटती नहीं। बतलाओ, मैं क्या करूँ? मुझ पर शैतान सवार हो गया है। मेरा अपने पर कोई बस नहीं रहा। बतलाओ, इस घृणित और दयनीय दशा से मैं किस तरह छुटकारा पाऊँ? मैं तुम्हें प्यार करता हूँ...इतना प्यार करता हूँ कि मैं आपे में नहीं रहा। तुम्हारे लिए मैंने अपना कारोबार छोड़ दिया है, अपने सम्बन्धियों को छोड़ दिया है; यहां तक कि अपने परमेश्वर को भी छोड़ दिया है! अपनी ज़िन्दगी में प्रेम की इतनी तीव्रता मैंने आज तक और कभी अनुभव नहीं की थी।"

सोफ़ी को उमेद नहीं थी कि इलिन फिर से वही खुराफ़ात बकने लगेगा। वह उठ खड़ी हुई और इलिन से कुछ दूरी पर खड़े होकर उस की तरफ़ देखने लगी। इलिन की आंखों में आंसू भरे हुए थे। उस के होंठ कांप रहे थे और उस के चेहरे पर याचना, अतृप्ति और व्यथा के-से भाव अंकित थे।

इलिन भी उठा और सोफ़ी की तरफ़ चल कर अपनी आंखों को उस की डरी-हुई बड़ी बड़ी आंखों के अत्यन्त निकट ले जाकर धीरे से बोला—"मैं तुम्हें प्यार करता हूं !...तुम कितनी सुन्दर हो ! मैं बहुत ही कष्ट में हूं, मगर प्रतिज्ञा करता हूँ कि सारी ज़िन्दगी इसी तरह कष्ट उठाते हुए मैं खुशी से गुज़ार दूँगा, यदि तुम मुझ पर इतनी ही कृपा कर दो कि मुझे अपनी आंखों से दूर हो जाने के लिए मत कहो !...इस का विरोध न करना सोफ़ी ! मैं भिक्षा मांगता हूं !"

सोफ़ी ने अनुभव किया कि इलिन के शब्द उस पर असर कर रहे हैं। उस ने निश्चय कर लिया—"मैं यहां से चलती हूं।" मगर वह अभी हिल भी नहीं पाई थी कि अचानक इलिन उस के सामने घुटने टेक कर बैठ गया। उस ने उसी क्षण सोफ़ी के घुटने पकड़ लिए और अपनी आंखें ऊपर करके आवेशपूर्ण, उष्ण और उत्तेजित भाषा में जल्दी जल्दी कुछ कहना शुरु किया। सोफ़ी इतना अधिक घबरा गई और इतना अधिक डर गई कि उसे इलिन का एक भी वाक्य समझ में नहीं आया। हृदय की अवस्था इतना अधिक घबराई हुई होने पर भी उसे अपने घुटनों पर इलिन के आवेशपूर्ण हाथों का कोमल स्पर्श बड़ा सुखदाई-सा अनुभव हो रहा था, जैसे कोई सरदियों में गरम पानी से स्नान कर रहा हो। उसे अपनी इस स्पर्शसुख की अनुभूति पर भी क्रोध आरहा था। वह अनुभव कर रही थी कि इस कमज़ोरी पर विजय पाने के बजाय वह इसके अधीन होती चली जा रही है। इस बात

पर उस के दिल में अपने लिए खिज के भाव भी उठ रहे थे। मगर वह कुछ कर नहीं सकती थी। उस का ठीक वही हाल हो रहा था, जो शराब पी लेने के बाद अधूरा नशा चढ़ने तक किसी भले आदमी का होता है, जब उसे यह अनुभूति होती है कि मैं पाप कर रहा हूँ, मगर उस से निकल सकना भी उसे असम्भव प्रतीत होता है। सोफ़ी की आत्मा इस समय भी चिल्ला चिल्ला कर कह रही थी—"तुम चल क्यों नहीं देतीं! तुम इसे ठेल कर चल दो, तभी तुम्हारा बचाव होगा!"

सोफ़ी के दोनों हाथ नीचे की तरफ़ झुके हुए थे। क्रमशः इलिन ने अपना सिर उस के दाहिने हाथ के साथ सटा दिया। मगर फिर भी सोफ़ी अपना हाथ खींच नहीं सकी। केवल बहुत अधिक भयभीत होकर वह चारों ओर इस उद्देश्य से अपनी दृष्टि दौड़ाने लगी कि कोई उसे इस दशा में देख तो नहीं रहा। जंगल के वृक्ष और बादल अब भी उसी तरह निश्चल खड़े थे; जैसे, स्कूल के खुर्राट लड़कों की तरह मास्टर से शिकायत न करने का वायदा देकर वे किसी शरारत को देखने का आनन्द उठा रहे हों। रेलवे लाइन का सिपाही भी अब एक जगह स्थिर होकर खड़ा होगया था। सोफ़ी ने देखा—वह उन्हीं की ओर देख रहा है।

उसने सोचा—"इसे देखने दो! कोई हर्ज नहीं।"

अन्त में वह धीरे-से बोली—"मगर...मगर सुनो तो सही! इस सब का परिणाम क्या होगा?"—उसके स्वर में निराशा भरी हुई थी।

इस अप्रिय प्रश्न के उत्तर में इलिन ने शीघ्रता से इतना ही कहा—"मुझे नहीं मालूम ! मुझे नहीं मालूम !"

इसी समय दूर पर रेलगाड़ी की ऊँची और कठोर-सी घरघराहट सुनाई दी। इस ठण्डी और असंगत आवाज़ ने सोफ़ी को रोज़ के गद्यमय संसार की शुष्क याद दिला दी।

वह इलिन से छूट कर अलग होगई और उस ने जल्दी से इतना ही कहा—"मैं अब और नहीं ठहर सकती ! मुझे इसी समय घर चले जाना चाहिए। गाड़ी आ रही है...मेरे पति ने इसी गाड़ी से आना है। उन्हें आते ही भोजन की आवश्यकता होगी !"

वह बड़े लज्जित मुँह से रेलवे लाइन की तरफ़ चल दी। क्रमशः रेलगाड़ी पुल पर आ पहुँची। पहले इंजिन गुज़रा और उस के बाद अन्य डिब्बे सामने आए। मगर यह सवारी गाड़ी नहीं थी। यह एक बेहद लम्बी मालगाड़ी थी। रेलवे लाइन पर, चर्च के गुम्बज़ के सामने से इस मालगाड़ी के डिब्बे एक एक कर के मनुष्य जीवन के दिनों के समान इस तरह गुज़र रहे थे, जैसे वे कभी समाप्त ही न होंगे।

मगर अन्त में यह मालगाड़ी गुज़र ही गई। अन्तिम डिब्बा गार्ड का था, क्रमशः उस का प्रकाश भी दूर पर वृक्षों की ओट में छिप गया। सोफ़ी इस समय तक पूर्णरूप से चेतना में आ गई थी। वह शीघ्रता से अपने घर की तरफ़ वापस लौट चली; उस ने इलिन की ओर आंख उठा कर भी नहीं देखा। उस का चेहरा

लज्जा से लाल हो रहा था और वह अपने हृदय में तीव्रतम ग्लानि अनुभव कर रही थी। इलिन को वह इस के लिए ज़रा भी दोष नहीं दे रही थी। उसे अपनी कायरता ही यह व्यथा पहुँचा रही थी। वह सोच रही थी कि एक कुलीन घर की, संयमशालिनी और ऊँचे आदर्शों वाली स्त्री होते हुए भी मैंने एक ग़ैर आदमी को अपने घुटनों का वासनापूर्ण स्पर्श क्यों करने दिया—उस समय मैं अवक्तव्य निर्लज्जता के साथ खड़ी क्यों रही! अब उस के सामने एक ही लक्ष्य था, और वह यह कि जिस किसी तरह भी हो, वह जल्दी से जल्दी अपने घर पहुँच जाए। वह इतनी तेज़ चाल से जा रही थी कि इलिन के लिए उस का पीछा कर सकना भी कठिन होगया। शहर में पहुँच कर सोफ़ी ने एक बार पीछे की तरफ़ देखा—इलिन अभी तक उस के पीछे पीछे आ रहा था। सोफ़ी इस नज़र में केवल उस के घुटनों पर लगी मिट्टी को ही देख पाई। उस ने अपने हाथ से इशारा किया—'यहां से चले जाओ!'

अपने कमरे में पहुँच कर वह चुपचाप निश्चेष्ट भाव से खड़ी होगई। पांच-छः मिनटों के बाद पहले उस ने कमरे की खिड़की की तरफ़ देखा और उस के बाद अपनी मेज़ की तरफ़।

वह स्वयं अपने लिए बोली—"आह, मैं कितनी पापिनी हूँ! कितनी पतित हूँ!"

पश्चात्ताप की इस दशा में इस घटना का पूरा चित्र उस के मानसिक नेत्रों के सामने घूमने लगा। उस ने अनुभव किया कि यद्यपि इलिन से प्रेम बढ़ाने के लिए उस ने कभी क्षण भर के

लिए भी इच्छा नहीं की, परन्तु फिर भी अन्दर ही अन्दर उस से मिलने की, उससे बातचीत करने की इच्छा, उसके मन में सदैव रही है। इस से भी अधिक व्यथा उसे यह बात सोच कर होरही थी कि आज जब इलिन उसके घुटने पकड़ कर खड़ा हुआ था, तो उसे इस में आनन्द अनुभव हो रहा था। सोफ़ी की इच्छा हुई कि वह अपने मुँह को नोच डाले !

उस ने मन ही मन कहा—"वह नहीं जानते कि उन की पत्नी कितनी खराब है ! मेरी अभागिनी लड़की वार्या नहीं जानती कि उस की माँ किस ढंग की है। मेरे प्यारो ! मुझे क्षमा करो ! मैं तुम्हें इतना प्यार करती हूँ···इतना प्यार करती हूँ···"

अब उसके दिल में पति-भक्ति की तरंग बड़े ज़ोर के साथ उठ खड़ी हुई। वह रसोई घर में गई और उसने नौकरों को इस बात के लिए डांट बताने लगी कि उन्हों ने अभी तक ल्यूबा के लिए भोजन की टेबल क्यों नहीं सजाई। उसे अनुभव हुआ कि जब मेरे पति बाहर से आएँगे तो उन्हें कितनी भूख लग रही होगी। बड़ी व्यग्रता के साथ वह स्वयं टेबल साफ़ करने और कुर्सियां उठा कर रखने के काम में लग गई। यद्यपि आज तक, और कभी उस ने यह काम नहीं किया था। इसी समय उसकी नज़र अपनी लड़की वार्या पर पड़ी। सोफ़ी ने लपक कर उसे अपनी गोद में उठा लिया। बालिका उसे बोझ में बहुत भारी जान पड़ी और उसका स्पर्श उसे बहुत अनाकर्षक प्रतीत हुआ। परन्तु इन दोनों अनुभूतियों के लिए उसने अपने हृदय को कोसा और ज़बरदस्ती

अपने मन में यह धारणा उत्पन्न करने लगी कि इस बालिका को उठाने में कितना आनन्द आरहा है और इस का पिता भी कितना अच्छा आदमी है।

मगर जब उस के पति घर में आए, तो वह उन का स्वागत नहीं कर सकी। असाधारण पति-भक्ति की जो बनावटी ख़ब्त उस पर सवार हुई थी, वह इतना शीघ्र समाप्त होगई। अब वह अपनी खिड़की के पास एक कुर्सी रख कर उस पर उदास-सी दशा में बैठ गई। असल में मनुष्य के लिए अपने विचारों और भावों पर पूर्ण नियन्त्रण रख सकना एक बहुत कठिन समस्या है, ऐसे ही मौकों पर उस की परख होती है। उस का आवेश जाता रहा और वह उदास-सी दशा में न जाने क्या सोचने लगी। अब उस के हृदय में अपने पति के लिए उतने स्नेह और आदर के भाव नहीं रहे थे।

टेबल पर भोजन परोसा हुआ रक्खा था। ल्यूबा को बहुत भूख लगी थी। वह आते ही इस भोजन पर पिल पड़ा। ल्यूबा बड़ी भूख के साथ अपना भोजन कर रहा था। उस के जबड़े वेग के साथ चल रहे थे और उन के आपस में टकराने से इतनी आवाज़ हो रही थी कि दूर पर बैठी हुई सोफ़ी को भी वह साफ़ साफ़ सुनाई दे रही थी।

सोफ़ी को यह देख कर अपने पति के प्रति घृणा-सी उत्पन्न होने लगी। उस ने सोचा—"मैं अपने पति को प्यार तो करती हूँ...मगर यह इतनी गन्दी तरह क्यों चबाते हैं!"

उस के हृदय के इन भावों के साथ-साथ उस के विचारों में भी उथल पुथल मचनी शुरू होगई। सोफ़ी ने बड़ा प्रयत्न किया कि वह इन विचारों को अपने दिमाग़ से निकाल दे; परन्तु वारम्बार वही जंगल की सड़क, वही सांझ का सफ़ेद बादलों से घिरा आसमान और वही घुटनों के बल झुक कर खड़ा हुआ इलिन—उस के मानसिक नेत्रों के सामने वलात् चक्कर काटने लगे।

वह अपने को धिक्कारने लगी—"मैं कितनी खराब हूं! वहां इस तरह चली ही क्यों गई? ओह, मैं इतनी कमज़ोर होगई कि अब खुद अपने पर भी भरोसा नहीं कर सकती!"

भय सदैव विपत्ति की सम्भावना को बढ़ा देता है। ल्यूबा इस समय तक भोजन समाप्त कर चुका था। सोफ़ी ने निश्चय कर लिया कि मैं अपने पति के सामने सब कुछ खोल दूंगी और उस से अनुरोध करूँगी कि हम दोनों किसी अज्ञात स्थान पर भाग जाएँ।

भोजन के बाद अपनी पोशाक बदल कर जब ल्यूबा शयनागार में आया तो सोफ़ी ने उस से कहा—"प्यारे! मैं तुम से एक बड़ी गम्भीर बात कहना चाहती हूँ।"

"कहो।"

"आओ, हम यह स्थान छोड़ कर कहीं और चले जाएँ!"

"हैं!...जाएँ किस जगह? अभी तो गरमियां हैं, इन दिनों तो लोग नीचे से यहां आरहे हैं!"

"नीचे नहीं; मगर सैर के लिए कहीं निकल जाएँ!"

"सैर के लिए ? मैं खुद सैर का बड़ा शौकीन हूँ; मगर इतना पैसा हमारे पास कहां है ? फिर आजकल दफ्तर में छुट्टियां भी तो नहीं हैं ।"

कुछ क्षणों की चुप्पी के बाद ल्यूबा ने कहा—"हां, मालूम होता है, तुम्हारा यहां जी नहीं लग रहा । अगर तुम चाहो तो अकेले ही कहीं हो आओ ।"

सोफ़ी अकेले जाने के लिए ही तैयार होगई । परन्तु कुछ ही समय बाद उसे ध्यान आया कि उस का इस तरह अकेले जाना तो उसके लिए और भी अधिक खतरनाक साबित होगा । इलिन को ल्यूबा ही से यह समाचार अवश्य ज्ञात हो जाएगा और वह उसी गाड़ी से, उसी डिब्बे में और यहां तक कि उसी सीट पर उस के साथ रवाना हो जाएगा ।

सोफ़ी की निगाह अपने पति के पैरों की तरफ़ थी । ये छोटे-छोटे पैर जुराबों से ढके हुए थे । दोनों जुराबों पर दो तागे लटक रहे थे । खिड़की के शीशों पर एक बड़ी-सी मक्खी आवाज़ करते हुए बार-बार टकरा रही थी । सोफ़ी की निगाह जुराब के उन तागों पर थी और उस के कान मक्खी की भिनभिनाहट सुन रहे थे; मगर उस का मस्तिष्क और ही कल्पनाएँ कर रहा था—"गाड़ी चलेगी और इलिन उस के समीप आकर बैठ जाएगा । उसके चेहरे पर क्रोध और दुख के भाव होंगे । वह उसे फटकारेगा, उस की आंखों में आंसू भर आएँगे; जब अँधेरा होगा और सब यात्री सो जाएंगे तो वह उसके घुटने पकड़ पर बैठ जाएगा ।"—

सोफ़ी अपने घुटनों पर स्पर्श का-सा अनुभव करने लगी।

थोड़ी ही देर में उस ने बलपूर्वक अपना यह दिवास्वप्न तोड़ डाला और बड़ी आतुरता के साथ कहा—"नहीं प्यारे! मैं अकेली नहीं जाऊँगी। तुम्हें भी मेरे साथ चलना पड़ेगा।"

ल्यूबा ने कहा—"पागलपन मत करो सोफ़ी! जो बात असम्भव है, उस के लिए आग्रह करना बचपन में ही शोभा देता है।"

सोफ़ी ने दिल ही दिल में कहा—"मेरे इस आग्रह का रहस्य तुम्हें एक दिन मालूम होजाएगा।"

अन्त में उस ने यह निश्चय कर लिया कि जिस किसी तरह भी सम्भव होगा वह कल ही यह स्थान छोड़ कर चली जाएगी। इस निश्चय ने उसके हृदय को हलका कर दिया। उस के विचार स्पष्ट होगए। उसे विश्वास होगया कि अब मैं इस मुसीबत से छुटकारा पा जाऊँगी। कल तक यहां रह कर वह चाहे जो कुछ सोचती रहे—अब उस के मार्ग में कोई समस्या या कठिनाई पैदा नहीं होगी। वह अपने पति के पास से उठ कर चित्रागार में अपने पियानो के नज़दीक आ बैठी और उसे बजाने लगी। संगीत की ध्वनि ने उसकी दुश्चिन्ताओं को और भी हल्का कर दिया। उस का हृदय प्रसन्न होगया। अब उस के हृदय में आज की घटनाओं के लिए भी खेद के भाव नहीं रहे। अपितु अपनी सच्चरित्रता और दृढ़ता पर उसे अभिमान अनुभव होने लगा। उस ने सोचा कि यदि मेरे स्थान पर कोई और साधारण चरित्र

की नारी होती तो वह अवश्य ही कर्तव्य-भ्रष्ट होजाती। अपने सम्बन्ध में यह सोच कर उसे बड़ा सन्तोष मिला कि एक ज़रा-सी बात के लिए भी मुझे कितना गहरा खेद और वास्तविक पश्चात्ताप हुआ। यहां तक अपने चरित्र की उच्चता से उसे इतना गर्व अनुभव होने लगा कि वह पिआनो बजाते-बजाते करीब तीन बार उठी और चित्रागार में एक तरफ़ को रक्खे हुए दर्पण के सम्मुख खड़े होकर उस ने अपना मुँह देखा।

जब रात का अन्धकार पूरी तरह व्याप्त हो गया तो ल्यूबा के घर दोस्तों का आगमन शुरू हुआ। रोज़ यहीं पर जमघट लगा करता था। सब पुरुष भोजनागार में बैठ कर ताश खेलने लगे और स्त्रियां चित्रागार में इकट्ठी होकर गप्पें लगाने लगीं। इलिन सब से अन्त में वहां पहुँचा। वह बड़ा उदास, चिन्तित और बीमार-सा दिखाई देता था। इस समय तक सभी लोग चित्रागार में जमा होगए थे। इलिन भी एक सोफ़े के कोने पर चुपचाप जा बैठा। हंसी मज़ाक और बातचीत में वह सदैव खूब भाग लिया करता था, मगर आज वह त्योरियां चढ़ा कर चुपचाप एक तरफ़ को बैठ गया। जब उस से कोई सवाल पूछा जाता था तो वह उस का संक्षिप्त-सा उत्तर दे देता था। बीच बीच में वह ज़बरदस्ती हंसने का प्रयत्न भी करता था, परन्तु उस की हंसी आज खीस-सी ही प्रतीत होती थी। चार-पांच बार उस ने मज़ाक करने के प्रयत्न भी किए; मगर उस के ये रिमार्क आज कठोर और चुभने वाले ताने-से ही सिद्ध होते रहे।

लोगों के आग्रह पर सोफ़ी पिआनो के पास आकर बैठ गई। इस वक्त जाकर, सोफ़ी को पहली वार यह प्रत्यक्ष अनुभव हुआ कि यह अभागा युवक उसके प्रेम में किस गहराई तक मग्न है,—उस की आत्मा तक भी बीमार हो उठी है। वह हर समय एक तड़पन-सी अनुभव करता रहता है। सोफ़ी के लिए वह अपनी युवावस्था के सर्वोत्तम दिन तबाह कर रहा है। सोफ़ी के प्रेम में उस ने अपना भविष्य, अपनी आजीविका, अपनी जायदाद, अपने बन्धु—सभी को भुला दिया है। एक नामी वकील होते हुए भी वह अपने कामकाज और सगे सम्बन्धियों को छोड़ कर इस जगह इस दुरवस्था में पड़ा है और अपने आन्तरिक युद्ध के कारण इस तरह मर्मान्तिक कष्ट उठा रहा है। सोफ़ी ने अनुभव किया—यह नवयुवक तो अब मनुष्यता के नाते से भी दया का पात्र बन गया है।

इस समय इलिन की जो कमज़ोर और दुखित-सी दशा थी, उसे देख कर सोफ़ी को भली प्रकार अनुभव होगया कि यदि इस वक्त वह उस के पास जाकर उस के प्रश्न का सीधा और निश्चित उत्तर "नहीं" में दे दे तो सम्पूर्ण समस्या अभी अभी हल हो जाएगी। मगर उस की तरफ़ से इस दशा में यह उत्तर इतना निर्दयतापूर्ण होता कि सोफ़ी ने इस विचार को अपने दिल में स्थान तक भी नहीं दिया। इलिन कौच के कोने पर इस तरह बैठा था, जैसे वह अंगारों पर बैठ कर अग्नि-परीक्षा दे रहा हो। सोफ़ी से भी उस की यह दशा छिपी नहीं थी। उस के दिल

में इलिन के लिए एक तरह की सहानुभूति-सी उठ खड़ी हुई थी। साथ ही साथ इतने लोगों के बीच में, एक ऐसे युवक की मौजूदगी ने, जिस ने कुलीन, सम्पन्न और प्रतिभाशाली होते हुए भी उस के प्रेम में सर्वस्व होम कर दिया था,—उस की आत्मा को विजय और उल्लास के भावों से भर दिया। उसे अपने यौवन, अपनी सुन्दरता और अपने चरित्र की असाधारण उच्चता पर अभिमान अनुभव होने लगा। परिणाम यह हुआ कि आज उस की प्रतिक्रिया में एक विशेष ढंग का उल्लास-सा आगया। आज जब वह गाने बैठी तो उस का स्वर बहुत मधुर होगया। उस की आवाज़ में आज एक बहुत ही जानदार श्रुति-मधुर कम्पन-से उत्पन्न होगए थे। संगीत के बाद जब बातचीत शुरू हुई तो उस में भी वह खूब जी खोल कर हिस्सा लेने लगी। आज वह बात बात पर मुसकराती थी। इस समय उस जंगल, उस वैञ्च और उस सिपाही की याद भी उसे सुखदाई ही प्रतीत हुई। यहां तक कि इलिन ने आज जो थोड़े-से चुभने वाले रिमार्क किए थे, उन में भी उसे बड़ा आनन्द आया। इलिन ने अपने कोट पर एक पिन लगा रक्खा था, वह सोफ़ी को इस समय इतना सुन्दर जान पड़ा कि उस के जी में आया कि वह उठ कर उसे अभी अभी चूम ले।

थोड़ी देर बाद सोफ़ी ने एक और गाना गाया। इस समय उस का स्वर इतना आवेशपूर्ण था, जैसे उसने शराब पी रक्खी हो। यह एक विषादपूर्ण राग था। सोफ़ी ने इसे इतनी अच्छी

तरह और इतने द्रावक स्वर में गाया कि सुनने वालों की आंखों में आंसू उतर आए।

इस संगीत के बाद उसे अनुभव हुआ कि मेरे दिमाग़ में कोई न कोई विकार अवश्य उत्पन्न हो रहा है। उस ने सोचा—मैं आज इतनी खुश क्यों हूँ ?

रात के १२ बजे यह महफ़िल टूटी। एक-एक कर के सब लोग वहां से रवाना होने लगे। सोफ़ी सब को बारी बारी से विदा दे रही थी। इलिन सब से अन्त में वहां से चलने को तैयार हुआ। सोफ़ी इस समय भी इलिन को बाहर तक विदा देने गई। उसके दिल में इलिन को यह समाचार दे देने की इच्छा अवश्य थी कि वह कल ही-अपने पति के साथ बाहर जारही है। वह देखना चाहती थी कि इस बात का इलिन पर क्या प्रभाव पड़ता है।

चांद बादलों की ओट में छिपा हुआ था। मगर फिर भी सभी कुछ अच्छी तरह दिखाई देता था, क्योंकि बादल घने नहीं थे। सोफ़ी को इलिन के हवा से हिलते हुए कपड़े और उस का सफ़ेद चेहरा साफ़ साफ़ दिखाई दे रहे थे।

इलिन अचानक बड़े आवेश में बोल पड़ा—"सोफ़ी! मेरी प्यारी! मेरी प्राणेश्वरी!"

वह बड़े धीमे और बहुत ही मधुर स्वर में न जाने क्या बोलने लगा। उस की आवाज़ क्रमशः अधिक अधिक कोमल होती गई। इस बार वह सोफ़ी को "तु" तक भी कह गया, जैसे वह उस की

अर्धाङ्गिनी हो। इस के बाद बिलकुल अचानक उस ने अपना एक हाथ सोफ़ी की कमर में डाल दिया और दूसरे हाथ से उस की बाहू पकड़ ली।

उन्मत्त की-सी दशा में सोफ़ी के नंगे गले का चुम्बन लेते हुए वह बड़बड़ाने लगा—"मेरी निधि ! मेरी हृदय वासिनी ! इसी समय तुम मेरे साथ चल दो !"

सोफ़ी ने अपने को इलिन के बन्धन से मुक्त कर लिया। उस से कुछ दूर पर खड़े होकर वह इलिन को फटकार बताने के उद्देश्य से अपने अन्दर क्रोध उत्पन्न करने का प्रबल प्रयत्न करने लगी। परन्तु अपने इस हार्दिक प्रयत्न के बावजूद भी वह इलिन को उतनी साधारण-सी डांट भी न बता सकी, जो मामूली स्त्रियां भी ऐसे मौकों पर कह देती हैं—

"तुम पागल होगए हो !"

इलिन ने पुनः कहना शुरु किया—"आओ ! हम इसी समय भाग चलें।...मैं जानता हूँ कि तुम भी मुझे प्यार करती हो; मगर अपनी अन्तरात्मा को ज़बरदस्ती जगा कर तुम मुझ से दूर भागने का निष्फल प्रयत्न करती हो।"

सोफ़ी वहां से वापस लौट चली। इलिन ने शीघ्रता से और बड़े आग्रह के साथ उस का गाउन पकड़ लिया। वह बकने लगा—"आज नहीं तो कल अवश्य ही तुम्हें यह स्वीकार करना पड़ेगा कि तुम भी मुझे चाहती हो। फिर इस तरह समय बरबाद करने से क्या लाभ ? प्यारी सोफ़ी, अपने को धोखा देने की कोशिश

मत करो और इसी समय मेरे साथ चल दो! हम दोनों इस दुनियां से बहुत दूर, किसी ऐसी जगह पर जाकर रहेंगे, जहां हम पर उंगलियां उठाने वाला कोई न होगा।"

सोफ़ी ने एक झटका देकर अपना गाउन छुड़वा लिया और इस के बाद बिना कुछ भी बोले वह अन्दर चली गई। चित्रागार में पहुँच कर वह अपना पियानो बन्द करने लगी। इस के बाद कुछ देर तक लक्ष्यशून्य दृष्टि से उस बन्द पियानो की तरफ़ देखते रह कर वह एक स्टूल पर बैठ गई। इस समय न वह खड़ी रह सकती थी और न कुछ सोच ही सकती थी। अपनी सम्पूर्ण नासमझी और आवेश के बदले अब उस में केवल भारी थकावट, विचार-शून्यता और खालीपन-सा ही शेष बच रहा था। उस की अन्तरात्मा उस से अब भी मानों बहुत धीरे-धीरे कह रही थी कि तुम ने आज शाम को भ्रष्ट नारियों का-सा निन्दनीय और मूर्खतापूर्ण आचरण किया है। उस के कन्धे और कमर के जिस स्थान को, अभी अभी, बाहर के बरामदे में, इलिन ने स्पर्श किया था, उस स्थान पर उसे इस समय भी बड़ी उद्वेग-भरी अनुभूति होरही थी। कमरे में और कोई प्राणी नहीं था। वहां काफ़ी प्रकाश भी नहीं था। केवल एक कोने में एक मोमबत्ती जल कर इस कमरे में अधूरा-सा प्रकाश कर रही थी। अपने पियानो के निकट एक स्टूल पर चुपचाप बैठी हुई सोफ़ी मानों किसी बात की इन्तज़ार कर रही थी। इस अन्धकार में उस की अन्तरात्मा निश्चेष्ट होती जा रही थी और उस के साथ साथ क्रमशः एक

अस्पष्ट-सी प्रबल इच्छा—जिस के औचित्य या अनौचित्य का निर्णय करने में सोफ़ी अब पूरी तरह असमर्थ हो गई थी—अजगर की तरह प्रतिक्षण उस के सम्पूर्ण मानसिक भावों को अपने अन्दर निगलती जारही थी।

करीब आध घण्टे तक वह उसी स्थान पर निश्चेष्ट-सी बन कर बैठी रही। इस के बाद वह उठ खड़ी हुई और अपने शयनागार में पहुँची। उस का पति इस समय तक सो चुका था। सोफ़ी अपने पलंग के नज़दीक की खुली हुई खिड़की के पास जाकर बैठ गई और बाहर की तरफ़ देखने लगी। अपनी विचार-धारा को अब उसने बिलकुल खुला छोड़ दिया। उसकी अन्तरात्मा मूर्छित-सी होकर पड़ी थी। उस के सामने अब एक ही इच्छा थी, एक ही लक्ष्य था। इस समय वह अपनी इच्छा के औचित्य की विवेचना कर ही न सकती थी। उस का यह लक्ष्य चाहे कितना ही बुरा क्यों न हो, मगर क्योंकि अब उसके हृदय का अन्तर्द्वन्द समाप्त हो चुका था, इस लिए वह अपने को कुछ सुखी और शान्त-सा अनुभव कर रही थी। अपने शत्रु को प्रबल जान कर अब उस ने उस का मुकाबला करने का इरादा ही छोड़ दिया था।

जब उस का हृदय इलिन के साथ भाग चलने के लिए पूरी तरह से तैयार हो गया तो पुनः मानों उस के जन्मभर के संस्कार उस की कमज़ोरी पर उसे फटकार बताने लगे। इस दशा में वह अपनी नीचता पर विचार करने लगी—"मैं कितनी भ्रष्ट और नीच प्रकृति की नारी हूँ!"

इस दशा में जब उस ने इस नए दृष्टि-कोण से इलिन के सम्बन्ध की सम्पूर्ण घटना के इतिहास पर विचार करना शुरु किया तो आरम्भ ही से उसे अपना उत्तरदायित्व भी साफ़ साफ़ दिखाई देने लगा। यहां तक कि इस मनोवृत्ति के प्रवाह में वह बचपन ही से अपने को नीच प्रकृति वाली नारी सिद्ध करने लगी। उस ने सोचा कि मैं जो अब तक पाप कर्मों से बची रही, उस का कारण सिर्फ़ इतना ही था कि मेरे सामने पहले कभी इस तरह के प्रलोभन आए ही नहीं। मेरे जीवन में पहली बार इस तरह का यह प्रलोभन आया और मैं इस का मुकाबला नहीं कर सकी।

उसने सोचा—"अगर इस प्रलोभन के खिलाफ़ लड़ने का भी मैंने प्रयत्न किया तो उस की कीमत ही क्या है! बाज़ारू औरतें भी जब पैसों के लिए अपनी आत्मा और अपने शरीर को बेचने लगती हैं तो उन के हृदय में इस ढंग की लड़ाई होती ही है। मगर इस लड़ाई से फ़ायदा क्या हुआ? दूध की तरह से वह एक ही दिन खट्टा पड़ गया! सिर्फ़ एक दिन में!"

अब वह इलिन के साथ भाग चलने का तो पूरा निश्चय कर चुकी थी। इस समय उस के हृदय में जो विचार उठ रहे थे, वह केवल उस की हारी हुई अन्तरात्मा और निष्फल-हो-गए जन्म-भर के दैवीय संस्कारों का रुदन मात्र ही था। जैसे कोई हारा हुआ खिलाड़ी अपनी पराजय के कारणों पर विचार कर रहा हो। उस ने सोचा—"इस तरह पहाड़ों पर आकर बिलकुल बेकारी के दिन काटने का और क्या परिणाम हो सकता था! यह केवल

मेरे ही साथ तो नहीं हुआ। कमज़ोर स्वभाव की और भी कितनी ही कुलीन लड़कियों का यहां आकर यही हाल होता है।"

बाहर दूर पर कोई आदमी एक गीत गारहा था। उस की आवाज़ सोफ़ी के कानों में पड़ी। इस गीत की एक कड़ी का भाव यह था—

"वह चिड़िया के उस पंखरहित बच्चे के समान है, जिस की मां को शिकारी ने मार डाला है!"

सोफ़ी चौंक कर खड़ी होगई। उसे ख्याल आया कि मुझे अभी अभी चल देना चाहिए, इलिन मेरी इन्तज़ार में होगा!

उस का हृदय ज़ोर ज़ोर से धड़कने लगा। वह अपने पति के पास गई और करीब करीब-चीखती हुई आवाज़ में कहने लगी—"ल्यूबा! सुनो! हम...हम जा रहे हैं!...सचमुच जा रहे हैं!"

ल्यूबा ने उनींदी-सी दशा में लेटे लेटे ही कहा—"मैंने तुम से पहले ही कहा था। जाना हो तो अकेले चली जाओ।"

"मगर मेरी बात तो सुन लो! अगर तुम मेरे साथ नहीं चलोगे, तो मुझे भय है कि तुम मुझे सदा के लिए खो बैठोगे! मैं...मैं एक आदमी के प्रेम में पड़ गई हूं!"

ल्यूबा चौंक कर उठ बैठा। उस ने पूछा—"किस आदमी के?"

"उस का नाम जान कर तुम क्या करोगे! वह तुम्हारे अतिरिक्त एक और आदमी है। बस, तुम्हारे लिए इतना ही काफ़ी है।"

ल्यूवा ने अपने पैर पलंग से नीचे लटका लिए। अन्धकार में ही वह बड़े विस्मय के साथ अपनी पत्नी की अस्पष्ट-सी मूर्ति की तरफ़ देखने लगा।

उस ने जैसे आत्मगत ही कहा—"यह भी एक अजीब बात है!"

उसे अपनी पत्नी की बात पर विश्वास तो नहीं हुआ, फिर भी वह डर गया। अपनी पत्नी से इधर-उधर के कई सवाल कर के वह उसे पारिवारिक और सामाजिक जीवन आदि की समस्याओं के सम्बन्ध में करीब दस मिनटों तक एक लैक्चर-सा देता रहा। इस के बाद वह पुनः सो गया। सोफ़ी यह सब कुछ चुपचाप सुनती रही, परन्तु उस पर इन सब बातों का कोई असर नहीं पड़ा। दुनियां में इन बातों पर व्याख्यान देने वाले लोग तो बहुत है, परन्तु उन में से अधिकांश संख्या उन्हीं लोगों की है, जिनके सामने इस तरह की समस्या कभी आई नहीं!

इस समय रात का करीब एक बज गया था परन्तु सड़कें अभी तक बिलकुल सुनसान नहीं हुई थीं। सोफ़ी ने अपनी टोपी सिर पर रक्खी। एक क्षण तक वह खड़ी रही, एक क्षण तक उस ने सोचा।...इस के बाद उस ने अपने पति से कहा—"तुम सो गए हो क्या? मैं सैर पर जा रही हूँ...क्या तुम भी मेरे साथ चलोगे?"

यह उस का अन्तिम आशास्थल था। परन्तु उस के पति ने कोई जवाब नहीं दिया। वह बाहर चली गई।...इस समय बड़ी

मज़ेदार हवा चल रही थी। मगर सोफ़ी का ध्यान न इस हवा की तरफ़ था और न अंधेरे की तरफ़ ही। वह चुपचाप शीघ्रता से बढ़ी चली जा रही थी। जैसे कोई अन्य शक्ति उसे बलात् अपने साथ खींचे लिए जारही हो और जैसे कि अगर वह ठहर जाय तो वह पुनः पीछे की तरफ़ को खींच ली जायगी!

वह खुद-ब-खुद गुनगुनाई—"पापी जीव! भ्रष्टा नारी!"

वह चुप थी और लज्जा से गरम हो रही थी; वह अपनी टांगों की सत्ता अनुभव ही नहीं कर रही थी। परन्तु जो चीज़ उसे अपने साथ खींचे लिए जारही थी, वह लज्जा, युक्ति और भय—इन तीनों से बड़ी थी!

नर्तकी

पाशा मास्को की एक नर्तकी थी । आज उस का रूप और यौवन दोनों क्षीण हो चले थे । परन्तु एक युग ऐसा भी था, जब मास्को के सैकड़ों आवारागर्द नौजवान उस के पीछे अपना धन, यौवन और जीवन बरबाद किया करते थे । उसी ज़माने की बात है । पाशा के ग्रीष्मावास में कल्पकोव नाम का एक सुन्दर युवक उस के पास बैठा हुआ था । दोपहर का समय था । हवा रुकी हुई थी । सूरज नंगा हो कर चमक रहा था और शिद्दत की गरमी पड़ रही थी । कल्पकोव सुबः से पाशा के चरणों में बैठा था । सुबः का प्रातराश और दोपहर का भोजन भी उस ने इसी स्थान पर किया था । भोजन के बाद वह घटिया दर्जे की शराब की एक पूरी बोतल चढ़ा गया था । उस का नशा रहते हुए भी इस समय वह

खुश नहीं था। कुछ तो गरमी की वजह से और कुछ नीरसतापूर्वक देर तक खाली बैठे रहने की भी वजह से। पाशा भी अनमनी-सी हो रही थी। दोनों इस प्रतीक्षा में थे कि सूरज छिपे तो एकान्त में सैर के लिए निकलें।

इसी समय किसी ने पाशा का दरवाज़ा खटखटाया। कल्पकोव ने अपने अधिकांश कपड़े उतार रक्खे थे, इस लिए यह खटखटाहट सुन कर वह चौंक कर खड़ा हो गया और प्रश्नात्मक दृष्टि से पाशा की तरफ़ देखने लगा।

पाशा ने कहा—"घबराओ नहीं। या तो डाकिया होगा और या कोई नर्तकी।"

पाशा को मिलने के लिए जो नर्तकियां आती रहती थीं, उन के सामने होने में कल्पकोव को संकोच नहीं था। फिर भी वह शीघ्रता से उठा और साथ वाले कमरे में जाकर बैठा रहा। इधर पाशा दरवाज़ा खोलने के लिए उठी। उसे यह देख कर अत्यधिक आश्चर्य हुआ कि दरवाज़े पर न तो डाकिया था और न कोई नर्तकी। वहां सभ्य महिलाओं के वस्त्र पहिने एक बहुत ही सुन्दर नवयुवती खड़ी हुई थी। उस की आंखों से कुलीनता टपक रही थी।

इस युवती का चेहरा पीला हो रहा था और सांस ज़ोर ज़ोर से चल रहा था, जैसे वह यहां तक भाग कर आई हो।

पाशा ने उस का किसी तरह का स्वागत आदि किए बिना ही पूछा—"क्या काम है?"

युवती ने कोई जवाब नहीं दिया। पाशा के कहे बिना ही वह

कमरे के अन्दर बढ़ आई और बहुत ही थकी हुई तथा निराश-सी दृष्टि से उस कमरे में मानों कुछ खोजने-सी लगी। वह शायद कुछ बीमार थी। इस तरह खड़े रहना भी उसके लिए दूभर होरहा था। कमरे में चारों तरफ़ एक निगाह दौड़ा लेने के बाद उसने अपनी बड़ी-बड़ी और रोने के कारण लाल होरही आंखें पाशा के चेहरे पर गढ़ा दीं। उस के होंठ इस तरह कांपने लगे, जैसे वह कुछ कहना चाहती हो।

अन्त में उसने पूछा—"क्या मेरे पति यहीं हैं ?"

"पाशा के मुँह से हठात् ही निकल गया—"पति !" वह घबरा गई और बड़ी कठिनता से अपने को कांपने से बचा कर उस ने कहा—"कौन से पति ?"

"मेरे पति।......श्रीमान् निकोले पैट्रोविच कल्पकोव।"

"न......नहीं, श्रीमती जी !...मैं...मैं किसी पति को नहीं जानती !"

एक मिनट तक कोई कुछ नहीं बोला। उस भद्र महिला ने अपना रूमाल बाहर निकाल लिया, और उस से वह बार-बार अपने होंठ पोंछने लगी। वह बड़ी कठिनता से अपने को सम्हाले हुए थी। इधर पाशा लैम्प के खम्बे की तरह निश्चल होकर खड़ी थी और इस महिला की तरफ़ आश्चर्य और भय के साथ देख रही थी।

इस के बाद उस महिला ने विचित्रता से मुसकरा कर स्थिर आवाज़ में कहा—"तो तुम्हारा कहना है कि वह यहां नहीं है ?"

"मैं...मैं नहीं जानती कि आप किसे पूछ रही हैं ?"

अचानक बड़ी घृणाभरी और उत्तेजित आवाज़ में उस महिला ने कहा—"तुम कमीनी, झूठी और बदमाश हो!...हां, हां, तुम सचमुच बड़ी खतरनाक हो। मुझे बड़ी खुशी है कि मुझे आज तुम्हारे मुँह पर यह बात कहने का अवसर मिला है।"

यह गुस्सेभरी काली आंखों वाली सुन्दर परन्तु पतली-सी महिला अपनी नोकीली और सफ़ेद सफ़ेद उँगलियों को पुनः पुनः हिला कर जिस तरह उस नर्तकी को फटकार बता रही थी, उस से सचमुच ही पाशा हतप्रभ-सी हो गई। इस कुलीन महिला के सामने पाशा को अपने प्रयत्न से संवारे गए बाल, बड़ा-सा चेहरा और तड़कीली भड़कीली सुगन्ध-सनी पोशाक, ये सब चीज़ें बहुत ही क्षुद्र और घृणायोग्य जान पड़ीं और वह अपने को लज्जित तथा भयभीत अनुभव करने लगी।

वह महिला कहती गई—"सच सच बताओ, मेरे पति कहां हैं? मुझे इस बात की इतनी परवाह नहीं कि वह तुम्हारे पास आए हैं या कहीं और गए हैं, परन्तु मुझे चिन्ता इस बात की है कि उन पर रुपया ग़बन करने का इलज़ाम लगाया गया है और... और हमारे घर पर पोलीस उन्हें पकड़ने आई है! ओह...ओ निर्लज्जा! यह सब तेरी करतूत है!"

वह युवती इतने आवेश में आगई कि उसी कमरे में धीरे-धीरे टहलने लगी। पाशा उस की तरफ़ बड़े भय के साथ देखने लगी। उसे स्वयं अपने पर आश्चर्य हो रहा था कि वह इस निर्बल-सी लड़की से इतना डर क्यों रही है।

थोड़ी देर तक इसी तरह टहलते रहने के बाद वह युवती एक जगह खड़ी हो गई। उस ने एक आह भरी और इस के बाद पुनः कहना शुरु किया—"मुझे मालूम है कि मेरे पति को इस पतित और निकृष्ट दशा में कौन लाया है! वाहियात कमीनी औरत! बदमाश आवारागर्द नारी!" इतना कहते कहते घृणा के मारे उस की नाक पर हलकी हलकी झुर्रियां-सी पड़ गईं। उस ने कहा—"ओ कमीनी औरत! सुनती हो ? मैं निस्सहाय हूँ...मैं निस्सहाय हूँ। तुम मुझ से अधिक सबल और सम्पन्न हो। मगर याद रक्खो, संसार में एक और शक्ति भी है, जो मेरी और मेरे बच्चों की रक्षा करती है। भगवान सब कुछ देखता है! वह न्यायकारी है! याद रक्खो ओ कलङ्किनी नारी!—अपने जीवन की निद्रारहित रात्रियों में मैं चुपचाप जो आंसू बहाया करती हूँ, उन के लिए ईश्वर तुम से एक दिन अवश्य ही जवाब तलब करेगा। वह समय अवश्य आएगा, और तब तुम्हें मेरी याद आएगी!..."

कमरे में फिर से सन्नाटा छा गया। वह महिला पुनः कमरे में चक्कर काटने लग गई। पाशा इस वक्त तक भी बड़े विस्मय के साथ घर-बार वाली उस आदरणीया परन्तु अभागिनी नारी की रफ़ देख रही थी।

सहसा पाशा की आंखों में आंसू भर आए। उस ने कहा—"श्रीमती जी, मैं इस सम्बन्ध में कुछ नहीं जानती।"

उस युवती ने पाशा की तरफ़ गुस्से से घूर कर चिल्लाती हुई आवाज़ में कहा—"तुम झूठ बोल रही हो!...मैं सभी कुछ

जानती हूँ ! मुझे तुम्हारे सम्बन्ध में मुद्दत से पता है । मुझे यह भी मालूम है कि वह पिछले महिने के प्रत्येक दिन तुम्हारे इसी कमरे में मौजूद रहे हैं !"

पाशा बगलें झांकती हुई कहने लगी—"हां, हां, आजकल वह यहां बहुत आते हैं। मगर इस से क्या हुआ ?...इस से क्या सिद्ध हुआ ? मेरे यहां तो रोज़ बीसियों आदमी आते हैं । मेरा तो पेशा ही यही है । मगर मैं ने यहां आने के लिए किसी को बाधित नहीं किया। जो आता है, अपनी इच्छा से आता है।"

उस महिला ने पाशा की बात की तरफ़ ध्यान न देकर कहा—"सुनो ! पोलिस को पता लग गया है कि उन्हों ने दफ्तर का रुपया ग़बन किया है। यह सब ग़बन उन्हों ने तुम्हारे लिए... ओह, तुम्हारे जैसी घृणित नारी के लिए किया है ! तुम्हारा कोई असूल नहीं है ! तुम्हारा काम ही लोगों को तबाह करना है ! मगर फिर भी तुम इतनी पतित होगी कि उन से चोरी तक करवाओगी, यह बात मैंने आज तक नहीं सोची थी।...सुनो, उन के पत्नी है, बच्चे हैं...अब वह पकड़ लिए जाएँगे और मेरे बच्चे भूखे मरेंगे !...सुनती हो ! मगर अभी तक उन को बचाने का एक तरीका है ! पोलीस ने मुझ से कहा है कि अगर मैं इस समय भी दफ्तर का अठारह सौ रुपया जमा कर दूँ, तो उन्हें गिरफ्तार नहीं किया जाएगा। अठारह सौ रुपया !"

पाशा ने बड़ी नम्रता से कहा—"कितना ? अठारह सौ रुपया !...मैं...मैं कुछ नहीं जानती। यह उन्हों ने मुझे नहीं दिया।"

"तुम झूठ बोलती हो !...सुनो; मुझे मालूम है कि उन्हों ने तुम्हें अठारह सौ रुपया नक़द नहीं दिया होगा, उस के उपहार खरीद कर दिए होंगे। मैं तुम से वही, केवल वे उपहार ही वापस मांगती हूँ।"

पाशा ने कुछ अटकते हुए कहा—"नहीं श्रीमती जी ! उन्हों ने मुझे कोई उपहार भी नहीं दिया।"

"तो फिर वह रुपया गया कहां ? जो वह मुझ से और अपने मित्रों से ज़बरदस्ती या उधार लेते रहे हैं, जो उन्हों ने आफ़िस से ग़बन किया है।...वह सब गया कहां ?...सुनो, मैं तुम से प्रार्थना करती हूँ।...गुस्से में आकर मैं तुम्हें बहुत-सी कठोर बातें कह गई—उन के लिए मैं तुम से क्षमा मांगती हूँ। मुझे मालूम है कि तुम मुझ से घृणा करती होगी। मगर मुझ पर दया करो ! अपने को इस दशा में डाल कर ज़रा कल्पना तो करो। देखो, मेरे छोटे-छोटे बच्चे हैं ! कृपा करके वे उपहार मुझे वापिस लौटा दो !"

पाशा ने अपने कन्धे हिला कर कहा—'हुँः। मैं बड़ी खुशी से तुम्हें सभी कुछ लौटा देती, मगर ईश्वर की शपथ खा कर मैं कहती हूँ कि उन्हों ने मुझे कुछ नहीं दिया। तुम मुझ पर विश्वास करो। हां—हां—" नर्तकी ने कुछ असमञ्जस में पड़ कर कहा—"हां, हां, सिर्फ़ एक बार दो मामूली-सी चीज़ें दी थीं, उन्हें बड़ी खुशी से वापस ले जाओ।"

इतना कह कर उस ने अपनी सिंगार-मेज़ का ड्राज़ खोला।

उस में से खोखले सोने का छोटा-सा हार तथा एक पतली-सी अंगूठी बाहर निकाली और कहा—"ये लो !"

उस भद्र महिला ने इन चीज़ों की तरफ़ देखा और उस का चेहरा कांपने लगा। क्षुद्र नर्तकी ने उस कुलीन नारी का यह भारी अपमान किया था।

उस ने कांपती हुई आवाज़ में कहा—"तुम मुझे दे क्या रही हो ? मैं तो तुम से वह चीज़ मांग रही हूँ जो तुम्हारी नहीं है... जो तुम ने मेरे दुर्बल-स्वभाव पति पर मोह का आवरण डाल कर उन से ले तो ली है, मगर वास्तव में वह उन की भी नहीं है। वह चीज़ जिसकी है, उसी को देने के लिए मैं उसे तुम से मांग रहीहूँ। पिछले बृहस्पतिवार मैंने तुम्हें अपने पति के साथ बन्दर-गाह पर सैर करते हुए देखा था। उस समय तो तुम्हारे गले में एक कीमती हार पड़ा हुआ था, और अपनी कलाइयों में तुम ने हीरे से खचित कंगन पहिन रक्खे थे। मुझ से इस तरह खिलवाड़ मत करो !...मैं तुम से अन्तिम वार पूछती हूँ—तुम मुझे वह सामान लौटाओगी या नहीं ?"

पाशा ने कहा—"तुम भी अजीव हो ! मुझ पर विश्वास करो; कल्पकोव ने इन दो चीज़ों को छोड़ कर मुझे अन्य कोई उपहार नहीं दिया। हां, जब कभी वह यहां आता था, तो अपने साथ फल या मिठाई अवश्य ले आया करता था। जिसे हम दोनों मिल कर खाते थे।"

उस युवती ने विकट हंसी हंस कर कहा—"क्या कहा, मिठाई!

उधर घर में तो बच्चे भोजन को तरसते हैं इधर तुम्हें वह मिठाई और फल लाकर खिलाते हैं !...अब भी बतलाओ, क्या वे उपहार तुम मुझे नहीं लौटाओगी !"

पाशा ने कोई जवाब नहीं दिया। वह भद्र महिला बिलकुल निराश-सी होकर नीचे बैठ गई। उसने धीरे-धीरे, जैसे वह अपने से ही बोल रही हो, कहना शुरू किया—"ओह मैं अब क्या करूँ ? अगर मैं १८०० रुपयों का प्रबन्ध नहीं कर सकूँगी तो वह तबाह हो जाएँगे। मेरे बच्चे रुल जाएँगे और मैं भी कहीं की न रहूँगी।...मैं क्या करूँ ? इस कमीनी औरत की हत्या कर दूँ या इस के पैर पकड़ कर पुनः अनुरोध करूँ ?"

इस के बाद वह सिसकियां भर-भर कर रोने लगी। उस ने अपना रूमाल अपनी आंखों पर रख लिया। यह रूमाल उस हतभागिनी के गरम आंसुओं से शीघ्र ही गीला होगया।

पाशा अब भी चुपचाप होकर खड़ी थी। कुछ समय बाद उसे सुनाई दिया कि वह रमणी सिसकियां भरते भरते कह रही है—"मैं तुम से भीख मांगती हूँ ! तुम ने मेरे पति को लूट लिया है, उन्हें तबाह कर दिया है। मैं तुम से भीख मांगती हूँ कि उन्हें बचाओ !...मुझे मालूम है कि तुम उन्हें प्यार नहीं करती; मगर बच्चों ने... मेरे बच्चों ने तुम्हारा क्या कसूर किया है ?"

पाशा के सामने चित्र-सा खिंच गया। जैसे कलपकोव के छोटे-छोटे बच्चे नीचे गली में भूख से तड़प रहे हैं। इस चित्र की कल्पना से वह भी रोने लगी।

उस ने कहना शुरू किया—"श्रीमती जी, मैं क्या कर सकती हूँ। आप मुझे कमीनी औरत कहती हैं; आप कहती हैं कि मैं ने कल्पकोव को तबाह कर दिया। परन्तु मैं आप को विश्वास दिलाती हूँ, ईश्वर के नाम पर विश्वास दिलाती हूँ, कि उन्हों ने मुझे कभी कोई उपहार नहीं दिया।...हम सब नर्तकियों में सिर्फ़ एक लड़की ही अमीर है। बाकी सब तो बिलकुल गरीब हैं। कठिनता से हमारा गुज़ारा होता है। कल्पकोव एक बहुत शिक्षित, सभ्य और भद्र पुरुष है, इसी लिए मैं उन का स्वागत करती हूँ। हमारे पास जब कोई भला आदमी आता है तो हमें उस का स्वागत करना ही पड़ता है।"

"मैं और कुछ नहीं सुनना चाहती; मैं कोई कैफ़ियत भी नहीं मांगती। मैं तो सिर्फ़ वे उपहार ही लौटाना चाहती हूँ। मैं रो रही हूँ...मैं तुम्हारे सामने गिड़गिड़ा रही हूँ...अगर तुम कहो तो मैं घुटने टेक कर तुम्हारे पैरों पर सिर रखने को भी तैयार हूँ—मेहरबानी करके वह सामान मुझे लौटा दो!"

पाशा भय से चीख़ पड़ी। उस ने अपना हाथ खाली आसमान में इस तरह हिलाया, जैसे वह किसी चीज़ को अपने से दूर कर रही हो। उसे अनुभव हुआ कि जैसे वह दुबली-सी सुन्दर नारी, जो इतने समय से रंगमंच के पात्रों के समान अपने चेहरे पर अधिकतम गम्भीरता के साथ विभिन्न भावों का प्रकाशन कर रही है, अभी अभी उस के सामने सचमुच घुटने टेक कर बैठ जाएगी। पाशा ने यह भी प्रत्यक्ष अनुभव किया कि इस घरबार

वाली कुलीन महिला का, मुझ आचारभ्रष्ट नर्तकी के सामने घुटने टेकना मुझे और भी अधिक पतित और घृणायोग्य बना देगा।

आखिरकार अपनी आंखें पोंछ कर पाशा ने कहा—"अच्छा, मैं तुम्हें उपहार देती हूँ। मगर सच मानो, ये उपहार मुझे कल्पकोव ने नहीं दिए। ये मुझे एक और युवक ने दिए थे।...मगर तुम्हें ज़रूरत है, इस लिए—"

यह कह कर पाशा ने अपनी मेज़ का दूसरा ड्राज़ खोला और उस में से सोने के दो कड़े और एक हार, वही जिनका उस महिला ने ज़िक्र किया था, निकाल कर उस के सामने रख दिए और ज़रा क्रोध से कहा—"तुम्हारे पति ने तो मुझे कुछ नहीं दिया। मगर तुम चाहती हो तो ये दोनों चीज़ें ले जाओ! जाओ, ये तुम्हें अमीर बना देंगी!...अगर तुम सचमुच एक भद्र महिला हो और कल्पकोव की पत्नी हो, तो जाओ, भविष्य में उसे अपने वश में रक्खो। उसे इस तरह बाज़ारों का चक्कर काटने से रोको। मैं ने उसे यहां आने को कभी नहीं कहा। वह स्वयं ही यहां आता है।"

अपनी गीली आंखों पर से रूमाल हटा कर उस भद्र महिला ने बड़ी आतुरता के साथ इन दोनों गहनों की तरफ़ देखा और व्याकुलता से कहा—"क्या १८०० रुपयों में कुल यही सामान आया है! इन दोनों की लागत तो १००० से अधिक नहीं होगी!"

पाशा बिलकुल खिज गई। उस ने एक तीसरा ड्राज़ खोला और उस का सारा सामान उस महिला के सामने फ़र्श पर उलट

दिया ! इस में थे—सोने की घड़ी, सोने के बटन, सिगार-केस तथा शृंगार का कुछ अन्य कीमती सामान। पाशा ने उत्तेजित स्वर में कहा—"यह सब कुछ उठा ले जाओ। आओ, अब मेरी तालाशी ले लो, मेरे पास अब कुछ भी नहीं बचा !"

उस महिला ने एक गहरा श्वास लिया और इसके बाद इन सब चीजों को अपने रूमाल में समेट कर वह चुपचाप कमरे से बाहर होगई। उस ने पाशा से विदा तक भी नहीं ली।

इसी समय साथ के कमरे का दरवाज़ा खुला और कल्पकोव पाशा के सामने आ खड़ा हुआ। उस का चेहरा पीला पड़ा हुआ था, सिर आवेश के कारण कांप रहा था और आंखों में आंसू भर आए थे।

पाशा ने उस से बड़ी गम्भीरता के साथ पूछा—"तुम्हीं बताओ, तुम ने मुझे कौन से उपहार दिए थे ? उपहारों के लिए तुम ने मुझ से कभी पूछा भी था ?"

कल्पकोव ने अपना सिर हिला कर कहा—"उपहार !... वह कोई महत्वपूर्ण बात नहीं है।...हे ईश्वर ! वह देवी तुम्हारे सामने रोई, तुम्हारे सम्मुख गिड़गिड़ाई !"

पाशा ने चिल्ला कर पूछा—"मैं पूछती हूँ कि तुमने मुझे कौन से उपहार दिए थे ?"

"हे भगवान ! कहां वह देवी !—इतनी पवित्र, इतनी आत्माभिमानी और इतनी उच्च...वह इसके सामने घुटने टेकने को तैयार थी, इस कमीनी औरत के सामने ! यह सब किस के लिए ?

सिर्फ़ मुझ नीच, मुझ अधम के लिए!"

अपने सिर के बाल दोनों मुट्ठियों में पकड़ कर वह गुर्राया—"नहीं, इस महापाप के लिए मैं अपने को क्षमा नहीं करूँगा! —कभी क्षमा नहीं करूंगा!...ओ कमीनी औरत! मुझ से दूर हट जाओ!" —इतना कह कर उस ने कांपते हुए हाथों से पाशा को दूर धकेल दिया। वह बेचारी नीचे गिर पड़ी। कल्पकोव का गुर्राना अभी तक जारी था—"वह तुम्हारे सामने घुटने टेकने को तैयार थी! ओह, तुझ नीच के सामने! हे ईश्वर!"

कल्पकोव ने उसी जोश से, कांपती हुई दशा में अपने कपड़े पहिने और पाशा को दूर ठेल कर वह शीघ्रता से नीचे उतर गया।

पाशा नीचे गिर पड़ी थी। वह अभागिनी अपने कमरे में अकेले ही में सिसक सिसक कर रोने लगी। उसे दो बातें तकलीफ़ पहुँचा रही थीं। एक तो उस का इतना कीमती सामान छिन गया और साथ ही उस पर करारी फटकार भी पड़ी। आज उसे अपने जीवन का एक और दिन भी याद आया, जब एक धनी व्यापारी ने उसे बिना किसी अपराध के पीटा था। परन्तु पाशा का यह आज का दुख उस दिन की अपेक्षा भी बहुत अधिक तीव्र था।

चित्रकार

अब से छः-सात साल, पहले की बात है जब मैं कुछ दिनों के लिए टुला प्रान्त के एक ज़िले में रहता था। मेरे पास ही, एक बाग़ में बने हुए मकान में वेलो नाम का एक युवक ज़मीन्दार भी रहता था। वह प्रातःकाल जल्दी उठ जाता, दोपहर को शिकार खेलता और शाम को जी भर कर शराब पिया करता था। उसे शिकायत थी दुनियां में उसे किसी ने प्यार नहीं किया। यह एक पहाड़ी स्थान था और मैं गरमियां काटने के लिए ही यहां आया था। मैं एक बहुत पुराने और बड़े ज़मींदाराना मकान में ठहरा था। इस मकान के एक बड़े कमरे में एक खूब लम्बा चौड़ा सोफ़ा पड़ा था, इसी पर मैं सोया करता था। साथ ही एक मेज़ पड़ी थी, जिस के किनारे खाली बैठा रह कर मैं अपनी हिम्मत की परीक्षा किया

करता था। मकान बहुत पुराना था। हर समय उसकी चिमनियों में चटखने की-सी भयोत्पादक आवाज़ आया करती थी। जब कभी वर्षा होने लगती तब तो ऐसा प्रतीत होता कि जैसे यह विशाल मकान अभी-अभी गिर पड़ेगा। बरसात की किसी रात में, जब बाहर बिजली चमकती तो मेरे कमरे की दसों बड़ी-बड़ी खिड़कियां जिस तरह प्रकाशमान हो उठती थीं, उन से मुझे बड़ा डर प्रतीत होता था।

निठल्ला रहने का शाप मुझे किस्मत ने दे रक्खा है। मैं बिलकुल कुछ नहीं करता था। निरन्तर कई कई घण्टों तक मैं शून्यदृष्टि से खिड़की के बाहर की ओर ताकता रहता था। बाहर का आसमान और वृक्ष निश्चल भाव से मेरी नज़रों के सामने खड़े रहते थे। बीच-बीच में कोई उड़ता हुआ पक्षी भी दिखाई दे जाया करता था। अगर मैं कुछ पढ़ने बैठता तो झट से नींद आजाती। कभी-कभी मैं घर से बाहर निकल जाता और शाम तक निरुद्देश्य भाव से घूमता रहता।

एक दिन किसी ऐसी ही सैर से घर की तरफ़ लौटते हुए मैं अचानक एक स्थान पर ठहर गया। इस जगह मैं पहले कभी नहीं आया था। पश्चिम दिशा में सूर्य अस्त हो रहा था और प्रत्येक वस्तु उस की आभा से रंगीन दिखाई देने लगी थी। सामने. चीड़ के बड़े-बड़े और एक ही आकार के वृक्षों की दो कतारें थीं। ये कतारें बहुत घनी और शान्दार थीं। मेरे जी में आया कि इन कतारों के पार चल कर देखूँ कि उधर क्या चीज़ है। वे वृक्ष इतने घने

थे कि दूसरी तरफ़ जाते हुए चीड़ की नोकदार और कठोर-सी पत्तियों से मैं अपना बचाव कर ही न सकता था। इस लिए बिलकुल झुक कर ही मैं इन कतारों को पार कर सका। सब तरफ़ सन्नाटा था। नीचे, पृथ्वी पर अंधकार होता चला जा रहा था, परन्तु चीड़ के इन बड़े-बड़े वृक्षों की चोटियां अब भी आसमान की सुनहरी आभा से प्रतिबिम्बित हो रही थीं और उन पर लगे मकड़ियों के जालों में इन्द्रधनुष के-से रंग दिखाई दे रहे थे। चीड़ की ताज़ा बना देने वाली और तेज़ गंध आरही थी। इन कतारों के बाद सागौन के वृक्षों की एक और कतार थी। इन वृक्षों के नीचे ढेर के ढेर पुराने और सूखे हुए पत्ते पड़े थे। इन पत्तों को पार कर के मैं एक बाग़ में पहुँचा। अभी मैं बाग़ में, कुछ ही दूर आगे बढ़ा था कि एक दुमंजले सफ़ेद मकान के उपरले भाग पर मेरी नज़र पड़ी। क्रमशः मैं इस मकान के सहन में आ पहुँचा। यह सहन बहुत बड़ा और शान्दार था। सूर्यास्त के कारण इस का दृश्य और भी अधिक मनोहर हो उठा था।

यहां पहुँच कर मुझे बड़ा आह्लाद-सा अनुभव होने लगा—जैसे बचपन में मैं ने यह सुन्दर स्थान कभी पहले भी देख रक्खा हो।

सहन के चारों ओर पत्थर की एक दीवार थी। इस दीवार का सफ़ेद फाटक बहुत ही पुराने ज़माने का बना हुआ होने पर भी बड़ा मज़बूत था। इस फाटक के निकट शुभ्र वस्त्र पहिने हुए दो सुन्दर लड़कियां खड़ी हुई थीं। बड़ी लड़की इकहरे बदन की, पीली और बहुत ही सुन्दर आकृति की थी। उस के बाल सुनहले

रंग के थे। आंखों से कुछ कठोरता-सी टपकती थी। उस ने मेरी ओर ध्यान ही नहीं दिया। छोटी लड़की का अभी तक बचपन भी पूरी तरह से नहीं गया था। वह कोई सत्रह अठारह बरस की होगी। वह भी पतली, पीली और सुन्दर थी। उस की आंखें विशेष तौर से बड़ी थीं। इस लड़की ने मेरी तरफ़ बड़े आश्चर्य से देखा और विशुद्ध अंग्रेज़ी में वह कुछ बोली। मुझे सुनाई नहीं दिया कि उस ने क्या कहा। मुझे ऐसा प्रतीत हुआ जैसे ये दोनों आकर्षक चेहरे मैं ने कभी पहले भी देख रक्खे हों। वहां ठहरे बिना ही मैं घर की तरफ़ रवाना हो गया। मेरा दिल इस समय बड़ा खुश था।

इस के कुछ ही दिनों-बाद एक दिन की प्रातःकाल मैं बेलो के साथ उस के मकान के सहन वाले बाग़ में टहल रहा था। इसी समय अचानक एक बढ़िया-सी घोड़ा-गाड़ी वहां आई और उस में से वही बड़ी लड़की नीचे उतरी। उस ने बेलो से हाथ मिलाया और मेरी ओर देखे बिना ही बातचीत शुरु कर दी। साथ के एक गांव में आग लग जाने से बहुत से गरीब किसान बेघरबार के हो गए थे, वह उन्हीं के लिए चन्दा जमा कर रही थी। वह बड़े संक्षेप में बोलती थी और उसकी आवाज़ से गहरी लगन का भाव टपकता था। उस की नज़र ज़मीन की तरफ़ थी। उस ने बताया कि गांव में आग लग जाने से कितने मनुष्य बेघरबार के हो गए हैं, कितने पशु जल मरे हैं और कितनी सम्पत्ति का नुकसान हुआ है। उस ने यह भी बताया कि अब उसका क्या करने का इरादा

है। यह सब कह-सुन कर उस ने चन्दे की लिस्ट हमारे सामने कर दी। वेलो ने उस पर एक राशि लिख दी, इस के बाद वह लिस्ट मेरे सामने लाई गई, मैं ने भी उस पर वही राशि अंकित कर दी।

यह काम होजाने के बाद उस ने वेलो से बिदा मांगते हुए कहा—"आजकल आप हमारे यहां बहुत कम आते हैं। कृपया अपने इन मित्र महोदय के साथ हमारे घर पर कभी अवश्य तशरीफ़ लाइएगा। हम लोग इन के चित्रों के प्रशंसक हैं, इन से मिल कर हम लोगों को बड़ी प्रसन्नता होगी।"

मैं ने झुक कर नमस्कार किया।

उस के चले जाने पर वेलो ने मुझे इस लड़की का परिचय दिया—"यह लड़की एक बहुत कुलीन और सम्पन्न घराने की है। इन का नाम है लीडा। यहां इन की एक काफ़ी बड़ी ज़मींदारी है। इन का शानदार मकान तो तुम ने देखा ही होगा। वहां यह अपनी माता तथा छोटी बहिन के साथ रहती हैं। इन के पिता मास्को में एक बहुत बड़े अफ़सर थे। वहीं उन का देहान्त होगया था। जिन दिनों उन की मृत्यु हुई उन दिनों वह प्रिवी कौन्सिल के मैम्बर थे। उन की मृत्यु के बाद से ये लोग अपने इस पहाड़ी मकान पर ही रहते हैं; सरदियों में भी नीचे नहीं जाते, यद्यपि अभी तक मास्को में इन की काफ़ी सम्पत्ति है। लीडा साधारण लड़कियों में नहीं है। उस का स्वभाव बड़ा विचित्र है। उसे सदैव परोपकार की ही चिन्ता रहती है। शारीरिक सुखों की ओर उस का ज़रा भी झुकाव नहीं।

इतनी सम्पन्न होते हुए भी वह बाकायदा एक कन्या-पाठशाला में अध्यापिका का काम करती है। वहां से उसे पचास रुपया मासिक वेतन मिलता है और वह अपना गुज़ारा सिर्फ़ इतने ही रुपयों से करती है।"

एक क्षण की चुप्पी के बाद बेलो ने कहा—"यह परिवार बहुत शिक्षित और आनन्ददायक है। चलो, एक दिन वहां चलेंगे। तुम से मिल कर उन्हें सचमुच बड़ी खुशी होगी।"

अगले ही रविवार को, हम दोनों उन के घर पहुँचे। दोनों लड़कियां और उन की माता घर पर ही थीं। उन की मां का नाम था पावलोवना। अपनी युवावस्था में वह अवश्य ही सुन्दरी रही होगी, परन्तु आजकल वह दमे की मरीज़, उदास, अनिश्चित और बहुत कमज़ोर प्रतीत होती थी। मेरे चित्रों के सम्बन्ध में बातचीत चल पड़ी। उन सब लोगों ने मास्को की प्रदर्शनी में मेरे चित्र देखे थे, उन की आलोचना होने लगी। लीडा की मां उन चित्रों के सम्बन्ध में मुझ से अनेक तरह के प्रश्न करने लगी और शीघ्र ही लीडा मेरी ओर से अपना ध्यान हटा कर बेलो से बातचीत करने में प्रवृत्त हो गई।

क्रमशः घर की मालकिन और मेरी बातचीत का प्रवाह स्वयं ही बहुत मध्यम पड़ गया और इस दशा में स्वभावतः मेरा ध्यान बेलो और लीडा की बातचीत की ओर आकृष्ट हो गया। लीडा कह रही थी—"यह आप के लिए ठीक नहीं है! आप उस दिन की बोर्ड की मीटिंग में गए क्यों नहीं? यह बहुत ही बुरा है।"

लीडा की मां ने भी यह बात सुनी और वह बोल पड़ी—"हां, लीडा का उलाहना ठीक है, बिलकुल ठीक है।"

अब लीडा ने मेरी तरफ़ देख कर कहना शुरू किया—"बेलगिन हमारे इस सम्पूर्ण ज़िले का डिक्टेटर बन बैठा है। ज़िला बोर्ड में उसका बहुमत है, इस लिए सब नौकरियां और ओहदे उस ने अपने दामादों और चचा-तायों के लड़कों को दे दिए हैं। उस का सख्त विरोध करना चाहिए। मगर हमारे युवकों में तो जैसे दम ही नहीं है। बेलो साहब ज़िला-बोर्ड के मैम्बर तो हैं, मगर उसकी बैठकों में जाते तक भी नहीं। यह बड़ी शर्म की बात है।"

ज़िला बोर्ड की इन गम्भीर बातों में लीडा की छोटी बहिन गेनिआ कोई भाग नहीं ले सकती थी, इस लिए वह चुपचाप बैठी हुई थी। अपने परिवार में वह अभी तक नासमझ लड़की ही समझी जाती थी और सब लोग उसे "मीसू" के उपनाम से ही बुलाते थे। उस का यह नाम इस लिए पड़ गया था, क्यों कि अपने बचपन के दिनों में वह अपनी अंग्रेज़ धाय को 'मीसू' कह कर बुलाया करती थी।

जब से मैं आया था, तभी से गेनिआ मेरी तरफ़ बड़े कौतूहल के साथ देख रही थी। जब बातचीत का विषय बिखर कर जुदा-जुदा होगया और लीडा बेलो के सामने अपनी स्कीमों का विस्तार से वर्णन करने लगी, तब मैं वहां से उठ खड़ा हुआ और दूसरी टेबल के नज़दीक जाकर बैठ गया। इस टेबल पर परिवार का

एलबम पड़ा हुआ था। मैं उस के पन्ने पलट-पलट कर देखने लगा। इसी समय गेनिआ भी आकर मेरे पास खड़ी होगई और बड़े उत्साह के साथ मुझे उन चित्रों का परिचय देने लगी—"ये हमारे चचा हैं, बड़े ही अच्छे हैं !...ये हमारे पुरोहित हैं !" क्रमशः मग्न हो कर, बिलकुल अबोधभाव से, वह मेरे साथ अपना कन्धा सटा कर खड़ी हो गई। उस की कोमल और अपरिपक्व छाती, उस के पतले कन्धे, उस का बहुत अधिक सुन्दर गला—मानवीय किशोरी के ये सब अत्यधिक सुन्दर और निष्पाप अंग मेरे बिलकुल समीप होकर धड़क रहे थे।

हम दोनों ने सारा दिन वहीं पर बिताया। बातचीत के बाद हम लोग टैनिस खेले, बाग़ की सैर की, चाय पी, और रात का भोजन भी वहीं पर किया। इस कुलीन परिवार के साथ सारा दिन बिताने में मुझे बहुत अधिक आनन्द आया। इस घर का सभी कुछ मानों सजीव और पवित्र था। लीडा और गेनिआ की उपस्थिति ने यहां का सभी कुछ बहुत अधिक सुन्दर और प्रसन्नतापूर्ण बना दिया था।

रात के भोजन के समय लीडा बेलो के साथ ज़िलाबोर्ड, वैलगिन और स्कूलों के पुस्तकालयों के सम्बन्ध में बातचीत करती रही। उस की आवाज़ से उस के हृदय की लगन साफ़ साफ़ ज़ाहिर होती थी। वह एक शक्तिशाली, प्रतिभापूर्ण और दृढ़ स्वभाव की लड़की थी। उस की आवाज़ ऊँची थी, ख़ासतौर से बहस करते हुए तो उस का स्वर आवश्यकता से भी अधिक ऊँचा हो जाता

था। इस का कारण सम्भवतः यही था कि वह एक स्कूल में अध्यापिका का कार्य करती थी। दूसरी ओर वेलो एक मन्तकी, थका देने वाला और चपटे स्वभाव का आदमी था। बातचीत में उस का सदैव यह प्रयत्न रहता था कि दूसरे व्यक्ति पर वह अपनी बुद्धिमत्ता का सिक्का बैठा दे, हालांकि होता इस से ठीक उलटा था। भोजन करते हुए, अपनी युक्तियों के प्रवाह में अचानक जोश में आकर उस ने अपना हाथ हिलाया और इस हस्तनिक्षेप से दूसरी मेज़ पर रक्खा हुआ चटनी वाला शीशे का बड़ा बरतन नीचे गिर कर फूट गया। फर्श पर चटनी की धारा-सी वह चली। परन्तु इस बात की तरफ़ मेरे अतिरिक्त किसी ने ध्यान तक भी नहीं दिया। यहां तक कि बालिका गेनिआ ने भी उस तरफ़ आंख उठा कर देखा तक भी नहीं।

भोजन के बाद हम दोनों अपने निवासस्थानों की तरफ़ लौट चले। राह में वेलो ने कहा—"भोजन के समय चटनी का बरतन न गिराने में उतनी कुलीनता नहीं है, जितनी गिर जाने पर उस तरफ़ ध्यान न देने में है। सचमुच यह एक बहुत ही सभ्य और उन्नत परिवार है। मैं ऐसे कुलीन समाज से बहुत दूर जा पड़ा हूँ। यह बड़ा शोक है कि मैं ऐसे समाज से अलग हो गया हूँ। यह सब काम की ही बदौलत है। जब देखो, तब काम ही काम!"—इतना कह कर वेलो ने एक गहरा श्वास लिया।

वेलो अब अपने काम के सम्बन्ध की बातें मुझे सुनाने लगा। उस की बातों में मेरा जी बिलकुल नहीं लग रहा था। मैं मन ही

मन सोच रहा था कि यह कितना मोटा और नीरस आदमी है। 'र' का उच्चारण करते हुए वह कुछ अटकता था। इस अक्षर के उच्चारण में उसे उतना ही बल-प्रयोग करना पड़ता था, जितना कि शायद उसे अपने काम में करना पड़ता होगा। वह स्वभाव ही से सुस्त, दीर्घसूत्री और पिछड़ा हुआ आदमी था। मैं ने एक बार उसे एक चिट्ठी डाक में डालने के लिए दी थी, वह चिट्ठी कई सप्ताहों तक उस की जेब में ही पड़ी रही, तभी से मैं यह समझ गया था कि यह आदमी कामकाज में कितना होशिआर है।

अपनी इस थकाने वाली बात के अन्त में उस ने कहा—"अफ़सोस इतना ही है कि हम काम तो इस तरह जी तोड़ कर करते हैं, परन्तु इस पर भी कोई हम से सहानुभूति नहीं करता!"

(२)

एक दिन सैर से लौटते हुए मैं लीडा के बाग़ की नीची-सी चारदीवारी पर बैठ गया। निरन्तर बिलकुल खाली रहने के कारण मेरा दिल बड़ा उदास था। मेरी मनोवृत्ति उस समय बहुत निराशापूर्ण बनी हुई थी। अपने दिल पर मैं भारी बोझ-सा अनुभव कर रहा था। वृक्षों की घनी छाया में, इस दीवार पर बैठ कर मैं अपने जीवन पर विचार करने लगा—"ओह! मेरा जीवन कितना व्यर्थ और भारी है!" जी में आया कि अपनी छाती फाड़ कर दिल का बोझ हलका कर लूँ। इसी समय पास के मोड़ से कपड़ों की सरसराहट और बातचीत की आवाज़ सुनाई देने लगी। मैं पहिचान गया कि यह लीडा की आवाज़ है। मुझे मालूम था कि

पाठशाला में लड़कियों को पढ़ाने के बाद लीडा गरीब मरीज़ों का इलाज करने के लिए, अपनी दवाईयों का छोटा-सा बक्स खुद अपनी पीठ पर लाद कर, चुस्त पोशाक में, और कभी कभी तो सिर पर टोपी तक रक्खे बिना ही, गांवों में चली जाती है। इस समय वह यही काम कर के अपनी एक सहेली के साथ लौट रही थी, और ज़िला-बोर्ड, स्कूलों के प्रबन्ध आदि विषयों पर अपने विचार प्रकट करती आ रही थी। यह पतले और सुन्दर मुँह वाली, सुघड़ और सदैव-सतर्क नारी इस समय मुझे अपने से बहुत ऊपर की चीज़ जान पड़ी। उस ने मुझे नमस्कार किया और इस के बाद वह कुछ देर तक उसी स्थान पर रुक अपनी सहेली से बातचीत करती रही। अन्त में उस ने मेरी तरफ़ देख कर इतना ही कहा—"ये मामले आप के लिए तो बिलकुल नीरस होंगे!"

इस के बाद वह अपने घर की तरफ़ चली गई।

धीरे-धीरे मैं यह अनुभव करने लगा था कि लीडा मुझे पसन्द नहीं करती। मेरे प्रति उस की नापसन्दगी का कारण यही था कि मैं चित्रकार था और लीडा की निगाह में चित्रकला एक बहुत नीचे दर्जे की चीज़ थी, क्यों कि उस का किसानों के दुख दूर करने से कोई सम्बन्ध नहीं। किसानों की समस्याओं के सम्बन्ध में मैं स्वभाव ही से उदासीन था, इस लिए लीडा मुझे निकम्मा समझती थी। मुझे याद है कि एक बार मैं सुदूर मिसर देश की सैर करने गया था। वहां एक झील के किनारे टहलते हुए मेरी निगाह एक सुन्दर-सी मिस्री लड़की पर पड़ी। वह घोड़े पर सवार

थी। यह लड़की सिगरेट बेचने का काम करती थी। मैं उस के निकट गया और मैं ने उस से बड़ी भद्रता से कहा—"क्या आप मुझे सिगरट का एक केस बेचेंगी?" उस लड़की ने मेरे यूरोपियन चेहरे तथा हैट की तरफ़ बड़ी घृणा के साथ देखा और मेरी बात का कोई जवाब दिए बिना ही वह अपना घोड़ा दौड़ा कर भाग खड़ी हुई।—ठीक उस लड़की के समान लीडा भी मुझ से घृणा करती थी, जैसे मैं कोई विदेशी होऊँ। मेरे प्रति अपनी यह हार्दिक घृणा लीडा ने कभी प्रकाशित तो नहीं की, तथापि मैं उसे खूब अच्छी तरह अनुभव करता था।

लीडा जब इस तरह मुझ पर ताना कस कर चली गई तो मेरे दिल में उस के प्रति कुछ क्रोध के-से भाव आने लगे। मैं ने मन ही मन कहा—"दवाइयों का ज्ञान प्राप्त किए बिना इस तरह बेचारे किसानों का इलाज शुरू कर देना कोई अच्छी बात तो नहीं है। फिर, जिस व्यक्ति के पास छत्तीस सौ बीघा ज़मीन हो, उस के लिए इस तरह परोपकारी बन जाना होना भी तो बड़ा आसान है।"

मगर लीडा की छोटी बहिन गेनिआ मेरे ही स्वभाव की थी। वह किसी तरह के झंझट में पड़ना पसन्द नहीं करती थी। मेरी तरह वह भी दिन भर निठल्ली रहती थी। प्रातःकाल उठ कर नहाने-धोने और कलेवा करने के बाद वह अपने बाग़ में एक आराम कुर्सी पर बैठ जाती थी और कोई किताब लेकर पढ़ने लगती थी। यह आरामकुर्सी इतनी बड़ी थी कि उस पर बैठ कर

गेनिश्रा के पैर ज़मीन तक भी नहीं पहुँचते थे। कभी वह लता-कुञ्जों के अन्दर जा छिपती और कभी घने नींबुओं की कतारों के बीच वाली पतली-सी राह पर सैर करने लगती। मेरे ही समान उसे पढ़ने का बड़ा शौक था। इस बात के चिन्ह उस की आंखों से भी झलकते थे। उस के चेहरे का रंग पीला पड़ गया था। जब कभी मैं उन के मकान पर जाता तो मुझे देख कर गेनिश्रा ज़रा-सा शर्माती और फिर थोड़ा-सा मुसकराकर मेरे पास चली आती। तब नितान्त अबोध-भाव से वह दिन-भर की छोटी-छोटी घटनाएँ मुझे सुनाने लगती। जैसे, 'आज अमुक नौकर ने अमुक चीज़ तोड़ डाली; एक आदमी आज इतनी मोटी मछली लाया।' सायंकाल के समय मैं प्रायः गेनिश्रा के साथ ही सैर के लिए जाया करता था। झील के किनारे पहुँच कर हम दोनों चेरियां चुना करते थे। गेनिश्रा कहती थी कि मैं इन का मुरब्बा डालूँगी और आप को भी खिलाऊँगी। कभी-कभी हम दोनों नाव पर सवार होकर झील की सैर भी किया करते थे। जब वह चप्पू चलाने बैठती तो उस की पतली-पतली बाहुएँ बड़ी सुन्दर प्रतीत होती थीं। कभी-कभी मैं झील के किनारे बैठ कर कोई चित्र बनाता और गेनिश्रा मेरे नज़दीक बैठ कर बड़े मनोयोग के साथ उसे देखा करती।

जुलाई मास के अन्तिम रविवार की बात है। मैं प्रातःकाल के नौ बजे के लगभग गेनिश्रा के मकान पर गया। घर में उस समय कोई नहीं था। मैं अहाते के बाग़ में जाकर धीरे-धीरे टहलने लगा। यहां इस मौसम में रोज़ नई खुम्बियां निकल आती

थीं और मैं गेनिआ के साथ उन्हें चुना करता था। हम दोनों में प्रतिद्वन्दिता रहती थी कि कौन अधिक खुम्बियां चुनता है। आज, इस समय मैं अकेले ही इस काम में लग गया। कुछ देर के बाद मैं ने देखा कि गेनिआ अपनी माता के साथ छुट्टी के दिन वाली हलकी पोशाक में वाहर से चली आरही है। मैं समझ गया कि ये लोग चर्च से वापस लौट रहे हैं।

मुझ जैसे निठल्ले आदमियों के लिए, जो अपने निठल्लेपन के पक्ष में दलीलें ढूढ़ते रहते हैं, पहाड़ों पर गरमियों के रविवार के प्रातःकाल की बड़ी कीमत है; जब कि सम्पन्न घरों के लोग अपने आंगन के बाग़ में बैठ कर मज़े में खाते-पीते हैं और गप-शप करते हैं। बाग़ की हरी-हरी घास पर इस समय भी मोतियों के समान ओस के बिंदू पड़े होते हैं और सूर्य की नरम किरणों द्वारा प्रसन्नता में भर कर वे चमक रहे होते हैं। पास ही से फूलों की भीनी-भीनी सुगन्ध आरही होती है और घर के सब व्यक्ति, विशेष कर युवक और युवतियां अपनी अच्छी से अच्छी पोशाकें पहिन कर, खूब बनाव-सिंगार कर के दिन के उजाले में बैठ जाते हैं। सब के मुँह पर मुसकराहट और प्रसन्नता दिखाई देती है, जैसे उन्हें पता ही न हो कि दुनियां में दुख की भी कोई सत्ता है! ये सब स्वस्थ, सुन्दर और सम्पन्न व्यक्ति मजे में बैठ कर स्वादिष्ट पदार्थ खाते हुए दुनियां भर की समालोचना करते हैं। उन के सामने छुट्टी का लम्बा दिन पड़ा होता है; —'अभी तो सिर्फ़ प्रातःकाल ही है।' ऐसे दिन मेरी तो यह

इच्छा होती है कि सारा जीवन इसी तरह निकल जाए! उस रविवार के दिन भी मैं बाग़ में इसी मधुर इच्छा के साथ धीरे-धीरे टहल रहा था।

थोड़ी ही देर बाद गेनिश्रा एक टोकरी हाथ में लेकर घर से बाहर निकली और मेरे पास चली आई। उस के चेहरे से प्रतीत होता था कि जैसे उसे मेरे यहां रहने का पहले ही से पूर्ण विश्वास था। अब हम दोनों मिल कर खुम्बियां जमा करने लगे। बीच-बीच में वह मेरी तरफ़ अपना मुँह बढ़ा कर बातें भी करती जाती थी।

इसी बीच में उस ने कहा—"गांव में कल एक बड़ा चमत्कार होगया है। वहां की लंगड़ी पेलजित्रा पूरे एक साल से बीमार थी, कोई डाक्टर उस का इलाज नहीं कर सका था। मगर कल एक बूढ़ी जादूगरनी उस के पास आई और उस ने पेलजिश्रा के कानों में कोई मन्त्र पढ़ा, जिसे सुनते ही उस की बीमारी दूर हो गई!"

मैं ने कहा—"यह कोई बड़ी बात नहीं। केवल मरीज़ों और बूढ़ों पर ही चमत्कार नहीं हुआ करते। क्या तन्दुरुस्ती स्वयं ही एक चमत्कार नहीं है? और ज़िन्दगी तो एक सब से बड़ा चमत्कार है! जो बात मनुष्य की समझ से परे होती है, वह उसे 'चमत्कार' कहने लगता है।"

"जो चीज़ समझ न आए, उस से क्या आप को डर नहीं लगता?"

"नहीं। मुझे जो बात समझ नहीं आती, उसे समझने की कोशिश करता हूँ, उसे देख कर हतबुद्धि नहीं बन जाता। मनुष्य को चाहिए वह किसी से न डरे। शेर, चीते उस के वश हो जाते हैं; तारे, नक्षत्र उसे समझ आ जाते हैं। मनुष्य के लिए इस प्रकृति का कुछ भी अगम्य नहीं है, वह सब से बड़ा है। जिस में यह बात नहीं, वह मनुष्य ही नहीं, वह चूहे के समान है, जो हर एक चीज़ से डर जाता है।"

गेनिआ मुझ पर श्रद्धा रखती थी। वह मुझे एक बहुत बड़ा विद्वान समझती थी। वह समझती थी कि प्रकृति में जो कुछ 'नित्य' और 'सुन्दर' है—उसे मैं ने पा लिया है। मेरे द्वारा वह भी इस 'नित्य' और 'सुन्दर' के राज्य में प्रवेश करना चाहती थी। वह मुझ से ईश्वर, प्रकृति आदि के सम्बन्ध में अनेक भोले-भाले और निष्पाप प्रश्न किया करती थी।

काफ़ी देर के बाद हम दोनों बाग़ से घर की तरफ़ चल दिए। रास्ते में गेनिआ अचानक खड़ी होगई और मुझसे कहने लगी—"हमारी लीडा एक बड़ी असाधारण लड़की है—ठीक है न? मैं उसे बड़ा प्यार करती हूँ। वह कहे तो उस के लिए मैं अपना जीवन तक दे सकती हूँ। मगर बतलाइए"—उस अबोध-सी बालिका ने बड़े स्नेह के साथ अचानक मेरा हाथ पकड़ कर कहा—"बतलाइए, आप उस से बहस क्यों करते रहते हैं? जीजी से बात करते हुए आप जोश में क्यों आजाते हैं?"

"क्यों कि उस की बातें ग़लत होती हैं!"

बेचारी गेनिआ की आंखों में आंसु भर आए; अपनी बहिन के सम्बन्ध में मेरी यह धारणा सुन कर उसे मर्मान्तिक कष्ट हुआ। उस ने धीरे से कहा—"कुछ समझ में नहीं आता!"

बंगले में पहुँचते ही मेरी निगाह लीडा पर पड़ी। वह बरामदे के पास ही धूप में खड़ी थी। मालूम होता है, वह अभी-अभी कहीं बाहर से आरही थी। उस के एक हाथ में एक चाबुक था। इस समय यह सुन्दर और दुबली-सी कुमारी बालिका ऊँची आवाज़ में अपने नौकरों को कोई हुक्म देते हुए बड़ी ओजस्विनी प्रतीत हो रही थी। नौकरों को आदेश देकर उस ने गांव के दो-तीन मरीज़ों को देखा; इस के बाद एक भी क्षण ठहरे बिना घर के अन्दर जाकर उस ने अनेक खिड़कियां खोल डालीं और उस के बाद वह खट-खट करती हुई शीघ्रता से सीढ़ियों पर चढ़ गई। इस के बाद वह बहुत देर तक दिखाई नहीं दी, यहां तक कि भोजन में भी शामिल नहीं हुई।—उस दिन की एक-एक, छोटी-से छोटी बात भी मुझे इस तरह से याद है, जैसे वह कल ही की बात हो।

भोजन के बाद मैं और गेनिआ बरामदे में आकर आराम-कुर्सियों पर लेट गए। इस समय सब तरफ़ सन्नाटा था। गरमी काफ़ी थी। हम दोनों को नींद भी नहीं आरही थी, और न कोई काम ही था। मगर फिर भी दोनों चुपचाप ही पड़े रहे। काफ़ी देर के बाद गेनिआ की मां अपने कमरे से बाहर निकली। उस की आंखों से साफ़ प्रतीत होता था कि वह सोकर अभी-अभी उठी है। उस ने अपने हाथ में एक पंखा पकड़ा हुआ था। अपनी माता

को देखते ही गेनिश्रा खुशी से उठ खड़ी हुई श्रौर मां का हाथ श्रपने गालों पर सटा कर बोली—"श्रोह, श्रम्मा! तुम दिन को क्यों सोया करती हो?

गेनिश्रा का श्रपनी मां के साथ ऐसा ही सम्बन्ध था। दोनों एक दूसरे को बहुत श्रधिक चाहते थे। माता श्रौर पुत्री होते हुए भी दोनों का व्यवहार दो घनिष्ट सहेलियों के समान ही था। दोनों एक दूसरे से कोई बात नहीं छिपाते थे। गेनिश्रा के हृदय में यद्यपि श्रपनी माता के प्रति श्रत्यधिक श्रादर के भाव थे, तथापि वह श्रपनी माता से जो कुछ चाहे, कह सकती थी। दोनों एक दूसरे के बिना बहुत देर तक रह ही नहीं सकते थे। प्रतिदिन श्राहार-गृह में ईश्वर-प्रार्थना के समय, सैर को जाते हुए श्रौर शयनागार में—सभी स्थानों पर वे एक दूसरे के साथ रहते थे।

माता के हृदय में लीडा के लिए भी गहरे प्रेम के भाव थे, मगर फिर भी वह बात नहीं थी। लीडा एक बहुत ही गम्भीर स्वभाव की लड़की थी। वह सदैव गम्भीर श्रौर 'कामकाज' की बातों में लगी रहती थी। इस लिए माता भी उस की किसी बात का कभी विरोध नहीं करती थी, जैसे वह उस से भय खाती हो।

मेरे साथ इस परिवार का सम्बन्ध दिन-ब-दिन घनिष्ट होता चला जा रहा था। मगर इस कुलीन परिवार के तीनों व्यक्तियों का मुझ से भिन्न-भिन्न प्रकार का सम्बन्ध था। दोनों लड़कियों की माता पावलोवना वयोवृद्ध थी। वह दुनिया देखे हुए थी। मगर उस के व्यवहार में श्राधे से श्रधिक भाग शिष्टाचार का ही था।

बड़ी लड़की लीडा मुझे अपने दिल से एक बिलकुल निकम्मा आदमी समझती थी। उस का .ख्याल था कि मेरा संसार में जन्म लेना ही व्यर्थ गया है। यद्यपि व्यवहार में वह मेरे साथ कभी असम्मान के साथ पेश नहीं आई, तथापि उस के हृदय में मेरे प्रति जो उपेक्षा के-से भाव थे, वे मुझे सदैव बड़ी स्पष्टता के साथ अनुभव होते रहते थे। छोटी लड़की गेनिआ से मेरा जो सम्बन्ध था, उस से अधिक मधुर सम्बन्ध की कल्पना भी दुष्कर है। वह मुझे बड़े सम्मान के साथ देखती थी, मुझ पर श्रद्धा करती थी। अगर मैं कभी उस घर में लगातार दो-तीन दिनों तक नहीं जा सकता था तो इस बात से उसे सचमुच क्लेश पहुँचता था। मुझे अपने घर की छोटी-छोटी बातें सुनाने में उसे जो आनन्द आता था, उस आनन्द का श्रेणी-विभाग किया ही नहीं जासकता। मेरे साथ सैर करने में, मेरी होड़ में फूल चुनने में और मुझे चित्र बनाते हुए देखने में उसे अत्यधिक सुख अनुभव होता था। गेनिआ से मिल कर मुझे भी बहुत अधिक प्रसन्नता होती थी। मगर हमारे इस सम्बन्ध में परिपक्व प्रेम का एक ज़र्रा तक भी नहीं था। सच बात तो यह है कि गेनिआ अभी तक इतनी बालिका और इतनी अबोध थी कि परिपक्व प्रेम का प्रश्न ही नहीं उठ सकता था।

मैं इधर-उधर की बहुत-सी बातें कह गया। .खैर; यह भी कुछ बुरा नहीं हुआ। अच्छा; तो पात्रलोवना भी हम दोनों के पास ही बैठ गई। इस समय तक दोपहर ढलनी शुरू हो चुकी थी और पश्चिम दिशा से बादलों की एक फौज़ आकर आकाश-मण्डल में

क्रमशः अपना प्रभुत्व बढ़ाती चली जा रही थी। पावलोवना की मौजूदगी में हम लोगों में पुनः बातचीत शुरू हुई। लीडा के सम्बन्ध में ही बात चल पड़ी। पावलोवना ने कहा—"लीडा एक असाधारण लड़की है। उस के समान दूसरी लड़की खोजने पर भी शायद ही मिले। मैं तो अब उस से कुछ-कुछ तंग आने लगी हूँ। कभी उसे स्कूल की पड़ी रहती है, कभी हस्पताल की और कभी किताबों की। ये बातें तो अच्छी हैं; मगर इस का यह मतलब तो नहीं कि इन की फ़िक्र में आदमी अपने को ही भुला दे। अब वह तेईस बरस की होगई। उसे अब अपने भविष्य की बात भी सोचनी चाहिए। अब उस का विवाह अवश्य होजाना चाहिए।"

गेनिआ ने अपना पीला चेहरा उठाया और माता की तरफ़ देख कर, ऐसे स्वर में, जैसे वह अपने ही से कह रही हो, कहा—"अम्मा! सभी कुछ ईश्वर के हाथ में है!"

शाम को बेलो भी वहाँ आगया। उस ने आज विशेष सजधज की पोशाक पहिनी हुई थी। कुछ ही देर तक बातचीत करने के बाद उस ने मुझ से प्रस्ताव किया—"चलो, ज़रा सैर कर आएँ।"

मैं इन्कार नहीं कर सका। मेरा आज का सारा दिन बड़े आनन्द में कटा था। इस वक्त मेरा ख़याल था कि यदि सैर को चलेंगे तो गेनिआ और उस की माता भी साथ ही चलेंगीं। मगर जब हम लोग चलने लगे तो उन का इरादा नहीं जान पड़ा। मेरे दिल में यह आया भी कि गेनिआ को साथ चलने के लिए कहूँ; मगर कह नहीं सका। बेलो के साथ मैं चल दिया। गेनिआ बरामदे

की कुर्सी पर ही बैठी रही। इस समय उस का साथ छोड़ते हुए मुझे आज की सैर में कुछ सूनापन-सा अनुभव हो रहा था।

राह में मैं ने वेलो से पूछा "मुझे बताओ, तुम इतनी नीरस और शुष्क ज़िन्दगी क्यों बसर कर रहे हो? मेरी बात जुदा है, क्यों कि मैं तो एक चित्रकार हूँ। मैं अधिक पैसों वाला भी नहीं हूँ, मेरा काम ही सदैव इधर-उधर घूमते रहना है। मगर तुम तो स्वस्थ हो, सुन्दर हो, स्थिर हो, और अच्छे ज़मींदार हो। तुम ऐसा रस-रहित जीवन क्यों बिता रहे हो? तुम जीवन को मधुर बनाने की ओर ध्यान क्यों नहीं देते? किसी कुमारी का, उदाहरण के लिए लीडा या गेनिआ का, प्रेम जीतने का प्रयत्न क्यों नहीं करते?"

वेलो ने जवाब दिया—"मेरा एक और स्त्री से प्रेम है।"

मैं समझ गया। उस का मतलब अपनी पड़ोसिन ल्यूबा से था। इस शान्दार, सुगठित शरीर और चौड़े पैरों वाली महिला को वेलो के बाग़ में टहलते हुए मैं ने कई बार देखा था। वह ठेठ रूसी पोशाक में रहती थी। उस के पास बड़ी सम्पत्ति थी। कम से कम एक नौकर हर समय उसके पीछे पीछे रहता था। यह एक विधवा थी और उम्र में वेलो से दस वर्ष बड़ी थी। जब से वेलो और उसमें घनिष्टता शुरू हुई थी, तब से वह उस पर कड़ी निगाह रखती थी और क्रमशः नौबत यहां तक पहुँच गई थी कि वेलो उस से अनुमति लिए बिना कहीं आ-जा तक भी नहीं सकता था। मुझे ये सब बातें तो मालूम थीं, मगर फिर भी मैं ने

इस बात की कभी कल्पना तक भी नहीं की थी कि इन दोनों का विवाह भी हो सकता है।

सैर के बाद बेलो भी मेरे साथ ही साथ मेरे घर पर आया। पावलोवना परिवार की तरफ़ आज मैं इतना अधिक आकृष्ट था कि अभी तक मैं उन्हीं लोगों के सम्बन्ध में बातचीत कर रहा था।

मैं ने बेलो से कहा—"लीडा ज़रूर किसी कौन्सिल के मेम्बर से विवाह करेगी। उसे तो सदैव स्कूलों और हस्पतालों की ही पड़ी रहती है। वह कितनी आकर्षक है! उसे पाने के लिए कौन्सिल की मेम्बरी तो क्या लोहे के जूते तक भी पहने जा सकते हैं। और बालिका गेनिआ? वह कितनी प्यारी, कितनी भोली और कितनी मीठी है!"

बेलो बड़ा अनमना-सा होकर बैठा था। वह मेरी बात मानों सुन ही नहीं रहा था। क्रमशः यह देख कर मुझे बड़ी खिज उत्पन्न होने लगी कि यह भला आदमी न तो उठने का नाम लेता है और न मेरी बात में दिलचस्पी ही लेता है। सैंकड़ों मीलों का उजाड़, नीरस, भयंकर चट्टानों से भरा रेगिस्तान भी मनुष्य को उतना नहीं थकाता जितना कि ज़बरदस्ती आकर गले मढ़ गया कोई पाहुना—जो न तो उठने का नाम लेता है और न कोई काम ही करने देता है।

कुछ देर बाद बेलो ने, इस तरह से जैसे वह मुझ से बहस करना चाहता हो, आशावाद और निराशावाद के सम्बन्ध में अपने बेसिर-पैर के मन्तव्य सुनाने शुरू कर दिए। मैं ने खिज कर

कहा—"यह आशा या निराशा का सवाल नहीं है। वदकिस्मती तो यह है कि सौ में से निन्यानवे आदमियों में मौका पहिचाने की अक़्ल ही नहीं होती!"

वेलो चिढ़ गया। उसे निश्चय था कि मैं उसे एक प्रतिशत आदमियों में नहीं गिनता। वह उठ कर चला गया।

(३)

एक दिन जब मैं पावलोना-परिवार में गया, तो मैं ने देखा कि लीडा बड़े उत्साह के साथ अपनी माता को कोई बात सुना रही है। उस ने मेरी ओर ध्यान ही नहीं दिया। सिर्फ़ मामूली-सा नमस्कार कर के वह पुनः अपनी बात में लग गई। पावलोवना भी सम्भवतः लीडा के भय से ही मेरी ओर ध्यान नहीं दे सकी। गेनिआ वहां थी ही नहीं। नतीजा यह हुआ कि कुछ उदास-सा होकर मैं एक कुर्सी पर चुपचाप बैठ रहा।

लीडा अपनी माता से कह रही थी—"मैं प्रिन्स से मिलने गई थी। उस ने मेरे द्वारा आप को प्रणाम भेजा है।...उस ने मुझे विश्वास दिलाया है कि साथ के गांव में हस्पताल खोलने के लिए वह कौन्सिल में प्रस्ताव पेश करेगा। मगर उसे इस प्रस्ताव के पास होने की आशा बहुत कम है।"

इस के बाद लीडा ने अचानक मेरी तरफ़ घूम कर कहा—"माफ़ कीजिएगा। आप को तो ये बातें बिलकुल नीरस लगती होंगी।"

मुझे यह सुन कर क्लेश पहुँचा।

मैं ने कहा—"मुझे नीरस क्यों लगती होंगी। आप मेरी राय कभी जानना ही नहीं चाहतीं, मगर मैं आप को विश्वास दिलाता हूँ कि इन बातों के सम्बन्ध में मुझे भी बड़ी दिलचस्पी रहती है।"

"अच्छा ?"

"जी हां। मेरी राय में प्रिन्स का हस्पताल खोलने वाला प्रस्ताव बिलकुल अनावश्यक है।"

लीडा उत्तेजित हो गई। ताने की मुसकराहट हँस कर, जैसे वह मुझे बिलकुल बेवकूफ़ समझती हो, उस ने कहा—"तो ज़रूरी क्या है ? चित्र बनाना ?"

"नहीं, चित्र बनाना भी नहीं।"

लीडा चुप होगई। वह बहुत उत्तेजित हो गई थी। सभ्यता के ख़्याल से उस ने चुप रहने में ही भलाई समझी। सामने टेबल पर आज का अख़बार पड़ा था, लीडा ने उसे उठा कर देखना शुरू कर दिया। कुछ क्षणों के बाद उस ने बड़े संयम के साथ कहा—"उस गांव में पिछले महीने अन्ना बच्चा जनते हुए मर गई। अगर वहां हस्पताल होता तो वह ज़रूर बच जाती। मेरा ख़्याल है कि यह बात किसी चित्रकार को भी अच्छी तरह समझ आ सकती है।"

इस कड़वे ताने की परवाह किए बिना मैं ने कहा—"जी हां, चित्रकार भी इसे खूब अच्छी तरह समझ सकता है। मेरी राय में ये स्कूल, ये पुस्तकालय, ये सेवा-समितियां, ये हस्पताल—सभी जनता के वर्तमान बन्धनों को और भी अधिक मज़बूत बनाने

का काम करते हैं। बेचारे किसान भारी ज़ंजीरों में बँधे हुए हैं, आप उन्हें तो तोड़ते नहीं, अपितु उन्हें और भी अधिक भारी बनाते जारहे हैं। इस सम्बन्ध में मेरा यही ख्याल है।"

लीडा मुसकराई, इस तरह से जैसे उस ने कोई बड़ी बेवकूफ़ी की बात सुन ली हो। मगर मैं कहता ही चला गया—"अन्ना बच्चा जनते हुए मर गई, यह बात उतनी महत्वपूर्ण नहीं, जितना यह बात कि ये सैकड़ों हज़ारों ग़रीब अन्नाएँ बीमार क्यों पड़ जाती हैं। इन्हें अपना पेट भरने के लिए अपनी ताक़त से ज्यादः काम करना पड़ता है और प्रसूति के दिनों में भी ये आराम नहीं कर सकतीं। इतनी मेहनत करने पर भी उन्हें भर-पेट भोजन तक नसीब नहीं होता। वे न दूध पी सकती हैं, न मक्खन खा सकती हैं। नतीजा यह होता है कि वे बचपन के बाद बूढ़ी होने लगती हैं और गर्भावस्था की स्वाभाविक प्रक्रिया तक को नहीं सहार सकतीं। उन की सारी ज़िन्दगी गन्दे मकानों, बदबू-दार गलियों और फटे चीथड़ों में गुज़र जाती है। इन हज़ारों अन्नाओं के लाखों बच्चे होते हैं, और वे सब बचपन ही से यही जिन्दगी बसर करने को लाचार होते हैं। ओह, हम लोगों ने कर क्या रक्खा है! हमने करोड़ों मनुष्यों को, जो हमारे ही समान हैं, पशुओं से भी बदतर बना रक्खा है। उन्हें रोटी के एक-एक टुकड़े के लिए तरसना पड़ता है। इन करोड़ों ग़रीबों के आत्मिक विकास को हम कुलीनों और अमीरों के भय ने रोक रक्खा है, वे एक क्षण के लिए भी मनुष्य नहीं बन पाते, अपनी आत्मा के सम्बन्ध में

विचार नहीं कर सकते। सरदी, भूख, जंगली जानवरों का डर, कड़ी मेहनत, बरफ़, लू—इन सब ने इन मनुष्यों को, जिन का एकमात्र अपराध यही है कि वे गरीब हैं, मनुष्य होते हुए भी असभ्य पशु बना रक्खा है। आप उन की इन ज़ंजीरों को तो नहीं तोड़ते, परन्तु हस्पताल और पाठशालाएँ खोल कर ही उन का उद्धार कर डालना चाहते हैं। ये चीज़ें तो उन्हें और भी कुचल देंगी। उन्हें तुम नई नई इल्लतें तो सिखा दोगे, मगर उन इल्लतों को पूरा करने के साधन उन के पास नहीं होंगे, इस लिए उन का कष्ट और भी अधिक बढ़ जाएगा। तुम्हारी ज़िला-कौंसिल एक हस्पताल खोल कर एक सभ्य आदमी के लिए नई नौकरी ईज़ाद कर लेगी, एक पाठशाला खोल कर पांच-छः उस्तादों के लिए स्थान बना देगी, मगर इन किसानों का क्या भला होगा! उन्हें तो इन हस्पतालों और पाठशालाओं का .खर्च पूरा करने के लिए और भी अधिक मेहनत करनी पड़ेगी।"

लीडा ने खिज कर कहा—"मैं आप से बहस नहीं करना चाहती। ये सब बातें मैं ने पहले भी सुन रक्खी हैं। इन का यह मतलब नहीं कि हम कुछ भी न करें। यह ठीक है कि इन बातों के द्वारा हम मनुष्य-मात्र के सब कष्ट दूर नहीं कर सकते। मगर कुछ करते तो हैं और जो कुछ करते हैं, वह बहुत ठीक और बहुत अच्छा करते हैं। मनुष्य का सब से बड़ा कर्त्तव्य यह है कि वह अपने पड़ोसियों की सेवा करे। हम भी यही करते हैं। आप इसे पसन्द नहीं करते तो न करें। हम ने सब को खुश करने का

कोई ज़िम्मा भी तो नहीं ले रक्खा।"

लीडा की माता ने कहा—"बिलकुल ठीक! मेरी लड़की बिलकुक ठीक कह रही है।"

वास्तव में वह अपनी लड़की से करीब-करीब डरती-सी थी और उस का किसी भी बात का विरोध नहीं कर सकती थी, इसी लिए लीडा की बातों को समझे तक बिना वह 'बिलकुल ठीक; बिलकुल ठीक' कह दिया करती थी।

मैं ने बड़ी गम्भीरता से कहा—"किसानों को अक्षराभ्यास कराने या बाइबल के वाक्य घुटवाने से अथवा रद्दी-सी दवाइयों से उन का इलाज करवाने से उन की मृत्यु-संख्या नहीं घट सकती। जिस तरह रात के समय एक खिड़की के प्रकाश से सारे बाग़ में प्रकाश नहीं फैल सकता। ये चीज़ें तो सिर्फ़ उन की आदतें बिगाड़ने का ही काम करेंगी।"

लीडा ने बहुत क्षुब्ध होकर कहा—"आह! आप कैसी बातें करते हैं। इस का यह मतलब तो नहीं कि कुछ भी किया ही न जाय!"

मैं ने कहा—"सब से अधिक आवश्यक बात यह है कि इन गरीबों को कड़ी मेहनत से छुटकारा दिलाया जाय; इन की गरीबी दूर की जाय। इस के द्वारा इन का बोझ हलका हो जाएगा, उन्हें सांस लेने का समय मिल सकेगा और उन्हें खेतों में, भट्टियों पर अथवा कारखानों में ही सारा जीवन बरबाद कर देने की ज़रूरत नहीं रहेगी, और तब ये लोग भी इतने सभ्य और शिक्षित बन सकेंगे

कि इन से बातचीत करने में आप जैसे शिक्षित लोग अपमान अनुभव न करें। एक बार उन के कन्धे पर से यह भारी और पाशविक जुआ उतार कर देखिए तो सही—आप को समझ आजाएगा कि ये स्कूल और हस्पताल खोलना मनुष्य-समाज की वर्तमान बीमारी का कितना उथला इलाज था।"

लीडा को मेरी यह बात भी बिलकुल हास्यास्पद जान पड़ी। उस ने घृणा की हँसी हँस कर कहा—"वाह, खूब! आप कहते हैं, इन से काम न लिया जाय! तो फिर काम करेगा कौन? क्या यह कभी सम्भव है?"

"ज़रूर! अगर आप लोग भी उनके भार में अपना कन्धा जुटाना पसन्द करें तो उन का भार खुद-ब-खुद ही हलका हो जायगा। अगर मनुष्य जाति के सभी बालिग़ नर-नारी यह निश्चय कर लें कि हम भी काम करेंगे तो किसी को भी दो-तीन घण्टे से अधिक काम करने की ज़रूरत नहीं रहेगी। अगर यह बात हो जाय, तो आप स्वयं ही कल्पना करके देखिए कि यह दुनिया स्वर्ग बन जायगी या नहीं। मनुष्य ने जब से पानी और बिजली की ताक़तों को इस्तेमाल करना सीख लिया है, तब से उस का बहुत-सा शारीरिक श्रम बच गया है। आप उस दशा की कल्पना तो कीजिए जब कि संसार-भर के सब मनुष्य अपनी आजीविका के लिए केवल दो-तीन घण्टे काम करेंगे और बाकी समय में साहित्य, कला और संगीत का विकास करेंगे; अपनी आत्मा को समझने का प्रयत्न कर के मनुष्यत्व से देवत्व की ओर जाएँगे।

तब सभी लोग खुशहाल, स्वस्थ और सुन्दर बनते जाएँगे और स्वयं ही उस का यह परिणाम होगा कि बच्चा जनते हुए हज़ारों अन्नाएँ मरा नहीं करेंगी। ओह, मैं तो उस पुण्य दिन की कल्पना से ही गद्गद् हो जाता हूँ, जब मनुष्य-जाति के वे दुख-दर्द, जो हम लोगों के अपने ही पैदा किए हुए हैं, दूर होजाएँगे और मानव-जाति के हम करोड़ों भाई विज्ञान और कला की सहायता से 'सत्य' और 'नित्य' की खोज में एक साथ जुट जाएँगे।"

लीडा ने कहा—"आप अपनी बात का स्वयं विरोध कर रहे हैं। एक तरफ़ तो आप विज्ञान की बातें करते हैं, और दूसरी तरफ़ प्रारम्भिक शिक्षा देने वाले स्कूलों का विरोध करते हैं।"

"मैं तो इस शिक्षा-प्रणाली का विरोध कर रहा हूँ जिस में आप बालकों को मनुष्य बनाने का तो प्रयत्न नहीं करते, केवल उन्हें अक्षराभ्यास ही करवा देते हैं। वे ऐसी बहुत-सी चीज़ें घोट लेते हैं, जिन्हें वे समझते नहीं—समझ ही नहीं सकते। ऐसी शिक्षा तो बाबा आदम के ज़माने से चली आरही है। बताओ, इस शिक्षा से मनुष्य-समाज का कौन-सा बड़ा उपकार हो रहा है। मैं शिक्षा का विरोधी नहीं। मैं तो सिर्फ़ ऐसे स्कूलों का ही विरोधी हूँ जिन में शिक्षा और दीक्षा के बजाय केवल अक्षराभ्यास ही कराया जाता है।"

"आप चिकित्साशास्त्र के भी तो खिलाफ़ हैं?"

"जी हां। ये डाक्टर लोग बीमारी के वास्तविक कारण दूर करने की तो परवाह करते नहीं; सिर्फ़ तेज़ दवाइयों के डोज़ दे-

देकर बीमारी को दबाने या निकालने का प्रयत्न ही करते हैं। ज़रूरत तो इस बात की है कि ऐसी परिस्थितियां उत्पन्न कर दी जाएँ, जिन में बीमारी की गुंजाइश ही न रहे, बीमारी की सम्भावना ही जाती रहे। बीमारी का सब से बड़ा कारण गरीबी है, उसे दूर करने की ज़रूरत है। विज्ञान बीमारियों को दबाने का काम ज़रूर करता है मगर विज्ञान और कला का उद्देश्य इतना छोटा और इतना अस्थायी नहीं है। विज्ञान और कला 'नित्य' और 'सत्य' की ओर ले जाने वाले हैं, इन का उद्देश्य ही 'आत्मा' और 'परब्रह्म' की प्राप्ति है। हम मनुष्यों ने अपने दानवीय कारनामों से विज्ञान और कला को हस्पताल तथा स्कूलों में इस लिए बांध रखने का प्रयत्न किया है कि हम अधिक से अधिक बुराइयां और दुष्टताएँ करते रहें और इन हस्पतालों तथा स्कूलों की बदौलत उन के भयंकर परिणामों से छुटकारा पाजाएँ। मनुष्य-जाति के ये हज़ारों-लाखों डाक्टर, वैज्ञानिक और वकील, विज्ञान तथा कला के इसी अस्थायी और दानवीय प्रयोगों की बदौलत हमारे समाज में बड़ी कामयाबी के साथ सत्य की हत्या कर रहे हैं। हम लोगों ने अपनी सम्पूर्ण आध्यात्मिक शक्ति अपनी उथली इच्छाओं की पूर्त्ति में व्यय कर दी है। निस्सन्देह वर्तमान वैज्ञानिक बड़े परिश्रम और लगन से वैज्ञानिक अन्वेषण करते हैं, मगर इन वैज्ञानिक परीक्षाओं का उद्देश्य केवल मनुष्य-जाति को और भी अधिक विषयी बनाना ही है। इसी बात का यह परिणाम है कि मनुष्य-जाति आज भी ख़ूँख़ार जानवरों से उन्नत नहीं बन पाई। आज की वैज्ञानिक

खोजें मनुष्यों के बड़े समुदाय को और भी अधिक पतित बना रही हैं। इन दशाओं में कला का भी कोई मूल्य नहीं है। मैं तो जब चित्र बनाने बैठता हूँ, तब मुझे ख़्याल आता है कि इन चित्रों का उद्देश्य केवलमात्र इन बिगड़े दिमाग़ों वाले, निरुद्देश्य और वासनापूर्ण मनुष्यों का मनोरंजन मात्र ही तो है! यह विचार आते ही मेरा चित्र बनाने का उत्साह जाता रहता है।...यही बात है कि मैं बहुत बार कोई काम नहीं करता। महीनों निकल जाते हैं, और मैं बिलकुल निठल्ला रहता हूँ। यद्यपि यह निठल्लापन भी मुझे कम कष्ट नहीं देता।...वर्तमान दशा में, इस दुनिया के किसी काम का कोई महत्त्व नहीं है। काश कि यह संसार इसी तरह तबाह हो जाय!"

गेनिआ भी पास ही बैठी थी। लीडा के दिल में अचानक आया कि मेरी इन बातों का उस के कोमल हृदय पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ेगा। इस लिए उस ने चिल्ला कर कहा—"मीसू! तुम अपने कमरे में जाओ!"

गेनिआ ने अपनी माता और बहिन की तरफ़ बड़े दुख के साथ देखा और वह वहां से उठ कर चली गई।

तब लीडा ने कहा—"जो लोग काम नहीं करना चाहते, वे इस तरह की आकर्षक बातें करना खुद ही सीख जाते हैं। असल में स्कूलों और हस्पतालों का विरोध करना तो बड़ा आसान है, मगर पढ़ाना और इलाज करना उतना आसान नहीं।"

पावलोवना ने कहा—"बिलकुल ठीक है!"

लीडा ने और भी जोश में आकर मुझ से कहा—"आप मनुष्य-समाज को धमकी देते हैं कि आप काम ही नहीं करेंगे। जैसे आप के काम की बेहद कीमत हो। ख़ैर, बहस करने से कोई लाभ नहीं। हमारे विचार आपस में मिल नहीं सकते। मेरी तो अब भी यही धारणा है कि एक रद्दी से रद्दी हस्पताल खोलने की अपेक्षा भी आप का अच्छे से अच्छा चित्र किसी काम का नहीं है।"

इस के बाद उस ने अपनी कुर्सी का रुख तक मोड़ लिया, और दूसरी तरफ़ को घूम कर अपनी माता से कहने लगी—"प्रिन्स में बड़ा परिवर्तन आगया है। सरकार शीघ्र ही उसे विची प्रान्त का गवर्नर बनाकर भेज रही है।"

यह स्पष्ट था कि केवल मेरी उपेक्षा करने के लिए ही लीडा अब अपनी माता के साथ निरुद्देश्य रूप से बातें कर रही थी। अब उसे मेरी मौजूदगी तक भी अखरने लगी। मैं ने यह सब देखा और समझा। तो भी दस-पन्द्रह मिनटों तक मैं उसी तरह बैठा रहा। इस के बाद प्रणाम करके मैं वहां से चला आया। लीडा ने मेरे प्रणाम तक का भी ठीक ढंग से उत्तर नहीं दिया।

(४)

अगले दिन मैं पुनः उन के घर पर गया। परन्तु दिन के समय नहीं, रात के समय। जब मैं वहां पहुँचा, तो काफ़ी रात बीत चुकी थी। लीडा घर पर नहीं थी। गेनिआ अपनी माता के साथ चित्रागार में बैठी थी। मैं जब वहां पहुँचा, तब वे दोनों

सोने के लिए जाने ही वाले थे। इस लिए मैं ने अधिक देर तक वहां ठहरना उचित नहीं समझा। लीडा की अनुपस्थिति में पाव-लोवना भी मुझे अच्छी तरह से मिली। कल के रूखे व्यवहार के कारण मेरे दिल में क्लेश के जो भाव पैदा होगए थे, वे पाव-लोवना का आज का व्यवहार देख कर नष्ट होने लगे। करीब पन्द्रह-बीस मिनटों में ही मैं वापस लौट चलने के लिए उठ खड़ा हुआ। गेनिआ फाटक तक विदा देने के लिए मेरे साथ चली।

अगस्त महीने की गीली रात थी। सब तरफ़ सन्नाटा था। गीली और ठण्डी, तेज़ हवा चल रही थी। बाग़ के वृक्षों से खड़खड़ाहट की आवाज़ आरही थी। रात चांदनी नहीं थी। आसमान में तारे चमक रहे थे। कोई-कोई तारा टूट कर गिरता हुआ भी दिखाई देजाता था। गेनिआ को तारों का टूटना भयंकर प्रतीत होता था, इस लिए वह आँखें नीचे करके चल रही थी। हम दोनों चुप थे।

फाटक पर पहुँच कर मैं भी रुक गया। उस जगह बिलकुल एकान्त था। गेनिआ ने अन्धकार ही में मेरी ओर देखा और सरदी के कारण कांपती हुई-सी आवाज़ में कहने लगी—"कल आप जो कुछ कह रहे थे, वह मुझे बहुत ठीक जान पड़ा। अगर मनुष्यमात्र अपने को आध्यात्मिक बातों की तरफ़ लगा दें, तो संसार की अधिकांश समस्याएँ स्वयं ही हल होजाएँ।"

मैंने कहा—"निस्सन्देह! मनुष्य और पशु में यही तो भेद होना चाहिए। मनुष्यत्व इसी बात से सफल होता है कि वह

देवत्त्व की तरफ़ जाने का प्रयत्न करे। मगर यह बात असम्भव प्रतीत होती है। मनुष्य जाति बड़ी तेज़ी से विनाश की तरफ जा रही है और इस का विनाश होकर ही रहेगा।"

गेनिआ वापस लौटने को तैयार हुई। उस ने बहुत थोड़े कपड़े पहिने हुए थे। इस कारण सरदी के मारे वह ठिठुर रही थी। उस ने मेरी तरफ़ अपना हाथ बढ़ा कर कहा—"प्रणाम! कल अवश्य आइएगा!"

मैं ने उस से हाथ मिलाया, और वह वापस लौट चली। उस कोमल कली के समान मृदु बालिका के करस्पर्श ने मेरे शरीरभर में एक सिहर-सी उत्पन्न कर दी। गेनिआ कुछ ही दूर गई होगी कि मैं ने बड़े स्नेहभरे स्वर में पुकार कर कहा—"मीसू! एक मिनट तक ज़रा और ठहरो!"

मैं ने अचानक बड़ी प्रबलता के साथ अनुभव किया कि मैं गेनिआ को प्यार करता हूँ, उसे अपने हृदय के अन्तरतम से चाहता हूँ। वह मुझ से कितने स्नेह का बरताव करती है। इतना मधुर, इतना आकर्षक और इतना गहरा स्नेह मुझे इस जीवन में तो और कहीं से कभी नहीं मिला। मैं ने अनुभव किया, इस कोमल-सी बालिका का नाज़ुक गला, नाज़ुक बाहुएँ और भोला-भाला पीला चेहरा—ये सब चीज़ें कितनी सुन्दर और कितनी प्यारी हैं। वह कितनी समझदार है; सचमुच उस की बुद्धि असाधारणतौर से तीव्र है। यह कोमल कली मेरा कितना सम्मान करती है, कितना ख़्याल रखती है। इस उम्र में ही मेरे विचारों को

यह कितनी अच्छी तरह समझती और पसन्द करती है। मेरे हृदय में उसी क्षण अनुभूति उत्पन्न हुई—इस सुन्दरतम नारी-प्रतिमा को ईश्वर ने मेरे लिए ही घड़ा है, और मैं इस के लिए बनाया गया हूँ!

मैं ने और भी अधिक प्रार्थनापूर्ण स्वर में दुबारा कहा—"मीसू! ज़रा इधर तो आओ!"

वह मेरे पास लौट आई। मैं ने अपना ओवर कोट उतार कर चुपचाप उस के कंधे पर डाल दिया। पुरुष का ओवर कोट नारी पर कितना भद्दा प्रतीत होता है, शायद यही सोच कर गेनिआ ने हँस कर उसे घास पर ही गिरा दिया। उसी क्षण मैं ने उसे अपनी दोनों बाहुओं के अन्दर लेकर छाती के साथ लगा लिया।

गेनिआ को सम्भवतः इस बात की कल्पना भी नहीं थी। मगर फिर भी वह न तो घबराई और न उस ने अपने को मेरे बाहुपाश से छुड़ा लेने का प्रयत्न ही किया। अपने दोनों हाथों को मेरे कन्धों पर रख कर वह उसी तरह शान्त भाव से खड़ी रही।

कुछ देर के बाद उस ने मुझ से कहा—"इस समय मुझे जाने दो! कल आना!"

मैं ने उसे उन्मुक्त कर दिया। मुझ से छूट कर वह बोली—"मैं अपनी मां से कुछ भी नहीं छिपाती। मैं उन से यह सब कह दूँगी, और साथ ही यह भी कह दूँगी कि मैं ने जान-बूझ कर उन्हें यह सब करने दिया।...यह कितना बुरा है! मेरी मां तो आप को पसन्द करती हैं परन्तु मेरी बहिन! ओह!..."

इस के वाद वह "प्रणाम" कह कर शीघ्रता से अपने घर की तरफ़ चली गई।

मेरी उस समय जो दशा हो रही थी, वह अनिर्वचनीय है। उतना आनन्द मुझे इस जीवन में और कभी प्राप्त नहीं हुआ। मैं उस आनन्द में इतना तन्मय हो गया था कि न तो मैं कुछ बोल ही सकता था और न कुछ कर ही सकता था। फाटक के साथ ही टैनिस खेलने की जगह थी; मैं चुपचाप उस स्थान की कटी हुई छोटी-छोटी घास पर जा बैठा। दूर पर पावलोवना के मकान की ऊपर की खिड़कियों में से प्रकाश दिखाई दे रहा था। जैसे यह मकान इस अन्धकार में झांकने का प्रयत्न कर रहा हो। मैं ने अपनी नज़र उठाकर इस मकान की तरफ़ देखा। आज इस दृष्टि में यह मकान मुझे बहुत ही प्यारा और अपना-सा प्रतीत हुआ। मैं गेनिआ के शयनागार की तरफ़ देखने लगा। इस की खिड़की पर हरे रंग के परदे पड़े हुए थे। उन में-से मध्यम-सा हरा प्रकाश छन कर बाहर आ रहा था। यह कमरा मकान की तीसरी मंज़िल पर था। मैं कल्पना करने लगा कि अब गेनिआ अपने कमरे में पहुँच गई होगी, अब वह कपड़े उतार रही होगी और अब वह अपनी रज़ाई ओढ़ कर बिस्तरे पर लेट गई होगी। मेरी इन सब कल्पनाओं को यह बात अत्यधिक मधुर बना रही थी कि गेनिआ अब मेरी है! वह सदा अब मेरी बन कर रहेगी।

करीब एक घण्टे तक मैं वहीं बैठा रहा। अपनी कल्पनाओं के बहाव में मुझे ध्यान ही न रहा कि कितना समय बीत गया।

इस के बाद ठण्डी हवा का एक तेज़ झोंका आया और मेरे शरीर में सिहर-सी उत्पन्न हो गई। मैं चौंक कर उठ खड़ा हुआ और अपने घर की तरफ़ लौट चला।

अगले दिन दोपहर के भोजन के बाद मैं पुनः उमंगों में भर-कर गेनिआ से मिलने के लिए चला। जब मैं वहां पहुँचा, तो सब तरफ़ सन्नाटा दिखाई दिया। कुछ देर तक मैं बरामदे में ही टहलता रहा। पहले सदैव मेरे बूटों की आवाज़ सुन कर ही गेनिआ बाहर आजाया करती थी। आज भी मैं इसी बात की प्रतीक्षा कर रहा था। परन्तु पांच-सात मिनटों तक जब कोई नहीं आया तो मैं चित्रागार में प्रविष्ट हो गया। वहां कोई नहीं था। वहां से मैं आहार-गृह में गया, यहां एक नौकरानी को छोड़ कर और कोई नहीं था। मैं हाल में गया, वह भी खाली था, सिर्फ़ एक नौकर हाल के दरवाज़ों को झाड़-पोंछ रहा था। नीचे के और अन्य सब कमरे देख कर मैं सीढ़ियों पर चढ़ने लगा। मुझे मालूम था कि उन तीनों में से कोई भी दिन के समय ऊपर की मंज़िल में प्रायः नहीं रहता। फिर भी गेनिआ को खोजने की उत्सुकता में मैं ने ऊपर के कमरे खोजना भी आवश्यक समझा। मैं अभी ऊपर पहुँचा भी नहीं था कि साथ के कमरे से मुझे आवाज़ सुनाई दी—

"ईश्वर ने...एक कौआ...भेजा!"

शायद गेनिआ किसी बालक को पाठ लिखा रही थी—

"ईश्वर ने...एक कौआ...भेजा!"

"पनीर का...टुकड़ा।"

शायद इसी समय उसे मेरे बूटों की आवाज़ सुनाई दी। उस ने आवाज़ दी—"कौन है?"

"मैं हूँ।"

"ओह, क्षमा कीजिए। मैं इस समय नहीं आ सकती। मैं पाशा को पाठ पढ़ा रही हूँ।"

"अम्मा यहीं हैं?"

"नहीं, बहिन जी के साथ आज सुबः वह मेरी चाची से मिलने एक गांव में गई हैं।"

इसी के साथ, शायद उसी सांस में, वह पुनः लिखाने लगी—

"ईश्वर ने...एक कौआ...भेजा!

"पनीर का...टुकड़ा।

"तुम ने लिख लिया न?"

मैं उसी समय नीचे उतर आया और पुनः गेनिआ की इन्तज़ार में बरामदे में ही टहलने लगा। कुछ मिन्टों के बाद वही लड़का मेरे पास आया और उस ने एक कागज़ मेरे हाथ में दिया। बड़ी उत्सुकता से मैं यह कागज़ खोल कर पढ़ने लगा। इस में गेनिआ ने लिखा था—

"मैं ने अपनी माता और बहिन से सब बातें साफ़-साफ़ कह दी थीं। बहिन जी ने मुझे सख़्त ताकीद कर दी है कि अब भविष्य में मैं आप से कभी न मिलूँ। मैं उन की आज्ञा नहीं तोड़ सकती। ईश्वर आप को प्रसन्न रक्खे। मुझे क्षमा कीजिएगा। ओह, यदि आप यह

समझ सकते कि इस बात से मुझे कितना कष्ट हो रहा है !"

मैं बड़ी तेज़ी के साथ वहां से अपने घर की तरफ़ लौट चला। मेरी आंखों के सामने अन्धकार छा गया था। मुझे गहरी व्यथा और तीव्र लज्जा अनुभव हो रही थी। विधि ने मुझे यह अत्यधिक कठोर चोट पहुँचाई थी।

मैं ने उसी दिन अपना सामान पैक किया। मेरे लिए अब इस पहाड़ी स्थान पर रह सकना असम्भव था। मैं पीटर्सबर्ग के लिए रवाना होगया।

× × ×

उस के बाद टुला प्रान्त के उस पहाड़ी स्थान पर मैं आज तक कभी नहीं गया और न मुझे पावलोवना परिवार का कोई समाचार ही मिलता रहा। अभी कुछ ही दिनों की बात है कि रेल में आते-जाते एक स्टेशन पर बेलो से मेरी अचानक मुलाकात होगई थी। मैं ने उस से पूछा था—"कहो क्या हाल-चाल हैं ?"

"ईश्वर का धन्यवाद है, मैं कुशलपूर्वक हूँ।"

बातचीत के सिलसिले में उस ने मुझे बताया कि वह भी अब उस स्थान पर बहुत दिनों से नहीं गया है। फिर भी उसे इतना ज़रूर मालूम था कि लीडा अभी तक उसी स्कूल में पढ़ाती है और अब वह एक लीडर बन गई है। वह ज़िला कौन्सिल की भी मेम्बर है और उस ने वहां से बैलजिन को बुरी तरह से खदेड़ दिया है। गेनिआ के सम्बन्ध में उस ने मुझे इतना ही बताया कि उस के आने से पहले ही वह कहीं चली गई थी। सम्भवतः उस का विवाह

हो गया था। मगर कहां, यह उसे मालूम नहीं था।

मुझे टुला प्रान्त के उस स्थान की अन्य सब बातें लगभग भूल चुकी हैं, मगर पावलोवना परिवार के सम्बन्ध की एक-एक बात अच्छी तरह से याद है। .खासतौर से गेनिआ की एक-एक बात, उस की एक-एक हरकत आज भी मुझे उसी तरह स्मरण है। आज भी जब कभी मेरा मन उदास होता है, अथवा मैं अकेलापन अनुभव करने लगता हूँ, तो गेनिआ की याद ही मुझे शोकभरे परन्तु मीठे उल्लास से भर देती है। उस के साथ मिल कर फूल चुनना, उस का मुझे चित्र बनाते हुए देखना, उस की उत्सुकता-पूर्ण दृष्टि और उस तारोंभरी रात की एक-एक बात—ये सब मेरे हृदय की अमूल्य निधियां हैं। मुझे अब भी यही अनुभव होता है, जैसे कभी न कभी गेनिआ मुझे ज़रूर मिलेगी।

गेनिआ! तुम कहां हो?

ऊँघ में—

निशीथ। एक छोटा बच्चा पलने में पड़ा चीख रहा है। उस की धाय वार्का पलना झुला रही है। वार्का स्वयं भी एक बालिका ही है। उस की उम्र अभी सिर्फ़ तेरह बरस की है। पलना झुलाते-झुलाते वह गुनगुना रही है—

सो जा मुन्ना, सो जा राजा, सो नन्हे-से लाल !

लोरी गाऊँ, बलि-बलि जाऊँ, कर दे मुझे निहाल !!

चिमनी पर एक हरा लैम्प बल रहा है। कमरे के बीचोंबीच एक रस्सी बँधी हुई है, जिस पर बच्चे के बहुत-से छोटे-छोटे कपड़े और काले रंग की दो बड़ी-बड़ी पतलूने लटक रही हैं। लैम्प इन कपड़ों के दूसरे पार पड़ा है और इन की लम्बी-लम्बी बेढंगी-सी परछाईं बार्का तथा बालक के पलने पर पड़ रही है। बीच-बीच में

लैम्प की बत्ती लड़खड़ाने लगती है, और तब कपड़ों का प्रतिबिम्ब इस तरह नाचने लगता है, जैसे उस में जान आ गई हो। बाहर सन्नाटा है। कमरे में हवा बिलकुल नहीं आरही। घर के मालिक की बूटों की दूकान साथ ही लगी हुई है; इस लिए नए बूटों की गन्ध इस कमरे में भी हर समय आती रहती है।

बच्चा बड़ी देर से रो रहा है, अभी मालूम नहीं कि वह और कब तक रोता चला जाएगा। वार्का को बड़े ज़ोर की नींद आ रही है। उस की आंखों की पलकें आपस में मिल जाने के लिए ज़ोर लगा रही हैं; सिर गिर रहा है और गला खुद अपने भार को सहारने से जवाब देरहा है। होठों और पलकों का हिलाना उस के लिए प्रतिक्षण और भी अधिक-अधिक कठिन होता चला जा रहा है। वह अनुभव कर रही है, जैसे कि उस का मुँह सूख गया है और उस का सिर इतना छोटा होगया है, जैसे पिन का सिर।

वह धीरे-धीरे ज़बरदस्ती गुनगुनाती है—

सो जा मुन्ना, सो जा राजा, सो नन्हे-से लाल !

लोरी गाऊँ, बलि-बलि जाऊँ, कर दे मुझे निहाल !!

अंगीठी के सुराख में झींगुर आवाज़ कर रहे हैं। साथ के कमरे में मकान का मालिक और उस का एक शागिर्द सोए हुए हैं। उन के खुर्राटे भरने की आवाज़ वार्का के कानों में पड़ रही है। ...वार्का पलने को हिलाती है, इस से भी एक संगीतमय आवाज़ निकल रही है। ऐसी आवाज़, जो नींद को और भी अधिक गहरा कर देती है। यह आवाज़ बिस्तरे पर लेटे-लेटे ही सुहावनी लगती

है। वार्का के लिए यह और भी अधिक दुखदाई है, क्यों कि यह उस की आंखों को और भी अधिक भारी बना रही है; मगर वार्का न सोने के लिए लाचार है। यह निश्चित है कि अगर वार्का को नींद आजाय और उस का मालिक उसे इस दशा में देख ले तो वह उस की बुरी तरह खबर लेगा।

लैम्प की बत्ती नाच रही है। साथ ही साथ कपड़ों की बेढंगी परछांही भी नाचती है। ये नाचती हुई छायाएँ उस अर्धसुप्त बालिका के दिमाग़ में ज़बरदस्ती विचित्र-विचित्र प्रकार के अनेक धुँधले-से दृश्यों की उत्पत्ति कर रहे हैं। कभी वह देखती है कि आसमान में बहुत से काले-काले बादल उमड़ आए हैं और वे सब पलने वाले बच्चे के समान रो रहे हैं। इस के बाद उसे दिखाई दिया कि हवा आई और वह इन सब बादलों को उड़ा ले गई। मगर उस की जगह अब उस के सामने एक कीचड़ से भरी सड़क आ गई, जिस में बहुत-से छकड़े फंसे हुए हैं। इस सड़क के दोनों तरफ़ अस्पष्ट-सा जंगल है और सड़क के एक तरफ़ से चल कर बहुत से मनुष्य बारी-बारी से हिलते-हिलते दूसरी तरफ़ को जा रहे हैं। थोड़ी देर में वे सब आदमी कीचड़ पर ही लेटने लग गए! वार्का उन से पूछती है—"यहां क्यों लेट रहे हो ?" वे कहते हैं—"नींद आरही है! नींद आरही है!" वार्का देख रही है—वे सब तो सो गए, परन्तु बहुत से कौए सड़क के किनारे लगी टैलीग्राफ़ की तारों पर बैठ कर पलने वाले बच्चे की तरह चीख रहे हैं, और उन सोए हुए मनुष्यों को जगाने की नाहक कोशिश कर रहे हैं!

वार्का ने अपना सिर हिलाया। वह ज़बरदस्ती गुनगुनाई -

सो जा मुन्ना, सो जा राजा, सो नन्हे-से लाल !

लोरी गाऊँ, बलि-बलि जाऊँ, कर दे मुझे निहाल !!

वह फिर से वैसे ही दृश्य देखने लगी। अब की वह एक अँधेरी और छोटी-सी झोपड़ी में जा पहुँची है।

ओह, यह तो उस का अपना घर है ! उस का स्वर्गीय पिता येफ़िम अंधकार में ही फर्श पर पड़ा कराह रहा है। वह उसे देख तो नहीं पाती, मगर उस की आवाज़ साफ़-साफ़ सुन रही है। वार्का सुन रही है, उस के पिता की आवाज़ सोए हुए आदमी के खुर्राटों के समान है, मगर वह है उन की अपेक्षा बहुत अधिक करुण। उस का बूढ़ा बाप बीमारी के कष्ट में कराह रहा है—

"बू-ऽ! बू-ऽ! बू-ऽ!"

ओह, अब तो वार्का की माता भी आगई। येफ़िम की दशा देख कर वह भी चीख पड़ी;—ठीक पलने वाले बच्चे के समान ! वह दौड़ी हुई अपने मालिक को सूचना देने जा रही है— "बचाओ, बचाओ ! येफ़िम मर रहा है !"...इतनी देर होगई, अम्मा वापस नहीं लौटी। मैं कब तक जागूँगी। यह देखो, मेरे पिता जी अभी तक उसी तरह कराह रहे हैं—

"बू-ऽ! बू-ऽ! बू-ऽ!"

खैर, आखिर डाक्टर आ ही गया। वह मुझे दिखाई नहीं दे रहा। मगर दरवाज़े के बाहर उस के बूटों की और उस के खांसने की आवाज़ तो साफ़-साफ़ सुनाई दे रही है। (घर की मालकिन

इस समय साथ के कमरे में खांसते हुए टहल रही थी)।

डाक्टर साहब कह रहे हैं—"लैम्प जलाओ !"

मेरे पिता अब भी कराह रहे हैं—

"वू-ऽ! वू-ऽ! वू-ऽ!"

मेरी माता दियासलाई की डिबिया ढूँढ रही है, मगर उसे वह मिलती नहीं। डाक्टर के जेब में दियासलाई है। वह उसे निकालता है और एक सलाई जला कर कहता है—"कहां है, तुम्हारा लैम्प ? उसे जला लो !"

मेरी अम्मा कहती है—"एक मिनट ठहरिए ! मैं अभी लैम्प लाती हूँ।"

एक मिनट तक सन्नाटा रहता है, उस के बाद अम्मा लैम्प ले आती है, और डाक्टर उसे जला देता है।

...मेरे पिता अब मुझे दिखाई दे रहे हैं। उन के गाल बच्चे के गालों के समान लाल होरहे हैं, और उन की आंखें बच्चे की आंखों के समान चमक रही हैं।

डाक्टर पूछता है—"कहो, क्या हाल है ?"

मेरे पिता कहते हैं—"ओह, श्रीमन् ! मैं मर रहा हूँ !"

"इस तरह की बेवक़ूफ़ी वाली बातें मत कहो ! हम तुम्हारा इलाज करेंगे।"

"हज़ूर, आप की कृपा है !...वह देखिए मौत आरही है !"

डाक्टर पन्द्रह मिनट तक मेरे पिता की परीक्षा करता है; इस के बाद निराश होकर कहता है—

"मैं अब कुछ नहीं कर सकता ! इसे हस्पताल ले जाओ। वहां इस का ऑपरेशन किया जाएगा !...इसी वक़्त ले जाओ। जल्दी जाओ। तुम लोगों ने बहुत देर कर दी। हस्पताल में सब लोग सो गए होंगे। मगर चिन्ता की कोई बात नहीं। मेरा नाम लेकर उन्हें जगा लेना।"

मेरी माता कहती है—"जनाब ! हमारे पास तो कोई घोड़ा भी नहीं है। इन्हें ले कैसे जाएँ ?"

"कोई चिन्ता मत करो। मैं तुम्हारे मालिक से कह दूँगा, वह तुम्हारे पास एक घोड़ा भेज देगा।"

डाक्टर चला गया; लैम्प भी चला गया, मगर मेरे पिता की आवाज़ अब भी आरही है—

"बू-ऽ! बू-ऽ! बू-ऽ!"

पन्द्रह मिनट शान्ति से गुज़र गए।...इस के बाद एक गाड़ी आई है। वह मेरे पिता को हस्पताल ले जाएगी।

प्रातःकाल हो गया। मैं घर में अकेली हूँ। मेरी माता भी पिता जी के साथ हस्पताल में गई हुई है। घर में मैं अकेली हूँ; मगर यह बच्चा कौन-सा चीख़ रहा है !

क्षण भर के लिए जैसे वार्का की यह ऊँघ उखड़-सी गई। वह खुद-ब-खुद गुनगुनाई—

सो जा मुन्ना, सो जा राजा, सो नन्हे-से लाल !

लोरी गाऊँ, बलि-बलि जाऊँ, कर दे मुझे निहाल !!

वह मेरी मां लौट आई। ओह ! वह तो रो रही है। मैं

पूछती हूँ कि क्या बात है ? वह कहती है—"तुम्हारे पिता गुज़र गए ! हस्पताल वालों ने कोशिश तो बड़ी की, मगर वह बच नहीं सके। उन का ऑपरेशन बहुत पहले हो जाना चाहिए था।"

वार्का भी चीखें मार-मार कर रोने लगी। अपनी झोंपड़ी से भाग कर वह भी सड़क पर आ पहुँची। यहां भी वह रो ही रही थी कि किसी ने उस के मुँह पर थप्पड़ मारा ! वार्का चौंक कर जाग गई।

ओह, यह क्या होगया। वह बदकिस्मत सो गई थी ! मालिक ने उसे थप्पड़ मारा और ज़ोर से कहा—"बदमाश बैठी-बैठी सो रही है। बच्चा इतनी देर से रो रहा है। उस की चीख़ ने मुझ तक को तो जगा दिया और इस निकम्मी को पता ही नहीं !"

तेरह साल की बालिका ने यह दारुण दुख चुपचाप सह लिया। वह फिर से पहले ही के समान पलना हिलाने लगी। मालिक अपने कमरे में लौट गया। बच्चे का रोना अब भी बन्द नहीं हुआ। वार्का उसी तरह गुनगुनाने लगी—

सो जा मुन्ना, सो जा राजा, सो नन्हे-से लाल !
लोरी गाऊँ, बलि-बलि जाऊँ, कर दे मुझे निहाल !!

मगर वार्का दिनभर की थकी मांदी थी। नींद का नशा बहुत शीघ्र फिर से चढ़ने लगा। लैम्प की बत्ती डगमगाई। परछाइयां फिर से नाचीं और वार्का की आंखों के सामने फिर से वही कीचड़-भरी सड़क और उस के कूदते हुए यात्री आ खड़े हुए। ओह, वे सब लोग तो सोगए, मगर वार्का बेचारी को अब भी जागना पड़

रहा है। पहले तो उसे सोने को कहीं जगह ही नहीं मिलती। वह जिधर देखती है, उधर कीचड़ ही कीचड़ दिखाई देता है। इस के बाद अचानक उस की माता आजाती है। वह कहती है, सोने के लिए जल्दी मत करो, पहले हम लोग रोज़ी का कोई इन्तज़ाम करलें।

वह अपनी माता के साथ चल देती है। ओह, पैर कितनी कठिनता से उठ रहे हैं, जैसे वे किसी लाश के पैर हों। ख़ैर, यह गांव आ गया। वार्का की माता गिड़गिड़ा कर कह रही ह—"ईश्वर के नाम पर एक पैसा दो! धर्मात्मा लोगो, दया करो!"

इसी वक़्त किसी ने परिचित आवाज़ में जवाब दिया—"बच्चा मुझे दे दो!"

अगले ही क्षण यही बात क्रोध भरे स्वर में दोहराई गई—"बच्चा मुझे दे दो! सुनती नहीं। बैठे-बैठे सो जाती है, नालायक कहीं की!"

वार्का कूद कर खड़ी हो गई। उस ने देखा, वहां न तो कीचड़ है, न कोई सड़क और न उस की मां। केवल मकान-मालकिन गुस्से में भर कर उसे फटकार बता रही है। बच्चे के दूध का समय हो गया था, वह उसे दूध पिलाने आई थी।

मालकिन ने बच्चे को गोद में उठा लिया और वार्का को हुक्म दिया कि वह शीघ्र ही अँगीठी जलाकर दूध गरम करे। वह नन्हीं-सी बालिका कोइला लेने के लिए बाहर चली गई। इस तरह चलते-फिरते हुए नींद के आक्रमण से आदमी की खुद ही कुछ-न-कुछ रक्षा अवश्य हो जाती है। इस कारण वार्का को इस काम में

ज़रा आराम मालूम हुआ। नींद और थकान के मारे उस का कोमल-सा चेहरा बिलकुल सफ़ेद पड़ गया था। वार्का रसोईघर से कोइले लाई और घर में लौट कर उन्हें जलाने का प्रयत्न करने लगी। अँगीठी में अब भी थोड़े-से अंगारे बाकी थे। बालिका उन पर कुछ कोइले डाल कर पंखा करने लगी। नींद ने उस पर फिर-से हमला किया। अंगीठी उसे पानी का नलका-प्रतीत होने लगी और उस के साथ ही पड़े हुए कोइले उछलते-कूदते मेंढक से जान पड़े। इसी समय मालकिन ने आवाज़ दी—"वार्का, आग जली या नहीं?"

वार्का चौंक कर जाग गई। अंगीठी पर दूध रख दिया गया। उस की मालकिन ने अब उसे निरन्तर काम में लगाए रक्खा। पहले उस ने चमचा साफ़ किया, फिर वह तौलिया लाई, इस के बाद उस ने दूध की गिलासी को गरम पानी से धोया। यह सब करने के बाद मालकिन बच्चे को पुनः पलने में डाल कर वार्का को यह आदेश दे गई कि वह सोए नहीं और निरन्तर पलने को हिलाती रहे।

बच्चा अब भी रो रहा था, मगर बहुत धीरे-धीरे। वार्का उसे झूला देते हुए फिर से गाने लगी—

सो जा मुन्ना, सो जा राजा, सो नन्हे-से लाल!
लोरी गाऊँ, बलि-बलि जाऊँ, कर दे मुझे निहाल!!

क्रमशः वार्का का स्वर धीमे पर धीमा होता चला गया और वह अधिक-अधिक गहरी नींद के वश आने लगी। थोड़ी देर बाद बच्चा

भी चुप होगया। कपड़ों की परछाईं रह-रह कर अब भी उसी तरह नाच उठती थी। धीरे-धीरे बालिका ने पँगूड़े पर अपना सिर रख दिया और वह बाकायदा सो गई। उस की यह नींद इतनी गाढ़ी थी कि अब उसे सपने भी नहीं आरहे थे।

परन्तु थोड़ी ही देर बाद बच्चा जगकर ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा। वार्का की नींद अब भी नहीं टूटी। वार्का के कानों से सिर्फ़ कुछ इञ्चों की दूरी पर ही वह छोटा-सा बच्चा अपनी पूरी सामर्थ्य के साथ गला फाड़ कर रो रहा था, मगर इस पर भी वार्का की नींद नहीं टूट सकी। मालकिन बाहर जाते हुए कमरे के दरवाज़े के कीवाड़ लगाती गई थी, इस कारण बच्चे की चिल्लाहटों से उस के मां बाप भी जग नहीं सके।

वार्का की नींद तो नहीं टूटी, मगर वह फिर से स्वप्न देखने लगी—वही कीचड़भरी सड़क है। उस के किनारे बीसों आदमी सोए हुए हैं। सामने ही उस की झोंपड़ी है। उस के पिता का देहान्त होगया है; माता भी घर के अन्दर सो रही है, वह उसे दिखाई तो नहीं देती, मगर उस के खुर्राटों की आवाज़ साफ़तौर से उस के कानों में पड़ रही है। वार्का सोना चाहती है, मगर एक आदमी उस का दुश्मन है, वह उसे सोने नहीं देता, वह जब सोना चाहती है तब वह चिल्ला-चिल्ला कर उसे जगा देता है।

अकस्मात् वार्का की आंखें खुल गईं। मगर वह अब भी अर्धनिद्रित दशा में ही थी। उस ने देखा, सामने पलने पर पड़ा बच्चा चीख़-चीख कर रो रहा है। वार्का पहचान गई—ओह, मेरा

वह दुश्मन यही है !

वार्का अर्धनिद्रित दशा में ही उठी। पास ही एक कम्बल पड़ा था। वार्का ने नींद की बेहोशी में ही उसे उठाया और उसे खोल कर अच्छी तरह से बच्चे के पलने को ढँक दिया। बच्चे की ऊँची आवाज़ इस कम्बल से परिवेष्ठित हो कर वार्का के कानों में बहुत धीमे रूप में पहुँचने लगी।

उस अर्धनिद्रित दशा में ही वार्का मुसकराई। उस के जी में आया—"देखा, मैं ने अपने दुश्मन को हरा दिया। अब मैं भी निश्चित होकर सोऊँगी !"

वह फर्श पर ही लम्बी लेट गई और बहुत शीघ्र अत्यधिक गहरी नींद में सोगई।

उधर बच्चे का रोना जारी था, मगर वह अब किसी को सुनाई न दे सकता था। ग़नीमत इतनी ही थी कि वह मौसम गरमियों का नहीं था, शायद वर्ना उस कोमल-से बच्चे का दम ही घुट जाता।